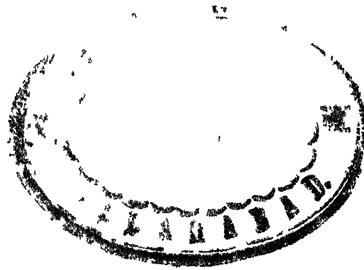
व्यंकटेश दि० माडगूलकर

[मराठी उपन्यास-कथाकार]

प्रतिनिधि रचनाएँ

भाषान्तरकर्ता
र० रा० सर्वटे





भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला : ३

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला : हिन्दी ग्रन्थाङ्क-१७१

सम्पादक-नियामक

लक्ष्मीचन्द्र जैन

Pratinidhi Rachanayen

Vyankatesh D Madgulkar

[Novel, Stories & Personal Essays]

BHARATIYA JNANAPITH PUBLICATION

First Edition 1963

Price Rs 4.00

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

प्रधान एवं सम्पादकीय कार्यालय

भारतीय ज्ञानपीठ, ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७

विक्रय एवं विज्ञापन केन्द्र

भारतीय ज्ञानपीठ, ३६२०/२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

मुद्रक सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी

प्रथम संस्करण १९६३

मूल्य चार रुपये

राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला

भारतीय ज्ञानपीठके समस्त प्रकाशनोंसे और संस्थाकी गति-विधिसे जो पाठक परिचित है वे जानते है कि ज्ञानपीठने हिन्दी-प्रकाशनके क्षेत्रमे एक व्यापक साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणको निष्ठापूर्वक अपनाया है।

पालीमे 'जातकट्ठ कथा', तमिलमे 'थिरुकुरल', हिन्दीमे 'वैदिक साहित्य' और नागरी लिपिमे उर्दूके समूचे संकलनीय काव्य साहित्यको प्रस्तुत करनेके मूलमे देशकी सांस्कृतिक उपलब्धिको समग्र और अखण्ड रूपसे जानने-माननेकी दृष्टि है।

अब 'लोकोदय ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत 'राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला' की योजना इस दिशामे ज्ञानपीठका अगला पग है। इस ग्रन्थमालाके अन्तर्गत ज्ञानपीठकी योजना है कि भारतीय भाषाओंमे लिखनेवाले सभी प्रमुख साहित्यकारोंकी रचनाओंके अलग-अलग ऐसे संकलन प्रकाशित किये जाये जिनमे स्वय लेखकोंके द्वारा चुनी हुई उनकी विविध शैली-शिल्पोंमे लिखी सर्जनात्मक साहित्यकी प्रतिनिधि रचनाएँ हिन्दी अनुवादके रूपमे संग्रहीत हो। प्रसन्नताकी बात है कि इस योजनाके लिए भारतके सभी मूर्धन्य साहित्यकारोंका सहयोग ज्ञानपीठको प्राप्त हुआ है।

'राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला' के माध्यमसे देशके साहित्यकार स्वय तो एक मंचपर आयेगे ही, पाठकोंको विशेष लाभ यह होगा कि सभी ख्याति-प्राप्त लेखकोंकी बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभासे परिचित होंगे, और कुछ अनुमान लगा पायेंगे कि हमारे देशमे समसामयिक साहित्यका स्वर क्या है, स्तर क्या है, उपलब्धि क्या है, और यह कि देशके साहित्य-

समीक्षक इस प्रकारकी रचनाओंको विश्व-साहित्यकी समान शैली-शिल्प-वाली रचनाओंकी तुलनामें क्या स्थान देते है, या कमसे-कम यह कि भारतीय भाषाओंमें इस प्रकारके साहित्यका तुलनात्मक मूल्यांकन क्या जानकारी प्रस्तुत करता है।

किन्तु किसी निष्कर्षपर पहुँचनेसे पहले पाठको और समीक्षकोंको यह बात ध्यानमें रखनी होगी कि इस प्रकारके स्फुट संकलनोंके आधार-पर तुलनात्मक मूल्यांकनकी अपनी सीमाएँ है।

'राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला' का एक पक्ष यह भी है कि जो हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और अन्ततोगत्वा जिसे इस रूपमें देशमे सभी प्रकारसे समादृत होना है, उसका साहित्य-कोष इस प्रयत्न-द्वारा समृद्ध हो। हमारी भावना है कि इसे हिन्दीकी ओरसे अन्य सहोदरी भारतीय भाषाओंका अभिनन्दन-आयोजन भी माना जाये।

'राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला' के माध्यमसे अनुवादके सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्षोंपर विचार करनेका अवसर भी पाठको और समीक्षकोंको मिलेगा। यह स्वयं एक राष्ट्रीय उपलब्धि होगी। इसका अर्थ यह कि अनुवादके रूप और प्रकृतिके सम्बन्धमें हम कोई विशेष आग्रह लेकर नही चले—केवल इतना ही कि मूलका भाव सुरक्षित रहे और अनुवाद सुबोध हो। मुहावरों, शब्द-बन्धों और भाषा-प्रयोगोंके क्षेत्रमें हिन्दीको अन्य भारतीय भाषाओंसे कुछ लेना है, लेना चाहिए, इस दृष्टिकोणको सामने रखनेके परिणाम-स्वरूप अनुवादमें यदि कही कुछ अप्रचलित या अटपटा-सा लगे तो वह इस दृष्टिसे विचारणीय है कि इसमें क्या ग्राह्य है क्या अग्राह्य। निर्णय भाषाविद् दें—विशेषकर वे जिनकी मातृभाषा वही है जो मूल लेखककी और साथ ही जो हिन्दीको राष्ट्र-भाषाके रूपमें समृद्ध करनेकी क्षमता रखते है।

प्रसिद्ध भारती-लेखक श्री व्यंकटेश दि० माडगूलकरका यह प्रति-निधि रचना-संग्रह राष्ट्रभारती ग्रन्थमालाके अन्तर्गत प्रकाशित हो रहा

है, यह भारतीय ज्ञानपीठके लिए प्रसन्नता और गौरवका विषय है। लेखकने इसके लिए अपनी रचनाएँ स्वयं चुनकर दी है, और उनमे एक उपन्यासिका भी है, कुछ कहानियाँ भी, और कुछ व्यक्तिगत निबन्ध भी।

यह संयोगकी बात है कि इस ग्रन्थमालामे श्री नार्लेका सग्रह पहले आया, उसके बाद श्री राजशेखर बोसका, और अब यह श्री माडगूलकर-का। इसे मात्र मुद्रण-क्रमकी बात माना जाये। जिन अन्य साहि-त्यिकोंकी कृतियाँ इस ग्रन्थमालामें आयोजित है वे सब मूर्धन्य लेखक हैं। साहित्यमें किसका क्रम कहाँ है, यह निश्चित करना समीक्षकोंका काम है।

भारतीय भाषाओमे साहित्यिक कृतित्वकी श्रेष्ठताका प्रश्न भारतीय साहित्यके मानदण्डका प्रश्न है। उसके लिए भारतीय ज्ञानपीठकी एक अलग योजना है जिसके अनुसार प्रतिवर्ष भारतीय साहित्यकी सर्वश्रेष्ठ कृतिको एक लाख रुपयेके पुरस्कार-द्वारा सम्मानित किया जायेगा। कृति-कारके प्रति कृतज्ञता ज्ञापनार्थ।

२४ अप्रैल, १९६३

—लक्ष्मीचन्द्र जैन
सम्पादक

मैं कैसे लिखता हूँ ?

बात बहुत पहलेकी है। मै तब किसी प्रकार निम्बवडा गॉवकी प्राथमिक शिक्षाशालामे अध्यापक हो गया था। सब कहते "अच्छा हुआ जो लग गया, नही इससे तो आशा ही न थी।" और मै दिन-रात मन-ही-मन घुला करता कि यह नही, मुझे तो कुछ और ही होना था, पर क्या होना था, इमकी धुंधली-सी भी कल्पना न थी। मेरी उन दिनोकी सारी बेचैनी 'झेल्या' शीर्षक रचनामे चित्रित हुई है।

उसी बेचैनीमे मै आपसे-आप अपना सारा खाली समय पढनेमे देने लगा। गडकरी और केशवसुतकी कविताएँ तो जैसे पागल होकर पढता। पढते-पढते मै स्वयं भी कविताएँ लिखने लगा। कुछ उनमे-से मासिक पत्रिकाओमे प्रकाशित भी हुई। पर वह बेचैनी बनी थी, और बनी रही। चित्र बनानेकी दिशा भी ली। जल-रग और तैल-रग दोनोका कूँचीसे प्रयोग किया, पर यह लगता ही रहा कि बादल घुमड-घुमडकर आये पर बरसे नही।

एक दिन अकस्मात् एक कहानी लिखी, और तत्काल मुझे अनुभव हुआ कि जो मिल नही रहा था वह इस समय कुछ हाथ आ गया। 'काले मुँह-वाली' इस कहानीका शीर्षक था और एक कुतियापर यह लिखी थी। हुआ यो कि मैने एक कुत्तेका पिल्ला पाला। मुँह काला रहनेसे सबने उसे असगुनी कहा। दो-एक दुर्घटना हुई भी। बस सब ओरसे वह दुरदुरायी जाने लगी, और जब दाने-दानेको तरस आयी तब एक दिन चल दी। उसी-पर, या उसीकी यह कहानी थी।

कहानीमे यह कुतिया अपनी दुर्दशा एक कुत्तेसे कहती है। विशेष बात यह कि कुतियाने जो कहा वह मैंने 'सातारी बोली' मे लिखा। यह नयी बात होगी, ऐसा सोचकर मैंने लिखा, उतनी चालाकी मुझमे न थी। मैंने तो आवश्यक समझकर वैसा किया। मुझे लगा कि 'माणस देश' के कुत्ते भी यही बोली बोलेगे। और भाषाके विषयकी अपनी यह मान्यता मै आज भी निभा रहा हूँ।

इस कहानीके बाद ही मुझे विश्वास बँध गया कि चित्र और कविता नही, कहानीके ही माध्यममे कह सकूँगा मैं। कुतियाकी कहानी मुझे सूझी क्योकि सब सामने हुआ था। वह बोल नही सकती थी, पर कुत्तेकी कुत्ता समझ लेता है और उतने समयके लिए मै मानो कुत्ता हो गया था। फिर तो जैसा लगा मैंने लिखा। सच तो, 'लिखा' नही, हाथसे लिखा गया। कारण, कहानी स्फुरित होती है तो अपना आकार-रूप लिये हुए।

लेकिन हमेशा ऐसा नही। कहानीके छोटे-छोटे बीज आये दिन आकर मनमे गिरते रहते है। कौन पीपलका है कौन घासका, यह ठीकसे तो नही जानते बनता, पर जो फैल-फैलाववाला वृक्ष होना रहता है उसके पत्तोकी सरसराहट कानोमे चुप-चुप सुनाई पडने ही लगती है। 'मोटर सर्विस' कहानी इसी प्रकार जनमी। पूनामे एक मित्रने कल्पना सुझायी एक छोटे-से गाँवमे मोटर सर्विस शुरू होती है और उसके कारण वहाँका सारा निर्मल स्वरूप गन्दा हो चलता है। उसी दिनसे एक वृक्षके पत्तोकी सरसराहट कानोमे गूँजने लगी, पर इस बीजको मिट्टी-पानी दिनो बाद गाँव आनेपर मिला जब यहाँसे मोटर छूटी, और स्टैण्डके सामनेवाले कुम्हारके यहाँ बेटा भले खुश था पर बूढा बाप सिर ही पीटता रहा, क्योकि घरमे बैठी जवान बेटीको ड्राइवर अभी-अभी कुछ सैन करता गया था।

पूनाके उस बीजको वृक्ष होना तब मिला जब ड्राइवरके चरित्रके रूपमे एक और बीज भी यहाँ आकर मनमे गिरा। फिर तो पात्र स्वय कहानी

निर्मित कर चले। मेरा अनुभव है कि अथसे इति तक कोई कहानी मनमे तैयार नही होती, वह लिखते-लिखते ही होती है। लेखककी आँख नीम तलेका स्टैण्ड और सामनेवाली झोपडो देखती होती है, कान मोटरकी आवाजे सुनते है, और नाकमे चिलम-तमाखूकी गन्धे भर-भर आती है। इसी तरह पात्रोकी छोटीसे-छोटी अग-भगिमाएँ भी मानो सामने ही दिखती रहती है। जैसे 'गुणी जानवर' मे सणगरकी जवान बेटी जोभ गालमे दबाकर निगाह नीचे कर लेती है, या 'इरादा' मे सन्धाकी काली चमकदार पीठपर धूप पडती है और वह खुजाने लगती है।

जैसे यह सब मुझे दिखता है उसी तरह पात्रोकी बातचीत भी सुनाई पडती है. सुनाई, कानोको नही, मनको। कुछ मुद्रित पढे और अक्षर-अक्षरकी ध्वनि मन-ही-मन अकित होती जाये – उस तरह। पात्र भावनाओके अनुमार कभी तेज बोलते है कभी धीमे, कभी स्वर ऊँचा उठता है तो कभी शब्द लडखडाते और टूट तक रहते है। पवित्रा थककर ढह रहती है तो नामा 'नम्रतापूर्वक' बोलता है, और बनगरवाडीके रास्ते उतने सवेरे कौवे 'बोझिल' स्वरमे कॉव-कॉव करते है। ये सब स्वरकी छटाएँ मुझे लिखते समय ही अनुभव होती है।

सचमुच यह सब दिखना, सुनाई पडना और अनुभव होना मेरे सामने ऐसे आता जाता है जैसे किसी बोलते-चलचित्रके लिए चतुर कैमेरामैनने अपना यन्त्र साधा हो और वही, उतना ही, दृष्टि-पथमे रहे जिसकी आवश्यकता हो। 'बनगरवाडी'का पटेल बाते करता है तो काँटेदार झाडियोमे चलनेसे पैरोपर पडी खरोचोके सफेद निशान ही उभरे हुए दिखते है, हाथ-पाँवोकी फूली हुई गाँठदार नसे नही। पात्र बोलते-से कभी-कभी चुप हो जाते है, यह भी मै देखता और अनुभव ही करता हूँ। जो उस समय सामने होता पाता हूँ वही लिख देता हूँ। ठीक ऐसा ही गन्धोका होता है। 'बनगरवाडी'मे वर्षासे भीगी भेडे भीतर घुसती है तो गडरियोके घर उनकी गन्धसे भर उठते है।

मनकी हाथ-जैसी इन्द्रियाँ विभिन्न संवेदनाएँ तक चुन लेती हैं। 'चमन'के मुँहमे रखा जामुन जब फूट जाता है तब वह 'सीड' आवाज करती है, लार टपकाती है और रस निगलते समय उसकी आँखे खुलती और बन्द होती है। पर संवेदनाओको ठीकसे अनुभव करके भी बहुत बार उन्हे शब्द रूप देना कठिन पड़ता है, कभी-कभी तो उसी प्रकार पहले करके देखता तक हूँ मै। मणगरकी बेटीने गालमे जीभ दबाकर कैसे लाजसे आँखे नीची की होगी, यह मैने पहले स्वय करके देखा तब शब्द-रूप दे सका। और जिस तरह स्वर, संवेदना और गन्ध आदि अनुभव होती है उसी प्रकार आकार, स्पर्श, वर्ण और रुचि आदि भी।

कैसे इतना सब याद रहता है? ठीक जैसे दूकानदारको हर चीजके चढ़ने-उतरते भाव या टेलेफोन ऑपरेटरको अनेक-अनेक नम्बर। अपने विषय और उपयोगकी सूक्ष्मसे-सूक्ष्म बातोको भी ध्यानमे रख लेनेकी ओर मनका झुकाव इतना रहता है कि रास्ता चलते भी हम उन बातोको मनमे इकट्ठा करते जाते है। और यह कार्य हमारे अनजाने हुआ करता है। लिखते समय जैसी आवश्यकता होती है उसके अनुरूप सामग्री या सूचना मन सामने प्रस्तुत कर देता है।

रही बात भाषा और शैलीकी, जिस प्रकार पूनीसे सूत निकलता है उसी तरह निवेदन निकलता है। शब्द चलते चले आते है, वाक्योकी लय बँध जाती है, और फिर तो मन ही नही अग-अग झूमने लगता है। वह लय हमारी आत्माका उद्‌गार होती है। इसी उद्‌गारको शैली कहे! मनुष्यकी सारी आन्तरिक उत्कटताको ही तो शैली कहना चाहिए। शैलीके साथ ही भाषाकी बात उठ आती है। कहते है भाषाको खूब निखारना चाहिए। पर भाषा ऐसी चीज नही कि हम प्राप्त करना चाहे और वह प्राप्त हो जाये, भाषा तो माँके दूधकी तरह प्राप्त होती है।

मैने जो देखा, जो सुना, जो भोगा, उस सबसे मेरी भाषा बनी है।

तब यह प्रश्न करना निरर्थक है कि अमुक लेखक अमुक ही भाषाका उपयोग क्यो करता है, और ऐसा आग्रह करना भी अयुक्त होगा कि पात्रोके मुँहमे ग्रामीण और अशुद्ध भाषा न कहलायी जाये। बोली जानेवाली भाषाके बारेमे हमारी कुछ भ्रामक धारणाएँ है। मूलमे सब ओर जो भाषाएँ चालू रहती है वे बोली जानेवाली भाषाएँ ही है। इन्हीमे-से कोई एक प्रमाणरूप मान ली जाती है और उसमे ग्रन्थ-रचना होने लगती है। पर जहाँ ग्रन्थ-रचना होने लगी कि उस भाषाका स्वरूप प्रवाही नही रह जाता वह जड हो चलती है। लिखनेकी भाषाको बोलनेकी भाषासे पृथक् नही होने देना चाहिए। तभी साहित्य साधारण लोगोकी पहुँचके भीतर भी रहेगा।

—व्यंकटेश दि० माडगूलकर

अनुक्रम

●

उपन्यास

कहानियाँ

व्यक्ति निबन्ध

●

बनगरवाड़ी

[उपन्यास]

एक

पीठपर पाथेय बाँधे मै बनगरवाडीके लिए रवाना हुआ था।

अभीतक सब-कही अँधेरा फैला हुआ था। तारे चमक रहे थे। सिर्फ सामनेवाली मोड लेती हुई जाती गाडीकी सडक धुँधली-सी दिख रही थी। रात कितनी है, भोर कितनी देर बाद होगा, इसका कोई निश्चित अनुमान नही लगाया जा सकता था। मेरे मनमे रह-रहकर यह शका आती थी कि मै कही बहुत जल्दी तो नही निकल पडा। मेरे कानोको अपने ही पैरोकी आवाज लग रही थी। झीगुर झकार रहे थे। सर्द हवाके झोके कानोपर टकराते हुए आवाज कर रहे थे। बहुत देरसे चलते रहनेके कारण बदनमे एक लय-सी भर गयी थी।

डर लग रहा था कि कही रास्ता न भूल जाऊँ, क्योकि इससे पहले मै बनगरवाडी कभी नही आया था। वह गाँव कैसा होगा, वहाँके लोग मेरे साथ किस तरह पेश आयेगे, वहाँ जानेपर कहाँ रहूँगा—इत्यादि प्रश्न मै स्वय अपने-आपसे पूछ रहा था। दो दिन वहाँका राग-रग देखकर मुझे वापस लौटना था। जब वहाँ स्थायी रूपसे रहना ही है तो मुझे अपना कुछ सामान भी साथ लाना जरूरी था। आज सिर्फ धोती-चद्दर और दो और कपडे ही लेकर मै जा रहा था।

खेतोमे चुभनेवाली ठण्डी बयार चलने लगी। तारोकी चमक कम पड गयी। कुछ ऐसी बीचकी हालत हो गयी थी कि न तो पूरी चाँदनी थी और न पूरा उजाला ही था। बबूल और अन्य पेडोकी चिरपरिचित सुगन्ध अनुभूतिमें आयी। रास्तेकी धूल पैरोमे ठण्डी-ठण्डी-सी लगने लगी।

थोडी ही देरमें अँधेरा जाता रहा, सब सूझने लगा। पेड-पौधे, पत्थर आदि चीजोको आकार प्राप्त हुए। तारे लुप्त हो गये। झीगुरोका सगीत

बन्द हो गया। नीदसे जागे हुए कौवोकी कर्कश काँव-काँव कानोमे पडने लगी।

लाल और पीले रगका सूरज खेतकी ओटसे ऊपर आया। खेतकी उजियाती हरियालीपर पीली झलक छा गयी। बेरीकी झाडियोमे बैठी काली चिडियाँ जाग उठी और दुम नचा-नचाकर फुदकने लगी। झाडियोमे पख फुलाकर बैठे हुए हरियल पजोपर उचककर बोलने लगे। कौवे उडने लगे।

सूरजकी पहली किरणोसे खेतोमे पडी सूखी घासमे गरमाहट पहुँची। उसके तलेकी कीडे-मकोडोकी दुनिया जाग उठी। चीटियाँ कपटी हुई इधर-उधर को चल पडी। टिड्डे उछलने लगे। गिरगिट सरसराये। खेतकी मिट्टीमे नन्हे-नन्हे छेद बनाकर उनके भीतर छिपे हुए गुडी कीडे भीतर फिसलकर आनेवाले कीडोको खानेके लिए अपनी देहपर मिट्टी डालकर तैयार हो गये।

तरोतेकी पीड-तले बैठे हुए चमकीले हरे रगके भौरे उसके कसैले पत्ते खाने लगे। खेतके बिलोमे-से गोहोने सिर बाहर निकाले। वे गलेके नीचेका भाग हिलाती हुई अपनी जीभके निशानेके भीतर आनेवाले कीडोकी राह देखने लगी। हरियल पेड छोडकर सडकपर आये और अपनी सुडौल गरदने मटकाते हुए धूलमे बिखरे पडे घासके बीज चुगने लगे।

मै अपनी पीठपर रखी गठरीको हाथमे लेकर पाँव जल्दी-जल्दी बढाने लगा। नगे पैरोसे धूल उडने लगी। पाजामेकी फरफराहटसे रास्तेपर बैठे हरियल घबडाकर ऊँचे उडने लगे। मै लम्बी-लम्बी डगें भरता आगे बढता रहा। चलते-चलते पेटमे चूहे दौड़ने लगे। गठरीमें बँधी हुई रोटी, लहसुनकी चटनी और सागकी खुशबू बडे ज़ोरसे आने लगी। मगर मै जीवटके साथ पाँव बढाता ही गया। अँगुलियोकी सन्धमे-से धूल ऊपर आ रही थी। पैरोपर तहे चढ रही थी। पाजामा मैला हो रहा था और रास्ता लम्बा होता जाता था।

आस-पास पीले-भूरे रंगके खेत फैले हुए थे। जिधर देखो उधर खेत ही खेत! एक तो पहलेसे ही वीरान, फिर चिलचिलाती धूपमे तो ये और अधिक वीरान दिखते थे। कही-कही नीचेको थोडी-सी हरियाली नजर

आ जाती थी, नही तो चारो ओर पत्थरो और ककडोसे भरे हुए खेत-ही-खेत थे। इन्हीके बीच करील, बेर और तरोता आदिके बाढ-मारे पेड-पौधो-मे-से यह गाडीकी सडक जा रही थी—धूल-भरी, कही पत्थरोमे ऊँची-नीची होती, कही चौडी, और कही तग।

धीरे-धीरे सूरज ऊपर चढा। सवेरे शान्त लगता मैदान अब धधकने लगा। उस समयका पक्षियोका कोलाहल भी कम हो गया। कभी कोई मटमैले रगकी चिडिया ऊँची उडकर बाणकी तरह 'सूँ' आवाज करती हुई नीचे आती, उसकी इस आवाजसे वहाँका एकान्त जैसे और भी एकान्त लगने लगा। एक बाज़ नीचे देखता, जमीनके समानान्तर तैरता हुआ चला गया और पक्षियोने चिल्ला-चिल्लाकर कुहराम मचा दिया।

अब आस-पास, कही काले और कही लाल, जोतकर छोडे हुए जमीनके टुकडे दिख रहे थे। बिना जुती परती जमीने धूपकी मारसे फट गयी थी। पिण्डली तक पैर धँस जाये ऐसी दरारे जगह-जगहपर पड गयी थी। ये जमीने आयी तो मै यह सोचकर कि अब आबादी नजदीक आ गयी, रह-रहकर क्षितिजकी ओर देख रहा था। पर घर दिखायी नही देते थे। पेड-पौधे भी नही दिख रहे थे।

धूप तेज हो गयी। सुबह ठण्डी-ठण्डी लगनेवाली धूल गरम हो गयी। मेरे सिरके आस-पास छोटी-छोटी मक्खियोका एक दल भिनभिनाने लगा। उनकी निरन्तर भन-भन आवाजसे मै ऊब उठा। सिरसे टोपी उतारकर उससे मैने उन्हे भगानेकी कोशिश की, परन्तु वे नही भागी। सौ दो-सौ मक्खियाँ मेरे सिरके आस-पास चक्कर काटती हुई मेरा पीछा करती ही रही।

जरूर यह मनुष्य किसी ऐसे स्थानको जा रहा है जहाँ बहुत-सी मक्खियाँ है, इसे उस स्थानका रास्ता ठीकसे मालूम है, यदि इसके साथ जाये तो हम भी वहाँ पहुँच जायेंगे, हमे गन्दा पानी कीचड और नालियाँ सभी कुछ मिल जायेगा —इस धारणाको मनमे लिये हुए वे मक्खियाँ मेरे सिरपर मँडराती हुई मेरे साथ आती ही रही।

दो

ईर्द-गिर्द सपाट मैदान, बाजरेके लाल खेत, और बीचमे जैसे कोई बेकार-चीज फेक दी गयी हो इस तरह तीस-पैतीस घर—ऐसा था बनगरवाडी गाँव। बहुत-से घरोकी दीवाले मिट्टीकी थी और छप्पर फूसके थे। कुछ थोडे-से घर अटारीवाले भी थे। हर एक घरके सामने छोटा या बडा सहन था। नालीके गन्दे पानीकी सिचाई पाकर बढा हुआ मीठा-नीम और मुनगा था। घरके पिछवाडे भेड और बकरियोको बन्द करनेके लिए बबूलके काँटे खडो करके अहाते बनाये गये थे। काँटोकी इस दीवालपर गोबर-मिट्टी चढा दी गयी थी। कही दीवालसे सटा गाडीका टूटा पहिया पडा हुआ था। सभी गाँवोमे जैसा होता वैसा ही सब यहाँ भी था। रास्ता नामकी कोई चीज नही थी। घर बननेके बाद जो जगह बच रही थी उसीका चलनेके लिए उपयोग होता था। बहुत-से घरोमे ताले लगे थे। एक घरके सामने दो-तीन बच्चे खेल रहे थे। घरोकी परछाइयाँ धूलसे भरे रास्तोपर पड रही थी। उनमे कही कुत्ते और कही काली-पीली मुर्गियाँ आँखे मूँदे बैठी हुई थी।

मै सीधा गाँवमे घुस पडा। मेरे दाये-बाये घर थे। उनमेसे औरतोने झाँककर देखा। बच्चे भीतर भागे। आगे चलकर मुझे एक मैदान मिला। वहाँ नीमका एक पेड था जिसे घेरकर एक चबूतरा बना हुआ था। उस शीतल छायाको देखते ही थके और धूपमे तपे हुए मुर्गेकी तरह मै जाकर उसमे बैठ गया। टोपी उतारी। पसीना पोछा। पैर पटककर धूल झटकारी। ऊपरकी शीतल छायासे पसीना सूखा और अच्छा लगा।

भूख लगी थी, परन्तु यह नही मालूम था कि पानी कहाँ है। किसीसे पूछता पर आस-पास कोई दिख नही रहा था। मनमे आया बिना पानीके ही खा लूँ। लेकिन जितनी भूख लगी थी उतनी ही प्यास भी। मुँहकी नमी सूखकर

सारा स्वाद नमकीन-नमकीन हो रहा था। उस शीतल छायाको छोडनेकी इच्छा नही होती थी। ऊपर उठाये घुटनेके आस-पास बाँहे डालकर मै यो ही बैठा रहा। आस-पास किसीकी भी आवाज न थी। मेरे सिरपर जो पेडकी शाख थी उसपर कौवेका एक जोडा बैठा हुआ था। वह भी खामोश था।

थोडी देर बाद जिस रास्तेसे मै आया था उसी रास्तेसे एक व्यक्ति आता हुआ दिखायी दिया। मैने मनमे कहा, उस व्यक्तिके नजदीक आते ही उसे पुकारूँगा। उससे कहूँगा कि मै यहाँ क्यो आया हूँ ?' उससे पूछूँगा कि पानी कहाँ है और फिर रोटी खाऊँगा। मै यह सोच ही रहा था कि वह व्यक्ति गाँवमे घुसा और मेरे सामने आकर खड़ा भी हो गया।

उसके सिरपर लाल रगका साफा था। वह बदनमे गोल कुरता पहने था। अपने एक हाथमे धोतीके सिरेके साथ ही वह एक लम्बा भाला भी पकडे हुए था। उसके गालकी हड्डियाँ ऊपर उभर आयी थी। नाक सीधी थी। मूँछोके बाल भूरे थे और धुएँसे धुँधुवाये-से दिख रहे थे। बिना किसी सकोचके उसने अपनी लाल आँखोमे मुझे अच्छी तरह भर लिया। और फिर मूँछोपर अँगुलियाँ फेरकर धूलमे पीक थूकी। मुझे लगा—उसकी कुछ बूँदे मेरे बदनपर भी गिर पडी है। यो ही, हलचल करके मैने अपने पैर नीचे लटका दिये और इधर-उधर देखा। डाँटते हुए-से स्वरमे उसने मुझसे पूछा, "क्यो रे, क्या अण्डे खरीदने आया है तू ?"

इस प्रश्नसे मेरी ऐसी हालत हो गयी जैसे किसीने मेरे एक चाँटा जड दिया है। क्षण-भर मेरी समझमे ही न आया कि इसे उत्तर क्या दूँ। यह सारी करतूत मेरे पाजामेकी थी। उसीने मुझे इस तरह नीचे गिरा दिया था। रेज़गीसे भरी थैली लेकर गाँव-गाँवमे अण्डे खरीदनेके लिए घूमनेवाला मुसलमान बना दिया था। मै घबराया, चकराया और थोडा झेपता हुआ हँसा। नीचे लटक रहे पैरोको मैने ऊपर उठा लिया। टोपी ठीक तरहसे पहन ली और बोला, "नही जी, अण्डेवाला नही हूँ। मै

स्कूल मास्टर हूँ ।"

यह स्पष्टीकरण सुनकर पूछनेवालेको यह न लगा कि उसने कोई अनुचित बात कही । बाये पैरका भार दाहिने पैरपर रखकर वह बोला, "मास्टर ?"

उसे इस बातपर विश्वास ही नही हुआ । मैला पाजामा और धारीदार कपडेकी धुली हुई कमीज पहने हुए यह घुटने बराबर छोकरा मास्टर कैसे होगा ? जिसे लँगोटी लगाकर स्कूल जाना चाहिए और थूकसे अपनी स्लेट-पट्टी पोछनी चाहिए ऐसे इस लडकेको मास्टर कौन कहेगा ? यदि किसीने कह भी दिया फिर भी इसे मास्टर बनायेगा कौन ? यो ही बक रहा है ।

मुझे अपनी उम्रपर और धोती और कोट न पहननेपर पछतावा हुआ। भाषामे जोर भरकर मैने कहा, "मेरी यहाँ नयी नियुक्ति हुई है । आजसे ही मै मास्टरकी हैसियतसे अपने कामपर हाजिर हुआ हूँ ।"

हाथमे आडा पकडे हुए भालेको उसने जमीनपर सीधा झण्डेकी तरह सामने खडा किया और तुच्छतापूर्वक बोला, "हाँ, मास्टर ? मास्टरका क्या काम है इस गाँवमे ? शाला चलती कहाँ है ? लडके भी है गाँवमे ? सरकारको क्या पता नही है ? फिजूलकी बकवास—"

और साफेके छोरको ठीक तरहसे खोसता हुआ वह चल भी दिया । जाते-जाते उसने फिर एक बार धूलमे पीक थूकी । उस तग रास्तेसे जबतक वह जाता रहा, उसकी तरफ देखते रहनेकी मुझे हिम्मत न हुई । मै बहुत बुरी तरह झेपा । बचपनमे फटा जाँघिया पहनकर शाला जाते समय मेरे मनकी जो हालत हो जाती वही हालत इस समय हो गयी थी । सिर्फ इसी एक प्रसंगने मेरे तमाम धीरज, आशा और उत्साह-पर तुषारपात कर दिया । लगने लगा इसी समय लौट जाऊँ और इस नौकरीसे इस्तीफा दे दूँ । यह काम मुझसे न हो सकेगा । यहाँ शाला नही चलेगी । लडके नही आयेगे । मास्टर, शाला और शिक्षा इस गाँवमे

किसी कामके नही है। और गिरे मनसे मै नीमके चबूतरेपर बैठा रहा। थोडी देर पहले मुझे जो भूख और प्यास लगी थी उसे मै थोडी देरके लिए भूल गया। यह सोचकर कि गरमीमे उबलते इस गाँवमे इस समय मै क्यो आया, मुझे बहुत बुरा लगने लगा।

और फिर एक सफेद मूँछोवाला बूढा लाठी टेकता हुआ खेतकी तरफसे आया। उसकी भौहे भी सफेद हो चुकी थी। उसके हाथमे चाँदीका कडा था। कन्धेपर रखे कम्बलको उसने अपने कडेवाले हाथसे कसकर पकड रखा था। जूतोके भीतरसे पैरोको घसीटता हुआ वह आया। मेरे सामने आकर रुक गया। माथेपर हाथ रखकर उसने मुझे ध्यानसे देखा। जैसे किसी भूली हुई भेडको पहचाननेके लिए उसकी पहचानके सकेतोको देख रहा हो। फिर बोला, "यहाँ कैसे बैठे हो बेटा ?"

मैने कहा, "मै मास्टर हूँ। आजसे मेरी नियुक्ति इस गाँवमे हुई है।

"अरे, मास्टर होकर यहाँ क्यो बैठा है ? स्कूलमे जाकर बैठ।"

बूढेके इन शब्दोसे मुझमे कुछ हिम्मत आयी। उस भालाबरदार-जैसा यह नही है।

"मुझे मालूम नही यहाँका स्कूल कहाँ है ?"

सामनेवाली एक लम्बी इमारतको लाठीसे दिखाता हुआ बूढा बोला, "वह देख लम्बी इमारत। वही तो है स्कूल। वह सरकारी मकान है। उसी मकानके आखिरी दो कमरोमे स्कूल लगता है।"

"यह ?"

"हाँ, वही। जा। बैठ वहाँ जाकर।"

"अकेला बैठकर क्या करूँगा ? लडके कहाँ है ?"

"लडके गये है अपनी भेडे और बकरियाँ चराने। पर वे वापस आयेगे। तू क्या समझता है कि जगलमे ही रह जायेगे ?"

"पर एक शाला भर जाये इतने लडके है इस गाँवमे ?"

'है, बहुत है और आगे हो जायेगे। गाँवमे हर साल दस-बारह

शादियाँ होती है, बच्चे पैदा होते जायेगे। तू पढाता जा, लडकोकी फिक्र क्यो करता है ?"

उसकी बातपर मुझे हँसी आयी। चबूतरेके नीचे कूदकर मैंने अपनी गठरी उठायी और कहा, "कृपाकर मुझे बतलाइए पानी कहाँ है ? जिससे मै खाना खा सकूँ। खाना मै साथ ले आया हूँ।"

बूढेने कहा, "इस गाँवमे पानीकी बडी तकलीफ है। गरमीमे सब कुएँ, नाले और नदियाँ सूख जाती है। एक टकी है। देख, वह दिख रही है।"

मैंने उस दिशाकी ओर देखा। गाँवके नज़दीक पत्थर और चूनेकी बनी एक टंकी दिखी।

"हम लोग गडरिया है। हमारे हाथका पानी पी सकते हो तो बोलो, मँगाये देता-हूँ।"

"न पीनेको क्या हो गया ? पर यदि लोटा मिल जाये तो मै स्वय जाकर ले आऊँगा।"—मैने कहा।

बूढेने वही खडे-खडे पुकारा, "अरी ओ अजू, मास्टरके लिए एक लोटा-भर जल तो ले आ।"

दूर एक मकानसे किसी स्त्रीने झाँका। बूढेने फिरसे चिल्लाकर वही कहा और फिर हम दोनो स्कूल आये। तहसीलके सदर मुकाममे, पहलेवाले मास्टरने मुझसे कहा था, "चार्ज देने लायक वहाँ कोई सामान ही नही है। लडके ही नही है तो शाला कैसी ? यह ताली ले जाओ और मै यहीसे रिपोर्ट किये देता हूँ कि तुम्हे चार्ज दे दिया।"

और उसने मुझे शालाकी ताली थमा दी थी।

ताला खोलकर मैंने स्कूल खोला। गन्दी बासकी झॉस आयी। नीचेका ऊबड-खाबड फर्श जगह-जगहपर उखड गया था। धूल और चिडियोकी बीटसे भर गया था।

बूढेने कन्धेपरका कम्बल उतारा और उसीसे थोडी-सी जगहका कचरा

साफ किया । उसे बिछाया नही, यूँ ही डाल दिया और बोला, "बैठ ।" और फिर हाथ नीचे टेककर वह भी बैठ गया । लाठीको समानान्तर रखता हुआ बोला, "हाँ, अब निकाल अपना खाना । जल अभी लाती है छोकरी ।"

मैने गठरी खोली । पुरानी धोतीके टुकडेमे बँधा हुआ खाना निकाला । मैने कहा, "आप खायेगे, बाबा ?"

अपने झुर्रीदार चेहरेपर मुसकराहट बिखेरकर बूढा बोला, "हम क्या अभीतक बिना खाये रहेगे ? दो बार खा चुके है और अब तीसरा वक्त आ गया है । तू खा ।"

मै सकुचा-सा गया । पर भूख सकोचकी परवाह करनेवाली न थी ।

एक काली कलूटी लडकी आयी । उसने बाहरसे ही ड्योढीमे पानीका लोटा रख दिया और मेरी तरफ एक बार देखकर चल दी ।

घुटना उठाकर बैठा हुआ बूढा कमरसे सुरतीकी थैली निकालकर उसमे अँगुलियाँ डालने लगा ।

मुझे कडाकेकी भूख लगी थी इसलिए जल्दी-जल्दी खा रहा था । खाते हुए उस बूढेकी तरफ देखने लगा । अगर सिरका साफा और आधी धोती छोड दे तो उसके बदनपर दूसरा कोई वस्त्र नही था । जिस मिट्टीमे वह दिन-भर भेडोके पीछे घूमता था उस मिट्टी और उन भेडोकी तरह उसका भी रंग काला-स्याह था । बदन इकहरा था । नगे पैरोपर झाडियोके काँटे लगकर सफेद खरोचे दिख रहे थे । बूढा बिलकुल पक गया था । कबूतरके पख सरीखी भौहे, सफेद भरी हुई मूँछे, अगुल-भर बढी हुई सफेद दाढी और सीनेपर सफेद-भूरे बाल । उसकी उम्रका अन्दाज लगाना मुश्किल था, पर बूढा बिलकुल थक चुका था । चेहरेपर शिकनोका जाल था । हाथ और पैरकी नसे फूल गयी थी । उनमे जगह-जगहपर गाँठे पड गयी थी ।

तमाकू मुँहमें डालकर थैलीको ठीकसे बाँधते हुए उसने पूछा, "किस गाँवका है तू ?"

मैने कहा, "यही नजदीकका ही हूँ—विभूतवाडीका।"

"वहाँके कौन हो तुम ?"

मैने बूढेको आवश्यक जानकारी दे दी। उसने मेरे गाँवके कुछ लोगों-से अपनी पहचान बतायी।

"तब तो तू हमीमे-से है।" कहकर मेरी पीठपर हाथ टिकाया और वह थूक सके इसलिए बैठे-बैठे ही देहलीके पास सरका।

"मुझमे बडी हिम्मत आ गयी। मुझे लगा गडरियोके इस गाँवमे मै अकेला नही हूँ। मेरे पास आकर मुझसे बाते करनेवाले, ममत्व दिखानेवाले भी यहाँ है। इसी तरहके दस-पाँच आदमी यदि मुझे यहाँ मिल गये तो मेरी चैनसे कट जायेगी।"

थोडी देरके बाद मुझसे बिदा लेकर बूढा जगल चला गया। अब मै अकेला था। पहलेवाले मास्टरने छतकी शहतीरोपर खरिया-मिट्टीमे भिन्न-भिन्न कहावते लिखी थी। दिशाएँ दिखानेके लिए उन-उन दिशाओके नामो-की रगीन तख्तियाँ दीवालोपर लगी थी। छतके जोडपर लगे खम्भेसे थूहरकी एक शाखा लटका दी गयी थी। उसपर पिस्सू और मच्छरके दल बैठे हुए थे। छतमे जहाँ जगह मिल गयी वही चिडियोने घोसले बना लिये थे। उनमे-से सनके धागे और चीथडे लटक रहे थे। इधर-उधर फडफडाकर चिडियाँ चूँ-चूँ कर रही थी। एक मेज, एक कुरसी और एक काला तख्ता—सब मिलाकर कुल इतना ही सामान था। मेजके पास लकडीका एक सन्दूक था। मैने उसे खोलकर देखा। उसमे तख्ता पोछनेका झाडन, एक रूल, पुराना रजिस्टर, हाजिरीकी किताब, खरिया-मिट्टीके खाली डिब्बे, दावात, कलम और सटर-पटर चीजे थी।

मैने गठरीसे अपनी चद्दर निकाली और उसे नीचे बिछा लिया। मच्छरो और पिस्सुओके आक्रमणसे बचनेके लिए सिरपर धोती ओढकर मै चद्दरपर लेट गया। इस तरह अकेले सोना मेरे लिए नयी बात न थी। परन्तु निर्जन और धूपसे तपे हुए गाँव और खाली स्कूलके कारण मै और

भा अधिक अकेलापन महसूस कर रहा था। चिडियाँ चिल्ला रही थी। एकाध चिडियाँ चूँ-चूँ करे तो सुननेमे अच्छा लगता है। पर दस-पाँच चिडियाँ निरन्तर चिल्लाने लगे—फडफडाने लगे तो सिर पका देती है। पर इससे बचनेका कोई उपाय न था। दरवाजा बन्द कर देता.फिर भी दीवालपर-से भीतर आनेका रास्ता था। मै आँखे बन्द कर सो गया। थकावट, पेट-भर खाना और शीतल छायाके कारण मुझे गहरी नीद आ गयी।

तीन

मै गहरी नीदसे जागा। पडे-पडे ही, खुले द्वारसे सामने देखा तो दिन पूरा डूब चुका था और जगलसे लौट रहो भेडोका कोलाहल सुनायी पड रहा था। मै बहुत सोया था और अब भी उठनेकी इच्छा नही हो रही थी, क्योकि मेरे पैर बुरी तरह दर्द कर रहे थे। दोनो हाथोको सिरके नीचे रखकर मै कुछ समय तक शहतीरकी ओर पडा देखता रहा।

बाहर भेडोका शोर निरन्तर बढ रहा था। गडरियोकी ऊँची आवाजे कभी पाससे और कभी दूरसे कानोमे पड रही थी। गडरियोके कुत्ते भूँक रहे थे, मुर्गे कुक्कुडकूँ कर रहे थे, चिडियाँ और कौवे शोर मचा रहे थे। और इनसानोके बोलनेकी आवाजे भी सुनायी पडती थी। कुछ समय पहले निर्जीव लगनेवाला गाँव एकदम जोवित हो गया था—बडे जोशसे हिलने लगा था।

मै बाहर आया। मैदानमे आकर खडा हो गया। जिस रास्तेसे मै आया था, वह भालाबरदार और वह बूढा आया था, वे सब रास्ते जगलसे लौटकर घर आनेवाली भेडोसे भर गये थे। वे प्राणी गरदन नीचे झुकाकर जल्दी-जल्दी चल रहे थे। उनके पैरोकी दबी आवाजे आ रही थी। धूल उड रही थी। धूलपर सैकडो खुरोके निशान बन रहे थे। और धोती

खोसे हुए काले-कलूटे गडरिये कन्धेपर आडी लाठी रखकर मुँहसे अजीब आवाज़ करते, उनके पीछे आ रहे थे। उन भेडोके समूहमे बकरियाँ थी। झबरे कुत्ते थे।

पश्चिम दिशा लाल सुर्ख हो गयी थी। पुरवा बह रही थी। सफेद बादलोके छोटे-छोटे पुज लाल पश्चिमकी ओरसे नीली-काली प्राचीकी तरफ फैले हुए थे। जमीनकी तरह जैसे आसमानमे भी सफेद भेडे खरककी ओर जा रही थी।

बच्चेवाली भेडें दौडती-दौडती आयी। आठ-दस दिनके मेमने घर रह गये थे। वे लमटगे पैरोपर शरीरको तौलते हुए चलने लगे। पतली गुलाबी जीभें बाहर निकालकर कातर स्वरमे मिमयाने लगे और भेडोंकी भीड आते ही उनके थनोमे हूदा मारने लगे।

घर-घरमे, जगलसे लौटकर आयी गडरियोंकी स्त्रियोने चूल्हे जलाये। छप्पर पडे हुए घरोसे उनका धुआँ आकाशमे चढने लगा, गडरिये भेडोको अहातेके भीतर बेडने लगे।

बातकी-बातमे घना अँधेरा छा गया। भेडोका शोर, कौवो और चिडियोका कोलाहल और मनुष्यकी आवाजे सब शान्त हो गयी।

शालाके बाहरके चबूतरेपर पैर नीचे लटकाकर मै बैठा रहा। ऊपर चाँदनी छा रही थी। नीचे दीये टिमटिमा रहे थे, हवाके सर्द झोके आ रहे थे।

कोई अँधेरेमे-से आया और सामनेवाली बगलकी हनुमान्‌जीकी मढिया-मे दीया जलाकर चला गया। मेरे मनमे आया कि उस प्रकाशमे जाकर खाना खा लूँ और छोकरीके द्वारा लाये गये बचे हुए पानीको पी लूँ। परन्तु मैने यह किया नही। खम्भेकी कुरसीसे टिककर मै उस अँधेरेकी ओर बैठा हुआ देखता रहा।

आजसे आगे तीन साल तक मेरा गाँव यही होगा। यही मुझे रहना होगा। इन्ही लोगोसे मिलना-जुलना होगा। उनका विश्वास और प्रेम

प्राप्त करना होगा। नाम कमाना होगा। और यह सब करते हुए खुद-खुदाकर घूडा बने हुए और पक्षियोकी बीटसे तथा मच्छरो और पिस्सुओं-की महकसे भरे हुए इस स्कूलकी तरक्की करनी होगी। लडकोको इकट्ठा करना, उनमे पढनेकी रुचि पैदा करना, मेरा गाँवमे रहना और प्रतिष्ठा प्राप्त करना—इन सबके लिए एक बडी रुकावट यह थी कि मेरी उम्रकम थी और मै दुबला-पतला था। गाँव तो ऐसा उजड्ड था कि जहाँ आज तक दस-पाँच लडके नियमित रूपसे स्कूलमे आये ही नही। यह सब कैसे हो सकेगा ? कैसे निभेगा ?

सामने पैर बजे। हनुमान्‌जीकी मढियाके दीयेका मन्द-मन्द पीला-लाल प्रकाश बाहर आ रहा था। उसकी पार्श्व-भूमिपर कोई काली आकृति दिखायी दी। मुझे अँधेरेमे कुछ भी नही सूझ रहा था। सिर्फ इतना ही दिखा कि कोई पास आया है। मै जरा ठिठका।

"कौन, मास्टर है क्या ?"

मैने बूढेकी आवाज़ पहचान ली।

"हाँ, मै ही हूँ। आइए।"

"रोटी खा ली ?"

"नही। खाऊँगा अभी।"

"तेरे लिए बकरीका दूध लाया हूँ।"

मैने बरतन रखनेकी आवाज़ सुनी। उस दिशासे हाथ बढाया तो हाथ बरतनसे छू गया।

इसी बीच और भी कोई अँधेरेमे-से आया और खाँसता हुआ सीढीपर बैठ गया।

बूढेने पूछा, "कौन है रे ?"

"मै तो हूँ, पटेल साहब।"

"कौन नन्दू चौकीदार ?"

"जी।"

"अरे, मास्टर अँधेरेमे बैठा है। मेरे घर जा और एक दीया ले आ।"

"कौन मास्टर ?"

बूढेको उससे शुरूसे आखिर तक सब बाते कहनी पडी। कौन मास्टर है, किस लिए आया है, कहाँका है, किसका कौन है—इन सब बातोका उत्तर पटेलने दिया। नन्दूने सब सुन लिया और फिर वह दीया लानेके लिए चल दिया। लोटा, गिलास, लालटेन, बिस्तर आदि चीजे अत्यन्त जरूरी थी। मुझे आते समय ये सब चीजे अपने साथ ले आनी थी। पर यह बात उस समय मेरे ध्यानमे न आयी।

नन्दू चौकीदार दीया लानेके लिए चला गया। उसके वापस लौटते तक और भी दस-बारह आदमी आये और कम्बल नीचे डालकर धूलमे ही बैठ गये। एक दूसरेकी आवाजसे ही वे परस्पर पहचान सके। किसीकी भेडको भेडियेने तोड दिया था। इस विषयका पूरा ब्यौरा दिया गया। कहा गया कि उस भेडियाकी मादा किसी झाडीमे ब्यायी है। वह वही रहती है। रातको जाकर मार दे तो बला टल जायेगी। किसीने उसकी खिल्ली उडायी। उसकी रायमे जानवर इस तरहसे इतनी आसानीसे मिल जाये यह हो ही नही सकता था, क्योकि वह हमेशा घूमता रहता है। और यह सब हो जानेपर किसी आदमीने खबर दी कि उस भेडको किसी भेडियेने नही तोडा है, बल्कि कुत्तेने ही मार डाला है। वह कुत्ता फलाँका है और यह बात फलाँने देखी है।

साफेके छोरकी ओड करके नन्दू चौकीदार दीया ले आया। उसके उजेलेमे मैने देखा कि बारहसे ज्यादा आदमी धूलमे बैठे हुए है। प्राय. किसीके भी बदनमे कुरते न थे। प्राय. सभीके पास मोटे कम्बल थे। किसीने गोला-सा बनाकर उसे नीचे डाल दिया था। एकाध लोई भी ले आया था।

नन्दू-द्वारा लाये दीयेके उजेलेमे मैने खाना खा लिया और स्कूलसे बाहर आया।

पटेलने पूछा, "खा ली रोटी ?"

"मैने कहा, "हाँ।"

खाँसनेसे पता चला कि सभा अब भी बैठी हुई है। एक बार मनमे आया कि भीतरका दिया बाहर ले आऊँ। परन्तु वह हवामे बुझ जाता और मेरे सिवा किसीको उसकी ज़रूरत भी नही मालूम होती थी।

अबतक मै जान गया था कि मेरे नज़दीक बैठा हुआ और 'बेटा' कहनेवाला यह पका हुआ बूढा गाँवका पटेल है। लोग उससे पटेल कहकर बातें करते थे।

कुछ समयके बाद अँधेरेमे बैठी सभासे बूढा पटेल बोला, "अरे सुनो, मास्टर आया है। कलसे अपने लडके स्कूल भेजा करो।"

किसीने खखारकर थूका।

हलकी आवाज़मे अपने पडोसीसे कोई बोला, "गाँवमे लडके है कहाँ ?"

जरा तेज आवाज़मे पटेलने कहा, "क्यो रे, क्या हमारे गाँवकी सब औरते बाँझ है ?"

"यह बात नही है, पटेल। पर ऐसे लडके कहाँ है जिन्हे स्कूल जानेकी फुरसत हो ?"

"एक भी नही है ? क्या सभी काम-काजो है ?"

"नही, परन्तु भेड-बकरियोको चराने जाते है। खाली कोई नही है।"

क्षण-भर उलटे-सीधे प्रश्नो और उत्तरोका कोलाहल बढा। फिर मै बोला, "छह-सात सालके लडके बकरियाँ चराते है, वे अकेले जाते है क्या ?"

"अकेले कहाँ जाते है ? अपने बडे भाइयोके साथ जगलमे घूमते रहते है। अगर छोटे हुए तो चराने दो-तीन इकट्ठे मिलकर जाते है।"

"तो फिर जो ऐसे लडके है, उन्हे स्कूलमे भेजो। वे यदि लिख-पढ लेंगे तो उनका कोई नुकसान न होगा। अगर होगा तो फायदा ही !"

दूरसे किसी सुरती-भरे मुँहसे आवाज़ आयी, "और वे खायेंगे क्या ?"

मुझे क्षण-भर कोई उत्तर ही न सूझा। यह प्रश्न कि लडके शाला-

मे आवे तो उन्हे कौन खिलावे और कैसे खिलावे, मेरे मनमे कभी न उठा था। मै यही समझता था कि छोटे लडकोको माँ-बाप कमाकर खिलाते है। परन्तु बूढेने ही तुरन्त उत्तर दे दिया, "जिसके लडके भूखो मरने लगे, वह मेरे घर आकर अनाज ले जाये। नामर्द कहीके? हर काममे कुछ-न-कुछ अडगा लगाते ही रहते हो। जाने कैसी आदत है तुम लोगोकी? सरकारने एक अच्छा स्कूल दिया। मास्टर दिया, तब लडकोको स्कूल भेजनेमे क्या बिगडता है तुम लोगोका?"

अब जरूर सबका रवैया बदला। लडके कौन-कौन भेज सकेगा, इस-पर चर्चा हुई। किसीने कहा, हमारा सदू जायेगा, किसीने कहा हमारा महादू जायेगा। एक दूसरेसे कहने लगा, तुम्हारा तुका भी जायेगा, इसका सखा भी जायेगा। इस तरह होते-होते दस-बारह लडके हो गये।

पटेल बोला, "ले हो गयी तेरे मनकी बात, मास्टर। अब कलसे जुट जा अपने काममे।"

चर्चाका इस प्रकार अन्त हुआ। इस बीच कोई-कोई घर भी हो आये थे। मै बैठा था यह देखता हुआ कि ये लोग कब जायेगे। पर उनके जानेके कोई आसार नजर नही आ रहे थे। वे इधर-उधरकी मौसम आदिकी बातें करने लगे। उनके बीच परस्परके सुख-दुखोकी चर्चा चल पडी। मैने धीरेसे पटेलसे कहा, "अच्छा तो मै जाकर सोऊँ?"

"हाँ, हाँ, तू जा। लडके आ जायेगे सुबह। तू फिकर न कर।"

भीतर जाकर मैने चद्दर बिछायी और धोती ओढकर लेट गया। दीया बुझा दिया। बाहर बाते चल रही थी तभी मेरी आँख लग गयी।

बीचमे जगा तब बाहर चन्द्रमा उग आया था और उन लोगोमे-से कोई सरकारी मकानमे, कोई उसी मैदानमे, जहाँ बैठे हुए थे, उसी कम्बलको बिछाकर और ओढकर लेट गये-से थे। खुले हुए आकाशमे सुन्दर चाँदनी खिली थी। बाहर मै बहुत देर तक खडा रहा। सामने गाँवकी तरफ दो कम ऊँचे छप्पर थे। उनकी छाया पड रही थी। बीचकी गलीसे उस

तरफ़का पत्थरोका ढेर दिख रहा था और वही पास ही खुला हुआ मैदान था—बहुत दूर तक फैला हुआ चरागाह। उसके बाद दूरपर धुँधले-से दिखनेवाले पेड-पौधे थे। और जहाँ मै दोपहरको बैठा था वह नीमका पेड चुपचाप खडा था। उसकी चोटीपर चार सफेद बगुले स्तब्ध बैठे हुए थे।

चार

मुझे आये आठ-दस दिन हो चुके थे और अभीतक शालामे लडके नही आ रहे थे। शाला नही लगती थी। कभी किसी दिन दो-तीन लड़के आ भी जाते तो घण्टे-आध घण्टेके बाद ही ऊब जाते। पेशाबके बहाने बाहर जाते और फिर वापस लौटते ही न थे। इनमे भी यदि कोई नियमित रूपसे आने लगता, तो कभी उसका बाप, कभी उसकी माँ आकर रोटी खानेके बहाने उसे घर ले जाते और भेडो और बकरियोके पीछे जगल भेज देते। बहानेबाज़ी करनेके लिए कभी मै यदि किसी लडकेको डाँट देता तो वह रोने लगता और घरसे उसकी माँ दौडी आती। "क्यो बाबा, तेरे कोई बाल-बच्चे नही है क्या? भाडमे गया तेरा स्कूल। बेटा, उठ, तू चल अपने घर।" इस तरह साफ-साफ कहकर अपने लडकेका हाथ पकड घर ले जाती। इस प्रकार स्कूल चल रहा था। लोग रोज़ नित्यकी भाँति स्कूलके सामनेवाले मैदानमे रातको इकट्ठे होते। उनके सामने यह बात निकालता, तो वे कहते, "अभी लडकोकी आदत नही पडी है। महीना-पन्द्रह दिन निकलने दे।"

इतना समय निकलने देनेके सिवा मै भी और क्या कर सकता था?

इस अवधिमें पटेलने मुझे रहनेके लिए एक छोटा-सा घर दे दिया था। वहाँ मैने अपनी गृहस्थी जमायी यानी पत्थरका चूल्हा बनाया। इतवारको अपने गाँव जाकर दो-तीन बरतन ले आया और हाथसे रसोई बनाकर

खाने लगा।

एक दिन रातको भाला लेकर वही भालाबरदार आया। उसे लोग दादू कहते थे। उस समय दीयेकी रोशनीमे बिस्तरसे टिका हुआ मैं यूँ ही बैठा हुआ था। दादू आया और हाथ-पैर पसारकर दरीपर बैठ गया। उसने हाथमे रखे भालेको एक कोनेमे दीवालसे टिकाकर रख दिया। फिर बोला, "अच्छा, यही घर आया तेरे हिस्सेमे !"

अभीतक इन लोगोके कडे बोल सुननेकी आदत मुझे हो गयी थी। आदर-सूचक सर्वनामका उन्हे पता ही न था। यदि तू या तुमका प्रयोग प्रेमसे, विशेष परिचयसे हो, तो कानोको बुरा नही लगता। पर कोई भी अपरिचित गडरिया "क्यो रे मास्टर ?" कहता तो मुझे अजीब-सा लगता। इस वक्त दादूने मुझसे 'तू' कहा, तो वह मुझे चुभ गया।

जेबसे चिलम निकालकर उसने तमाकू भरी। उसे पैरोकी अँगुलियोमे दबाकर खडी की। फिर चकमकसे जलायी और धुएँके गुब्बारे निकालने लगा।

पहली मुलाकातसे ही इस मनुष्यके बारेमे मेरे मनमे गाँठ पैदा हो गयी थी। ऊपरसे पूछ-ताछ करनेपर मुझे पता चला था कि सिर्फ आवारगी करके ही यह शख्स जी रहा था। गाँवपर उसका बडा प्रभाव था। तहसीलके अफसरोके साथ उसका मेल-मिलाप था। उनके साथ उठा-बैठा करता था। थोडा पढा-लिखा होनेके कारण बहुत बार उससे सलाह भी पूछी जाती थी।

नाक और मुँहसे धुआँ छोडकर उसने चिलम बुझा दी और फिर कमरेमे नजर घुमाकर बोला, "तेरे पहलेका मास्टर भी इसी कोठरीमे रहता था।"

मैने उडते हुए सुन लिया था कि उस मास्टरने गाँवमे कुछ गडबडी की थी, जिससे गाँवके लोगोने उसकी काफी मरम्मत की थी, उसे बेहद पीटा था। उसकी याद आते ही मेरे पेटमे भयकी टीस उठी। फिर भी

चेहरेपर ऐसा कोई भाव न दिखाकर मैने कहा, "अच्छा इसी कोठरीमे वह भी रहता था ?" परन्तु मेरी आवाज़ घबरायी हुई भेडकी तरह निकली थी।

दादू बोला, "ठीकसे नौकरी करना छोडकर वह बेटा गाँवमे 'दादा-गिरी' करने लगा। सीधा हम लोगोके घरमे चूल्हे तक पहुँच गया। मैने उसे दो-तीन बार सावधान भी कर दिया था। परन्तु उसने सुना नही। उसे लगा, मै सरकारी नौकर हूँ। ये बेवकूफ गडरिये मेरा क्या उखाड लेगे ? इसी ऐठमे मुफ्तमे पिट गया साला।"

इतना कहकर उसने अपने कठोर चेहरेपर खुशी झलकायी और अपनी लाल आँखे मेरी ओर घुमायी। मै डरा, थोडा सँभलकर बैठ गया।

कोनेका भाला उठाकर उसने अपने पास रख लिया और फिर बोला, "एक दिन इसी तरह बैठा हुआ था। यही समय रहा होगा। मै आया। न आव देखा और न ताव, इस भालेको उलटा पकडकर लगा पीटने। इतना मारा कि जबतक गिरा नही, मारता ही रहा। धोती गीली हो गयी उसकी। मेरे पैर पडने लगा। रोने लगा। परन्तु मुझपर गुस्सा सवार था। दस-पाँच ठोसे मारकर जब देखा कि वह नीचे गिर पडा है, तब मैने उससे कहा, चुपचाप लडकोको पढा गाँवमे। अगर यहाँ दादा-गिरी की तो सीनेमे भाला घुमेडकर जान ले लूँगा।"

दीयेकी लाल रोशनी दादूके हड्डियाँ उभरे चेहरेपर पड रही थी। उसकी मूँछे अस्त-व्यस्त थी और बीडीसे काला हुआ होठ उसने सामने निकले हुए दाँतो-तले दबा रखा था। मुझे सूझता न था कि मै क्या कहूँ। अनजाने 'हे—हे' करके मै हँस दिया, और दरवाज़ेकी ओर देखने लगा। मुझे लग रहा था कि इस समय यदि कोई आ जाये तो अच्छा हो। पर बाहर घोर अन्धकार छाया हुआ था।

मूँछें साफ़ कर दादू बोला, "यह हँसनेकी बात नही है मास्टर। तू अभी नया आया है। ठीकसे अपना काम कर। गाँवमे कोई गडबड़ी न

करना। लडके स्कूलमे आवे, तो उन्हे पढा। गाँवको पढानेकी झझटमे मत पड, समझा ?"

जमीनपर रखी चिलम और चकमक उठाकर उसने साफीके साथ अपने अगरखेकी जेबमे रखी, भाला उठाया और सीना तानकर बाहर चल दिया। अँधेरेमे अदृश्य हो गया।

कुछ देर तक मै चुपचाप बैठा रहा। मेरे माथेपर पसीना आ गया था। साँस रुक-सी गयी थी। मनमे आया, झट-से उठूँ और दरवाजेकी कुण्डी भीतर लगा लूँ। परन्तु यह मामूली काम मेरे हाथसे जल्दी न हुआ।

कमरेमे बिछे कम्बलपर मै अलसाया-सा चित लेट गया और मुझे लगा जैसे खुले दरवाजेसे कोई भीतर आया है। मेरी गरदनके बाल खडे हो गये। मै तडाकसे उठ बैठा और सामने देखने लगा।

बाहरके अँधेरेसे लगभग बीस-बाईस वर्षका एक तगडा और मजबूत नौजवान भीतर आया और चुपचाप ड्योढीके पास दीवालसे टिककर बैठ गया। वह मेरी पहचानका न था। मैने उसे गाँवमे आज तक कभी न देखा था। भर्रायी हुई आवाजमे मैने पूछा, "कौन है ?"

"मै हूँ, आयबू।"

मै कुछ न समझ सका। पानीमे भीगनेवाले कुत्तेकी तरह भीतर आकर बैठनेवाला यह आयबू कौन है, यह मेरे ध्यानमे जल्दी न आया। पर वह घुटने टेककर और उसके आस-पास बाँहे डालकर, चुपचाप बैठा हुआ था। फिर उसने मुँह घुमाकर मेरी ओर देखा। दीयेके उजेलेमें मैने उसकी बारीक आँखें और प्रसन्न मुख देखा। और फिर मेरा सारा भय दूर हो गया।

"क्या इसी गाँवके हो ?"

"नही, मै एखतपुरका हूँ।"

"एखतपुरका ? बडी दूर चले आये इधर ? कहाँ ठहरे हो, यहाँ ?"

आयबूने सिरपर ज़ोरसे दबाकर पहनी हुई टोपी उतारी और नीचे

ज़मीनपर रख दी। दोनो हाथोकी हथेलियोको जोडकर उसने सारे कमरेमे नज़र दौडायी और कहा, "मेरा कोई नही है।"

और मुझे लगा, जैसे वह मेरा कई दिनोका कई बरसोका परिचित है। फूले गालोवाला और लाल नाकका यह आयबू क्यो घूम रहा होगा, कैसे जी रहा होगा, इसका विचार करनेकी मुझे जरूरत न पडी। "तुमने गाँव क्यो छोडा ? ठीक यही क्यो आये ? क्या करनेवाले हो ? कहाँ रहोगे ? बदनपर जो कपडे है उन्हे छोडकर दूसरे और कपडे तुम्हारे पास क्यो नही है ?" आदि प्रश्नोको उससे पूछनेकी मुझे आवश्यकता न पडी। फटी कमीज़ और मैला पाजामा पहननेवाले आयबूकी मुझसे अधिक बाते हुई ही नही। सुबहके नाश्तेके लिए बचाकर रखी हुई एक रोटी मैने निकाली, ऊपर थोडा तेल डाला, मिर्च लगायी और वह आयबूको खानेको दे दी।

जैसा बैठा था, उसी हालतमे उसने रोटीको अपने एक हाथमे रख लिया और बातकी-बातमे उसको खा डाला। चप-चप आवाज करनेवाला उसका मुँह चुप हो गया। मैने उसे लोटा-भर पानी दिया जिसे वह अँजुरीसे गट-गट पी गया। फिर देहलीके नीचे गया और कुल्ली करके लौट आया। दीवालके पास उसने उस खाली लोटेको औंधा दिया और आस्तीनसे मुँह पोछकर इधर-उधर देखता हुआ पहले-जैसा ही बैठा रहा।

मै भी दस-पाँच मिनिट शहतीरकी ओर देखता हुआ बिस्तरसे टिका पड़ा रहा।

और आयबूकी जड साँसे सुनायी पडने लगी। उसी स्थितिमे घुटनोमे सिर डालकर वह सो गया था। आराम मिल गया, पानी पीने लायक खानेको मिल गया, रोटी मिल गयी। मीठी नीद लग गयी। मैने अपने नीचेका कम्बल उठाकर उसपर डाल दिया। कम्बल बदनपर पडते ही वह जाग गया। जड आँखोसे उसने एक बार मेरी ओर और एक बार कम्बल-की ओर देखा। यह देखते ही कि मै चद्दर बिछाकर उसपर सो रहा हूँ, उसने कम्बल उठा लिया और आधा नीचे डालकर आधा ऊपरसे ओढ

लिया। दूध-भात खाकर बिल्ली जिस तरह सोती है उसी तरह आयबू सो
। धीरे-धीरे उसकी खर्राटे सुनायी पडने लगी।

मैने अपने मनमे निश्चय किया कि उस भालाधारी दादूसे अब आगे ज़रा भी नही डरूँगा। वैसे देखा जाये तो स्वभावसे भी मै भीरु बिलकुल था। गत छोटे-से जीवनमे मैने अनेक भले-बुरे अनुभव लिये थे। साधा-लडकोके हिस्सेमे शायद ही आवे ऐसा जीवन मैने भोगा था। परन्तु उसकी तुलनासे यह अनुभव भिन्न था, इसलिए एकदम मै घबरा गया था। किन्तु उस घबराहटकी उलटी प्रतिक्रियाके रूपमे ही शायद विलक्षण अभयता मुझमे आ गयी। और हवाके लिए कमरेका द्वार खुला रखकर मै भी गहरी नीदमे सो गया।

पाँच

बनगरवाडीमे लगभग सभी आबादी गडरियोकी थी। ये लोग काले रगके थे और हमेशा खुले-बदन घूमनेवाले। बाहरकी दुनियासे बिलकुल अनजाने। उन्हे यह भी ज्ञान न था कि बाहरी दुनियासे वे अनभिज्ञ है। वे पौ फटते ही जाग जाते। रात-भर थानमे बेडी हुई भेडोको लेकर घरसे बाहर चल देते। चरागाह गाँवसे लगभग तीन मील दूर था। वे वहाँ जाते। सौ-सौ भेडोके पीछे एक-एक गडरिया और एक-एक कुत्ता रहा करता। नीचे गरदन लटकाये फुरर-फुरर आवाज करती हुई भेडोके दल निरन्तर हिलते रहते। उनके ऊनमे चिपककर इधर-उधर सफर करते अनेक प्रकारकी घासोके बीज जगह-जगहपर गिर पडते। और अगले साल भेडोके चरने लायक घास वहाँ पैदा हो जाती। कन्धेपर लाठी रखकर गडरिया भेडोके पीछे घूमा करता। कडी धूपमे तपता हुआ वह दिन-भर खडा रहता। उसका कुत्ता भी ऊब जाता। फुदकनेवाले टिड्डोका

पीछा कर, काले रंगवाले गिरगिटके पीछे दौडकर, यो ही भौककर, इस तरह कुछ-न-कुछ करके उसे अपनी ऊबको भगाना पडता। गडरियेका भी यही हाल होता। अपनी ऊब भगानेके लिए गडरिया कभी एकाध चुस्त और चालाक भेडको चुनकर उसके गलेमे घुँघरू बाँध देता। रोटी खाने बैठता तो एक टुकडा अपनी प्रिय भेडके मुँहमे भी दे देता। कही खडी फसल दिख जाती तो उसके एक-दो कोमल बाल तोडकर ले आता और उन्हे उसे खिलाता। वह भेड कुत्तेकी तरह उसके पीछे-पीछे जाती। जब वह भेड उससे बिलकुल हिल जाती, तो जिस समय अन्य भेड़े मैदानमे चरती रहती वह मनोरजनके लिए इस भेडको काठीपर-से कूदना सिखाता। उसे यह आदत डालता कि उसके 'बैठ' कहनेपर वह बैठ जाये और 'खडी हो' कहनेपर खडी हो जाये। कभी-कभी हमेशा हाथमे रहनेवाली कुल्हाडीसे बबूलकी डगान तोडकर उसे छीलता रहता, कभी जाल बिछाकर कबूतरोको फँसाता और कभी लावा पक्षियोको पकडता। भेडें चरती रहती और गडरिया कुछ इस तरहसे अपना समय काटता रहता।

परन्तु इस तरह अकेला रहनेका मौका उसे बहुत कम आता, क्योकि अकसर तीन-चार गडरिये मिलकर अपने खिरके चराया करते। दोपहर होनेपर बारी-बारीसे कुएँपर जाकर स्नान कर आते। जैसे-जैसे धूप तेज़ होने लगती वैसे-वैसे भेडे भी प्यासी होकर पानीकी ओर जाने लगती। सूखे झरनेकी हरी काईके नीचेका जल पीकर वे तरोताजा होती और जाकर अधूरी छायामे खडी हो जाती। फिर गडरिये भी छायाकी तलाश करते और वहाँ इकट्ठे बैठकर रोटी खाते। रोटी खानेके बाद एकाध ताकनेके लिए जागता रहता और बाकी लोग कम्बलका गोल बनाकर सिरहाने रख और साफेके छोरसे मुँह ढाँककर ऊँघने लगते। उनके कुत्ते ठण्डी, गीली बालूमे लोटकर हाँफते हुए बैठे रहते।

दिन जब थोडा रह जाता तब गडरिये भेडोको गाँवकी ओर मोडते। खेतकी घास-पात चुगते-चुगते उनके घर पहुँचते तक शाम हो जाती। गाँव-

के नज़दीक आनेपर एक-एक गडरिया एक तरफ अलग खडा हो जाता और अपनी-अपनी भेडोको पुकार लेता। फिर एकके तीन खिरके हो जाते।

पतिके पीछे घर रहकर चरखे या तकलीपर ऊनका सूत निकालने-वाली उनकी पत्नियाँ भेडोके आते ही जल्दी-जल्दी अपने कामको समेटकर उठती। बन्द रखे गये मेमनोको छोडती और दो-चार लकडियाँ डालकर चूल्हा जलाती। इस समय तक बहुधा अँधेरा हो जाया करता। सभीके घर माचिसकी डिबिया न रहती, इसलिए स्त्रियाँ अपने दीये पडोसिनोके दीयोसे जलाकर लाती और चूल्हा जलाकर गरमागरम रोटियाँ तैयार करती।

लौटकर आये गडरियोके लिए 'भेडे मिलाने' का आध घण्टेका कार्यक्रम रहता। घरमे रहे मेमनो और जगलसे लौटकर आयी भेड़ोका बडा कोलाहल मचता। माँ बच्चेको खोजती रहती और बच्चा माँको पुकारता रहता। 'बे-बे, मे-मे'की आवाज़से वातावरण भर जाता। भूखे बच्चे किसी भी भेडके नीचे घुसकर उसके थनोमे हूदा मारना चाहते। माँ उस नये स्पर्शको जान जाती और कूदकर भागना चाहती। उस गडबडीमे छोटे बच्चे गिर पडते, चित हो जाते। बच्चोके लिए पागल हुई भेडोकी लातें उनके मुँहपर, सिरपर लगती। गाँव-भरमे यही कोहराम मचा रहता। हजार-बारह-सौ भेडो और उनके दो-चार-सौ मेमनोकी आवाजें निरन्तर होती रहती। गडरियो और उनकी स्त्रियोको मामूली बातें भी चिल्लाकर करनी पडती। भेडोकी आवाज़ोमे उनकी चिल्लाहट डूब जाती। हवा साँय-साँय बहती रहती। चिडियाँ और कौवे भी शोर मचाते। भेडोकी लेंडियो और मूत्रकी बदबूकी झाँस उठती रहती।

इन भेडोके झुण्डमे घुसकर गडरियेको भेडे मिलानी पडती। गगीका यह बच्चा है, भूरीका यह काला बच्चा है, इस तरह उसे सब ठीक मिलाना पडता था। भूले हुए बच्चेकी पिछली टाँग पकडकर उसे चलाता हुआ वह उसकी माँके पास ले आता और उसका मुँह उसके थनसे लगा देता। यह काम आध घण्टे तक होता रहता। और फिर कोलाहल शान्त

हो जाता। और केवल बच्चोके दूध पीते समय होनेवाली आवाज़ सुनायी पडती। भेडें बच्चोके धूल-भरे अंगोको चाटती और सफेद गाढे दूधसे बच्चोके मुँह पुत जाते।

गडरिये एक-दूसरेसे मिलते तो पूछते, "जुड गयी भेडे ?"

"हाँ, जुड गयी और तेरी ?"

"जुड गयी।"

इस अवधिमे गडरियेकी घरवालीने चार रोटियाँ सेंक ली होती। मटरकी या मूँगकी दाल मटकेमे चुरती रहती। भेडोका सारा इन्तज़ाम ठीक करके गडरिया घरमे जाता और सुबहसे खडी हुई उसके हाथकी लाठी आडी पड जाती। कुल्ली करके वह उकडूँ बैठता और अधूरे प्रकाशमे रोटी खाने लगता। भोजन या खाना शब्दको वहाँ लोग नही जानते। वे जानते है सिर्फ रोटी खाना। खाने या भोजनमे कदाचित् और भी एक दो पदार्थ आ जाते है, उन्हे गड़रिये नही जानते। उन्हे उनकी जरूरत भी नही होती। वे केवल दो बार रोटी खाते है, हरी पत्तियोकी सब्जीके साथ, कभी चटनीके साथ, और कभी चुटकी-भर नमकके साथ। दिन-भर मेहनत करके वे केवल रोटी खाते है।

रोटी खानेके बाद वे अलसाकर सुस्त-से पड जाते। फिर कम्बल उठाकर घरसे बाहर निकलते। घडी-भर स्कूलके सामनेवाले मैदानमे, अपने साथियोके साथ-बैठकर बाते करते और फिर खिरकेके पास जाकर पड रहते। उनके ईमानदार कुत्ते, अपने बदन समेटकर, उनके पैताने बैठ जाते। खिरकेमे भेडे सो जाती, घरमे गडरियेकी स्त्री अपने बच्चोको लेकर सो जाती और खिरकेके द्वारके नज़दीक सिरहाने कुल्हाडी रखकर गडरिया सोता। सबकी नीद गहरी होती। पर गड़रिया और कुत्ता सोते समय भी चौकन्ना रहते।

सवेरे भेडे जागकर छटपटाती, ज़ोरसे खड-खड मूतती, लेडियाँ टपकाती। अलस्सुबह ही गडरिया जाग जाता। खिरकेमे भेडोका कोलाहल होता रहता। उन्हे खुला छोड़ते ही अहातेमे फिर बच्चे माँके थनोको हूदा

मारने लगते। सुबहकी ठण्डी हवाका सुख लेती हुई भेडे शान्तिसे खडी रह-कर अपने बच्चोको पिलाती। अहाता लेंडियोसे पट जाता। जगह-जगहपर मूत्रकी तहे जम जाती। हाथमे झाडू लेकर गडरिया अहातेको झाडकर साफ कर देता। उस कीमती खादको टोकरियोसे ढोकर हमेशाके ढेरपर डाल देता। अनाजकी तरह लगे लेंडियोके ये ढेर सालके अन्तमे पडोसके किसान खरीदकर ले जाते। इसलिए गडरिया इस कामको बडी सावधानी-से किया करता। जबतक यह काम पूरा होता, बच्चोके पेट दूधसे भर जाते। उछलते-कूदते, छोटी-छोटी दुमोको हिलाते हुए वे ऊनके गोले इधर-उधर घूमते रहते। फिर उन सबको इकट्ठा कर गडरिया कायदेसे उनके स्थानमे उन्हे बेड देता। घरवालीके द्वारा ताजी तैयार की गयी रोटी बकरी-के दूधके साथ जल्दी-जल्दी खाकर सुबहका नाश्ता करता। दोपहरको खाने-के लिए दो-चार रोटियाँ, मिरच और थोडा-सा नमक साथमे बाँध लेता और फिर कम्बल और लाठी उठाकर भेडोको इशारा करता। जंगल जाने-के लिए आतुर हुई भेडे उठती, ऊँचे स्वरमे चिल्लाकर बेंड दिये गये बच्चोसे कहती, हम जा रही है। बच्चोकी भीतर-ही-भीतर गडबडी शुरू हो जाती और फिर रह-रहकर पीछे देखती हुई, चिल्लाती हुई बच्चोवाली भेडे आगे बढने लगती।

सुबहकी कोमल किरणे तेज़ होनेसे पहले भेडोके अहाते खाली हो जाते। दूर जंगलोसे घुमाते हुए गडरिये भेडोको ले जाते। जब ये भेडे चली जाती तो गॉव सूना-सूना-सा लगता। जो खेती करते, वे बैलोको लेकर खेत चल देते। छोटे बच्चे बकरियोके पीछे निकल जाते। काम कर सकने-वाली औरते अपने बच्चोको गोदमें दबाये खेतोमे काम करने चल देती। उनके पीछे-पीछे पालतू कुत्ते जाते। दोपहरको चरखीपर ऊनसे सूत कातने-वाली बुढियोको छोडकर गाँवमे और कोई भी न दिखता था।

छह

आजकल नियमित रूपसे आठ-दस लडके पाठशाला आया करते थे—ऐसे लडके जिनसे कोई काम करते नही बनता था, जो बकरियोको चराने भी नही जा सकते थे। मै उन्हे 'ग,' गणेशका 'आ' आमका लिखना सिखा रहा था।

सूरज निकला, खिरकेमे बन्द की हुई भेडे बाहर निकली कि नग-धडंग लडके शालामे आ जाते। बिना मुँह धोये, बदनमे कुरता पहनकर, सिरपर लाल रगका कपडा लपेटे आते और गोबरसे लिपी हुई जमीनपर एक-दूसरेसे लडते हुए बैठे रहते। स्लेट-पट्टीपर पेन्सिले कुरकुराने लगती। थूकसे स्लेट साफ करनेका क्रम चलता। बार-बार कोई-न-कोई लडका छिगुनी दिखाकर बाहर चल देता। कुछ लडके शालाकी बाहरी दीवालके पत्थरोके पास पहुँच जाते और नोक बनानेके लिए अपनी पेन्सिले उनपर घिसा करते।

इस तरहकी घिसाई होते रहनेके कारण, बाहरी दीवालके बहुत-से पत्थर ऐसे दिखते जैसे उनपर किसीने भभूत रमा दी हो। पेन्सिले जल्दी चुक जाती थी, इसलिए लडकोके माँ-बाप मेरे पास आकर शिकायत करते। मेने अनेक बार कहा कि शालामे मुँह धोकर आना चाहिए, स्लेट-पट्टी पोछनेके लिए पानीसे भीगा हुआ चीथडेका गोला साथमे ले आना चाहिए, फिर भी सुधार न हुआ। मुँह धोनेके लिए यदि किसी लडकेको घर भेज देता, तो अकसर वह फिर लौटकर नही आया करता था। पानीसे भीगा हुआ चीथडेका गोला प्राय: दो घण्टेमे ही सूख जाता और फिर लड़के पहलीवाली सरल पद्धतिको ही काममे लाते। शालामे मच्छर बहुत थे। इसलिए किसी-न-किसी लडकेकी आँखे अवश्य आ जाती, उसकी छूत-से दूसरे लडकोकी आ जाती। आँखे दर्द करती, तो लड़के रोते-तडपते और उनकी महतारियाँ आँखे अच्छी होनेके लिए, दूधसे भीगा हुआ कपास सोते समय लडकोकी आँखोपर रखती। ग्राम-देवीकी मनौती मनाती।

सुबह शाला जल्दी शुरू होती और साढे दस-ग्यारह बजे छुट्टी हो जाती। शोर-गुल मचाते हुए, दौडते-भागते गडरियोंके लडके घर जाते। फिर तीनको शाला शुरू होती और छहको छुट्टी हो जाती। जिस तरह किसीको बहुत देर तक बन्द कर रखे और वह थक जाये, उस तरह शालामे बैठे-बैठे ये लडके थक जाया करते थे। फिर भी शालाके सामने मैदानमे लौन-पाटके खेलमे भीड लग जाती। चाँदनी रातमे यह खेल बहुत देर तक होता रहता। जगलसे लौटकर आये हुए जवान लडके भी इन खेलोमे शामिल हो जाते। कभी-कभी मुझे भी शामिल कर लेते। दूधिया चाँदनीमे खेलपर काफी रंग चढता और महावीरके चबूतरेपर, नीमके चबूतरेपर बैठकर, प्रौढ लोग खेल देखा करते। कभी-कभी शौकीन लोग लेज़िमके लिए गोलाकार खडे हो जाते।

घण्टे-दो घण्टे लेज़िम खनखनाती रहती। मैदानमे एक दो छोटे-बडे पत्थर और नाल पडे थे। जिन-जिन नवयुवकोने हाल ही मे कसरत करके अपना शरीर बनाना शुरू किया था, वे इनपर अपनी ताकत अज़माते थे। एक हाथसे उस भारी नालको (पत्थरका बना हुआ अर्धचन्द्राकृति घोडेके नालके आकारका वजन) जमीनसे उठाकर सीधा सिरके ऊपर ताननेकी उनमे स्पर्धा शुरू हो जाती थी। सिरके साफेको हाथमे लपेटकर लडके नाल उठाया करते। सिरके ऊपर ले जाकर उस नालको ज़मीनपर फेंक देते। ज़मीन हिल जाती। पत्थरके बने हुए बडे-बडे गोले दोनो हाथोसे पकडकर सीने तक ऊपर उठाये जाते और फिर ज़मीनपर पटक दिये जाते थे।

गाँवसे दो-तीन फर्लांग दूरके गाँवमे रहनेवाला विरा बनगरका एक लडका सता कुछ दिनोसे शालामे आने लगा था। पहलेवाले मास्टरके द्वारा चार अक्षर ठीक तरहसे पढा देनेके कारण, जो चार-छह लडके आगे तरक्की कर रहे थे उनमें सताका नम्बर पहला था। बारह-तेरह वर्षका वह लडका अच्छा ऊँचा-पूरा बढ गया था। दूसरे लड़कोमे जो बुद्धि न

थी, वह उसमे थी। पढनेमे रुचि थी। शालाकी छुट्टी होनेके बाद भी वह चबूतरेपर बैठकर अपना पाठ याद किया करता था। कभी-कभी मेरे कमरेमे जाकर गणित, भाषा आदि पूछा करता था। शिक्षाकी ओर उसकी रुचि देखकर मैने एक बार उससे पूछा, "कितनी क्लास पढनेका इरादा है तुम्हारा, सता?"

सताने कहा, "सातवी पास करनेका इरादा है।"

"इसके लिए तो शहर जाना पडेगा।"

"जाऊँगा।"

"तुम्हारा बाप तुम्हे पढानेको राज़ी है?"

"उसकी कौन सुनता है?"

"थोड़ा पढा तो हरसे गया, बहुत पढा तो घरसे गया," इस कहावतपर विश्वास रखनेवाला और लडके पढ गये तो फिर खेतीमे उन्हे दिलचस्पी नही होती और उजले कपडे पहनकर घूमनेका उन्हे शौक हो जाता है, यह राय रखनेवाला पिता इस लडकेको आगे पढने देगा या नही, इस विषयमे मै सशंक था। तिसपर भी मै सताकी ओर विशेष ध्यान देने लगा। इस शालासे यदि एक भी होशियार विद्यार्थी बाहर गया तो मेरे लिए काफी था। इस तरहका कोई लडका अकेला सता ही था। सहज ही वह मेरा प्रिय विद्यार्थी हो गया।

इन आठ-दस लडकोके अलावा रोज़ शालामे आकर बैठनेवाले और तीन व्यक्ति थे—आयबू मुलानी, आनन्द रामोशी और रामा बनगर।

ये तीनो बहुधा दिनमे थोडे समयके लिए ही क्यो न हो, शालामे आते और दीवालसे टिककर यूँ ही बैठे रहा करते। कुछ भी न बोलते, कुछ भी न करते, परन्तु आते जरूर। लडकोके मुँहकी ओर, मेरे मुँहकी ओर देखते हुए शान्तिपूर्वक बैठे रहते। इनसे मुझे कोई तकलीफ न हुआ करती। लेकिन लोग यूँ ही यहाँ आकर अपना समय क्यो नष्ट करते है, यह मुझे अवश्य खटकता था, मुझे ताज्जुब भी होता था। परन्तु बादमे मुझे पता

चला कि समय काटना ही उनका इसमे प्रधान हेतु था।

मैले बदनवाला और गन्दे कपडे पहननेवाला आयबू तो बेकार ही था। उसे कोई उद्योग नही करना पडता था। क्योकि मनुष्य उद्योग करता है पेट भरनेके लिए परन्तु आयबूकी यह समस्या हल हो चुकी थी। गाँववालोको जब पता चला कि वह मुलाणी (एक जाति जो बकरा काटती है—चिकवा) है तो उन्होने बडी खुशीसे उसे अपने गाँवमे रख लिया था। क्योकि मौकेपर बकरा काटनेके लिए उन्हे दूसरे गाँवसे किसी चिकवेको पकडकर लाना पडता था और इसमे व्यर्थ समय बरबाद होता था। यह एक अनायास सुभीता आप-ही-आप उनके गाँवमे आ गया था। यह सहूलियत मिलते ही रोटीकी समस्या आयबूने अपने-आप ही हल कर डाली। दोपहर हुई कि वह दो-चार घरोसे गरम-गरम रोटियाँ और दाल ले आता। कही भी बैठ जाता और खाकर डकार लेता। उसने सारा बखेडा ही मिटा दिया था। आयबूकी आवश्यकताएँ अधिक न थी, और गाँवमे दो-चार रोटियोका अभाव न था। सोनेके लिए स्थानकी भी उसे कोई अडचन न थी। पुलिस चौकी थी, मैदान था, मेरा कमरा था। ओढने-बिछानेके वस्त्रोकी उसे कभी ज़रूरत न रहती। भटकनेवाले कुत्ते या जगलके जानवर जिस तरह सोते है, उसी तरह निश्चिन्त होकर, किसी भी जगह वह सो सकता था। ठण्ड और वर्षाको सहन करनेके लिए भी उसने अपना बदन मज़बूत बना लिया था।

पैतीस-चालीसकी उम्रका आनन्दा रामोशी भी निठल्ला ही था। वह बौना और सूखा हुआ था। दाढीकी खूँटे हमेशा बढी हुई। बडे-बडे बालोपर गान्धी टोपी। बदनमे सिर्फ कोट और नीचे तग हाफ-पेण्ट। इस वेशमे वह हमेशा रहा करता। गाँवमे रामोशियो (एक जाति, जो पहले डाक ले जाने या प्रहरीका काम किया करती थी।) के जो दो-चार घर थे उन्हीमे-से यह एक था। ये सभी रामोशी कभी कोई भी उद्योग नही किया करते थे, फिर भी उनकी उपजीविका चलती थी।

जिस दिन भूखे रहनेका मौका आता, उस दिन आनन्दा एक कम्बल काँधेपर डाल लेता और तीसरे पहर गाँवसे रवाना हो जाता। गाँवके आस-पास तीन-चार मीलपर दूसरे गाँवके खेत थे। उन खेतोकी मेडोपर वह घूमता रहता। खेतमे खडा खेतका मालिक यदि पूछता, "कहाँ चले आनन्दा ?"

तो यह कह देता, "जाता हूँ रामा लिगाडके खेतमे।"

रामा लिगाड पूछता, "कहाँ चले आनन्दा ?"

तो यह उससे राम-राम करके कहता, "तुका कारण्डाके खेतमे जा रहा हूँ।"

तुका कारण्डा पूछता, "क्यो आनन्दा, आज इधर किस तरफ़ ?"

तो आनन्दा आगे हाथ बढाता हुआ कह देता, " ज़रा भोसले महाराजकी बाडी तक हो आता हूँ।"

इस तरह घूम-फिरकर वह यह जानकारी हासिल कर लेता कि कहाँ प्याज लगे है, कहाँ बैगन लगे है, कहाँ ज्वार है, और कहाँ बाजरा है। और जब रात हो जाती, खेतवाले अपने-अपने घर लौट जाते और रखवाल सो जाते, तब किसी खेतसे चार भुट्टे, कहीसे मुट्ठी-भर मिरचे, कहीसे बैगन, इस तरह वह कम्बलकी खोल भरता और आधी रातके करीब अपने गाँव लौट आता था। सुबह होते तक वह उन भुट्टोको मीमकर दाने निकाल लेता और उसकी घरवाली दानोको पीसकर आटा भी तैयार कर लेती। बैगन भुनकर तैयार हो जाते ? इतने बडे खेतसे यदि चार-छह भुट्टे निकल गये तो मालिकके ध्यानमे यह बात नही आती थी। पक्षी खा गये या किसी जानवर-द्वारा वे नोच लिये गये, इसका पता न चलता था।

आनन्दापर किसीको शक न होता था। बरसोसे उसका यह धन्धा चला आता था। छुट-पुट चोरियाँ करना ही उसने अपने जीवनका रोज़गार निश्चित कर लिया था। और उसके तरीके निश्चित हो चुके थे। उसकी कुशलताके कारण उसका यह रोज़गार बडे धडल्लेसे चल रहा था। कई बार छोटी-मोटी चोरियोको दस-पन्द्रह दिनोमे एकाध बार मालिकके पास

जाकर वह स्वीकार भी कर लेता।

कभी फुरसतके वक्त दो साथी लेकर वह जगलमे जाता और वहाँसे एकाध खरगोश या एकाध गोह मारकर ले आता। कई दिनो तक एक ही प्रकारका भोजन करते रहनेसे मनमें अरुचि पैदा हो जाती, तो उसे मिटानेके लिए वह कहीसे किसीकी भेड चुरा लाता, उसे काटना, पकाना और खाना—ये सब काम सीधे जंगलमे ही किसी सूने स्थानपर पूरे हो जाया करते। आनन्दाके भाई-बन्द इस तरह जी रहे थे। आनन्दा भी कभी किसी समय खेतोमे मिल जानेवाले कामको यदि छोड दे, तो बरसो तक उसका धन्धा यही था।

रामा बनगर ज़रूर एक बाल-बच्चेवाला मनुष्य था। उम्र थी यही कोई तीस-पैतीस। होठोपर बडी-बडी मूँछे और बडा जबडा। इसके कारण वह बडा उजड्ड दिखता। उसके घर सौ भेडे थी। परन्तु उनकी देखभाल उसका बाप किया करता था, उसका लडका किया करता था। रामाको करनेके लिए कोई काम न था। न था कहनेके बजाय यही कहना चाहिए कि वह कोई काम न करता था। वह भी शालामे आकर बेकार बैठा रहा करता।

कई दिनोसे वह इसी तरह मौन धारण किये बैठा रहता था। शाला-की छुट्टी हो जानेपर अपना कम्बल उठाकर वह अपने घर चल दिया करता था। पहले-पहले मै उससे पूछा करता, "क्यो कुछ काम है क्या? कैसे आये?" तो कठोर आवाज़मे वह इसका उत्तर देता, "कोई काम नही। यूँ ही चला आया।"

बहुत दिनो तक शालामे इस तरह बैठ-बैठकर एक बार वह बोला, "मास्टर, मेरा एक काम है तुमसे।"

शालाकी छुट्टी हो गयी थी। आनन्दा और आयबू उठकर चल दिये थे। मैं और रामा ही शालामे रह गये थे। कभी न बोलनेवाला यह मनुष्य आज बोला इसका मुझे ताज्जुब हुआ। मुझसे इसका क्या काम हो

सकती है, मै कोई अन्दाज न लगा सका। "क्या है, कहो ?"—मैने कहा।

रामा एकदम नही बोला। उसने गरदन नीचे झुका ली और थोडी देर सोचता-सा रहा। शायद उसके मनमे यह चल रहा होगा कि कहूँ या न कहूँ।

उसका सकोच मिटानेके लिए मैने कहा, "किस काममे आये हो, रामभाऊ ?"

फिर इधर-उधर देखकर रामा बोला, "मेरे पास एक रानी छाप रुपया है।"

"अच्छा तो फिर ?"

"कहते है, उसका चलन अब बन्द हो गया है। मुझ गरीबका अकारण नुकसान हो रहा है।"

"हाँ, बन्द तो हो गया है। अब बाजारमे वह नही चलता।"

"तुम शहर जाते रहते हो। अगर तुम्हारे प्रभावसे वह कही चल जाये तो मुझपर बडी मेहरबानी होगी।"

वह चलेगा या नही इसकी मुझे कोई कल्पना न थी। कभी ऐसा मौका न आया था। परन्तु यह सोचकर कि प्रयत्न करनेमे क्या हर्ज है, मैने कहा, "कोशिश करूँगा। मुझे लाकर दे दो।"

रामा 'हाँ' कहकर अपने घर चला गया। रातको मेरे घर आकर उसने वह रुपया मुझे दे दिया। इस तरह सँभालकर दिया जैसे कोई कीमती जेवर दे रहा हो। उसे देते समय उसका हृदय धक-धक कर रहा था यह मै ताड गया। उसे शक था, कही यह मास्टर मेरा रुपया ही न हजम कर जाये ?

सात

शनिवारको सुबह शालाकी छुट्टीके बाद मै विभूतवाडी गया। डेढ दिन घरमे बिताकर लौटा और शालामे कामपर हाजिर हो गया। रामाके

रुपयेकी मुझे याद आयी। मै उसे भँजाकर ले आया था। पर दो-चार दिन रामा शालामे नही आया। पूछ-ताछ करनेपर मुझे पता चला कि उसकी एक भेड गुम हो गयी है और उसे खोजनेके लिए वह दूसरे गाँव चला गया है।

इसके बाद जब वह शालामे आया तो मैने जेबसे रेजगारी निकाली और उसे दे दी।

"तुम्हारा रुपया मैने भँजा लिया है। ये लो अपने पैसे।"

इतना कहकर मै लडकोको पढाने लगा। रेज़गारीको धोतीके पल्लेमे बाँधकर रामा बाहर कब चला गया, इसका मुझे पता तक न चला।

रातको भोजनके बाद मै बैठा हुआ पढ रहा था, इसी समय वह लौटकर आया। आज तक पहले वह कभी रातको मेरे घर नही आया, और ज़मीनपर बैठ गया।

मैने पूछा, "क्यो रामभाऊ, तुम्हारी भेड मिल गयी ?"

"हाँ, मिल गयी। यही पडोसके गाँवमे ही भाग गयी थी।"

"पर तुम्हे तो चार दिन लग गये ?"

"मेटकरवाडीमे एक मेहमानके घर चला गया था।"

मै आगे पढने लगा। रामा बैठा रहा और बोला, "मास्टर, मेरे रुपयेकी रेज़गारी किस तरह लाये ?"

"एक बनियेकी दुकानसे ले आया। वह मेरी पहचानका था।"

"यह नही पूछ रहा हूँ। किस तरहसे मतलब है, टेटमे रखकर लाये या कोटकी जेबमे रखकर ?"

मै प्रश्नके रुखको न समझ सका। कहा, "पाजामेकी जेबमे रखकर लाया। क्यो ?"

"बिलकुल पक्का ?"

"हाँ, क्यो ?"

"फिर ज़रा याद करके देखो तुम्हारे भी पैसे थे क्या उस जेबमे ?"

उत्तर देनेमे मुझे कुछ समय लग गया ।

"थे । परन्तु क्यो ?"

"हाँ, तो अब हिसाब मिल गया। मेरे पास ज्यादा पैसे पहुँच गये है।"

और यह कहकर उसने जेबसे बटुवा निकाला, और उसमे-से दो आने निकालकर मेरे सामने रख दिये ।

उन दो आनोको देखते ही सारा मामला मेरी समझमे आ गया। रानी छाप रुपया बन्द हो गया था । फिर भी उसमे चाँदी होनेके कारण कुछ व्यापारी अठारह आने देकर उसे खरीद लेते थे । इस हिसाबके अनुसार रामाके रुपयेके बदलेमे भी अठारह आने मिले थे । रामाको पैसे देते ममय यह बात उसे बतानेके लिए मै भूल गया था । रामाने घर जाकर चार-चार आनेके चार ढेर लगाकर देखा । परन्तु चार ढेर लगानेके बाद भी, दो आने ऊपर बचने लगे । इसलिए सहज ही उसकी यह धारणा हो गयी कि देते समय मास्टरने भूलसे मुझे अधिक पैसे दे दिये है और यही पूछनेके लिए इस समय वह आया था ।

यह सब बात उसके सामने मैने स्पष्ट कर दी ओर वे दो आने उसे लौटा दिये । तब उसमे-का एक आना मेरी ओर फेंककर वह बोला, "अच्छा तो ले । यह एक आना तू रख ले, पान-तमाकूके लिए ।"

मैने वह एक आना नही लिया । रामाने बहुत आग्रह किया । फिर भी नही लिया ।

रामाने पूछा, "तो फिर रानी छाप रुपया चल जाता है ?"

"हाँ, चल जाता है—सिर्फ चलता ही नही बल्कि उससे दो आनेका फायदा भी होता है ।"

"यह हम लोग क्या जाने ? गॉवमे बहुत-से लोगोके पास ऐसे रुपये पडे है । दस-बारह निकल आयेगे । भँजाकर ले आओगे उन्हे ?"

"गाँवकी बात गॉव जाने । तुम्हारे पास हो तो ले आना । मै भँजा लाऊँगा ।"

अगले सप्ताह जब मै घर जाने लगा तब रामाने बारह रुपये लाकर मुझे दिये। उन्हे मै अठारह आनेके हिसाबसे भँजा लाया। पान-तमाकूके लिए चार आने ले लेनेके लिए रामाने मुझसे फिर आग्रह किया। मैने इनकार कर दिया।

फिर उसने रातको मुझे अपने घर बुलाया। उस अंधेरेमे घरमे मैने झुककर प्रवेश किया, तब चूल्हेके सामने चिलम पीता हुआ एक साठ-सत्तर वर्षका बूढा बैठा हुआ था। रामाकी औरत काम कर रही थी।

बैठनेके लिए कम्बल बिछाकर रामाने एक थालीमे मुझे बकरीका दूध पीनेके लिए दिया। वह ठण्डा हो तबतक मै ठहरा रहा। तभी चूल्हेके सामने बैठे हुए बूढेकी तरफ देखकर रामा बोला, "यह मेरा बाप है।"

बूढेने बदनपर ओढे हुए कम्बलमे-से जल्दी-जल्दी अपने हाथ बाहर निकाले और राम-राम किया।

रामाने कहा, "सत्तर बरस हो गये। जब आठ बरसका था तबसे भेडें चरा रहा है यह। इसे दूसरा काम कुछ नही आता?"

आठ वर्षकी उम्रसे आज तक इस मनुष्यने भेडे चरानेके सिवा और कोई काम नही किया था? और आज भी वह वही कर रहा था। नातीके साथ दिन-भर भेडाके पीछे घूम रहा था। मुँहपर झुर्रियोका जाला हो गया था। बाल बिलकुल पक गये थे, फिर भी यह बूढा हाथमे लाठी लेकर भेडोके पीछे जाता था। उसे दूसरा कोई काम नही आता था। बैलगाडी कैसे जोती जाती है, यह वह न बता सकता था। परन्तु कुत्तेकी तरह उसे भेडियाकी बास आ जाया करती थी। खेतमे रातके समय खादके लिए भेडोको बैठाकर एकाएक बूढा नाक सूँ-सूँ करके कह देता, "ऐ लडको, सावधान हो जाओ रे, भेडिया है आस-पास!"

लडके तैयार हो जाते! कुत्ते भौचक्के-से होकर देखने लगते और दूर किसी ऊँचे स्थानपर खडा होकर टोह लगानेवाला भेडिया दिखायी देता। देखभालके लिए सावधान बैठे-बैठे उसे ऐसी आदत पड गयी थी कि बदन-

को फैलाकर सोना वह भूल ही गया था! बैल या घोडा जिस तरह बैठे-बैठे ही नीद लेता है उसी तरह यह बूढा बैठे-बैठे ही नीद लिया करता था। जमीनपर लेटनेकी उसे बिलकुल जरूरत ही नही मालूम पडती थी! एक-दूसरेके खिरकोमे मिली हुई भेडोको गडरिये किस तरह पहचान लेते है, यह हमे एक पहेली मालूम होती है, परन्तु यह बूढा काकूबा गडरिया इससे भी आगे बढा हुआ था। जब नये सिरेसे भेडोका खिरका तैयार करना पडता है, तब मालिकको भेडे खरीदकर ही यह रोजगार शुरू नही करना पडता। नये सिरेसे खिरका शुरू करनेवाला आदमी नारियलकी एक कटोरी और उसमे थोडी हल्दीकी बुकनी डालकर किसी अच्छे गडरियेके पास जाता है और उसे वह नारियलकी कटोरी देकर उससे कहता है, "मै खिरका शुरू करना चाहता हूँ। मुझे बीज दो।"

फिर वह गडरिया अपने खिरकेसे एक बढिया भेड निकालकर उस माँगनेवालेको मुफ्तमे दे देता है। इस तरह दस-पन्द्रह भेड प्राप्त कर खिरका आरम्भ किया जाता है और दो-तीन सालके भीतर बीज माँगनेवाला दूसरोको बीज दे सकता है। परन्तु एक बात है कि बीजके लिए लायी गयी भेडे न बेची जा सकती है और न काटी जा सकती है। इस नियमका सख्तीसे पालन किया जाता है।

एक बार काकूबासे एक दूसरे गाँवका आदमी खिरका शुरू करनेके लिए बीजकी हैसियतसे दो-चार भेडे ले गया। आगे, एक-दो सालके बाद बूढा उस गाँवमे गया, तब उस मनुष्यने 'च्-च्' करके कहा, "काकूबा, तुम्हारी दी हुई चारो भेडे मर गयी।"

"मर गयी! उनकी कोई सन्तान?"

"नही, न सन्तान हुई न कुछ। बीज ही नष्ट हो गया।"

बूढेको यह बात सच न मालूम हुई। वह बोला, "तुम अपना खिरका दिखाओ मुझे।"

उस मनुष्यने बूढेको अपना खिरका दिखाया।

बहुत देर तक भेडोको ध्यानपूर्वक देखता हुआ बूढा घूमता रहा और कुछ देरके बाद उसने अपनी भेडोकी सन्तति खोज निकाली। वह बोला, "ये दो बच्चे मेरी भेडके है।"

और यह बात सच थी। लज्जित हुए उस मनुष्यने भी उसे स्वीकार किया।

रामा बनगरने अपने बापके बारेमे यह बात जब मुझे बतायी, तो मुझे बडा आश्चर्य हुआ। मैने काकूबासे पूछा, "काकूबा, यह तुमने कैसे पहचाना ?"

बूढा बोला, "चेहरा, रग और रूपका पता लगे बिना कैसे रहेगा? अब तुम ही हो। तुम्हारे बापका, तुम्हारी माँका, तुम्हारे आजाका, कुछ-न-कुछ तो तुममे उतरा ही होगा न! नाक हो, कान हो, आँख हो, कुछ-न-कुछ उनपर पडा ही होगा।"

फिर रामा मुझे थोडा भीतर ले गया। दीयेकी रोशनीमे वह भीतर गया और एक छोटा-सा घडा लेकर बाहर आया। उसमे चाँदीके नकद रुपये भरे थे। सब रानी छापके। मै देखता ही रह गया। मुझे भूलकर भी यह शका न हुई थी कि इस गडरियेके यहाँ इतने रुपये होगे।

रामाने कहा, "कई बरसोसे जमा करता आया हूँ। इन्हे गिन लो। अपने साथ ले जाओ और भँजाकर ले आना।"

मैने रुपये गिने। तीन-सौ चालीस थे। सख्या बताते ही वह मान गया और सारे रुपये उसने बिना किसी भयके मेरे हवाले कर दिये। मास्टरने पाँच रुपये कम गिने होगे, अथवा मास्टर इतने रुपये ले जा रहा है, इनमे-से वह कुछ खा जायेगा, ऐसी कोई शका उसके मनमे न आयी।

मैने कहा, "रामभाऊ, इतने रुपयोको भँजानेमे कुछ दिन लग जायेगे। तुम्हे कोई अड़चन तो न होगी ?"

रामाने कहा, "आरामसे भँजाओ। महीना-पन्द्रह दिन भी लग जाये, फिर भी कोई हर्ज नही।" मै उठकर घर आ गया।

आठ

मईका महीना समाप्त हुआ। जून आया। गरमीके दिन चले गये। वर्षाका आगमन हुआ। इन्द्रगोप दिखने लगे और मृगका उदय हुआ। आकाश काला पड गया। स्वच्छ धूप लुप्त हो गयी। हवा बहने लगी। पेड-पौधे जोर-जोरसे हिलने लगे। धूल और मिट्टी चारो ओर उडने लगी। आकाशकी ओर देखकर लोग कहने लगे, "हवा पानीको उडा ले जायेगी। परन्तु वह न हुआ। पानीकी झडियाँ आने लगी। मृगकी वर्षा बनगरवाडी-को पीटती रही। आवारा कुत्ते दीवालकी ओटमे खडे हो गये। पानी जल्दी खुलनेके लक्षण नही दिख रहे थे। गडरियोकी दौड-धूप शुरू हो गयी। सिर-पर खाली बोरे ओढकर उन्होने खुले बाडेमे बँधी हुई भेडोको खोला और झोपडियोमे ले जाकर बन्द कर दिया। झोपडीके भीतर एक-दूसरेसे सटकर खडी हुई भेडोने अग झटकारे। भीगे हुए ऊनकी महक गडरियोके घरोमे छा गयी। झडीपर-झडी आयी। तपी हुई जमीनसे भाप निकली। धूल उडी। कीचड हो गया और फिर वह भी बह गया। धूलके नीचे दबे पत्थर खुल गये।

फूससे छाये हुए घर चूने लगे। सुघराईसे लीपी हुई जमीन जगह-जगहपर गीली होकर उखडने लगी, तब गडरियोकी स्त्रियाँ क्रोधसे तिल-मिलायी और चू रहे स्थानोपर उन्होने छोटे-बडे बरतन रख दिये। भेडोकी गडबडीके बीच भी भरे हुए बरतनोमे टपकनेवाले पानीकी आवाज कानको पकाने लगी। घाबेके घर चूने लगे, तब सिरपर खाली बोरे ओढकर गडरिये अटारीपर चढे। जहाँ पानी भरा हुआ था—घाबेमे छेदकर भीतर घुस रहा था, उन छेदोको उन्होने पत्थर और मिट्टीसे उस समयके लिए बन्द कर दिया।

हवामे सर्दी आयी। गडरियोकी कुल्हाडियोपर मुर्चा लगने लगा और उनकी घरवालियो-द्वारा सुरक्षित रखा हुआ नमक पझरने लगा।

सुआ-रगी घासने जमीनके बाहर सिर निकाला । आँगनमे, घावोंपर, छप्परोपर—जहाँ न उगनी चाहिए वहाँ घास उगने लगी । सब तरफ जग-मगाता हुआ सुआ-रग बिखरा हुआ दिखने लगा ।

अँगूठेके नाखूनपर बैठ सके, इतने बारीक मेढक एकाएक दिखायी देने लगे । रास्तेमे चलते हुए उडने लगे । छोटे-छोटे पखोवाले सम्पाती हजारो-लाखोको तादादमे उडने लगे और चिडियोने उन्हे हडपना शुरू किया । उनमे जो बचे, वे रातको दोयोपर झपटकर मर गये । दो दिनके बाद उनके महीन पख जगह-जगह गलकर पडे हुए दिखायी दिये और पख-विहीन वे नन्हे इल्लीनुमा पीले रगके कीडे लुप्त हो गये । मटमैले रगके लम्बे-लम्बे जन्तु एक-दूसरेकी पीठपर बैठकर अनेक पैरोपर चलने लगे । अँगुली बराबर काले लम्बे कीडे आलसीकी तरह इधर-उधर घूमने लगे । मनुष्य या जानवरका स्पर्श होते ही कुण्डली मारकर पडने लगे । गडरियोके लडके जान-बूझकर उन्हे हाथ लगाते और जब वे उनके स्पर्शसे कुण्डलीरूप हो जाते तो उन्हे हथेलीपर लेकर पैसेकी तरह नचाने लगते । मक्खियाँ बे-हिसाब बढ गयी । झोपडियोके भीतर भिनभिनाने लगी । भेडो-की नाकोपर बैठने लगी । मच्छर बहुत हो गये और गडरियोकी आँखोके सामने उडने लगे ।

जुती पडी हुई जमीनोके ढेले गल गये । जमीनने पानी पी लिया । जगह-जगह पोखर भर गये और नीले-काले आकाशका प्रतिबिम्ब उनमे दिखायी देने लगा । खेतोमे-से चलते समय मनुष्यो, भेडो और मवेशियोके पैरोमे कीचडके लौदे चिपकने लगे । चरोखर भीग गया और हरे मैदानमे काली भेडे घूमने लगी । और उनकी पीठपर बैठकर काले कोतवाल भर्रायी हुई आवाजे निकालने लगे । इस सावधानीसे कि कोई उन्हे देख न ले चित्तूर ऊँचे स्वरमे चिल्लाने लगे ।

नौ

बनगरवाडोकी पाठशाला लगनेका कोई निश्चित समय न था। सारी दुनियामे गरमीकी छुट्टी होती तो इस शालामे फसली मौसमोपैर छुट्टी होती थी। मनमे आता कि तभी शाला लगे जिस तरह मोटरकी सब सीटे भर जानेपर मोटर-सर्विसवाले मोटर छोडते है, उसी तरह जब शाला पूरी भर जाती तभो मास्टर पढाना शुरू करता। इसके कारण मास्टरका क्षेत्र शाला तक ही मर्यादित नही रहता था—रह नही सकता था। कोई आकर मास्टरसे चिट्ठी लिखाता, कोई अर्ज़ी लिखाता। मै इतवारकी छुट्टीके दिन अपने घर जाता, तब मेरे कोटकी जेबें डाकमे डालनेको दिये गये पत्रोंसे भरी रहती। इन कामोको जब मै किसी शिकायतके बिना करने लगा तो नौबत यह आयी कि कोई भी आता और मुझसे कुछ भी सलाह लेता या अपना कोई भी काम करनेको बता देता। पति-पत्नीकी लडाईसे लेकर भेडो-की चोरियो तकके सब मामले मास्टरके पास आने लगे। मास्टर पढा-लिखा है, बुद्धिमान् है, इसलिए उसे कायदे और कानून जरूर मालूम होना चाहिए। उसमे भले और बुरेको पहचाननेकी अकल जरूर होनी चाहिए?

इस कारण यद्यपि शालामे काम न रहा, फिर भी इस तरहके धन्धोमे समय बीतने लगा। ऊपरसे यदि साहब लोग शिकायत करते कि शालामे लडकोकी दर्ज-संख्या बहुत कम है, तो यह कारण देकर कि शाला अभी नयी है या यह फसली मौसम है, मै शाला सँभालने लगा। मेरी शाला सब कुछ थी—अदालत, थाना, म्यूनिसिपल्टी आदि सब। और मै मास्टर, जज, पुलिस, दारोगा और स्टाम्प-वेण्डर आदि सभी कुछ था। गाँवके झगडे बहुधा गाँवके बाहर नही जाते थे। सारा फैसला वही सरकारी कार्यालयके सामने दस मनुष्योके बीच सुना दिया जाता था। मास्टर और पटेल, काकूबा और शेकूबा-जैसे वृद्ध लोग न्याय किया करते थे। दस आदमी जो फैसला दे देते थे उसे अपराधी अस्वीकार नही करता था। उसे जो सजा

दी जाती, जो न्याय मिलता, उसे वह मजूर कर लेता। यदि उसे वह न्याय न जँचता, तो अपील करनेका उसे अधिकार था। इस अपीलके लिए गड़रियोके देवताको बुलाना पडता। उस समय गडरियोके जाति और कुल-के बहुतसे लोग इकट्ठे होते और फिर न्याय किया जाता। परन्तु ऐसा कोई न करता। क्योकि देवताको बुलानेमे एक बडा भोज देना पडता और इतने बडे भोजके लिए सात-आठ-सौ रुपये खर्च करने पडते।

गाँवमे विवाह भी एकदम एक साथ कर देनेका रिवाज था। हर-साल एक मुहूर्त ले लिया जाता और उस दिन गाँवके सारे विवाह निपटा दिये जाते। इसके कारण सारे गाँवको खिलानेका बोझ एक ही पर न पडता था। जो दस-बारह विवाह होते, उनमे हर-एकके हिस्सेमे दस-बीस पत्तले पडती। इम विवाहके दिन यदि धनाभावके कारण किमीका काम रुक जाता तो सारा गाँव एकत्र होता और, "अमुक आदमी अड गया है, आओ, हम सब मिलकर उसे धक्का दे"—यह विचार पक्का हो जाता। सब लोग मिलकर उसका बोझ उठाते और गरजीके घरका विवाह अच्छी तरह-से सम्पन्न हो जाता।

दादूकी धमकियोकी जरा भी परवाह न कर मै बेधडक गाँववालोमे मिल-जुल गया था। ऐसी परिस्थिति हो गयी थी कि मास्टरके बिना गाँव-वालोका पत्ता न हिलता था।

गाँवमे किसान अँगुलियोपर गिने जाये, इतने भी न थे, पर थे। मृगकी वर्षासे धरतीमे घासके अंकुर फूटे। वे खूब बढे और फैले। बोनीसे पहले एक बार जमीनकी जुताई करके किसानोने इस घासका नाश किया और फिर आर्द्राकी झडी लगी। खेतोमे कीचड हो गया। लोग बतरकी राह देखने लगे। वह भी आयी। कीचड सूखा। खेत इतने सूख गये कि उनमे बैलोके पैर नही धँसते थे, मिट्टी इतनी भुरभुरी हो गयी कि नारीका छेद बन्द होनेकी कोई सम्भावना न रही। ओल भीतर चली गयी और ऊपरसे जमीन सूख गयी। तब बोनीकी दौड-धूप शुरू हुई। बाजरा, मक्का आदि-

की बोनी होने लगी। बीज लेकर और हल जोतकर पौ फटते ही किसान खेतोकी ओर जाने लगे।

इस बोनीकी गडबडीमे शेकू मेरे पास आया। यह आदमी बहुधा गाँवमे नही दिखा करता था। उसके पास दो-तीन एकड जमीन थी। उसीकी सेवामे वह व्यस्त रहा करता था। खून-पसीना एक किया करता था। इतना ही वह जानता था। सुबह किरन फूटनेसे पहले ही बदनपर एक धोती ओढे वह मेरे पास आया। उस धोतीको उसने इस ढगसे ओढा था कि उसका सूखा हुआ चेहरा और चल-चलकर खुरदरे हुए बेढब नाखूनोंवाले उसके पैर ही भर दिखायी दे रहे थे।

मै बैठा हुआ था। आयबू भी बैठा था।

शेकू खडे-खडे ही बोला, "ए मास्टर, मुझे एक बैल ला दे न कहीसे! मेरी बोनी रुकी पडी है।"

मै स्कूल-मास्टर था। मेरे पास बैल कहाँ! परन्तु शेकूसे यह कहनेमे कोई मतलब न था। वह बोला, "तुम माँग दोगे तो मिल जायेगा। मेरे पास एक ही है। एक मर गया है। दूसरा मिलेगा, तभी बोनी कर सकूँगा। नही तो, पूरे साल भूखो मरनेकी बारी है।"

मैने कहा, "पर यह बताओ कि बैल किसके पास है तभी तो मै उससे माँगूँगा।"

"जिसके पास है वह अपनी बोनी कर रहा है। अपना काम रोककर कौन देगा? मैने सबसे माँगकर देख लिया।"

"फिर मै किससे माँगूँ?"

"अब यह तुम जानो। कुछ भी करो, पर मेरी यह अड़चन दूर कर दो। सारा गाँव कहता है कि मास्टर वक्तपर काम आता है। फिर मेरे लिए ही क्यो इतने तन रहे हो?"

अभीतक आयबू चुप था। वह शेकूकी ओर मुँह घुमाकर बोला, "कैसा पागल है रे शेकू? मास्टरके पास बैल कहाँसे आयेंगे? वे क्या कोई

किसान है या बनजारे ? जो भी चाहा माँगने आ गया ? जा, घर जा ।"

आयबूके इस तरह फटकारते ही शेकू नरम पडा । उसे शक हुआ कि उससे कोई गलती तो नही हो रही है ।

"घर तो जाना ही है । पर मास्टर, देखो अगर कुछ मेरी भी मदद कर सको तो !" वह नरम होकर बोला ।

आयबू निश्चयपूर्वक उठा । उसने शेकूका कन्धा पकडकर उसे सीढियोसे नीचे उतारा और कहा, "बडा अक्लमन्द है रे शेकू ? बैल क्या मास्टरकी टेटमे रखा है !"

और बडी दीनतासे कुछ पुटपुटाता हुआ शेकू चल दिया ।

शेकूको बाहर खदेडकर आयबू लौटा और बोला, "उसकी बातपर कोई ध्यान न देना, मास्टर ? वह साला बुद्धू है !"

मुझे रह-रहकर लगा कि गाँवमे मेरा काम सिर्फ क-ख-ग पढाने-लिखाने-का ही है । परन्तु इनकी जरूरते कुछ दूसरी ही है । आयबूको कुटुम्बकी जरूरत है । आनन्दको रोटीकी जरूरत है । शेकूको बैल चाहिए ।

दो दिन शेकू पूरे गाँवमे भटकता रहा, पर उसे बैल न मिला । वह घर जाकर चुपके-से बैठ गया । घरवालीसे बोला, "मेरी कही कुछ न चली ।"

शेकूकी औरत गाँवकी सब औरतोसे एक हाथ अधिक ऊँची थी । उसके शरीरमे शक्ति भी काफी थी । खेतके सब काम वह मरदोकी बराबरीसे किया करती थी । जब उसने देखा कि पति सिरपर हाथ रखे बैठा है, तब 'वह बोली, 'किससे माँगा था ?"

"सारे गाँव-भर घूमा कोई बैल नही देता ।"

"फिर अब क्या होगा ?"

"इस साल भूखो मरना होगा । इसके सिवा और क्या होगा ?"

पतिकी यह बात पत्नीने सुनी, तेल खत्म हो रहे दीपककी तरह उसकी आँखोको देखा और धीरजसे बोली, "कल बोनी करेंगे ।"

• "और बैल कहाँसे आयेगा ?"

"मै लाऊँगी ।"

"तू कहाँसे लायेगी ?"

"जहाँसे मेरा जी चाहेगा ।"

"फिर भी, सुनू तो—?"

"इससे तुम्हे क्या वास्ता ? मै तो बैल ले आऊँगी । तुम सुबह उठकर खेतमे चले जाना । बैल आ जायेगा ।"

यह सोचता हुआ कि औरत आखिर किसका बैल लायेगी । सुबह शेकू उठा और नारीको कन्धेपर रखे और एक बैल एक हाथमे पकडे हुए, खेतमे गया । गाँवकी ओर मुँह करके मेडपर बैठ गया और पत्नीके आनेकी राह देखने लगा ।

एक घण्टा हो गया और शेकूकी औरत आती हुई दिखायी दी । पर उसके पास बैल न था । शेकूका मुँह उतर गया । औरतने शर्त लगाकर कहा था कि वह बैल ले आयेगी । पर उसे भी बैल नही मिला है । अब बोनी नही होगी । सबकी हो जानेके बाद यदि बैल मिला तो किस काम-का ? बो भी दूँगा तो फसल पिछड जायेगी । ठीक तरहसे बढेगी नही ।

साल-भरका अनाज यदि न जुटा तो भूखो रहना पडेगा । गाँव छोड-कर किसी रोजगारकी तलाशमे गाँव-गाँव चक्कर काटने पडेंगे ।

यह बात मनमे आते ही वह मेहनती गडरिया उदास हो गया और उसकी तगडी औरत खेतमे आयी ।

"क्यो री, बैल नही मिला ?"

"नही मिले तो क्या हो गया ? नारी जोतो ।"

"पर दूसरा बैल कहाँ है ?"

"मै तो हूँ । एक तरफ बैल जोतो । दूसरी तरफ मै जुतकर खीचूँगी !"

पत्नीकी यह बात सुनकर शेकू काँप उठा । उसकी समझमे न आया कि क्या करूँ ।

"छिः ! यह कैसे होगा ?"

परन्तु उस औरतने तो दृढ निश्चय ही कर लिया था। उसे अपनी ताकतपर पूरा भरोसा था।

"अब कुछ सोचने-साचनेकी जरूरत नही है। उठो जल्दी और नारी जोतो।"

यह देखते ही कि पति अपनी जगहसे टमसे-मस नही होता है और नीचे गरदन लटकाये बैठा है, वह स्वयं उठी और नारीमे एक तरफ बैल जोता और जुआडीका दूसरा सिरा अपने कन्धेपर रख लिया। फिर चिल्लाकर बोली, "हाँ, हाँको अब।"

फिर हृदयको पत्थर बनाकर वह दुर्बल शरीरवाला पति उठा और हलको मूठ पकडकर उसने इशारा किया। बैल हिला, औरत हिली। नारीका कुसिया गीली जमीनमे घुसा और जमीन चीरता हुआ आगे बढने लगा। शेकूने मुट्ठीसे बीज छोडा। पोले बाँसकी नलीसे दाने नीचे उतरे और जमीनपर बिछने लगे। अपने बदनकी ताकतसे शेकूकी औरत, बैलके साथ नारी खीचती रही।

सुबहसे दोपहर तक शेकूने बोनी की। फिर उसने और हाँफती हुई पत्नीने चुपचाप कलेवा किया। शेकूसे कुछ भी न बोलते बनता था। पत्नी-ने कुछ कहा। फिर दोनोने मिलकर खेतमे पाटा चलाया जिससे कि बोया हुआ बीज पूरी तरह मिट्टीके नीचे ढक गया। शाम होते तक दो एकड खेत उन्होने बो डाला। सूरज डूबनेके बाद थके-मांदे तीनो वापस घर आये।

यह समाचार गाँवमे फैल गया। सब लोगोको बडा आश्चर्य हुआ। उसमे सराहना, आश्चर्य और खिल्ली उडानेका भी भाग था।

रातको शालामे घर लौटते समय शेकूके घरके सामने मै क्षण-भर खडा हो गया। भीतर दीयेकी रोशनीमे शेकूकी औरत दीवालसे सटकर औंधी पडी हुई थी और उसकी पीठपर खडा हुआ शेकू पैरोसे उसका बदन दाब रहा था। उसने दोनो हाथोसे दीवालको पकडकर उसका सहारा ले रखा था

और धीरे-धीरे एक-एक पैर उठाकर पत्नीको दर्द कर रही पीठको दबा रहा था ।

दस

शनिवारको शालाकी छुट्टीके बाद मै अपने गाँव गया और छह कोस जमीन खोदकर वापस लौटा । तब बिलकुल थक गया था । यह आना-जाना सचमुच बडा दु:खदायक था । यदि शारीरिक परिश्रमको छोड दे, फिर भी इतनी देर तक गाडीकी सडकसे चलते आना मुझे एक बडा सकट-सा लगता था । शालाको छुट्टी देकर रवाना होते-होते सुबहके दस-ग्यारह बज जाते थे । विभूतवाडी पहुँचते तक दोपहर ढल चुकी होती । वहाँ पहुँचते ही माँके हाथकी रसोई खाकर लम्बी तान देता तो शामको उठता । रातको नीद लेता । रविवारको दोपहरका भोजन होते-होते दिन डूब जाता और फिर वापस लौटनेकी चिन्ता लग जाती । रातको सोते समय मै बार-बार माँको जताता, "माँ, सुबह जल्दी उठकर चला जाऊँगा । साथ ले जानेके लिए रोटी बना देना ।" वह बेचारी एक नीदके बाद ही उठ जाती और रसोई बनाने लगती । इधर चाँदनी ऊगती और उधर पीठपर पाथेय बाँधकर मै बनगरवाडीके रास्तेपर होता । हर शनिवारको आने-जानेमे कोई बडा सुख न था । फिर भी जानेको जी चाहता । घरका आकर्षण कुछ और ही बात होती है ।

मेरी इस पाँव-पिटाईपर आयबूको भी दया आती । वह कहता, "मास्टर, घर कब बसाओगे ?"

"क्यो ?"

"खानेकी तकलीफ जो हो रही है तुम्हे । अब शादी कर डालो और गृहस्थी जमा लो ।"

शादी करके घर बसाना, और वह सिर्फ इसलिए कि खानेकी कोई तकलीफ न हो ? वरना आयबूको वैसे और किसी बातके लिए शादीकी कोई आवश्यकता नही मालूम होती होगी। सच है, उस बेचारेने जो महसूस किया, वही कह दिया। हाथसे रसोई बनाकर चूल्हेमे हाथ जलाते रहनेसे कौन पुरुष नही ऊब जाता ? लेकिन सिर्फ इसी सुखके लिए और दूसरी बातोका खयाल न कर शादी करनेका विचार मेरे मनमे भी न उठा। जब बहुत ही अलसा जाता तब किसी-किसी सप्ताह जाना टाल भी देता। कभी सोमवारके बदले मगलवारको लौटता अन्यथा मेरी पाँव-पिटाई तो चल ही रही थी।

गाँवमे आया तो शाम हो चुकी थी। भेडे अभी जगलसे नही लौटी थी। इस बार रामाके सब रुपयोको मै भँजा लाया था। सारा रास्ता तय करते हुए पाथेयके झोलेमे रखी हुई रुपयोकी थैली मेरे सिरपर थी। उस थैलीको मजबूतीसे पकडकर चलते हुए मेरे मनमे आता कि इस समय यदि अचानक कोई आ जाये और मुझे लूट ले तो मुझपर कितनी भयानक आपत्ति आ जायेगी। इस विचारसे दबा हुआ मै बडी तेज चालसे आया था। गाँवमे प्रवेश करते ही वह भार मेरे सिरसे उतर गया। कमरेका द्वार खोलकर मैने बत्ती जलायी और मुँह-हाथ धोकर, जरा टिककर, बैठ गया। बहुत चलकर आनेके बाद पैर फैलाकर बैठनेमे कितना आनन्द आता है, यह जाननेके लिए उसका अनुभव ही करना चाहिए।

बरसाती हवाके कारण दीवालोपर खार लग गया था। दो-चार दिन खुली हवा न आनेसे कमरेमे दुर्गन्ध भी छा गयी थी। कोनेमे बैठे हुए मच्छर उठकर खडे हो गये थे। उनकी सिर पका देनेवाली गुनगुनाहट चल रही थी। मै बहुत थक गया था—ऊब गया था। आँखें बन्द होने लगी थी। परन्तु दीया-बत्तीके समय सोना उचित नही। यह लक्ष्मीके आनेका समय होता है। इसलिए इस समय सोना दरिद्रताका लक्षण है। परन्तु भाग्यवान् भी थकनेके बाद क्या करता है ? जहाँतक शरीरका प्रश्न है वह भाग्यवान्

और दरिद्री दोनोके शरीर एक-से ही होते है। थक जानेपर वे विश्राम चाहेगे ही। शरीर विश्राम लेने लगा तो आँखे बन्द होगी ही और फिर नीद आ ही जायेगी। यह ठीक नही, यह अच्छा नही।

अभीतक यूँ ही बैठा हुआ था, अब लेट गया। दुख रहे बदनको ढीला छोडकर पड रहा और आँखे भी बन्द कर ली। आँखे बन्द कर लेनेपर उनके सामने झिलमिले वलय क्यो दिखते है ? जामुनी-नीला और काला रग क्यो दिखता है और किसलिए दिखता है ? शालामे लडकोने यदि यह प्रश्न पूछ लिया तो मास्टरकी आफत है ? शायद इसका उत्तर सरल हो, बिलकुल मामूली हो, पर मै नही जानता। मराठी मिडिल पास करके मास्टर हुआ एक लडका क्या जान सकता है ? परन्तु लडके यदि पूछ मारे तो आफत ही है ? अब यह बात दूसरी है कि बनगरवाडीमे इतने होशियार लडके नही है ? परन्तु शिक्षक होनेके नाते यह बात मुझे मालूम होनी चाहिए। इसका कारण खोजकर निकालना चाहिए। आँखोकी बनावट कैसी होती है ? आरोग्य-शास्त्रमे यह बात पढी है जरूर

पढी हुई बाते बडी जल्दी भुला दी जाती है। भारी हुई आँखें कसकर बन्द हो गयी। वे खुलती ही न थी।

करीब चार घण्टेके बाद मै जागा। तब बाहर रिमझिम बूँदे पड रही थी। कमरेमे दीया न था और खुले द्वारसे चुभनेवाली हवा भीतर आ रही थी। मै उठकर बैठ गया और एकाएक मुझे याद आयी। झटसे उठा और सिरहानेकी ओर टटोलकर देखा। झोला हाथमे आया पर उसके भीतरकी रोटीकी गठरी और उसमे बँधी हुई रुपयोकी थैली गायब थी। मेरा कलेजा धक-से हो गया। अँधेरेमे ही मैने बार-बार वह थैली इधर-उधर खोजी। झोलेमे-से कुछ रोटियाँ निकली। धोती, कुरता आदि और भी चीजे निकली। पर रोटीकी गठरी और उसमे रखी हुई रुपयोकी थैली, उसका कठिन स्पर्श मेरे हाथको न लगा। जेबसे दियासलाई निकालकर मैने मिट्टीके तेलका दीया जलाया। एक पागलकी तरह मै झोला, बिस्तर और ज़मीन टटोलने लगा।

रुपये गायब हुए चार-पाँच दिन हो गये। मै अपने नित्यके काम कर रहा था। खाता था, पीता था, शाला जाता था। रातको जाकर गाँव-वालोकी सभा या पचायतमे भी बैठता था। पर वे रुपये किस तरह गायब हो गये, इसका मुझसे कोई अनुमान भी लगाते न बनता था। जैसे-जैसे इस विषयमे सोचने लगता वैसे-वैसे इस उलझनमे और भी अधिक फँसता जाता। मेरे मनमे आता—घरसे रवाना होते समय मैने रुपयोकी थैली अपने साथ रख ली थी या नही? रास्तेमे विश्राम करनेके लिए बैठा, उस समय रुपयोकी थैली कही गिर तो नही पडी? सुरक्षाके लिए मैने रुपयोकी थैलो और रोटियोको गठरी एक ही साथ बाँधी थी। यदि रास्तेमे अकेला पाकर कोई बदमाश मुझे घेर लेता तो उससे यह बहाना कर सकता था कि मेरे पास रोटियोके सिवा और कुछ नही है

अब तो रोटियाँ भी चली गयी थी और रुपये भी लुप्त हो गये थे। कोई कुत्ता रोटीकी बाससे वह गठरी न ले गया हो? या कही इस अजीब दिखनेवाले आयबूने ही बदला न निकाला हो। पर उसके चेहरेसे तो वैसा नही दिखता। उसके बरतावमे कोई सकोच नही दिखायी देता। फिर घरमे घुसकर रुपये कौन ले जायेगा? चौबीसो घण्टे यही एक विचार निरन्तर मनमे चक्कर काट रहा था। रामाने मुझपर विश्वास रखकर भुनानेके लिए रुपये दिये थे और उन्हे मै अपनी बेवकूफीसे गवाँ बैठा था। वे मैने खाये न थे। वैसा विचार भी मेरे मनमे न उठा था। पर इसपर रामा क्या विश्वास कर लेगा? और वह क्यो करे? यदि मै जाकर उससे कहूँ कि भैया, तुम्हारे रुपये मेरे झोलेसे चोरी चले गये, तो वह जरूर यही कहेगा कि इस बेईमानने दस-पाँच रुपयोको बडी ईमानदारीसे भँजाकर हमें यह दिखा दिया कि हम बडे सज्जन है और अधिक रकम हाथमे आते ही उसे हडप कर गया। आखिर यह अपनी जातपर ही गया। हमारे अनाडीपनका फायदा उठाकर इसने अपनी जेब गरम की? सहज ही रामा बनगर यही कहेगा। जिस सज्जनताको पानेके लिए मै जी-भर चेष्टा कर रहा था, उसे बातकी-बात-

मे सुरग लग जायेगा। इस विचारके मनमे आते ही मै बहुत अस्वस्थ हो जाया करता। मैं सोचता कि कहाँसे मुझे यह अक्ल सूझी और मैने इतनी बडी ज़िम्मेदारी अपने सिरपर उठायी। सम्भव होता तो मै अपनी गाँठसे रामाके रुपये लौटा देता और उसे पता तक न चलने देता कि मेरे हाथसे उसके रुपये गुम हो गये। पर इतने रुपये मेरे पास न थे। मेरे घरमे न थे। कोई उधार देता, यह भी सम्भव न था। चारो तरफके रास्ते इस तरह बन्द हो जानेपर फिर मैं यही सोचता रहता कि ये रुपये कहाँ और कैसे गायब हो गये और रह-रहकर मुझे ऐसा शक होता कि कही दादूने तो कोई षड्यन्त्र नही रचा है! रह-रहकर लगता कि मास्टरसे बदला लेनेके लिए, उसे बदनाम करनेके लिए उसीने रुपये चुराये होगे। परन्तु आज तक वह चुप क्यो रहा, इसका कोई कारण मुझे देते न बनता। यह बात न थी कि मेरे घरसे लौटनेके बाद रामा मुझसे न मिला हो। वह शालामे आता था, बैठता था, लेकिन उसने कभी अपने रुपयोकी बात न निकाली। इस विचारसे कि मास्टरके पास जो मेरी रकम है वह घरमे अपनी सन्दूकमे रखी जैसी ही है, अभी उसे रेज़गारी न मिली होगी, मिल जानेपर वह खुद घर आकर रकम मुझे लौटा देगा, फिर व्यर्थ ही मै उसे क्यो छेड़ूँ, मनका ओछापन क्यो दिखाऊँ, रामा इस विषयमें मुझसे कुछ न पूछता था। और मै भी कुछ न बोलता था। लेकिन मै स्वयको चोरकी तरह लगने लगा। मेरे मनमें आने लगा कि रामाकी नज़रमे न पड़ूँ, उससे बोलना टालूँ, यह गाँव ही छोड दूँ, इन लोगोमे-से किसीसे भी फिर कभी न मिलूँ और मै अपने-आपपर ही चिढ रहा था।

इस अवधिमे एक दिन पटेलकी साँवली नातिन धोती फडफडाती हुई मेरे पास आयी। कमरेमे मै अकेला ही था। दरवाजेमे-से उसने झाँककर देखा एक बार दो बार तीन बार और मुँहको आँचल लगाकर वह बाहर ही खडी रही। मैने कहा, "कौन है?"

"मै, अजी"

"पटेलकी अजी ?"

"हाँ।"

"क्या काम है ? भीतर आ जाओ।"

अजी शरमाती हुई आयी। वह करघेकी बुनी लाल सुर्ख धोती पहने हुई थी। हरे कपडेकी चोली थी। गाँवमे और पटेलके घर इस लडकीको मै बीच-बीचमे देखता रहता था। परन्तु मैने अभीतक यह महसूस नही किया था कि वह इतनी नयी-नवेली है कि उसपर जाकर नज़र अटक जाये। जब मै इस गाँवमे आया था, इस लडकीका बाप मलेरियासे बीमार था। बिस्तरपर पडे-पडे नातिनके विवाहका प्रश्न भी बूढे पटेलके सामने उपस्थित था। क्योंकि अजी तेरह पार कर चौदहकी सीमामे आ गयी थी। फिर भी उसके हट्टे-कट्टे बदनको देखकर लगता था जैसे वह लगभग बीसकी हो।

अजीने यूँ ही अपना आँचल सँभाला। वह जरा नजाकतसे इधर-उधर मुडी और बोली, "विभूतवाडी कब जाओगे, मास्टर ?"

सप्ताह समाप्त हो रहा था। कल शनिवार था। और यदि कोई दूसरा काम न भी था, फिर भी रामाके रुपयोका इन्तज़ाम करनेके लिए मुझे घर जाना ज़रूरी ही था।

"कल सुबह जाऊँगा। क्यो ?"

"मेरा एक काम करोगे ?"

शनिवारको अनेक लोगोके काम मेरे पास रहा करते। किसीको दवा लाना, किसीके नोट भँजाना, किसीके मनीआर्डर करना, किसीके पत्र लिखना आदि।

"बताओ। करने लायक होगा तो करूँगा।"

अजी बोली, "मेरी यह चोली सिलवा लाना।"

और मै भौचक्का होकर उसकी ओर देख रहा था तभी उसने नापके लिए पुरानी चोली और एक बढिया नया कपडा मेरे सामने रख दिया।

"चोरीसे बनवा रही हूँ। बूढेसे मत कहना। मज़दूरी करके मैंने पैसे

बचाकर यह कपडा खरीदा है। दो महीने हो गये। अभीतक सिला न सकी। सिलाकर ले आओ। फिर मैं सिलाईके पैसे दे दूँगी।"

और मै 'हाँ' या 'ना' कहूँ इससे पहले ही कपडा और पुरानी चोली मेरे पास छोडकर अजी चल दी।

ग्यारह

शनिवारको दोपहर घर पहुँचते ही मैने मौका देखकर, रुपये खो जानेकी बात पिताजीसे कही। मेरी बात शान्तिपूर्वक सुनकर उन्होने मुझपर पहले यह दोष लगाया कि मुझे वह जिम्मेवारी स्वीकार न करनी चाहिए थी।

मैंने अपने समर्थनमे कहा, "मुझे उसका विश्वास प्राप्त कर लेना था, इस लिए मैंने वह दायित्व लिया।"

"परन्तु तुम्हे यह भी तो सोच लेना चाहिए था कि यदि ये रुपये हमारे पाससे गुम हो गये, तो इतने रुपये लौटानेकी ताकत हममे नही है, हमारे घरवालोमे भी नही है। वे यदि न लौटाये जा सके तो इसके कारण आज तक हमने जो विश्वास प्राप्त किया है, वह सब जाता रहेगा ?"

"हाँ पिताजी, भूल तो हो गयी है। अब मै इस मामलेमे आपकी सलाह चाहता हूँ।"

पिताजी थोडी देर चुप रहे। व्यर्थका धन्धा करना उन्हे पसन्द न था। वे हमेशा कहा करते थे कि हमे किसीकी बातोमे न पडना चाहिए, हमारी यह नीति होनी चाहिए कि हम भले और हमारा काम भला। रुपयो-जैसे दायित्व और जोखिमके मामलेमे तो हमे कभी भूलकर भी न पडना चाहिए। रुपयोके कारण अवश्य ही बुराई पैदा हो जाती है। इसलिए मेरे द्वारा उठाये गये इस दायित्वकी झझटको सुनते ही वे इस प्रकार कडे शब्दोमे बोले। लेकिन फिर शायद उनके मनमे आया हो कि लडकेसे यह

कहना कि जो तुमने किया है, अब तुम्ही उसे निपटाओ, उचित न होगा, वे बोले, "तुम उस गडरियेसे साफ-साफ कह दो कि रुपये चोरी चले गये है। तुम्हारे ही गाँवमे यह चोरी हुई है । आओ, हम-सब मिलकर इस चोरीका पता लगाये । चोर मिल जायेगा । यदि वह बहुत ही गडबड करने लगे तो कहना—मै कोई अपरिचित आदमी नही हूँ । मेरे पास जमीन है, घर है, सरकारी नौकर हूँ । तुम्हारे रुपये लौटा दूँगा ?"

पिताजीने जो बात कही वह मुझे भी जँच गयी । पर मुझे रह-रहकर लगने लगा कि मुझसे यह कहते न बनेगा । रामा विश्वास न करेगा । गाँवके लोग विश्वास न करेगे । पुलिसमे खबर देनेपर भी कुछ लाभ होगा, यह निश्चित नही । अकारण गाँवमे आकर पुलिसवाले ऊधम मचायेंगे, किसीको भी पकडकर मारेगे-पीटेंमे । मारे गाँवपर आफत आ जायेगी । सब लोगोको कष्ट होगे । इसलिए मेरे मनमे यह विचार पक्का होने लगा कि इस मामलेमे चुप ही रहूँ । किसीसे भी यह न कहूँ कि मेरे रुपये चोरी चले गये है, अपने पाससे रुपये उसके हवाले कर दूँ और चुप बैठ जाऊँ । अब हिमाब लगाने लगा कि मुझे इतने रुपये कहाँसे और कैसे मिलेगे । परन्तु कही कोई मार्ग दिखायी नही दिया । तीन-चार मित्रो और एक-दो साहूकारोसे रुपये माँगकर देखे । परन्तु मुझ-जैसे व्यक्तिको इतने रुपये कौन देगा ? कोई पिताजीका हवाला माँगता । कोई साफ इनकार कर देता । घूमते-फिरते मै थक गया । मुझे बुरा लगा कि मै तीन-सौ, साढे तीन-सौ रुपये भी नही जुटा सकता । मेरा मुँह जरा-सा निकल आया । इतवारकी रातको मैने खाना भी ठीक तरहसे नही खाया । बडी देर तक नीद भी नही आयी । मेरी यह छटपटाहट माँने महसूस की और अँधेरेमे ही वह उठकर मेरे पास आयी । मन्द स्वरमे बोली, "राजाराम, अभीतक जाग ही रहा है, क्या रे ?" मैने 'हूँऽ' कहा और उसी समय उसकी हथेली मेरे शरीरपर फिर गयी ।

"जो रुपये चोरी चले गये है, पहले देख ले कि वे मिलते है, या नही।

यदि गडरिया बहुत ही पीछे पड गया तो तेरी ननसारमे जो घर है उसे बेच देना। चार-पाँच-सौ रुपयेमे मजेसे बिक जायेगा। उन रुपयोको लेकर गडरियाको दे देना। इसमे इतनी चिन्ता करनेकी क्या बात है ?"

मांकी इस बातसे मुझे धीरज बँधा। मेरी मदद करनेवाला एक है। यदि जरूरत पड ही गयी तो रामाके रुपयोको लौटानेका मार्ग निकल आया और चोरीकी बातको पचायतके वक्त गाँववालोको बतानेका मैने अपने मनमे निश्चय किया। परन्तु अब भी ये दोनो बातें मुझे बडी मुश्किल मालूम होती थी। मै मांके मकानको बेचना भी नही चाहता था और न रामासे यह कहना चाहता था कि मैने उसके रुपये गुमा दिये है। भँवरमे फँसे रहने-सी यह अवस्था इसी तरह रही आयी और मांको ऊपरसे यह दिखाता हुआ कि मैने सब फिक्र छोड दी है, सोमवारको बनगरवाडीकी राह ली।

सोमवारको शालाकी छुट्टीके बाद मै अपने घर आया। मैने अपने मनमे पक्का निश्चय कर लिया कि रातको नित्यकी भाँति जब गाँववाले शालाके सामने इकट्ठा होगे, तब उन लोगोसे इस चोरीकी बात कह दूँगा। यह सब कहनेसे पहले एक बार बूढे पटेलकी सलाह लेनेके इरादेसे मैने आयबूको उसके घर भेजा। उसके हाथ यह सन्देशा भेजा, "थोडी देरके लिए आ जाइए। मास्टरका बडा जरूरी काम है।" आयबूके चले जानेपर मैं यह सोचने लगा कि पटेलसे चोरीकी बात किस प्रकार कही जाये। चोरी हो गयी थी। मामला यहाँतक पहुँच गया था, फिर भी मेरे मनके एक कोनेमे लगातार लग रहा था कि इस मामलेमे मेरा कोई नुकसान न होगा। सब मामला सरलतासे निपट जायेगा। मै व्यर्थ ही इसे तूल दे रहा हूँ—यूँ ही एक हौआ समझ रहा हूँ। रुपये चोरी नही गये है। वे सिर्फ भूलसे कही रह गये है—गुम गये है···

मै यह नही कह सकता कि मुझे ऐसा क्यो लग रहा था। पर लग रहा था जरूर। इस मामलेमे कोई बडा धोखा है, ऐसा मुझे सचमुच नही लग रहा था।

आयबू बूढेके घरसे लौटकर आया, तो उसके चेहरेपर क्रोध झलक रहा था। जब वह नाराज़ होता तो उसके माथेपर बल पड जाते, गाल फूल जाते और दोनो हाथोकी मोड सीनेपर आ जाती। वह द्वारपर पहुँचा ही था, तभी मैने पूछा, "क्यो, बूढेसे मुलाकात नही हुई क्या ?"

"मुलाकात क्यो न हुई ? मुलाकात न होनेके लिए क्या वह पन्त सरकार है ?"

"फिर क्या कहा उसने ?"

"उसने कहा, मै नही आता। जाकर मास्टरसे कह दे कि मुझे फुरसत नही है। फुरसत होगी उस दिन मिलूँगा।"

मै क्षण-भर सन्न हो गया। मुझे कभी धुँधली-सी भी कल्पना न थी कि मुझे पटेलसे ऐसा कोई उत्तर प्राप्त होगा। हमेशा 'मास्टर, मास्टर' करनेवाला, बडी समझदारीसे बरताव करनेवाला यह भावुक बूढा इस तरह चिडचिडा प्रत्युत्तर कभी न भेजेगा। मैने आयबूसे पूछा, "मज़ाक किया था या सच कहा था ?"

"उसमे मजाक काहेका ? अच्छी तरह तनतनाकर बोला था।" आयबूके नथुने गुस्सेसे फूल रहे थे। मास्टरके बुलानेपर गडरिया इस तरहका कोई जवाब दे, यह बात आयबूके हृदयको चुभ गयी थी। थोडी देर ठहरकर वह फिर बोला, "तुमपर वह बहुत बिगडा हुआ दिखा, मास्टर।"

मेरी कुछ समझमे न आया। बूढा क्यो नाराज हो गया ? मैने उसका कौन-सा अपराध कर डाला ?

टोपी पहनकर मै झट बूढेके घर पहुँचा। चूल्हेके पास रखे मिट्टीके दीयेका धुँधला प्रकाश कमरेमे फैला हुआ था। चूल्हेके धुएँसे घर भर गया था। अजी रातके भोजनके लिए रोटियाँ सेंक रही थी। मेरे आते ही उसने चोरीसे मेरी ओर देखा। उस देखनेका मतलब यह था कि मैने जो चोली सिलायी है, उसके बारेमे बूढेसे कुछ न कहना। वास्तवमे मै कहनेवाला

भी न था। दीवालसे पीठ टेककर दोनो घुटने खडे कर पटेल बैठा हुआ था। मेरे पहुँचनेपर उसने 'आओ' तक न कहा।

उस बौने घरमे खडे होकर मैने कहा, "क्यो बाबा, आज चुप क्यो बैठे हो ?"

बूढेने सिर्फ 'हूँऽ' कहा, और गुमशुम ही रहा।

मुझे लगने लगा जैसे मेरे भीतरका चोर मेरे सामने आकर खडा हो गया है। धुएँसे काले हुए ऊपरके छप्परकी ओर देखता हुआ मै खडा रहा। अजोको भी बडा अजीब-सा लगा। एक-दो बार बारी-बारीसे उसने मेरी ओर और बूढेकी ओर देखा। उसका चेहरा व्याकुल हो गया था। बूढेके इस बरतावका मतलब वह भी नही समझ पा रही थी। चूल्हेमे जलानेके लिए बाहरसे लकडियाँ तोडकर लानेके बहाने वह बाहर आयी। मै और पटेल भीतर रह गये। वह अकडकर बैठा हुआ था और मै इस अवस्थामे खडा हुआ था कि अब क्या करूँ।

चूल्हेकी ज्वाला बुझ गयी थी और धुआँ अधिक निकलने लगा था। चूल्हेपर चढे हुए बरतनमे पक रही तरकारीकी गन्ध भापसे बाहर निकल रही थी। रट्रट् आवाज हो रही थी। द्वारसे आनेवाले हवाके झोकेसे दीयेकी रोशनी काँप रही थी। दीवालपर पडी हुई काली परछाइयाँ हिल रही थी।

मै इस सम्भ्रममे पडा था कि अब क्या बोलूँ। यूँ ही मै खडा रहा और धीमे स्वरमे बोला, "मै आपसे कुछ बाते करना चाहता था, बाबा ? एक ज़रूरी बात आपसे कहनी थी।"

बूढेने जरा भी ध्यान न दिया।

अजो हाथमे लकडियोकी कौरी लेकर भीतर आयी। झुककर चूल्हा फूँकने लगी। बूढेने अत्यन्त स्पष्ट शब्दोमे मुझसे कहा, "तुम जाओ, भाई। अपना काम करो। मुझसे कुछ न कहो। मै एक न सुनूँगा।"

और अपनी जगहसे उठकर वह मेरी ज़रा भी परवाह न कर द्वारसे बाहर चला गया और अँधेरेमे लुप्त हो गया।

उस अपमानसे मेरे चेहरेपर हवाइयाँ उडने लगी। कनपटियाँ गरम हो गयी। थूक गिटककर मैं बाहर जाने लगा, तभी अजी धीरेसे बोली, "उस भडुवे दादूने बूढेसे कुछ कहा है।"

मैंने पूछा, "क्या कहा है ?"

"कौन जाने क्या बका है! बडा झगडा करानेवाला है, मुआ ?"

मैंने सुन लिया। एक जवान लडकी घरमे अकेली रहते हुए उससे बातें करते खडे रहना मुझे उचित न लगा और उससे बिना कुछ कहे, मैं घरसे बाहर निकल पडा। अँधेरेमे ठोकरें खाता हुआ अपने घर आया। आयबू दीया जलाकर बैठा हुआ था।

कुछ समय तक कोई किसीसे न बोला। परन्तु जो कुछ मैं सुन आया था, उसको कहे बिना मुझसे रहा नही जाता था।

"दादू बालट्याने बूढेके कान भरे हैं, आयबू, और इसीसे वह मुझपर बिगड गया है।"

आयबूको एकाएक समस्या कुछ सुलझी-सी लगने लगी।

"अच्छा, यह बात है ?"

"हाँ, मुझे पता लगा है और वह सच भी होगा।"

"सच तो है ही। बालट्या तुमसे बहुत जलता है, मास्टर ?"

"परन्तु जलनेका कोई कारण नही है। मैंने उसका क्या बिगाडा है ?"

"जबसे तुम गाँवमे आये हो, तबसे लोगोपर उसकी रंगदारी नही चलती। कोई उसे पूछता नही है।"

"क्या वह बडा नक्शेबाज है ?"

"हाँ, नही तो उसका पेट कैसे चलता है ? अजी वह खासा हट्टा-कट्टा और गोल-मटोल नक्शेबाज है। एककी पगडी दूसरेके सिरपर रखना और दूसरेकी तीसरेके सिरपर रखना—यही धन्धा है उसका।"

किसी उपन्यास या नाटकमे जैसे खलनायक हो, उस तरह यह बालट्या मेरे पीछे क्यो लगा था, यह मेरी समझमे न आता था। मैने उसका कुछ न बिगाडा था, कोई अपराध न किया था। परन्तु पहले दिनसे ही वह शनिकी तरह मेरे पीछे पड गया था। जैसे मेरी ओर उसकी शत्रुता जन्मजात ही थी। कौवे और उल्लूमे तथा साँप और नेवलेमे जैसी होती है ठीक उसी तरह यदि यह मान भी लिया जाये कि मेरे आनेके बादसे गाँवमे उसका प्रभाव कम हो गया है, नक्शेबाज़की हैसियतसे उसकी कोई रगदारी नही चलती, लोग उससे सलाह पूछने नही जाते तो बिलकुल पहली ही मुलाकातमे उसने मुझे क्यो फटकार बतायी! शायद मेरे पहले-वाले मास्टरने उसका कोई अपराध किया होगा और मास्टर जातिपर वह नाराज़ हो गया हो। परन्तु इतने दिनो तक गाँवमे मैने जो व्यवहार रखा है, उसे देखते हुए उसकी नाराज़गी निकल जानेमे कोई हर्ज न था।

आयबू उठा और रोटियाँ माँगनेके लिए गाँवमे चल दिया। एक तो रामाके रुपयोकी चिन्ताने पहले ही मेरी नीद उडा दी थी। उसपर बालट्याका यह पुराना रोग फिर उमड पडा। पहलेसे ही जिसका मुझे पूरा-पूरा सहारा था और जो गाँवमे सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति था, वह बूढा पटेल भी मुझपर बिगड गया था! आजकल मुझमे यह विश्वास जम गया था कि गाँवमे मै कोई अच्छा काम करूँगा और यह आशा हो गयी थी कि शिक्षा-विभागसे प्रशसा प्राप्त करूँगा और तभी ये घट-नाएँ घटी।

मेरा मन गिर गया। उठकर मैने कुल्ली की। घरसे जो रोटियाँ बाँध लाया था, उन्हे निकाला। अकेला ही बैठे-बैठे खाने लगा। उस खानेकी आवाज़ भी मुझे बडी लगने लगी।

और आनन्दा रामोशी आया। द्वारके बाहर ही खडा होकर बोला, "क्या अकेले ही हो, मास्टर ?"

"हाँ, अकेला ही हूँ। रोटी खा रहा हूँ। क्यो, क्या है रे आनन्दा।"

"खा लो । मै फिर आता हूँ थोडी देरमे ।"

"रोटी तो खा चुका । कुछ काम है क्या ?"

"मैने बची हुई रोटियोको बाँधकर रख दिया । हाथ धोये और आनन्दा भीतर आकर बैठ गया । कमरेका दरवाजा उसने भेड लिया । मन्द आवाजमे उसने पूछा, "तुम्हारे रुपये चले गये है क्या इस कमरेसे ?"

मुझे एकाएक धक्का लगा । सोचा, जिस बातको अभीतक मेरे सिवा और कोई नही जानता, वह आनन्दाके पास कैसे पहुँची ? उससे किसने कहा ? जब कि उसे यह बात मालूम है कि इस कमरेसे मेरे रुपये चले गये है, तो उसे यह बात भी मालूम होनी चाहिए कि वे रुपये मुझे किसने और क्यो दिये थे । यह बात अब गाँव-भरमे फैल जायेगी कि रामाके द्वारा भँजानेके लिए दिये गये रुपयोको मै हजम कर गया । मतलब यह कि इतने दिनो तक मैने अपनी प्रतिष्ठाको बचानेका जो प्रयत्न किया वह सब व्यर्थ ही हुआ । अब क्या इसे सच्ची बात बता दूँ या टालमटोल कर दूँ—या कुछ भी उडन-छू उत्तर दे दूँ ? मै काफी घबडा गया और मेरे मुँहसे निकल ही पडा, "हाँ, तुझे कैसे मालूम हुआ ?"

"मुझे मालूम है ?"

"परन्तु कैसे ?"

आनन्दा शान्तिपूर्वक बोला, "मै ही ले गया था उन्हे ।"

मुझे अपने कानोपर विश्वास न होता था । मै अपनी आँखो और खुले मुँहसे सिर्फ देखता रहा ।

आनन्दा अपने साथ धोतीकी एक गठरी लाया था । वह गठरी उसने खोली और उसमे बडी हिफाजतसे रखे हुए रुपये निकालकर उन्हे मेरे सामने रखता हुआ बोला, "जैसा ले गया था उसी तरह वापस ले आया हूँ । लो अपनी जोखिम सँभालो ।"

मै रुपयोपर टूट पडा । उन्हे अपने कब्जेमे किया । मनपर-का एक

भारी बोझ उतर गया। मुझे लगा, मेरे आपत्तिकालमें यह आनन्दा एक परमेश्वरके रूपमे मेरे सामने आकर खडा हो गया।

फिर आनन्दा बोला, "गिनकर देख लो। मै इसमे-से तीन रुपये दस आने खा गया हूँ।

उन्हे मै नही लौटाऊँगा। परन्तु बाकीके तुम्हारे सब रुपये ज्योके-त्यो है।"

उस रामोशीपर मुझे बडा क्रोध आया और उसके प्रति प्रेम-भाव भी पैदा हुआ।

"आनन्दा, तू रुपये क्यो ले गया था रे? ये तुझे मिले कहाँ?"

आनन्दाने कहा, "खण्डोबा (एक देवता) की सौगन्ध खाकर कहता हूँ मास्टर, मै चोरी करनेके इरादेसे इन रुपयोको नही ले गया था। मै तुम्हारे पास रोटी माँगने आया था। परन्तु उस वक्त तुम्हे नीद लगी थी। सोये हुए आदमीको किस तरह जगाता? तुम घरसे जो रोटियाँ बाँधकर लाये थे उसकी गठरी तुम्हारे सिरहाने रखी थी। वह मुझे दिख पडी। उसकी खुशबू आने लगी। सोचा यही रोटियाँ ले चलूँ। मास्टर जाग जायेगा तो उसे लगेगा कि कोई कुत्ता ले गया होगा। ऐसा सोचकर मैने चुपचाप गठरी उठायी और बगलमे दबाकर उसे घर ले गया। वहाँ जब गठरी खोली तो रोटियोके साथ ढेर-से रुपयोसे भरी एक थैली भी थी उसमे। उसे देखते ही दिलमे लालच आया।"

"ठीक? पर इधर तो मेरा गला फँसा था।"

"वह कैसे फँसेगा, मास्टर? पाण्डुरग आपका सहायक है। मै बेरड जातिका हूँ। चोरियाँ हज़म कर जाना मेरा धन्धा है। इन सब रुपयोको हज़म कर जाना मेरे लिए मुश्किल न था। पर आठ दिन तक रुपये अपने घरमे रखे रहा और लगातार मनमे आने लगा, "अबे आनन्दा, मास्टरके रुपये क्यो लिये रे? मास्टर क्या कोई साहूकार या ज़मीदार है? उसे यह धोखा क्यो दे रहा है? तू उसके साथ उठने-बैठनेवालोमे-से है। उसके

साथ इस तरह दगा करना उचित नही। "और मास्टर, आज ये रुपये लाकर तुम्हारे चरणोमे रख दिये है। अब तुम चाहो तो पुलिसमे रिपोर्ट कर दो, मुझे जेल भेज दो और चाहो तो माफ कर दो।"

यह सारा वृत्तान्त आनन्दाने इतने सहज भावसे और दिल खोलकर कहा था कि मुझे यही नही सूझ पडता था कि इसपर मै उससे क्या कहूँ। छुटपुट चोरियाँ करनेवाले इस रामोशीने बडी दूरका पल्ला गाँठा था। परन्तु आप ही-आप आकर उसने वह रकम लौटा भी दी थी। चोरीके इरादेसे वह मेरे कमरेमे घुसा था, परन्तु वह रोटीकी चोरीके इरादेसे, रुपये चुरानेका उसका बिलकुल विचार न था। वही उसके साथ चले गये। पर अब वह जो यह कह रहा था कि मुझपर तरस खाकर उसने वे लौटा दिये है, यह बात सच न होगी। यह सोचकर ही कि इतनी बडी चोरीका पता दस-पन्द्रह दिनोमे जरूर लग ही जायेगा, आनन्दा सज्जन हो गया। छोटी-मोटी चोरियाँ करके भी दस-पन्द्रह दिनोमे वह मालिकोके पास स्वीकार कर लेता था। चोरी गया हुआ माल इतना मामूली रहा करता कि उसके लिए चार गालियाँ देनेके अलावा कोई उसे दूसरी और सजा न दिया करता था। क्योकि आनन्दा कहा करता माँगकर कोई नही देता इसलिए चुपचाप उठाकर ले जाना पडता है। और मै ज्यादा कहाँ ले जाता हूँ। जितना पेटके लिए ज़रूरी होता है, उतनी ही की मुझे जरूरत होती है। ढोर खाते है, पक्षी खाते है, कीडे खा जाते है, उस तरह सोच लिया करो कि आनन्दा खा गया और व्याकुल न हो। पलथी मार-कर आनन्दा मेरे सामने बैठा था और मै क्या कहूँगा इस तरफ उसका ध्यान था।

मुझे क्रोध आया। ऐसा लगा कि इस शख्सका अब फिर कभी मुँह भी न देखूँ। उसकी इस मूर्खताके कारण मुझे कितनी मानसिक यन्त्रणाएँ भोगनी पडी थी। पिछले आठ दिन मेरे प्राण कैसे हो गये थे?

ज़ोरसे चिल्लाकर मैंने कहा, "अबे बडा होशियार है? जा मुँह काला

कर यहांसे । मै तेरा मुँह नही देखना चाहता ।"

आनन्दा कुछ भी न बोला । कानपर रखी हुई आधी जली बीडी निकालकर उसने दीयेपर जलायी और वह उठकर चल दिया ।

मै उठा और सीधा रामाके घर गया । उसके रुपये उसके हवाले किये और छुटकारेकी साँस ली ।

रामा बोला, "कोई जल्दी नही थी, मास्टर ? रुपये तुम्हारे घरमे थे यानी मेरे ही घरमे रखे थे ।"

मैंने कहा, "सच है ।"

बीचके समयमे क्या उथल-पुथल हो गयी इसकी उसे कोई कल्पना न थी । अन्तमे वापस घर लौटते समय मैने विनम्र शब्दोमे रामासे कहा, "रुपये घरमे न रखो । किसी धन्धेमे लगा दो । जमीन खरीद लो या भेडे ले लो । परन्तु यह जोखिम घरमे मत रखो । बुरे दिन कहकर नही आते ।"

आगे चलकर कुछ दिनोके बाद रामाने उन रुपयोकी भेडें खरीदी । उसका खिरका बहुत बड़ा हो गया ।

बारह

बाजरा धीरे-धीरे बढ गया । पोटरीसे लम्बी डण्डियोके छरहरे बदनके भुट्टे बाहर निकले । हरी डण्डियोपर कत्थई रगके भुट्टे सर्वत्र डोलने लगे और शीघ्र ही जामुनी रगके फुलेरोसे खिल गये । वह सुकुमार फुलेरा भर गया और छोटी-छोटी चोटियाँ भुट्टोपर चढने लगी । मधु-मक्खियाँ भुट्टोके आस-पास मँडराने लगी । पीले रगकी छोटी तितलियाँ जोडी-जोडीसे चक्कर काटती हुई आकर बैठने लगी । मस्तीसे बह रही हवामे फुलेरा उडने लगा और भुट्टे खुलने लगे । उसी खेतके भीतर बाजरेमे मिलाकर बोयी हुई दलहनकी बेलें फैलने लगी । मटकोकी फलियोके गुच्छे कही-कही दिखायी

देने लगे। कुलथीको जोश आया। अरहरके सीधे फैले हुए पेडोपर साँवले रगकी फलियाँ दानोसे भरने लगी। मूँगफलीकी जडोमे गाँठे लगने लगी। बाँधोपर उगे हुए पौधोके सफेद और जामुनी रगके तुर्रे झूमने लगे। और शीघ्र ही फुलेरोसे भरे हुए बाजरेके भुट्टे चमकदार दानोसे ठस गये। चिडियोके दलके-दल उडते हुए आकर उन दूध-भरे दानोको चुगने लगे।

जिनके खेत थे वे लोग बहुत सवेरे उठकर रखवालीके लिए खेतमे जाने लगे। बनगरवाडीके स्त्री और बच्चे मजदूरीके लिए पडोसके गाँवोके खेतोमे जाने लगे।

हरी घास खाकर भेडे गोल-मटोल दिखने लगी। उनके शरीरपर चरबी बढी। आडे वक्त जब गडरिया उन्हे बाजार दिखाता तो उसे उनके अच्छे दाम मिलने लगे।

बाजरा काफी पक गया। लडके काले खजूर खाकर तैयार होने लगे। दशहरा आया। लोगोने सीमोल्लघनके सोम-पानके साथ बाजरेके नये भुट्टे भी बाँटे और फिर कटाई शुरू हुई। पाँच महीने बढे हुए बाजरेके मजबूत तने हँसियोकी भारसे आडे पड गये। यदि वे इसी तरह जमीनपर पडे रहने दिये जाये तो जमीनमे रहनेवाले कीडे भुट्टोको खा जायेगे, इसलिए लगे हाथ उन्हे बटोरकर इकट्ठा खडा करके झोपडीके आकारकी जूडियाँ बना दी गयी। दाब और गरमाहटके कारण बाहर न निकले हुए दाने भी बाहर निकल पडे और फिर दूसरे-तीसरे दिन जूडियाँ खोलकर छोटी-छोटी कोथलियाँ बनायी गयी। एक दूसरेसे सटाकर खडी की हुई वे पूलियाँ धूप लेने लगी। गीले दाने सूखने लगे। सुबहो-शाम चिडियाँ और हरियलोके झुण्ड उनपर आकर जमा होने लगे।

जिन्हे जल्दी थी, उन्होने भुट्टे तोडे और उन्हे पीटकर दाने निकाले। घरके मवेशी कुरकुरी कडबी खाने लगे और घरोमे हरी ज्वारकी रोटियाँ सिकने लगी। जिनके घर रातिब था उन्होने इस कामकी चिन्ता न की और दूसरे कामोको करनेके बहाने बाजराकी मिसाईके कामकी टालमटूल

करने लगे। लेकिन आज नही तो कल उन्हे भी यह सब करना ही था।

धीरे-धीरे दलहने भी निकली। कुलथीकी फलियोके खुनखुने बजने लगे। कुलथी निकली, मूँगफली उखडी, अरहर निकली, मटकी निकली। खाली खेतोमे मवेशी घूमने लगे। भेडे घास-पातमे मुँह मारने लगी। बाजरे-की बजर भूमि और लाल खेत सूने दिखने लगे।

कडाकेकी ठण्ड शुरू हो गयी। रातको और सुबह घास-फूस इकट्ठा कर लोग तापने लगे। उनके मुँह और होठ ठण्ड-से फटने लगे। गडरियोके काले अग काले कम्बलसे बाहर नही निकलते थे। नालेके निर्मल पानीपर और कुएँपर सुबहके समय भापे दिखायी पडती थी।

इस बीच उत्तरा नक्षत्रमे बोयी गयी ज्वारने जोर पकडा। काले खेतोमे ज्वारके तने घुटनो और जांघो तक बढ गये, धीरे-धीरे कमर छूने लगे। बीच-बीचमे बोये खिले कुसुममे काँटे आ गये। चना भी भरपूर फूल उठा। देखते-देखते ज्वारमे भुट्टे दिखने लगे। कुसुममे सुन्दर पीले फूल आये। चनेमे नन्ही-नन्ही घण्टियाँ लटकने लगी। हरे डण्ठल खाकर मवेशी भी फूलकर मस्त हो सफेद चिट्टा दिखने लगे। सीगोसे मिट्टी खोदने लगे। मोटे तनेका गन्ना और चनेका होरहा खानेके लिए लडके चोरियाँ करने लगे। रखवालकी नजर बचाकर बकरे ज्वारके तने खरोचने लगे। चिपचिपे हाथो और सफेद उभरे हुए मुँहसे नटखट लडके खेतोमे ऊधम मचाने लगे।

जगह-जगह होरहा भूँजनेके लिए अलाव सुलगे। सुबहसे ही हर खेतमे जल रही आगका धुआँ उठता दिखायी देता। जवान लडकोने तो चनेके इन कोमल दानोसे ही अपना पेट भरना शुरू कर दिया। बूढोने भी खरलमे कूटकर उसका स्वाद चखा। स्त्रियाँ और लडकियोने भी समय निकालकर चार दाने मुँहमे डाले।

पिछले सालोकी तरह, इस बार भी परदेशी पक्षियोके झुण्ड आये जैसे उन्हे सन्देशा पहुँच गया हो। सूरज निकलते ही दूरसे उनकी आवाज़े कानो-मे पडने लगी। सुनील निर्मल आकाशमे उनके हज़ारो-हज़ार दल उडने

लगे। उडते-उडते उनकी एक बडी लम्बी कतार, भिन्न-भिन्न प्रकारके आकार लेने लगी। आँगनमे और खेतमे खडे हुए लडके मुँह उठाकर चिल्लाने लगे, "काड्याकरकोच्या, बारा बैलांचा नागर धर, नागर धर"

(" हे करकोच पक्षियो, बारह बैलोका हल पकडो—बारह बारहकी कतारमे हो जाओ।)

पक्षियोकी यह फौज फसलको नुकसान न पहुँचाये इसलिए किसान सिरके साफे हवामे ऊँचे फेक ऊपर लहराकर उन पक्षियोको डराते और ज़ोर-जोरसे चिल्लाते। फिर भी ऊँची-ऊँची टाँगोवाले पक्षी, गोलके गोल मँडराते हुए, फसलोपर हमला कर देते और "ट्राँव ट्राँव" चिल्लाते हुए ज्वारके भुट्टे खरोचते।

तीन मुर्गियोके बराबर वजनवाले और चरबोसे भरे हुए इन पक्षियो-को देखकर रामोशियोके मुँहमे पानी भर आया। टोपीदार बन्दूक और गुलेल आदि लेकर उनके जवान लडके इन पक्षियोके पीछे दौडने लगे। और परिणामस्वरूप दो-चार पक्षी घायल होकर नीचे गिरने लगे। बहुत दिनोके बाद रामोशोकी झोपडीसे पक रहे मासकी गन्ध उठी।

कुसुमके खिले हुए फूलोसे मधु इकट्ठा कर सुरक्षित जगहोमे मधुमक्खियो-ने छत्ते बनाये। टहनियाँ काटनेकी छोटी-छोटी कुल्हाडियाँ लेकर गडरियो और रामोशियोके लडके जगलोमे घूमने लगे और करीलकी सघन झाडियोमे बने छत्तोको ढूँढ-ढूँढकर उनके मधुर शहद खाने लगे।

और फिर ज्वारकी फसलें तैयार हुई। कुसुमकी फसल पकी। चना तैयार हुआ। जगह-जगह खलिहानोकी धूम शुरू हो गयी। लोगोने अपने खलिहानोको लीप-पोतकर तैयार किया। भुट्टे काटकर अलग किये गये। मोगरीके प्रहार उनपर पडने लगे। उडावनी हुई। हवाके झोकेसे भूसा एक ओर हट गया और मोती-जैसे ज्वारके दानोका ढेर लग गया। पवनीके हकदारोको धूम मची। ढेरियाँ नापी गयी। और अन्तमे पक्षियो, मवेशियो और चोरोसे बचा हुआ अनाज किसानके घर आया।

मूँगफली और चनेके खाली खेतोमे घूम-घूमकर गरीबोने वहाँ पडे एक-एक दाने बीनकर घर ले आये। जो दाने उनकी नज़रसे चूक गये उन्हे चिडियोने चुग लिया, चीटियाँ ले गयी। इनसे भी जो बचे वे जमीनमे पडे रहे और बारिशकी बाट जोहने लगे।

दस महीनोके बाद हरे खेत फिर काले दिखे। फसली मौसम खत्म हो गया। पक्षी तितर-बितर हो गये। किसानोको राहत मिली और मुँहमे सुरती दाबकर घडी दो घडी शान्तिपूर्वक बैठने लगे।

नट और नटनी आकर अपनी कलाबाज़ियाँ दिखाने लगे, मदारी आकर रीछको नचाने लगे, जादूगर आकर हाथकी सफाई दिखाने लगे। इन खेलोको देखकर गाँववाले अपना मनोरजन करते। हँसते और खुशियाँ मनाते। खुश होकर सेर-सवा सेर अनाज नट, मदारी और जादूगरको दे देते।

गडरियोके लडके भी गोल बनाकर नृत्य करने लगे। शीशे लगी हुई, सफेद धागेसे मोर और बैलके चित्र कढी हुई काली जाकटे बदनमे पहने और हाथोमे रग-बिरगी रूमाल लेकर वे गोलमे खडे हुए। एक बडा ढोल लेकर ढोलवाला 'इडिबाग-डीपाग' करने लगा। झाँझवाला झाँझ बजाने लगा। हरे और लाल रगके रूमालोको हवामे उडाते हुए गडरिये आगे-पीछे कदम रखने लगे। मन्द गतिसे नृत्य शुरू हुआ। धीरे-धीरे गति बढी। पैरो-की थिरकन भी बढी। नीले और जामुनी रगके रूमाल उडने लगे। ढोल घूमने लगा। देखते-देखते वे पचीस-तीस गडरिये और वह ढोलकवाला, सब इकट्ठा हो गये। और ऐसा लगा, जैसे एक ही कलाकार मस्त होकर नाच रहा है।

ज़मीनपर बिछे कम्बलपर बैठे हुए गडरिये, दरवाज़ोपर खडी होकर देखनेवाली स्त्रियाँ और बच्चे, अपनी सुध-बुध भूल मानो समूची बनगरवाडी नृत्य करने लगी, "इडिबाग-डीपाग-डिपोबाडी डीपाग-डीबाडी-डीपाग-डीपाग-डीपाग-डीपाग ..."

तेरह

एकाएक बिगड जानेवाला पटेल बहुत दिनों तक मुझसे न बोला। कभी स्कूलमे भी आकर न बैठा। कभी मेरे घर न आया। मेरी पूछ-ताछ करना उसने छोड दिया। पहले तो मुझे इस बातकी बडी चिन्ता हुई, किन्तु आगे चलकर मै भी यह सब भूल गया। थोडा-सा अहम्भाव मुझमे भी आ गया। न कहूँ, फिर भी मुझे यह बात लग गयी कि मेरी कोई गलती न होते हुए भी यह बूढा एकाएक मुझपर बिगड जाता है और उस बालट्या-की बातोमे आकर बातचीत करना बन्द कर देता है? अपने-आप जाकर बूढेसे बाते करनेकी कोशिश करना मैने छोड दिया। स्कूलकी स्थिति काफी सुदृढ हो गयी थी। लडके बहुत आने लगे थे। उनकी परीक्षा, पढायी और उपस्थितिकी ओर अब अधिक ध्यान देना पडता था, क्योकि अफसर लोग आते रहते थे। शिक्षा-विभागको यह ज्ञान हो गया था कि गाँव-गाँवमे जो शालाएँ खोली गयी है उनका समय-समयपर निरीक्षण भी करना चाहिए। ऊपरसे भिन्न-भिन्न प्रकारकी सूचनाएँ आया करती थी, आदेश निकलते थे। फसली मौसमको छुट्टियोमे तितर-बितर हुए लडकोको इकट्ठा करके उन्हे फिर नियमित रूपसे शालामे लानेका कठिन काम आयबू, रामा बनगर और आनन्दा रामोशी कर रहे थे। गाँववाले भी अब मेरी बातको नही टालते थे। शाला और मास्टरके प्रति उनमे अपनापा भर गया था।

एक सोमवार मै शालामे गया तो लडकोने समाचार दिया कि तीसरी कक्षाके एक छात्र 'सता' ने अकेले ही एक भेडियाको मार डाला। मुझे बडा आश्चर्य हुआ।

"कैसे मारा रे?" मैने पूछा।

"बबूलके काँटे साफ करनेकी छोटी कुल्हाडीसे मार डाला, मास्टर! उसका चमडा उसके घर टँगा हुआ है।"

"सता कहाँ है? क्या शालामे नही आया है?"

अब वह स्कूल नही आयेगा, मास्टर। उसके बापने उसे भेडे चराने-के लिए भेज दिया है।

रातको नित्यकी भाँति शालाके सामने जब लोग इकट्ठे हुए, मैंने उनसे पूछा, "क्या यह सच है कि सताने भेडिया मारा ?" और उन्होंने वह वृत्तान्त मुझे विस्तारपूर्वक कह सुनाया।

गाँवके आस-पासकी झाडियोमे एक-दो भेडिये हमेशा रहा करते। इक्का-दुक्का खिरका देखकर, वे भेड पकडते और उसको लेकर भाग जाते। यदि सब ठीक-ठाक हुआ तो गडरिया पीछा करता और भेडियेको मुँहका कौर नीचे डाल देनेके लिए मजबूर करता। तोडो गयी भेडका गला फट जाता। छोटी जातिके लोग उसे थोडी कीमतमे खरीद लेते और खा डालते। लेकिन, बहुधा गडरियोको निराश ही होना पडता और भेडिया भेडको ले जाता। ऐसी घटनाएँ बार-बार होती रहती। जब भेडिया बहुत ऊधम मचाने लगता, तब किसी दिन गाँवके बीस-पचीस जवान लाठियो और कुल्हाडियोसे लैस होकर बाहर निकल पडते। चिलचिलाती धूपमे जगल-जगल घूमते। हाँका करके भेडियेको बाहर निकालनेकी कोशिश करते। परन्तु चालाक भेड़िया उन्हे न मिलता। और फिर दिन-भर लगातार बेकार घूमकर किसीके भी खेतका चना या मूँगफली उखाडकर खाते हुए शिका-रियोका यह दल खाली हाथ लौट आता। फिर चार-छह दिनके बाद किसी भेड़को तोडनेकी खबर आती। इतना सब होते हुए भी भेडिया मारनेका विशेष प्रयत्न किसीको न सूझता। चूँकि यह जानवर खाया नही जाता इसलिए रामोशी लोग इसके शिकारमे कोई दिलचस्पी नही लेते थे। और अन्य गड़रियोकी यह भी धारणा थी कि खिरकेसे भेडिया यदि भेड ले गया तो भेडोको कोई सक्रामक या छूतकी बीमारी नही होती। इस विश्वासके कारण भेडिये ढीठ हो जाते और दिन-दहाडे खेतोमे घूमते रहते। यदि किसी मनुष्यको देख लेते तो चट जमीन खोदने लगते।

सताके बाप विराको किसी कामके लिए दूसरे गाँव जाना पडा। इस-

लिए उसने भेडे चरानेका काम सताके जिम्मे सौप दिया। टहनियाँ काटनेकी छोटी कुल्हाडी हाथमे लिये सता हारमे भेडे चरा रहा था और शामको भेडियेने जगलके एक ऊँचे-से स्थानपर चढकर खिरकेकी टोह ली। करीलकी झाडियोमे-से लुकता-छिपता हुआ किनारे-किनारे चलकर वह खिरकेके नजदीक आ पहुँचा। फिर भी सताको कोई पता न चला। अन्तमे खिरकेसे अलग होकर चरती हुई एक हट्टी-कट्टी भेडको देखकर भेडिया उसपर झपट पडा और उसके गलेको मुँहमे दबाकर भागने लगा। सताका शिकारी कुत्ता आगबबूला होकर भौकता हुआ दौडा। तब सता-का भी ध्यान उस ओर आकृष्ट हुआ। भेडिगा किनारे-किनारे बेतहाशा भाग रहा था।

जोर-जोरसे गालियाँ देता हुआ सता भी दौडा। कुत्ता भी दौडा। बातकी-बातमे कुत्ता जाकर भेडियेसे भिड गया और उछलकर उसने भेडियेके पिछले भागको पकड लिया। उस वेदनासे विह्वल होकर भेडियेने मुँहकी भेडको नीचे डाल दिया और वह पीछे मुडा और दाँतसे कुत्तेकी गरदन पकडनेकी कोशिश करने लगा—अपना पिछला भाग कुत्तेकी पकडसे छुडानेके लिए छट-पटाने लगा। लेकिन जैसे-जैसे भेडिया मुडता जाता था कुत्ता भी उसी तरह मुडता और मुँहमे पकडे हुए भागको खीचता हुआ आगे सरक रहा था। इस तरह दोनो बाजुओसे मुडकर भी भेडियेको कुत्तेकी गरदन नही मिल रही थी। दोनोकी खूब झटापट हुई। धूल उडी। कुत्तेकी अपेक्षा अधिक ताकतवर होनेके कारण भेडियेने कुत्तेको जोरसे खीचा और पटक दिया। दाँतोकी पकडसे छूटकर कुत्ता सिरके बल उलटा गिर पडा और गुस्सेसे भरे भेडियेने कूदकर उसका गला चीर दिया। कुत्ता बहुत चिल्लाया। इस बीच सता वहाँ पहुँच गया और कुत्तेके सीनेपर बैठे हुए भेडियेकी गरदनपर उसने जोरसे कुल्हाडी मारी। खूनके फव्वारे उडे। भेडिया चित होकर पैर फटकारने लगा और क्रोधसे भरा सता उसपर दनादन प्रहार करता रहा।

भेडिया मर गया। कुत्ता भी मर गया। किनारे जमीनमे गढा खोदकर सताने कुत्तेको वही पूर दिया। आँखे पोछी। उस मरी हुई भेडको कन्धेपर रख भेडियाके पैरमे रस्सी बाँधकर उसे घसीटता हुआ दीया जले सता गाँव लौटा। और सारा हाल माँसे कहते हुए फूट-फूटकर रोने लगा। कुत्ता मर गया, भेड मर गयी, इसलिए रोया। स्वय रोते हुए माँने उसे समझाया। हृदयसे लगाकर कहा, "जाने दे। कुत्ता मर गया—वह भेडियाका खून पीकर मरा। भेड मैने उसपर निछावर कर दी। रोता क्यो है?"

यह सब हाल सुनकर मै इतना उतावला हो गया कि सता कब शालामे आता है और कब मै उसे बधाई देता हूँ। परन्तु छह-सात दिन हो गये वह शालामे नही आया। सन्देशा भेजा तो उसके घरसे खबर आयी कि वह अब भेडे चराने जाता है, शालामे अब नही पढेगा।

फिर समय निकालकर एक दिन जान-बूझकर मै उसके घर गया जो खेतमे था।

सूरज डूब चुका था और फीकी चाँदनी पड रही थी। उसका घर जब नजदीक आया तो यह सोचकर कि उसका कुत्ता मुझपर झपटेगा, मैने दूर ही से उसे पुकारा, "ओ सता..."

घरकी तरफसे आवाज आयी, "कौन है?"

"मै हूँ मास्टर। अपना कुत्ता पकड लेना। मै आ रहा हूँ। वह मुझपर झपटेगा।"

सताकी आवाज एकदम गिर गयी। "कुत्ता नही है मास्टर, आ जाओ।"

और एकदम मेरे ध्यानमे आया कि सताका कुत्ता तो कुछ दिन पहले भेडियासे लडते-लडते मर गया। मै अपनेमे ही एक अपराधी-जैसा लगा।

घरके सामने साफ लिपा हुआ सहन था। मिट्टीका टेढा-मेढा वृन्दावन था। उसमे फैली हुई तुलसी लगी थी। उस चबूतरेपर कम्बल बिछाकर सताने कहा, "बैठो।"

फीकी चाँदनीके प्रकाशमे मवेशी जल्दी-जल्दी चारा खाते हुए दिखायी दे रहे थे। सताका बाप विरा बकरी दुह रहा था। बाहरके बरामदेमे भेडे बँधी थी। बैलोके गलेकी घण्टियाँ रुनझुन कर रही थी। खाते समय कडबी टूटनेकी आवाज आ रही थी।

"तुमने बडी बहादुरी की भैया। मैने सब सुना है।"

सताने कहा, "पर भेडियेने कुत्तेको मार डाला, मास्टर!"

"हाँ, वह भी मैने सुना।"

फिर क्षण-भर मै चुप रहा। सता भी कुछ न बोला। दूधका लोटा लेकर विरा मेरे सामने आया।

"दुह रहा था। बडी रात गये आये?"

मैने कहा, "चला आया घूमता हुआ।"

"बैठो। हमारे यहाँ न चाय है और न कुछ है। दूध पियोगे?"

"नही, मुझे चाय या दूध, कुछ नही चाहिए।"

"वाह, ऐसा कहनेसे कैसे होगा? लो न। कमसे-कम हमारे मानके लिए ही। जा रे सता, एक गिलास ले आ भीतरसे।"

विरा मेरे नजदीक ही चबूतरेपर बैठ गया।

मैने पूछा, "सता एक हफ्तेसे स्कूल क्यो नही आ रहा है?"

"नही गया। मैने ही कहा, न जाओ, अब भेडें चराओ।"

"अब तुम्हारी अडचन दूर हो गयी हो तो कलसे भेजा करो उसे।"

विरा थोडा हँसा। गिलासमे दूध डालकर उसे मेरे सामने रख दिया और सतासे लोटा भीतर ले जानेके लिए कहा।

उस स्वादिष्ट दूधको मैने स्वाद लेते हुए पी डाला। वैसे बकरीके दूधमे हलकी-सी हीक आती है, लेकिन आदत हो जानेसे मुझे वह नही आती थी।

फिर आरामसे विराने कहा, "सता अब स्कूल नही जायेगा, मास्टर! अगर पूछोगे क्यो, तो मैने ही उसे पढनेसे मना कर दिया है

और यह कहा है कि पढायी काफी हो गयी। अब अपने काममे लग जाओ।"

"परन्तु इस तरह एकाएक उसकी पढायी क्यो बन्द कर दी? पढने दो उसे सातवी तक।"

गरदनको थोडा झटका देकर विरा बोला, "क्या करना है पढकर? अब जवान हो गया है। अकेले उसने भेड़िया मार डाला। अब वह बच्चा नही रहा। फिर अब उसे शाला और स्लेट-पट्टीकी क्या जरूरत? लगने दो उसे अपने काममे।"

मैने उससे बहुत कहा, परन्तु लडकेके और चार साल व्यर्थ बरबाद करनेके लिए विरा राजी न हुआ। बार-बार उसने दृढतापूर्वक कहा कि अब मै लडकेको शाला नही भेजूँगा। मेरी मददके लिए एक आदमी और हो गया। अब मेरा काम जल्दी पूरा हुआ करेगा। तुम आग्रह न करो, मास्टर! और शालामे आनेके लिए सताने भी कोई खास जिद न की, कोई दिलचस्पी न दिखायी। इस तरह आध घण्टे बहस करके मै उठा और खाली खेतोकी ठण्डी हवा खाता हुआ अपने घरकी ओर चल पडा। मेरा मन गिर गया।

एक दिन दोपहरको शालाकी छुट्टीके बाद नहानेके लिए मै गाँवके बाहर बावडीपर जा रहा था। उस समय बूढा पटेल मेरे पीछे-पीछे आ रहा था। एक-दो बार मैने मुडकर देखा। वह चला आ रहा था। दोपहरकी धूप जुती हुई जमीनपर चिलचिला रही थी और नगे बदन, धोती घुटने तक खोसे हुए मेडपर-से चलता हुआ वह मेरे पीछे-पीछे चला आ रहा था। पहले मैने सोचा कि वह किसी कामके लिए कही जा रहा होगा। लेकिन मेडसे उतरकर मै जब खेतके ढेलोको कुचलता हुआ बावडीकी तरफ जाने लगा तब वह भी मेडसे उतरा। ढेले खूँदता हुआ वह भी बावडीकी तरफ आने लगा। यदि यह कहे वह भी नहाने आ रहा था तो उसके पास धोती और लोटा न था। यूँ ही मेरा हृदय धडकने लगा। परन्तु पीछे न देखता

हुआ मै बावडोके निकट पहुँचा। कपडे उतारकर, रख दिये और लँगोट पहनकर भीतर उतरा। पानीमे डूबा। कुछ डुबकियाँ लगाकर सीढीपर आ बैठा और बदन मलने लगा।

बूढा पटेल भी सीढियोसे नीचे आया और मै जिस सीढीपर बैठा था उसके ऊपरकी दो सीढियाँ छोडकर, एक सीढीपर वह भी बैठ गया। थोडी देर ठहरकर बोला, "एक ही गाँवमे रहकर एक-दूसरेसे बाते न करना ठीक नही है, मास्टर ?"

पटेल स्वय मुझसे बोल रहा था, इसपर मुझे आश्चर्य हुआ। मैने कहा, "बाते करना तो आपने ही बन्द किया है, बाबा। मैने नही।"

"परन्तु तुमने मुझसे कभी यह भी पूछा था कि मै क्यो नही बोलता, किसलिए नही बोलता ?"

"मै क्यो पूछूँ ?"

"क्यो, क्या तुम्हे कुछ हलकापन मालूम हुआ उसमे ? अरे, मान और अपमानका खयाल हम बूढोको होना चाहिए या तुम-जैसे लडकोको ?"

इस बातसे मै थोडा हिला। मुझे लगने लगा कि मुझे भी इस तरह तनकर नही रहना चाहिए था। यदि बूढेसे समझदारीसे बोला होता तो सचमुच वह मुझे अपने न बोलनेका कारण बता देता। फिर बूढा ही कहने लगा, "मुझसे बालट्याने कहा कि तुमने अजीको एक चोली दी। क्या यह सच है ?"

मेरे चेहरेपर हवाइयाँ उडने लगी। क्षण-भर मुझे यही न सूझ पडा कि क्या उत्तर दूँ। मुझे धुँधली-सी भी कल्पना न थी कि बूढा ऐसी कोई बात पूछेगा और उसके न बोलनेका ऐसा कोई कारण होगा। मै यह भी भूल गया था कि किसी दिन मैने अजीको एक चोली ला दी थी। यह देखकर कि मै चुप हूँ बूढा फिर बोला, "उसने महावीरकी सीढीपर हाथ रखा। तुम्हारे चोली देते हुए और अंजीको हँसते-हँसते उसे लेते हुए उसने देखा। यह सुनते ही मेरा सिर भन्ना गया। लडकीको मैने खूब मारा-पीटा

और तुमसे बोलना बन्द कर दिया। परन्तु तुमपर मेरी कड़ी नज़र थी—निगरानी थी। लेकिन मुझे ऐसी कोई बुरी बात तुममे न दिखी कि जिससे मुझे कुछ शक होता। फिर सोचा- एक बार तुमसे पूछ लूँ और सच और झूठका पता लगा लूँ।"

"झूठ है, बिलकुल झूठ है। बालट्या नालायक आदमी है। मेरी और आपकी घनिष्ठता उससे देखी नही गयी, इसीलिए उसने यह सारा षड्यन्त्र मेरे विरुद्ध रचा।"

मेरी साँस जोर-जोरसे चलने लगी। हृदयकी धडकन बढ गयी।

बूढेने फिर कहा, "तो यही कहो न कि तुमने चोली दी, यह बात बिलकुल झूठ है।"

"मैने चोली दी, पर भेट नही की। अजी मेरे पास एक नया कपडा ले आयी थी और मुझे शहरसे उस कपडेकी एक चोली सिला लानेके लिए कहा था। मैने यह बात तुमसे नही कही। क्योकि उसने मुझसे कह दिया था कि मै यह चोली चुपके-से सिलवा रही हूँ, बूढेसे न कहना। चाहो तो मेरे सामने उससे पूछ लो। ऐसा नालायक आदमी नही हूँ मै। मुझसे कोई भी किसी कामको करनेके लिए कहता है, मै उसे कर देता हूँ, सारे गाँवमे शोर मचानेसे क्या फायदा? हाँ, सबके काम करता हूँ, पर इसका बदला तुम लोग इस तरह चुकाओगे, इसकी मुझे कल्पना न थी। मुझे कोई जरूरत नही। मै सिर्फ शालाको सँभालकर भी रह सकता हूँ। मुझे क्या, सिर्फ लडकोको चार अक्षर पढाना है—पढाया करूँगा।" मैने यह सब इतनी जल्दी और झुँझलाहटमे कहा कि बूढा भी सकपका गया।

"देखो भाई, मैने तुमसे कभी कहा है कि यह बात सच है? तुम्हारा कुछ किया मैने? मुझे खुद भी यह बात सच नही मालूम हो रही थी और ऊपरसे आज तुमने सब कुछ खुलासा कर दिया। बालट्या पहलेसे ही तुम्हारी बुराईपर तुला हुआ है। उसने जबरदस्ती ही रस्सीका साँप बनाया। ठीक है। तो तुम्हारे मनमे कोई पाप न था न?"

मै अभी भी जोशमे था। ऊपरसे बाजी बूढेपर ही उलट गयी थी। यह उसकी बातोसे और चेहरेसे झलक रहा था। इसलिए मुझे और भी अधिक जोश आया।

"हाँ, अभी भी पूछो कि मेरे मनमे क्या कोई पाप था ? बुद्धिमान् आदमीका तुम्हारे गाँवमे रहना पाप है। तुम लोग भले आदमीको गधा बना दोगे। बस, अब जितनी नौकरी कर ली, काफी है। मै दरख्वास्त देकर यहाँसे किसी दूसरे गाँवमे अपनी बदली करा लेता हूँ।"

इस तरह आखिरी बात कहकर मै ऊपर आया। और कपडे पहनकर घरकी ओर चल दिया। मै नही जानता कि बूढा सीढीपर कितनी देर तक बैठा रहा और कब लौटा।

उस दिन दिन-भर मै क्रोधसे बेचैन रहा। अपने मनको बहुत समझाया। फिर भी बालट्यासे बदला लेनेके भावको मनसे न निकाल सका। मै मन-ही-मन सोच रहा था कि सब गाँववालोके सामने उसकी अच्छी मरम्मत करूँ। लेकिन मुझ-जैसे कमज़ोर आदमीके लिए उसे मारना सम्भव न था। तब सोचने लगा कि किसी मामलेमे फँसाकर उसे जेलकी हवा खिलाऊँ, कमसे-कम अपनी पहचानके थानेदारसे उसे थोडा पिटवा दूँ और अच्छी तरह डाँट खिलवा दूँ। मै मनसे बहुत ही नीचे चला गया।

मेरी इस मन स्थितिको आयबू ताड गया। वह अनुमान न कर सका कि मुझे क्या हो गया है। मुझसे कुछ पूछनेका उसे साहस न होता था। और मैने कुछ कहा भी नही। किन्तु रातको अँधेरेमे पडे-पडे जब कि ये सारीकी-सारी बाते मुझे मथे डाल रही थी, अपनेको न रोक सका और आयबूसे मैने कह ही दिया, "आयबू, बालट्याने मुझे मुफ्त बदनाम कर दिया है, यार।"

द्वारके पास आयबू चद्दर ओढकर लेटा हुआ था। वह बोला, "उसे सबक सिखाओ, मास्टर।"

"सबक सिखाना कठिन नही है। लेकिन गाँवमे व्यर्थ ही बुराई हो

जायेंगे। आज तक अच्छी तरहसे दिन बिताये। किसीको कुछ कहनेका कभी मौका नही दिया।"

आयबूको भी वह बात जँच गयी। जब कोई बात समझाकर कह दी जाती, तो वह उसे तत्काल जँच जाती थी। कमसे-कम वह अपने चेहरेपर ऐसे भाव दिखाता कि उसे वह जँच गयी है। मुँहसे भी कह देता था।

"आज तुम्हारा क्या किया उसने, मास्टर ?"

"एक-दूसरेको लडानेके सिवा और क्या करेगा ? पटेल बात नही करता था, उसका कारण बालट्या ही था।"

"वह तो मैने भी तुमसे कह दिया था।"

"सुनता हूँ बालट्याने पटेलसे यह कहा कि मेरा और अजीका अनुचित सम्बन्ध है।"

इस अनपेक्षित समाचारसे आयबू झल्ला उठा और उसके मुँहसे एक बहुत गन्दी गाली निकली। बालट्या झूठ-मूठ कोई दूसरी बात कह देता तो कुछ न था। लेकिन वह मास्टर और अजीका सम्बन्ध जोडकर पटेलसे शिकायत करे, इसका आयबूको बडा ताज्जुब हुआ और फिर गुस्सा भी आया। वह बोला, "मैने यह कभी नही सोचा था कि बालट्या इतना आगे बढ जायेगा।"

मैने कहा, "गाँवमे कोई भी मेरी बुराई नही चाहता, पर बालट्या पहलेसे ही मुझपर सर्पकी तरह खार खाये है। कुछ समझमे नही आता कि क्या करूँ। अच्छा-भला आदमी सामने आकर दो हाथ भी नही करता। छिपकर गोलियाँ चलाता है।" बोलते-बोलते मुझे उस समयका स्मरण हो आया जब बालट्या पहली बार ही मेरे कमरेमे आया था और उसने मुझे डाँट लगायी थी और लगा कि अजीके प्रकरणको लेकर यह आदमी कभी-न-कभी सारे गाँवको मेरे विरुद्ध भडका देगा और मुझे पीटेगा। बहुत देर तक मुझे नीद न आयी। आयबू खर्राटे लेने लगा।

इसके बाद तीसरे या चौथे दिन रातको जब मै घर लौटा तो आयबू

सोया हुआ था। दियासलाई जलाकर मैंने बिस्तरको देखा और लेट गया। नींद आ गयी। पहली नींद पूरी हो रही थी तभी किसी शोर-गुलसे मैं जाग उठा। पहले कुछ समझमें ही न आया। बादमें लगा कि चावडीकी तरफ कुछ हो-हल्ला हो रहा है।

अँधेरेमें ही मैं उठकर बैठ गया और उस तरफ कान लगा दिये। सिवा हो-हल्लाके और कुछ भी नहीं सुनायी देता था। मैंने सोचा, शायद भेडिया आया हो या कहीं साँप निकला हो। और यह जाननेके लिए कि आयबूका क्या अनुमान है, मैंने कहा, "आयबू, यह हो-हल्ला क्यों हो रहा है ?"

आयबू जल्दी न जागा। तब अँधेरेमें ही उसे हिलाकर मैंने जगाया। वह घबडाया और उठकर बैठ गया और "क्या है—क्या है, किसे चाहते हो ?" कहने लगा। जब थोडा होशमें आया तब मैंने पूछा, "क्या तुम्हें कुछ शोर-गुल सुनायी दे रहा है ?" चावडीके सामने लोग इकट्ठे हुए मालूम होते हैं। उसने भी कान लगाकर सुना।

"कुछ गडबड जरूर हो रही है। क्या जाकर देख आऊँ ?"

मैंने कहा, "चल, मैं भी चलता हूँ।"

बिस्तरोंको ठीक तरह लपेटकर हम दोनों बाहर निकल पडे। घना अन्धकार था, पर आदत थी इसलिए उस अन्धकारमें भी तेजीसे चलते हुए हम लोग चावडीके पास पहुँचे। पहले ही जो मिला उस व्यक्तिसे मैंने पूछा, "क्या हो गया है ? यह शोर-गुल काहेका है?"

वह बोला, "दादू बालट्याको किसीने बुरी तरह मारा है।"

"किसने ?"

"जाने कौन था, अँधेरेमें दिखा नहीं।"

भीड़को चीरकर मैं आगे बढा। दीया लेकर बालट्याकी बुढिया बैठी हुई थी। "ओ माँ, अब क्या करूँ ?" कहकर चिल्ला रही थी। और दादू बालट्या धूलमें औंधा पडा हुआ था। उसका साफा उड गया था। सलूका फट गया था। बालट्या बेदम मार खाये हुए कुत्तेकी तरह जीभ निकाल-

कर हाँफ रहा था। पटेल और रामा बनगर उसके पास उकडूँ बैठे हुए लगातार कह रहे थे, "अरे, तू उठकर बैठ तो दादू। बता तो क्या हुआ? किसने मारा?"

और बाल्टया आँखे बन्द कर सिर्फ गरदन हिला रहा था। उससे उठा नही जाता था, बोला नही जाता था।

मैने कहा, "अरे, तुम लोगोने उसे इस तरह धूलमे ही क्यो पडा रहने दिया है। उठाकर घर ले जाओ।"

सबको मेरी बात जँच गयी। और उसे स्वीकारा भी। पर आगे बढ-कर कोई उसे उठाता न था। तब आनन्दा रामोशी आगे बढा और जिस तरह मरा हुआ बकरा उठाते है, उसी तरह उसने बालट्याको उठाया और उसके घरकी तरफ ले चला।

पन्द्रह-बीस आदमियोका झुण्ड खाँसते-खखारते और एक दूसरेसे यह पूछ-ताछ करते हुए कि क्या हुआ और कैसे हुआ, उसके पीछे-पीछे हो लिया। उसके घर पहुँचते ही कम्बल बिछाकर उसपर उसे सुला दिया। उसकी बुढिया धाड मारकर रो रही थी। उसपर बिगडकर पटेल बोला, "तू चुप रह सुन्द्रा। अरे वह क्या मर गया है जो इतना गला फाड़ रही है?"

घरमे और घरके बाहर लोग भीड लगाकर खडे हो गये। उसके मुँहपर पानी डाला, उसे पखा झला। तब बालट्याका हाँफना कुछ बन्द हुआ। आँखें घुमाकर वह चारो ओर देखने लगा।

मैने कहा, "मुझे पहचाना?"

तब उसने मुँह दूसरी ओर फेर लिया। उसके मुँहके पास मुँह ले जाकर पटेल बोला, "होशमे आया दादू? मै कौन हूँ?"

तब दादूने थूक गिटका और बूढेका हाथ अपने हाथमे कसकर पकड़ लिया।

"डर मत। तुझे कुछ नही होगा।" कहकर बूढा उसके हाथ-पैर

दबाने लगा। किसोने कहा, जब यह चिल्लाया, "मरा, मरा, मुझे मार डाला रे !" तब मै भागता हुआ घरसे बाहर निकला। अँधेरेमे कुछ सूझता न था। आगे बढकर देखता हूँ तो कोई जमीनपर पडा हुआ कराह रहा है। मैने पूछा, "क्या हुआ, कौन है रे ?" तब यह बोला, "मै हूँ दादू, मुझे मारा।"

रामाने कहा, "अरे पर किसने, कैसे, किस लिए, या कि कह दिया मारा और बस ?"

कहनेवाला बोला, "यह तो भगवान् जाने। इसके बाद दादू कुछ बोलता ही न था, तब मुझे पता कैसे चलता ?"

"तूने किसीको भागते या छिपते हुए नही देखा ?"

"नही भैया, माँकी कसम। झूठ क्यो बोलूँ ?"

कोई बाहरसे बोला, "यह तो कोई भानुमतीका खेल मालूम होता है।"

"अरे तो फिर कोई पटेलकी बाडीमे दौडते हुए जाओ और उस गुनियाको ले आओ अपने साथ। कहते है वह तो बडा देवता है।"

कोई जानेको तैयार न होता था। मै-मै तू-तूमे ही बात खतम होती-सी लग रही थी। मुझे यह अच्छा न लगा। जरा आवाज़ चढाकर मैने कहा, "भानुमती वगैरह कुछ नही। उसे थोड़ा विश्राम कर लेने दो, उठकर बैठ जाने दो तब आप ही मालूम हो जायेगा कि क्या हुआ है।"

परन्तु पहले मुर्गेने बाँग दी, फिर भी बालट्या नही उठा। धीरे-धीरे भीड छँट गयी। लोग चल दिये। मै, पटेल, आयबू, रामा और गाँवके दो-चार आदमी बैठे रहे। दिन निकलते ही बालट्याने अच्छी तरह आँखे खोली। पानी माँगा। मैने उसे पानी दिया। गरम चाय बनाकर पिलायी। तब उसमे कुछ अधिक ताजगी आ गयी।

रामाने पूछा, "क्यो दादू, अब जी अच्छा है ?"

बालट्या धीमी आवाजमे बोला, "हाँ।"

"तुम्हे मारा किसने ?"

साँस लेकर दादू बोला, "मुझे मारनेवाले दिखे नही।"

"कितने लोग थे ?"

कुछ पता न चला। अँधेरेमे एकाएक कम्बल मेरे सिरपर डाल दिया, मुँहमे कपडा ठूँस दिया और लाठियाँ बरसाना शुरू कर दिया। उन कायरोने ढोरकी तरह पीटा रे मुझे, रामा।"

"तुम्हे किसीपर शक है ?"

बालट्याने गरदन हिलाकर 'नही' कहा और मेरी ओर देखा।

धूप निकल आयी थी। तब "अच्छा, आराम करो अब" कहकर पटेल उठा। हम भी उठे। बाहर निकलकर रामा बोला, "इस सालेके पीछे हजार झझटे तो लगी रहती है। किसी दूसरे गाँवके आदमियोने आकर पीटा होगा, तो क्या पता चलेगा ?"

आयबू बोला, "वह कहता नही है। पर उसे पक्का मालूम है कि किसने मारा है।"

पटेलने कहा, "जरूर मालूम होगा। चोरके रास्ते चोर ही जानते है। गनीमत हुई कि सिर्फ पीटकर ही छोड दिया। अगर जान भी ले लेते तो कोई क्या कर सकता था ?"

घर पहुँचते ही मैने आयबूसे कहा, "आयबू, बालट्यासे मेरी ही दुश्मनी थी। यदि उसने मुझपर शक किया तो ?"

आयबू मुँह बिचकाते हुए बोला, "उस सालेकी अब काफी मरम्मत हो गयी है। छह महीने उसका बिस्तर नही छूटता अब ?"

और हुआ भी वैसा ही। पन्द्रह दिन हो गये फिर भी बालट्या चल-फिर न सका। ऐसे आसार भी नजर न आये कि वह जल्दी चल-फिर सकेगा। दिन-भर वह बिस्तरमे पडा-पडा कराहा करता। कोई उससे मिलने जाता तो बालट्या उससे बात न करता। उसकी यह हालत देखकर सारा गाँव कहने लगा, "बालट्याको भूतने पकडा है। अब वह न बचेगा।"

चौदह

एक दिन अनायास मेरे मनमे आया कि इस छोटे-से गाँवमे एक मजबूत इमारत होनी चाहिए। होनी चाहिए, यह ठीक था। लेकिन वह बननी चाहिए गाँववालोके खर्चसे। पर सवाल यह था कि क्या ये पागल गडरिये इस कामके लिए रुपया देंगे ? उस तरफ एक कहावत प्रचलित थी जिसका मतलब था कि गडरियोका पागलपन छह महीने नही जाता। उनके उजड्ड स्वभावके कारण ही शायद यह कहावत पड गयी हो। गाँवमे इमारत होनी चाहिए, यह बात किसीको भी न जँचती। क्योकि यदि शालाके लिए कहूँ तो उसके लिए स्थान था ही और कमसे-कम निकट भविष्यमे ऐसा होनेकी कोई सम्भावना भी न थी कि वह स्थान कम पड जाये। फिर इमारतकी क्या जरूरत ? सहज ही मेरे मनमे आया कि एक व्यायामशाला बनायी जाये जिसमे बच्चोके खेल-कूदका इन्तज़ाम रहे और वह इतनी प्रशस्त हो कि कभी-कभी सब गाँववाले भी एकत्रित होकर वहाँ आरामसे बैठ सके। रियासतके राजा साहब व्यायामके बडे शौकीन है। इसलिए रियासतके शिक्षा-विभागसे अथवा स्वय राजा साहबसे इस कामके लिए सहायता मिल जायेगी। साथ ही इस गाँवमे मै मास्टर था, इसकी यादगार भी बनी रहेगी।

रातको घर-घर रामोशीको भेजकर मैने गाँववालोको इकट्ठा किया। भोजनके बाद तमाकू दबाये कम्बल ओढकर लोग इकट्ठा हुए और पाठशालाके सामनेवाले खुले मैदानमे बैठ गये। मै चबूतरेपर बैठा था। मेरे सामने पटेल बैठा था। रामा बनगर था। शेकू था। तातुबा था। खेतोमे कोई काम-धन्धा न होनेके कारण बहुधा सभी लोग आये थे।

शुरूमे तो यूँ ही इधर-उधरकी बाते हुई। उनसे पता चला कि बालट्यासे अभी भी अपनी जगहसे उठते नही बनता और उसके सारे

बदनसे टीसें उठती है। किसीने उसे फौज़दारी करनेकी सलाह दी थी। तब उसने कहा था, "फौज़दारी करूँ और मान लो कि मुझे मारनेवाले मिल गये और उन्हे सज़ा भी हो गयी। लेकिन इससे मेरे घाव थोडे ही भर जायेंगे ?"

बात ठीक ही थी।

फिर मैने असली बात छेडी। कहा, "मै चाहता हूँ कि गाँवमे एक अच्छी मज़बूत इमारत बनायी जाये। हमे झोपडियो और पटावोके मकानो-से भी अधिक मज़बूत स्थान चाहिए। रोज़ हम सब लोग इकट्ठा होते है और कोई ठीक स्थान न होनेसे धूलमे बैठते है। बारिश हो या कडाकेका जाडा हो, तब यहाँ कोई बैठने नही आता। शालाका कोई अफसर आता है या पुलिस महकमेका कोई आता है तो उसे ठहरनेकी तकलीफ होती है। चमारोकी बस्तीमे ऐसी एक पक्की इमारत है। फिर अपने गाँवमे भी क्यो न हो ? इसलिए मैने सोचा है कि गाँवमे एक व्यायामशाला यानी अखाडा बनाया जाये। बोलो, तुम लोगोकी क्या सलाह है ?"

लोगोमे कानाफूसी हुई। शायद उन्होने सोचा कि मास्टरका दिमाग घूम गया है। आपसमे ही वे बतकही करने लगे। तब मुझे गुस्सा आया। मै चिल्ला पडा, "तुम लोग आपसमे बाते न करो। मुझे तुम लोग अगर गधा भी कह दोगे, फिर भी कोई हर्ज नही। लेकिन वह साफ-साफ मेरे मुँहपर आकर कहो।"

बाला बनगर झिझकते हुए बोला, "अखाडा तो बनाओगे, पर गाँवमे पहलवान कहाँ है ?"

"जब शाला शुरू हुई थी तब भी तुमने कहा था कि लडके कहाँ है गाँवमें ? पर आजकल पाठशालामें लडके आखिर आ ही रहे है न ? यही नही, बल्कि एक-दो सालमे पाँच-दस लड़के मिडिल पढने बड़े स्कूलमे भी जायेंगे और सातवी पास करेंगे।"

किसीने कहा, "क्या खाक पास होगे ? ज़रा बडा तो होने दो उन्हे

फिर देखना कि वे चल देगे भेडोको चराने। हममे-से पढ-लिखकर कोई अफसर हुआ है इस तहसीलमें ?"

बूढा पटेल अक्लमन्दीसे बोला, "अरे बाबा, आज न होगा कोई पहलवान। लेकिन जब लडके कसरत करने लगेगे, खेलने-कूदने लगेगे, तो खेलते-खेलते उनमे-से एक-दो पहलवान निकल ही आयेगे !"

मैने कहा, "और मान लो नही निकला। फिर भी गाँवमें इमारत क्या बेकार पडी रहेगी ? किसी काम न आयेगी ? तुम लोग नाचते हो। उसका सामान इस वक्त दस जगह बिखरा हुआ है। ढोल कही है, झाँझे कही पडी है। तुममें-से कुछ लोग लेज़िम, पटा और बनेठी भी खेलते है। यह सारा सामान यदि कायदेसे व्यायामशालामे रखा रहे और जो इसके अच्छे जानकार है, वे फुरसतके समय यदि लडकोको भी ये खेल सिखाया करें, तो यह क्या कोई बुरी बात होगी ?"

"पर व्यायामशाला बनानेके लिए ढेर-भर रुपये चाहिए। वह कौन देगा ?"

"गाँववालोसे चन्दा वसूल करना चाहिए। हर घरसे दस-बीस रुपया लेना चाहिए।"

"हाँ, पर है किसके पास ?"

"बहुतोके पास है। मै जानता हूँ। जिनके पास रुपये न हो, वे अपने गाडी-बैल दे। अपने जगलसे लकडियाँ दें। यदि सारा गाँव चाह ले तो एक दस-खनी इमारत बातकी-बातमे खड़ी हो जायेगी।"

मैंने यह सब तो कह दिया। लेकिन मेरे विचार किसीको भी जँचे नही। खुल्लमखुल्ला विरोध करनेकी भी किसीको हिम्मत न हुई। बहुतो-की यही राय रही कि इमारत अधूरी रह जायेगी, यूँ ही एक तमाशा हो जायेगा। लेकिन मैं चुप न रहा। हर तरहसे यह बात उन्हे समझानेकी कोशिश करता रहा।

गांवके बूढोको मैंने फिर एक दिन इकट्ठा किया। उनसे विचार-

विनिमय किया। दूसरे गाँवके लोगोने किस तरह बिना सरकारकी मददके अपने गाँवमे स्कूल बनाये है, सरकारने उनकी किस तरह तारीफ की है, वे गाँव किस तरह तरक्की कर रहे है, इस गाँवसे किस तरह आगे बढ गये है, ये सब बाते मैने उनसे कही और उनसे यह स्वीकार भी करा लिया।

जब ये लोग तैयार हो गये, तो सहज ही सारा गाँव भी तैयार हो गया। एकने कहा कि करेगे, तो सबने कह दिया कि करेगे। हर घरसे दस रुपया वसूल करनेकी बात लोगोने मान ली। जिनके पास बैल थे, गाडियाँ थी, वे श्रमदानके लिए राज़ी हो गये। यह तय हुआ कि आगामी चार-छह महीनेमे इमारत बना दी जाये और अपनी रियासतके राजा साहब-से उसका उद्घाटन कराया जाये। गाँवमे कभी न आया हुआ राजा मास्टरजीकी करामात और गाँवकी एकताके कारण हमारे गाँवमे आयेगा, यह कल्पना ही लोगोको अत्यन्त उत्साहित करने लगी। घर-घरमे यही चर्चाका विषय हो गया। हमारे गाँवमे एक व्यायामशाला बनेगी। हमारे गाँवमे राजा आयेंगे, यह बात हर एककी ज़बानपर हो गयी। गाँवमे कई दिनोसे कहने लायक और बार-बार चर्चा करने लायक कोई घटना नही हुई थी, वह अब शीघ्र ही होनेवाली थी। लोगोने बडी तत्परतासे अपने-अपने हिस्सेका चन्दा लाकर बूढे पटेलके पास जमा कर दिया। मैने भी मददके लिए सरकारको अर्ज़ी दे दी। राज और बढईकी तलाश होने लगी क्योकि ऐसे कारीगर गाँवमे न थे। इसलिए मुँहमाँगी मजदूरी देकर उन्हे दूसरे गाँवोसे लाना आवश्यक था। लकडियोकी ज़रूरत थी। दूरके पहाडसे पत्थर लाने थे। पत्थर फोडनेवालोकी मज़दूरी तय करनी थी। उनके द्वारा फोडे गये पत्थरोको गाँव तक लानेके लिए बैलगाडियोका इन्तज़ाम करना था। वे पत्थर वहाँसे उठकर गाँवमे आये, तब कारीगर उन्हे बनायेगे। 'घर बनाकर देखना चाहिए' वाली कहावत झूठ नही। गाँवमे मामूली बातसे ही काममे बाधा आ जाती है। एक अदना-सा कारण भी गाँवमे घर बनाने-के काममे इतना विलम्ब कर देता है कि कुछ न पूछिए।

इस तरह तैयारियाँ शुरू हो गयी और फिर सोचा कि अब इमारतके लिए जगह तय कर ली जाये। मेरा खयाल था कि गाँवमे इमारतके लिए जगह मिलना कोई कठिन बात न होगी। कही भी वह मिल सकती है। लेकिन जब प्रत्यक्ष देखनेके लिए गया तो इमारतके लिए योग्य जगह गाँव-भरमे, कही भी न मिली। व्यायामशालाके लिए सबके सुभीतेकी एक ही जगह गाँवमे मुझे दिखायी दी। लेकिन उस जगह एक टूटा-फूटा चार खनवाला मकान था जिसमे ताला पडा था। मन-ही-मन मैने वही जगह चुन ली और रातको लोगोसे कहा।

पटेल बोला, "लेकिन वह मकान तो दूसरेका है।"

"किसका है ?"

"एक दूसरे-गाँवका बनिया इस गाँवमे आ गया था। वही उसमे रहता था। उसीने वह घर बनवाया है।"

"तो वह अब है कहाँ ? हम उससे यह जगह खरीद लेगे।"

मेरी इस बातपर लोग हँस पडे। किसीने स्पष्टीकरण किया, "वह बनिया तो अब मर गया, मास्टर। बीडी और चायके कारण उसका वश ही नष्ट हो गया।"

और फिर लोगोने मुझे उस घरके मालिकका सारा हाल विस्तारपूर्वक कह सुनाया। सचमुच सद्या बनिया बीडी और चायका ही शिकार हो गया था। शराब, औरत और जुआके कारण घर-बारको बरबाद कर देनेवालोके बहुत-से उदाहरण है। लेकिन चाय और बीडी-जैसे मामूली व्यसनोसे सद्या बनिया कैसे मरा और उसके घर-पर इनके कारण इतना बडा सकट कैसे आया ? कहते है कि वह बनिया कुछ खाता-पीता तक न था। हमेशा तेज चाय बनाकर पिया करता और लगातार बीडियोके कश खीचा करता था। घरमे उसकी बूढी माँ थी। उसने उसे हजार बार समझाया-बुझाया। लेकिन लडकेके कानपर जूँ तक न रेगी। कोई उद्योग-धन्धा न करके वह एक-एक घण्टेके बाद चायकी प्याली हलकके नीचे उतारा करता और

पाँच-पाँच मिनिटके बाद बीडियाँ सुलगाया करता। और यह भी सिर्फ अकेला ही करता हो, सो नही। मुहल्लेके दस-बीस लोगोको आग्रहसे बुलाकर अपने घर लाता। जब वे सब इकट्ठा हो जाते, तो हण्डा-भर चाय बनवाता और सबको ज़बरन पिलाया करता। उनके सामने दर्जनो बीडीके बण्डल रख देता और उनसे ज़बरदस्ती उनके कश खीचनेके लिए कहता। लोगोको क्या फिक्र थी ? उन्हे सब चीज़े मुफ्तमे मिल रही थी। लोगोको कोई यदि जहर मुफ्तमे दे, तो वे उसे भी ले ले। सद्या बुलाता था, लोग जाते थे। उसके यहाँ चाय पीते, बीडीके कश खीचते और बादमे अपने-अपने घर आकर उसके बारेमे यह भी कहते कि, "पूरा मूर्ख है यह बनिया। साला व्यर्थकी शान बघारता है। एक दिन भिखमगा हो जायेगा।"

लेकिन सद्याने इसकी कभी कोई परवाह न की। वह तो एकदम बडा दानवीर हो गया था। बरसो तक उसके घर यही क्रम चलता रहा। धीरे-धीरे खुद उसकी कमाई और उसके बाप-दादोकी पूँजी खत्म हो गयी। फिर सद्याने अपनी सुन्दर गाये बेच दी। जमीन बेच डाली। इस तरह धीरे-धीरे अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर उसने चाय पीना शुरू किया और एक दिन बेचनेके लिए उसके पास कुछ भी न बचा। पहले वह बडा कसरती और तगडा जवान था। लेकिन अब सीकिया पहलवान हो गया। बीडीके धुएँके कारण उसकी छाती भीतर धँस गयी। चायके अतिरेकसे उसकी भूख मर गयी। काम करके कुछ कमानेकी थोडी भी ताकत अब उसमे नही बच रही। घरके बरामदेमे वह यूँ ही बैठा रहता और राहगीरोसे बीडी माँगा करता। गाँवकी बूढी औरतोको उसपर दया हो आती और वे कभी-कभी उसे गुडकी चाय पीनेको दे देती। ऐसी हालतमे सद्या कुछ दिन इसी तरह एक लावारिस जिन्दगी जीता रहा और एक दिन इस दुनियासे सदाके लिए चल बसा।

मैने सद्याका यह विलक्षण वर्णन सुन लिया और कहा, "तो इसका मतलब यह हुआ कि इस जमीनका अब कोई वारिस नही बचा। यदि गाँवकी

व्यायामशालाके लिए हम इसे ले ले, तो इसमे कोई आपत्ति नही उठेगी।"

लेकिन यह बात माननेके लिए कोई तैयार न होता था।

बनियाकी जगह किस तरह ली जा सकती है, इस विषयमे गाँवका हर आदमी चुप्पी साध गया। मैने बार-बार उन्हे समझाना चाहा। मैने उनसे यह भी कहा कि यदि वह मकान गिराकर जमीन साफ कर ली जाये तो उसपर इमारतकी रूपरेखा खीचनेके लिए ठीक होगा। लेकिन कोई भी मेरी इस बातपर ध्यान नही देता था। फिर एक दिन मै ही अपनी शालाके लडकोको साथ लेकर उस जगह गया और लडकोकी मददसे उस मकानकी गिरी दीवालोको तोडना-फोडना शुरू कर दिया। बन्दरोकी फौज काममे भिड गयी। कुदालियाँ और फावडे लाकर लडके उस घरकी दीवालोको खोदने लगे। जब गाँवके लोगोने देखा कि खुद मास्टर ही हाथमे कुदाली लेकर घर गिरा रहा है, तब वे भी मेरी मददके लिए आ गये। पहली कुदाली चल जानेके बाद सारा पाप मेरे सिरपर आ गया था। पापका धनी मै हो गया था। गाँववालोको अब कोई खतरा न था। गाँवके बहुत-से लोग इस काममे जुट गये और पूरा घर गिरा दिया गया। चार-छह दिनके बाद वह जगह बिलकुल साफ हो गयी। इसका कोई नामोनिशान भी न रहा कि वहाँ किसी बनियाका कोई मकान था।

इसके बाद लकडियाँ जमा करनेका काम शुरू हुआ। गाँवके दो-चार जिम्मेदार आदमियोको साथ लेकर मै खेत-खेत चक्कर काटने लगा। जिन-जिनके खेतोमे इमारतके लिए उपयोगी नीमके पेड होते वे उन्हे देने लगे। देते समय कुछ आनाकानी जरूर करते, पर अन्तमे दे देते थे। बहुत बार ऐसा भी होता कि देनेवाला हमे ऐसा पेड दिखा देता जो इमारतके किसी कामका न होता अथवा मोटा होते हुए भी भीतरसे खोखला होता। तब इस बातको लेकर उससे झगडना पडता, हुज्जत करनी पडती। तब मै तनतना जाता। मै कोई अपने घरके लिए तो लकडी नही माँग रहा था। फिर भी लोगोसे अपने पेड नही दिये जाते थे। कुछ खुशीसे देनेवाले भी

मिले, ऐसा नही कि न मिले हों। लेकिन पेड प्राप्त करनेमे बडी माथा-पच्ची करनी पडी। पेड मिल जानेपर मज़दूर लगाकर उसे गिराना, काटना, किसीकी गाडी खोजना, कहीसे बैल जुटाना, उस लकडीको ढुलवाकर इमारतकी जगह लाकर बढईके जिम्मे लगाना। यह सब शुरू हुआ। वक्त-पर मज़दूर नही मिलते थे, गाडी-बैलोको पाना मुश्किल हो जाता था। इन कामोके लिए झल्लाना पडता था, हाथ जोडने पडते थे, और धमकियाँ भी देनी पडती थी। इन सब बातोसे जब ऊब जाता तो जाकर मैं बूढे पटेलसे कहता, "बाबा, अपनी व्यायामशालाका काम अब तुम्ही सँभालो। मैं चला छुट्टी लेकर। तुम्हे अपनी शाला बनाना हो तो बनाओ और न बनाना हो तो न बनाओ। तुम्हारे गाँवमे जब किसीको भी उसकी जरूरत नही है तब उसके लिए मैं ही अकेला अपना खून क्यो सुखाऊँ?"

तो पटेल मुझे समझाता, "लडके, अगर तू चल देगा, तब तो बन चुकी इमारत। वह कभी नही बनेगी। इतनी मेहनत की है, वह सब व्यर्थ चली जायेगी। लकडियाँ पडी-पडी सड जायेगी, जो पत्थर बनकर तैयार हो चुके है, उन्हे लोग धीरे-धीरे अपने घर ले जायेगे। अरे भैया, इमारत बनाना क्या हँसी-खेल समझा है तुमने। इसमे तकलीफ तो होगी ही। पचायती कामोमे तो ऐसी झझटें होती ही रहती है। अब जो काम सिर-पर उठा लिया है, उसे किसी-न-किसी तरह पूरा करना ही होगा।"

लेकिन मै भी कहाँ उसे बीच ही में छोड देनेवाला था। यह सम्भव ही न था। अब व्यायामशाला मेरे यश और अपयशका विषय बन बैठी थी। बनगरवाडीकी इज्ज़तका सवाल था। पडोसके छोटे-बडे सभी गाँव बनगरवाड़ीकी ओर बडे कुतूहलसे देख रहे थे। वे कहा करते थे, ये गडरिये, ये पगले इस कामको क्या खाक पूरा करेगे? मास्टर हजार शौकीन हो, लेकिन केवल शौक़से क्या होगा? उन्हे दिखा देना था। बनगरवाडीमे एक ऐसी इमारत बनवा देनी थी जैसी आस-पासके दस-पांच गांवोमे न थी।

पेडोंको इकट्ठा करनेके सिलसिलेमे मै एक बार बाला बनगरके खेतमे गया। आयबू और आनन्दा भी मेरे साथ थे। विशेष बात यह थी कि बालाके खेतका एक पेड बिलकुल सीधा था और हमे उसकी बडेराके लिए सख्त जरूरत थी क्योकि उसके लिए वह बिलकुल ठीक था। आनन्दाने रास्तेमे ही एक बबूलपर बैठे हरियलको गुलेलसे मारा। वह तत्काल नीचे गिरकर तडप रहा था तभी आयबूने लपककर उसे पकड लिया। हरियलने गरदन झुका दी। आनन्दा फिर पक्षियोकी टोह लेने लगा और आयबू चलते-चलते उस मृत हरियलके पख तोडने लगा।

मै अकेला ही उनके आगे बढ गया। शामके यही कोई चार-सवा चार बजे होगे। मै बालाके खेत पहुँचा। उस समय वह एक पुराने गिरमे-की मरम्मत करता हुआ उसी नीमके पेडके नीचे बैठा था। एक धोतीके सिवा उसके बदनपर और कोई कपडा न था। तग पशेमानी, फैली हुई नाक और सपाट ठुड्ढीवाला बाला एकाग्रचित्तसे वह टूटा हुआ गिरमा दुरुस्त कर रहा था।

मै किसलिए आया हूँ, यह वह ताड गया। मेरा उसने कोई स्वागत न किया। यह भी न कहा कि बैठो। लेकिन कुछ बोलना तो चाहिए था, इसलिए उसने इतना ही कहा, "आज इधर कहाँ दौड पडे, मास्टर।"

मैने हँसते हुए कहा, "तुम्हारे ही यहाँ आया हूँ खासकर।" और वही ढेले और ककड साफ कर जमीनपर बैठ गया। बाला आगे फिर एक शब्द भी न बोला। तब हिम्मत समेटकर मैने ही कहा, "तो अब पेड कब दे रहे हो व्यायामशालाके लिए ?"

"कौन-सा पेड, कैसा पेड ?"

ऐसे उत्तरोको सुननेकी अब मुझे आदत पड चुकी थी। फिर भी मुझे गुस्सा आ गया। शायद वह चेहरेपर झलका भी होगा। ऊपर नीमके पेड-की तरफ देखकर मैने कहा, "कौन-सा पेड क्या पूछ रहे हो ? यही पेड जिसकी छायामे तुम बैठे हो।"

गरदन हिलाकर वह बोला, "वह नही मिलेगा !"

"क्यो भाई?"

"मेरी खुशी !"

"ऐसा कहनेसे कैसे चलेगा ?"

"देखूँगा कैसे नही चलता। जिसकी कलाईमे ताकत होगी वही इस पेडको गिराकर ले जायेगा।"

"जबरदस्ती ले जानेका सवाल ही नही है। यह तो खुशीका मामला है।"

"तो मेरी खुशी नही है। मुझे न गाँवकी जरूरत है और न तुम्हारी व्यायामशालाकी। मेरे खेतमे छायाके लिए अकेला सिर्फ यही एक पेड है। मेरे ढोर और बाल-बच्चे कुछ समयके लिए जिसकी छायामे रहते है, उसीको तुम ले जाओगे ? मै नही दूँगा। पेडपर कुल्हाडी चलानेसे पहले वह मेरी गरदनपर चला दो और फिर खुशीसे पेड काटकर ले जाओ।"

"ठीक है।" इतना ही कहकर मै उठा और गाँवकी ओर जाने लगा। रास्तेमे आयबू और आनन्दा मिले।

"मिल गया बालाका पेड, मास्टर ?"

मैने कहा, "नही। वह कहता है पहले कुल्हाडी मेरे गलेपर चलाओ और फिर पेडपर।"

इसके बाद एक दिन पटेल, मै, रामा, गाँवके और दो-चार आदमी मिलकर बालाके यहाँ गये। उस समय भी नीमकी छायामे बैठा वह टूटा गिरमा दुरुस्त कर रहा था। उसकी भेडे आस-पास कान हिलाती बैठी हुई थी। औरत और बच्चे बैठे थे। उसी नीमकी छायामे उसने अपने दो बैल बाँध रखे थे। उसका शिकारी कुत्ता भी अग समेटकर वही बैठा हुआ था। हमारे वहाँ पहुँचते ही हाथमे कुल्हाडी लिये बाला उठकर खडा हो गया। हम लोग जहाँके-तहाँ रुक गये। इस भयसे कि यह व्यक्ति मारपीटपर न उतारू हो जाये, मै ठण्डा पड गया। और बाला कुल्हाडी लिये हुए हमारे

पास आया। उस दशामे उसे आते हुए देख बूढा पटेल आगे बढा। बाकी किसीका भी पैर टससे मस न हुआ। लेकिन ढलती उम्रका पटेल जूते खीचता हुआ आगे बढा और बालाने अपनी कुल्हाडी उसके हाथमे देते हुए कहा, "कल मास्टरसे कहा था कि पेड गिरानेसे पहले मेरी गरदन गिरा दो, अब वही बात तुमसे भी कहता हूँ ·· " इतना कहकर वह मुडा और नीमकी छायामे बैठे हुए अपने परिवारकी ओर अँगुली दिखाकर बोला, "इतने जानवरो और मनुष्योकी गरदने उडा दो और फिर खुशीसे पेड ले जाओ।"

उसका हाथ पकडकर पटेल उसे छायामे ले गया। उसे नीचे बैठाया और कहा, "बाला, चुप बैठ और पहले मेरी बात सुन ले।"

बूढेके हाथको झटककर बाला उठकर खडा हो गया और हाथ नचाता हुआ बोला, "मै किसीकी नही सुनूँगा। तुम लोग मुझे मिट्टीमे मिला दोगे। मै व्यायामशालाको अपना पेड न दूँगा। फिर जो भी होना हो, सो होता रहे।"

पटेल अभी भी शान्त था। बोला, "व्यर्थ ही आपेसे बाहर न हो, बेटा। गाँवके लिए यदि एक पेड दे दोगे, तो तुम्हारा घर नही डूब जायेगा।"

"घर डूबे चाहे न डूबे। लेकिन मै पेड नही दूँगा।"

"क्या यह बिलकुल पक्की बात है?"

"हाँ, बिलकुल पक्की बात है। चाहे रियासतके राजा (पन्त सरकार) आ जाये, मै अपना पेड नही दूँगा। अँगरेज सरकार भी आ जाये, तब भी मै पेड नही दूँगा। इसके लिए जो मुझे फाँसीपर चढाना चाहता हो, खुशीसे चढा दे।"

इतना सुननेपर बूढा पटेल लौट पडा और हाथका इशारा करते हुए उसने हम सब लोगोसे कहा, "हाँ, चलो भाई, अब लौट चलें।"

सभी लोग बालाकी यह गुस्ताखी देखकर नाराज़ हो गये। यह बात

सच भी थी कि उसके खेतमे छायाके लिए सिर्फ एक वही नीमका पेड था। मेडोपर बहुत-से छोटे-छोटे पेड लगे थे। यदि वह यह पेड दे देता, तो यह बात भी न थी कि खेतमे उसे पूरी धूपमे ही बैठना पडता।

पटेलके चलनेके लिए कहनेके बावजूद भी रामा बनगर अपने स्थानसे न हिला। वह जोशमे आकर बोला, "बाला, यह ठीक नही है। तू गाँवकी कोई परवाह नही कर रहा है?"

बाला चिल्लाकर बोला, "मुझे गाँवकी जरूरत नही। आज आठ सालसे मै अपने खेतमे ही रह रहा हूँ। इसके बाद भी यही रहा करूँगा। मुझे गाँवका क्या डर दिखा रहा है? राँडको खसमका क्या डर रे!"

यह सुनते ही रामा और आनन्दा क्रोधसे उन्मत्त हो गये। वे बालापर टूट पडनेके लिए उतारू हो गये। इसी समय बूढे पटेलने उन्हे अपनी लाठीसे धमकाकर पीछे हटाया। निश्चय-भरी आवाजमे पटेलने कहा, "बाला, जो कहा हे उसे अन्त तक निभाना। अब गाँवमे कभी कदम न रखना।"

और एक दूसरेसे कोई बात न कर हम सब लोग खेतसे गाँव लौट आये।

गाँवके नजदीक आते ही बूढेने कहा, "इस बालाकी कोई भी परवाह न करे। उसे कोई न पूछे। उसके जानवरोको अपने खेतमे न घुसने दे। उसकी तकलीफ और अडचनके समय कोई भी गाँववाला उसकी मदद न करे। जरा देखूँ तो कहाँतक इसी तरह अकडा रहता है वह।"

शीघ्र ही यह समाचार सारे गाँवमे फैल गया। बाला बनगरको सारे गाँवने बहिष्कृत कर दिया। यह समाचार बच्चे-बच्चे तक पहुँच गया और पटेलका हुक्म तुरत ही अमलमे लाया जाने लगा। बालाका लडका बकरा काटनेके लिए आयबूको बुलाने आया, तब आयबूने साफ कह दिया, "मै नही आता। तेरे घरको गाँववालोने बहिष्कृत कर दिया है।"

"लेकिन तेरा गाँवसे क्या वास्ता? तू तो बाहरसे आया है। जो तेरे सामने टुकडा डाल दे उसीका काम करनेवाला है। मै तुझे मुफ्तमे काम करनेको नही कहता। सेर डेढ सेर अपने लिए माँग लेना।"

"मुझे तेरे सेर डेढ सेरकी परवाह नही। जा, अपना रास्ता नाप!"

जब बालाको इसका पता चला, तो उसने अपने लडकेको ही खूब डाँटा। उसने लडकेको छह कोस, तहसीलके सदर मुकाम भेजकर, वहाँसे मुलानी बुलाया और बकरा काटा।

गाँवका कोई भी मजदूर बालाके खेतमे काम करने नही जाता था। इसलिए उसे दूसरे गाँवोसे अधिक मजदूरी देकर मजदूर लाने पडते थे। उसके कुएँका पानी खारा था। इसलिए रोज उसकी घरवाली घडे-दो घडे पानी गाँवके कुएँसे पीनेके लिए ले जाती थी। गाँववालोने अब उसे कुएँसे पानी लेनेकी मनाही कर दी। तब बालाको रोज दो-तीन मील जाकर, वहाँके कुएँसे पीनेका पानी लाना पडता था। उसने अपने जानवरोको दूसरेके खेतोमे ले जाना बन्द कर दिया। उसके बच्चे पहले गाँवकी शालामे पढने आते थे। अब उन्होने पढायी बन्द कर दी। बाला बनगरने गाँववालोके सामने झुकनेसे साफ इनकार कर दिया। वह चीमड मनुष्य अपनी हेकडी चलाता रहा और गाँव यह देख रहा था कि कबतक वह अपनी अकडपर डटा रहता है।

पन्द्रह

मेरा सोचना एकदम गलत निकला। जिस व्यायामशालाके कामको मैने बडी तेजीसे हाथमे लिया था, वह मन्द गतिसे आगे बढ रहा था। इमारतके लिए आवश्यक लकडियाँ जुटानेमे काफी समय लगा। पत्थर फोडनेवालोने खदानसे पत्थर फोडकर दे दिये, लेकिन उन्हे गाँव तक ढोकर लानेमे बडी झझटें उठानी पडी। तहसीलके सदर मुकामसे खरीदकर चूना लाना, फिर उसे चक्कीमे डालना, कीले आदि इकट्ठे करना—इन छोटी-मोटी बातोमे व्यर्थ ही बहुत-सा समय खर्च हुआ। मुझे मकान

बनवानेका कोई अनुभव न था। इसलिए यह समझकर कि समय व्यर्थ नष्ट हो रहा है, मैं काम करनेवालोपर बिगड पडता। लेकिन गॉववालोके लिए ये हमेशाकी मामूली बाते थी। गाँवमे इमारत बनाने या कुआँ खोदनेका काम शुरू करे तो उसका पूरा हो जाना एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना हो जाती है। वरना बहुधा यही होता है कि बडे उत्साहके साथ आरम्भ किये हुए इस प्रकारके काम काफी समय लेकर भी अधूरे पडे रहते है। घर बन जाता है, पर दरवाजे बननेको रह जाते है। कभी खूँटियाँ नही बन पाती, तो कभी चबूतरा बच रहता है। कुआँ पूरा खुद जाता है, जुडाई हो जाती है, लेकिन उसका घेरा अधूरा पडा रहता है। दो मचानोमे-से एक ही से काम लेना शुरू कर दिया जाता है। फिर बनानेवाला भी सोचता है कि जितना बन चुका है उतना अपनी गुज़रके लिए फिलहाल काफी है। कमसे-कम अब हमारा काम तो नही रुकेगा। बाकी काम फुरसतसे कर लेगे और वह खुद ही काममे ढिलाई कर देता है। पर अधूरा पडा हुआ वह काम फिर कभी भी पूरा नही होता। इस तरहके अधूरे पडे काम हर गाँवमे कितने ही देखनेको मिलते है। गाँववाले इस बातको जानते थे। इसलिए काम जल्दी न होनेकी उन्हे कोई फिक्र न थी, इसका उन्हे कोई दुःख न था। अपने दैनिक कामोको समाप्त करनेके बाद ही वे व्यायामशालाके कामको देखते थे।

इस काममे मैने भूख और प्यासकी तनिक भी परवाह न कर बहुत परिश्रम किया। कई बार ऐसा होने लगा कि मै दाढी नही बना पाता था, समयपर नहा नही पाता था और खानेको भी फुरसत नही मिलती थी। छुट्टीके दिन भी घर नही जा पाता था। चूना, चक्की, पत्थर, लकडी, सीढी, कोने, खम्भे आदि बातोके सिवा दूसरी बात मेरे दिमागमे ही न आती थी।

गाँवकी बैलगाडियाँ टूट गयी, पत्थर ढो-ढोकर बैल-जोडियाँ थक गयी। कारीगरोकी ठक-ठकसे गाँववालोके कान पक गये। रास्ते पत्थरोके

छोटे-छोटे टुकडोसे भर गये। जहाँ-तहाँ लकडीके ढेर लग गये।

व्यर्थके चक्कर काटते-काटते और लगातारकी पाँवपिटाईसे आयबूके पैरोमे गाँठे पड गयी। जो भी काम सामने आ जाता उसे करते-करते वह दुबला हो गया। दुनिया-भरका कामचोर आनन्दा भी बडा काम करनेवाला बन गया। दोड-धूपके काम करने लगा। रामाका लडका शिकायत करने लगा कि निरन्तर व्यायामशालाके काममे लगे रहनेके कारण उसका पिता घरके कामोमे कोई दिलचस्पी नही ले रहा है। पटेल भी अपने परिवार और व्यवसायकी ठीकसे देखभाल नही कर पाता था। व्यायामशालाके कामके कारण प्राय: सभीके निजी दैनिक कामोपर थोडा-बहुत प्रभाव पडे बिना न रहा। गाँवमे ऐसा एक भी घर न बचा था कि जिसका सम्बन्ध इस कामसे न रहा हो।

इसी अवधिमे खेतीका दूमरा मौसम आकर चला गया। एक साल बातकी-बातमे बीत गया। लोगोने अपने-अपने खेत जोत डाले। गडरियोने भेड़ोका ऊन काटा। ऊन निकला। गडरियोकी औरतोने उसे धुना। तकली और चरखेपर उसे काता। उनकी लच्छियाँ बाज़ारमे बेचकर नकद रुपये पैदा किये। औरतोने साल-भरके लिए साडियाँ खरीदी। गड़रियोके लिए साफा, धोती और अँगरखे ख़रीदे। किसीने अपना ऊन बुननेवालोको देकर उनसे मोटे-मोटे कम्बल बुनवा लिये। भेडे दूसरी बार ब्यायी। पहले बच्चे अपनी माँको भूल गये। उन्हे पहचान नही सकते थे। ग्रीष्मऋतुका अन्त हुआ। बारिश शुरू हुई। लेकिन व्यायामशालाकी इमारतका काम पूरा नही हुआ। मै अपने-आपपर चिढा, दूसरोपर झल्लाया, लेकिन कामकी गति न बढी।

दूसरे गाँवके लोग कहने लगे कि अब यह काम पूरा न होगा। मास्टरने गडरियोको यूँ ही घपलेमे डाल दिया। उनके रुपये बरबाद किये। पहले तो गाँवमे व्यायामशालाकी ज़रूरत ही क्या ? खिलाडी लडके खेतो और मैदानोमें खेल सकते है, बालूमे कुश्तियाँ लड़ सकते है। यदि किसीको

पहलवान ही होना हो तो इन्हीमे-से वह निकल आयेगा। व्यायामशाला न होनेसे वह थोडे ही रुका रहेगा? व्यायामशालाका यह सारा ढकोसला मास्टरकी रुपये खानेकी एक चाल है। तनख्वाहसे उसका खर्चा नही चलता। इसलिए उसने गडरियोके साथ एक ऐसा खेल खेला है जिससे गड़रियोका ध्यान किसी दूसरी तरफ लग जाये और उसकी जेब गरम होती रहे। अन्तमे ऊबकर मैने ऊपरके अफसरको लिखा, "व्यायामशालाका काम पूरा हो गया है। सरकारसे प्रार्थना है कि गाँवमे पधारकर उसका उद्घाटन करनेकी कृपा करे।" यह चिट्ठी मैने डाकमे डाली और गाँवके लोगोको जाकर सूचित कर दिया कि सरकार इस महीनेमे आयेगे। इसलिए या तो व्यायामशालाका काम जल्दी-जल्दी पूरा करो या जब वे यहाँ पधारें, तो उनके सामने जाकर कहना कि हमसे गलती हो गयी है। यह काम अब हम लोगोसे पूरा नही होगा।

दादू बालट्या अभीतक बिस्तरपर ही पडा हुआ था। उसकी घर-वाली और बूढी माँ ओझाओसे बहुत-से ताबीज और गण्डे लाकर उसे बाँध रही थी। लेकिन वे कोई काम न कर रहे थे। स्वय बालट्या चुपचाप पडा हुआ था। उसे बिस्तरसे उठना मुश्किल हो रहा था। वह सुबहो-शाम चिल्ला-चिल्लाकर अच्छी-अच्छी चीजे खानेको माँगता था। कहता था मै खूब खाऊँगा, दूध, घी, शक्कर, चपाती खाऊँगा, बकरे और मुर्गियाँ खाऊँगा और एक दिन फिरसे जवान होकर उठ जाऊँगा। उसका हठ पूरा करनेके लिए घरके लोग उसे उसकी रुचिका अच्छा-अच्छा खाना खिलाया करते थे। लेकिन यह खाना बेचारे बालट्याके पेटमें ठहरता ही न था। जो कुछ खाता वह हज़म न होता और उससे उसका खून नही बन रहा था। और वह जवान होकर भी अपने बिस्तरसे नही उठ पा रहा था।

बाला बनगर अभीतक गाँवके आगे सिर नही झुका रहा था। गांव-वाले हर तरहसे उसके कामोमे रुकावटे डाल रहे थे। लेकिन चीमड बाला जहाँ था, वही अभीतक स्थिर था।

शेकू और उसकी हाथ-भर ऊँची औरत दोनो अपने खेतमे खून-पसीना एक कर रहे थे। पटेलकी अजी जवानीसे इठलाती हुई गाँव-भरमे घूम रही थी। आनन्दा छोटी-मोटी चोरियोसे अब भी अपनी गुजर-बसर कर रहा था। रामा बनगरका निठल्लापन पहले-जैसा अब भी कायम था। बाससे भेडोको पहचान लेनेवाला उसका बूढा अब भी भेडें चराने जाता था।

गाँवके जवान लडके सुबह उठकर भेडे चराने जाते थे। दिन-भर खेतो और जंगलोमे घूमकर शामको घर लौटते थे। भेडोको मिलाते थे, उनकी देखभाल करते थे और रातको चौकन्ना होकर सोते थे। गडरियो-की औरतें खाना पकाती थी और बच्चोको दूध पिलाती थी।

इस तरह सब काम चल रहे थे और एक दिन सरकारकी ओरसे मेरे पत्रका उत्तर भी आ गया। उसमे मुझे सूचित किया गया था कि २० अप्रैलको राजा साहब बनगरवाडी पधारेंगे, और फिर तेजीसे काम-काजके चक्र घूमने लगे। तहसीलके सदर मुकामसे एक-एक दिनका अन्तर देकर अफसर गाँवमे दौरेपर आने लगे और कामोका निरीक्षण करने लगे। तहसीलसे गाँव तक आनेवाली सडक सुधर गयी। सडकके दोनो किनारो-पर सफेद मार्गदर्शक पत्थर लगा दिये गये। नगरपालिकाके कर्मचारी आये और एक दिन गाँवके सारे आवारा कुत्ते पकडकर ले गये। कूडेके ढेरोको हटानेका हुक्म दिया गया। हर घरने उस हुक्मकी तामील की। शालाकी इमारतकी मरम्मत की गयी और उसे चूनेसे पोत दिया गया। जहाँ-जहाँ भी कूडा-कचरा और गन्दगी थी, वह हटा दी गयी और वह स्थान बिलकुल साफ कर दिया गया। अफसरोने कहा, गाँवमे आनेके लिए सबसे पहले रामोशियोका मुहल्ला पडता है, इसलिए सरकार पहले उस मुहल्लेमे प्रवेश करेंगे और किसी भी रामोशीके मकानमे जाकर उसकी हालत देखेंगे और उससे कुछ पूछ-ताछ करेंगे। तब रामोशियोके मुहल्लेकी सफाईके लिए दौड-धूप शुरू हो गयी। प्रत्येक घर लीप-पोतकर स्वच्छ कर दिया गया। यह देखकर कि रामोशियोने अपने घर साफ करके

आईनेकी तरह स्वच्छ कर लिये, गडरियोकी औरतोको भी जोश आया। उन्होने भी अपने-अपने घरोको ठीकसे लीप-पोत डाला। कई बरसोसे न पुते होनेके कारण जिन घरोकी दीवालोपर बदसूरत धब्बे उभरे हुए थे, उनपर भी कूँचियाँ फिरी। कुछ घर गिर पडे थे और उनके पत्थर लुढककर सडकमे आ गये थे। वे उठाकर घरमे यथास्थान लगा दिये गये। इस तरह कुछ डरसे और कुछ खुशीसे भी यह कभी न होनेवाला काम होने लगा। और अच्छी तरह नहा-धोकर, बाल सँवारकर और पूरे बदनमे स्वच्छ कपडे पहने हुए गड़रियोके बच्चोकी तरह, गाँव रगीन दिखने लगा।

और व्यायामशालाका काम भी करीब-करीब समाप्तिपर आ गया। दीवालें खडी हो गयी, छाजनपर बल्लियाँ डाल दी गयी। कारीगरोने अपना बहुत-सा काम पूरा कर डाला। थोडा काम अगर बच रहा था तो बढईका। वे अभी तक तख्तोपर रन्दा फेर रहे थे। खूँटियाँ खराद रहे थे। चौखटे जोड़ रहे थे।

यह महसूस करके कि हमारे राजा गाँवमे आयेगे, सचमुच बनगरवाडीमे परिवर्तन हो गया। गाँवमे ऐसा एक भी मनुष्य न था जो राजाके आनेके विषयमे उदासीन हो। गाँवके गडरियोमे-से किसीने भी आज तक अपने राजाको कभी देखा न था। और वह प्रत्यक्ष उनके गाँवमे पहली बार आ रहा था। यह एक अजूबी घटना थी। जिसके कारण गाँवमे एक अपूर्व नयी चेतना आ गयी। पडोसके गाँवोको बनगरवाडीसे ईर्ष्या होने लगी थी। इस गाँवकी ओर कभी झाँककर भी न देखनेवाले अफसर, पटेल, पटवारी, तहसीलदार, थानेदार आदि सभी गाँवमे आ रहे थे। लेकिन ज्यो-ज्यो दिन बीतने लगे और अफसरोके अधिक चक्कर लगने लगे, त्यो-त्यो हमे भी जल्दी पडने लगी। सभाके लिए मेज़, कुरसियाँ एकत्र करना, गुलदस्तो और फूल-मालाओका प्रबन्ध करना, शालाके विद्यार्थियोके लिए अच्छे कपडे बनवाना, गाँवके लोगोसे अच्छी वेश-भूषामे आनेके लिए

कहना, ये काम भी मुझको ही करने थे। राजाके आनेके कारण अनेक झंझटे आयी और दौड-धूप करके हम उन्हे पूरा करने लगे। यह दौड़-धूप अन्तिम दिन तक चलती रही।

दूसरे दिन सुबह साढे आठ बजे उद्घाटन समारोह था और अभीतक व्यायामशालाकी इमारतपर मिट्टीकी छाजन नही डाली गयी थी। दोपहर-के तीन बजे थे और अभीतक इमारत ऊपरसे खुली हुई थी। यदि महाराज ऐन मौकेपर इमारतको बिना छतके देखेंगे तो क्या कहेगे ? मेरी सारी इज्जत धूलमे मिल जायेगी, गाँववालोकी हँसी होगी। यह मनमे आते ही मै बिलकुल घबडा गया और जाकर पटेलसे बोला, "गाँवकी बदनामी होगी, पटेल ! व्यायामशालापर अभीतक छाजन नही है और महाराज तो कल सुबह ही आ रहे है।"

पटेल जल्दी-जल्दी उठा। "आँऽ ? क्या कह रहा है, लडके ? अभी-तक छाजन नही डाली ? अरे, तो बुलाओ सबको, गाँववालोको इकट्ठा करो, मिट्टीका गारा बनाओ। छाजन चढानेमे क्या देर लगती है ?"

दौड-धूप मच गयी। सारे गाँववाले अपना-अपना काम छोडकर इमारतके पास आकर इकट्ठे हो गये। मिट्टीका गारा बनाया गया। गारेसे लेकर इमारतकी छत तक सौ-डेढ-सौ आदमी खडे हो गये और छाजन चढानेका काम शुरू हुआ। नगे बदन गडरिये मिट्टीके लोंदे जल्दी-जल्दी एक-दूसरेके हाथमे फेकने लगे। इमारतपर छत बनने लगी। पडोसके गाँव-से बुलाकर लाये गये बाजेवाले डफ बजाने लगे और उसके तालपर चिल्ला-चिल्लाकर 'हाँ-हूँ-ले-ले, आया रे आया' कहते हुए लोग काम करने लगे। बाजा जल्दी-जल्दी बजने लगा था और डेढ-सौ हाथ एक साथ काम कर रहे थे।

शाम हो गयी। अँधेरेकी गाढी परत आसमानपर चढने लगी। पहलेसे ही गैसकी बत्तियोका इन्तजाम कर लिया गया था। इसलिए उन्हे जलाया गया और रोशनीमे काम होने लगा। जब काम करनेवाले थक जाते और

उनके हाथ कुछ ढीले-से पडने लगते तो पटेल और आयबू चिल्ला पडते और काम करनेवालोको फिर जोश आ जाता। सब तरफ गडबडी मची हुई थी। सारा गाँव जाग रहा था। बन्दनवार बाँधे जा रहे थे। गाँवकी सरहदपर आते ही महाराजको इक्कीस बैलोके रथमे बैठाकर गाँवमे लानेका तय हुआ था। इसके लिए बैल इकट्ठा किये जा रहे थे। रथ सजाया जा रहा था। इन्तजामके लिए पुलिसके अफसर पहलेसे ही पहुँच गये थे। वे यूँ ही लोगोको डाँट रहे थे। यह चिन्ता व्यक्त कर रहे थे कि महाराज कल सुबह आ रहे है और तुम लोगोकी अभी कोई तैयारी नही हुई है।

आधी रात बीत गयी। काम समाप्तिपर आ रहा था। और एकाएक ऊपर किनारेपर खडा होकर मिट्टीके लोदे लोकनेवाला आयबू अचानक नीचे गिर पडा। गिरते हुए वह 'मरा, मरा' कहकर जोरसे चिल्लाया। मै शालामे बैठा हुआ कलके लिए सारा प्रबन्ध ठीक कर रहा था। पटेल रथकी सजावटके पीछे पडा था। रामा बन्दनवार बाँधनेमे व्यस्त था। आयबू जब गिरा उस समय हममे-से कोई वहाँ न था। वह गिरते ही बेहोश हो गया। छाजनका काम रुक गया। सब लोग अपने-अपने काम छोडकर आयबूको घेरकर खडे हो गये। "मुलानी मर गया, मुलानी मर गया" की आवाजे आने लगी। एक तो पहलेसे ही गडबडी मची हुई थी और ऊपरसे यह इतना शोर-गुल हो रहा था कि हमारे इतने नजदीक होते हुए भी हममे-से किसीको भी उस चिल्लाहटका पता न चला। आनन्दा भागता हुआ पटेलके पास गया और बोला, "दादा, मुलानी गिर पडा। वह बेहोश है। उसके मुँह और नाकसे खून आ रहा है।"

पटेलने देखा कि इमारतकी छाजनका काम बन्द हो गया है तो वह बोला, "अरे, तुम लोगोने काम क्यो बन्द कर दिया? मुलानी गिरा तो गिर पडने दो। जाओ तुम लोग, अपना-अपना काम करो।"

और उसने सब लोगोको अपनी-अपनी जगह भगाकर छाजनका काम फिरसे शुरू करवाया। आयबूको उठवाया और मेरे कमरेमे ले जाकर लिटा

दिया। और पटेल काममे लग गया। मुर्गेकी बाँगके साथ पौ फट रही थी। थोडी ही देर बाद कार आनेवाली थी। किसीको मरनेकी भी फुरसत न थी। फिर वहाँ रोनेकी किसे होती ? पटेलने प्याज काटकर आयबूको सुँघा दिया। उसके सिरपर पानीके खूब छीटे दिये। लेकिन आयबू आँखें नही खोल रहा था। तब दरवाजा खोलकर पटेल मेरे कमरेसे बाहर आया और फिर अपने काममे लग गया। वह एक प्रकारसे विवाहोत्सव ही था जिसे मुरदेको ढाँककर पूरा करना आवश्यक था।

छाजनका काम पूरा हुआ और सूरज निकल आया। लोग नहानेके लिए, कीचडसे भरे हुए अपने तन धोनेके लिए कुएँ और नालेपर गये।

चार-छह रामोशियोके लडकोको सडककी ओर महाराजके आनेसे पहले ही रवाना कर दिया ताकि वे वहाँका प्रबन्ध देखे और राजाकी मोटर दिखायी पडते ही गाँवमे आकर खबर दे। सिगावालेको एक ऊँचे पेड़पर बैठा दिया गया। तय यह हुआ कि दूर—जब मील-दो-मीलपर महाराजकी मोटर दिखे, वह सकेतके लिए अपना सिगा बजा दे।

और ठीक आठ-सवा आठके लगभग सिगावालेने अपना सिगा बजाकर इशारा किया। "सरकार आ गये, सरकार आ गये" कहते हुए लोगोकी दौड-धूप शुरू हो गयी। बगलमे बच्चोको दबाये गडरियोकी औरते गाँवकी सरहदकी ओर दौडने लगी। इन्तजामके लिए तैनात पुलिसके सिपाहियोने उन्हे डाँटकर वापस लौटाया। रथमे बैल जोतकर हम तैयार हुए। उस तरफ यह रिवाज था कि जब राजा किसी गाँवमे आता तो वहाँका पटेल हाथमे नारियल और एक रुपया लेकर उसके सामने जाकर उसका स्वागत करता। लेकिन हमारे गाँवमे सरकारसे मान्य कोई पटेल न था और न पटवारी ही था। तब उद्घाटन समारोहका तमाशा देखने आया हुआ पडोसके गाँवका एक पटेल इस कार्यको स्वय करनेके लिए बीचमे टाँग अडाने लगा।

लेकिन मैने डाँटकर उसे चुप कर दिया और यह तय कर डाला कि

सिरपर नया लाल साफा बाँधे और बदनमे नया कोरा गोल अँगरखा, जिसमे-से माडीकी गन्ध आ रही थी, पहने हमारे गाँवका बूढा पटेल ही यह रस्म निभायेगा। सरहदपर आरतियाँ लेकर कुछ सुहागिने खडी थी। बार-बार एडी उठाकर लोग देख रहे थे कि टीलेपर मोटर दिखती है या नही। आवाज स्पष्ट सुनायी पड रही थी। सडकपर बैठा दिये गये रामोशोके लडके दौडकर आये और हाँफते हुए उन्होने खबर दी कि मोटर आ गयी। 'मावला' माताके टीले तक अभी पहुँची है।

सब लोगोने अपनी-अपनी टोपियाँ और साफे ठीक किये। अफसरोने कोटके बटन ठीकसे लगाकर अपने-अपने शर्ट नीचे खीचे और सडकपर खडे सिपाहियोने सीटियाँ बजायी। महाराजकी लाल प्लेटवाली कोरी नयी चमकदार कार सरहदपर आकर खडी हो गयी। मै जल्दी-जल्दी आगे बढा। शिक्षा-विभागके अफसर साथ थे ही। सरकारको झुककर प्रणाम करते ही वे बोले, "ये यहाँके मास्टर है।"

अँगूठियोसे भरे हुए हाथ जोडकर सरकारने कहा, "जय देवा!"

सब लोग जल्दी-जल्दी झुके। गडरियोने धरती छूकर अपने राजाका अभिवादन किया।

फिर तहसीलदार आगे बढे और बडे अदबसे बोले, "महाराज! लोगोकी प्रार्थना है कि यहाँसे गाँव तक सरकार रथमे बैठकर चले!"

"हाँ, हाँ, क्या हर्ज है। रथमे ही चलेंगे।"

नौकरने तुरत कारका दरवाजा खोला। महाराज बाहर आये। अपने गोरे और भव्य राजाको गडरियोने देखा। महाराजके सिरपर गहरे लाल रगकी पगडी थी। बदनमे सफेद खादीका लम्बा कोट था। नीचे सफेद चूडीदार पायजामा था। पैरोमे लाल जूते थे। चमकदार किनारोवाले उपरनेकी पट्टी उनकी चौडी छातीपर भव्य लग रही थी। बडी-बडी आँखें, सीधी नाक, रुपहली भरी हुई मूँछे ऐसा भव्य था महाराजका स्वरूप—जो सारे वातावरणपर छाया हुआ था। महाराजके रथकी ओर बढते ही

गडरियोकी औरते एक-दूसरेसे बतकही करने लगी, "राजा बूढा हो गया। अब उसे लाठीके सहारे चलना पडता है।"

मैने पटेलको इशारा किया। उसने हिम्मतसे नारियल और रुपया रखी हुई थाली आगे बढायी। महाराजने उसे हाथ लगाया और पटेलके कन्धेपर एक हाथ रखकर कहा, "क्यो पटेल, अच्छे हो न ?"

पटेल अदबसे हँसा और गरदन हिलाता हुआ बोला, "हाँ सरकार !"

महाराजने फिर रथमे चढते समय भी पटेलके कन्धेका आधार लिया। महाराजके रथमे बैठते ही बैलोकी रास पकडे हुए लोगोने बैलोको इशारा किया। बैल रथ खीचने लगे। सिगा बजा। शहनाई और ताशे बजे। गडरियोने महाराजकी जय बोली। शालाके लडकोने "महाराज चिरायु हो" का जयघोष किया। सुहागिनोने आगे बढकर राजा साहबकी आरती उतारी। महाराज गाँवमे आये। आज तीस-पैतीस झोपडोवाले गडरियोके इस गाँवमे महाराज पधारे है !

व्यायामशालाका बन्द दरवाजा महाराजने अपने हाथसे खोला। फिर सिगा बजा। बाजेवालोने बाजे बजाये। वह प्रशस्त व्यायामशाला, हौदा और लाल मिट्टी देखकर महाराज अभिभूत होकर बोले, "कहाँ है वह मास्टर ?"

"मै हाथ जोडे सामने जाकर खडा हो गया।"

"उत्तम ! यह बहुत ही अच्छा काम किया है तुमने ! क्या नाम है तुम्हारा ?"

मैने कहा, "राजाराम विट्ठल सौदणीकर।"

मामलेदारने स्पष्टीकरण किया, "यह विट्ठल घोडोबाका लडका है। इसका पिता हमारे सरकारी दफ्तरमे कारकून है, सरकार !"

"अच्छा ! ठीक है। बहुत अच्छा है ! ज्ञानके साथ बलकी उपासना होनी ही चाहिए !"

मेरा हृदय आनन्दसे भर गया। एकदम रोमाचित ! गला कुछ भर-सा

गया। लगने लगा जैसे मेरी आँखोसे आँसू निकल आयेगे।

व्यायामशालामे हनुमान्‌जीकी एक मूर्ति प्रस्थापित थी। महाराजने उस मूर्तिके सामने स्वयं एक नारियल फोडा और फिर सभा शुरू हुई। मैने अपना भाषण लिख रखा था। उसे स्पष्ट शब्दोमे पढ दिया। पढते समय मेरा कलेजा धुकधुका रहा था।

मैने अपने भाषणमे कहा, व्यायामशालाके खेलोसे लडके आकर्षित हो, एकत्रित हो और खेलके साथ-साथ उनमे पढनेकी रुचि भी पैदा हो, इसी उद्देश्यसे हम लोगोने इस व्यायामशालाको स्थापित करनेका प्रयत्न किया है। गाँववालोने इसके बनानेमे जो सहयोग दिया, जो परिश्रम किया, जो सराहनीय उत्साह और एकता दिखायी उसकी मैने प्रशसा की। और अन्तमे अपने अभीष्ट-साफल्यके लिए महाराजसे आशीर्वादकी काक्षाके साथ अपना भाषण समाप्त किया।

फिर महाराजने छोटा-सा भाषण दिया। वे बोले, "यह देखकर कि मेरे पुत्रवत् इन गडरियोने इस छोटी-सी बस्तीमे ऐसी सुन्दर व्यायामशाला बनायी है, मेरा हृदय आनन्द और अभिमानसे भर गया है। बलोपासना और ज्ञान-सवर्धन मेरी रियासतका ध्येय है। मेरा यह आग्रह है कि मेरी रियासतके हर एक विद्यार्थीका सीना चौडा हो, बदन गठीला हो और बुद्धि तीक्ष्ण हो। और अपना यह आग्रह मै हमेशा कहकर सुनाता रहता हूँ। मेरी यह बात यहांके गडरियो तक भी पहुँचेगी, यह मैने कभी नही सोचा था। आज यह देखकर कि वह यहाँतक पहुँच गयी है और कार्य रूपमे भी परिणत हो रही है, मै चकित हो गया हूँ। यह देखकर मेरी छाती दो इच अधिक फूल गयी है। मेरी यह कामना है कि जगदम्बा तुम्हे सुबुद्धि दे, तुम्हारा कल्याण करे।"

मैने आभार माना। लडकोने 'वन्दे मातरम्' गाया और समारोह समाप्त हुआ। महाराजकी मोटर धूल उडाती हुई चली गयी। साइकिलो और बैलगाडियोसे दूसरे अफसर भी चल दिये। राजाके सम्बन्धमे घर-घर

चर्चा शुरू हो गयी। महाराज चले गये, समारोह समाप्त हो गया लेकिन गडरियोका आनन्द समाप्त नही हुआ। वे जगह-जगह टोलियोमे खडे हुए जोर-जोरसे बाते करते रहे। यह आनन्द उन्हे कितने ही दिनो तकके लिए तुष्टि देनेवाला था।

इस सारे समारोहमे सिर्फ दो व्यक्ति नही आये, बाला बनगर और बालट्या। बालाको मालूम हो गया था कि महाराज आ रहे है। किसीने उससे कहा भी था कि चलो उन्हे देख आये, लेकिन उसने साफ इनकार कर दिया था।

बालट्या लगातार छटपटा रहा था। लेकिन बिस्तरसे उठना उसके लिए सम्भव न था। पटेलको घर बुलाकर उसने कहा, "मुझे महाराजको देखनेकी बडी इच्छा है। किसीसे कह दे तो वह मुझे अपनी पीठपर लादकर वहाँ ले चले।"

लेकिन पटेल डरा। यह वाहियात आदमी वहाँ अण्ट-सण्ट बकेगा, शिकायत करेगा कि उसे किसीने खूब मारा है। इसलिए पटेलने उसे नही आने दिया। बालट्याने सबको गालियाँ दी, लेकिन उसकी ओर किसीने भी ध्यान नही दिया।

समारोह समाप्त होनेके बाद किसीने मुझसे कहा कि आयबू व्यायामशालाकी छतसे गिर पडा। उसे जबरदस्त चोट लगी है। उसे उठाकर तुम्हारे कमरेमे डाल दिया है। यह सुनते ही मेरा सारा आनन्द एकदम किरकिरा हो गया। मै घबडाकर उसी समय घर गया। कमरेके भीतर पहुँचकर मैने देखा कि आयबू कम्बलपर औधा पडा हुआ था। मेरा कलेजा काँप उठा। राजा गाँवमे आया तो क्या इसीलिए आयबूने अपने प्राण निछावर कर दिये? मै जोरसे चिल्लाया, "आयबू! आयबू!!"

आयबू औधा पडा था। मैने उठाकर उसे चित कर दिया और उसके मुँहकी ओर देखा। उसकी आँखे बटनकी तरह दिख रही थी। धीरे-धीरे चलनेवाली उसकी गरम साँस मेरे गालोको छू रही थी। क्षण-भरके लिए

खोली हुई आँखे उसने पुनः बन्द कर ली और वह व्याकुल हो उठा।

मैंने पूछा, "आयबू, तुझे क्या हो गया है ? क्या चोट बहुत लग गयी है ? अरे, तुझे कैसा लग रहा है"

आयबूने आँखे खोली। काँपती आवाज़मे वह बोला, "मास्टर्र, राजा आया क्या ?"

"अरे, आया और आकर चला भी गया। तुझे क्या हुआ, इस तरह क्यो पडा है ?"

आयबू विलक्षण रूपसे दु खी हुआ। उसके चेहरेपर स्याह रेखाएँ दिखने लगी। वह बोला, "राजा आया""और मै न देख सका।" और चित पड़ा हुआ वह फिर औंधा होकर चुप हो गया।

सोलह

महाराज आकर चले गये। व्यायामशाला शुरू हो गयी। पिछले कई महीनोसे हो रहा काम पूरा हो गया। कसरतके शौकके कारण गाँवके प्राय. सभी लडके व्यायामशालामे आने लगे। डण्ड-बैठक लगाने लगे। लेजिम, लाठियाँ, पट्टे और बनैठियाँ आदि सामान व्यायामशालामे रहने लगा। कभी-कभी गाँवके बुजुर्ग भी मजेके लिए लाल मिट्टीमे अपने बदन रगडते थे। शालामे अच्छी तरक्की हुई। सुबह और दोपहरको रोज़ नियमसे बीस-बाईस लडके शालामे आने लगे।

छतसे गिरनेके कारण आयबूका हाथ टूट गया था और अन्दरूनी चोट लगी थी। उसका हाथ ठीक रहनेके लिए आनन्दाने अपनी जातका एक आदमी मेरे पास भेज दिया था। उसका नाम जगन्या था। यह लडका बडा सुन्दर था और जवानीपर आ गया था। वह रोज़ घर आकर आयबूके हाथकी मालिश करता था। आनन्दाने मुझसे कहा कि टूटी हड्डियाँ बैठा

देनेकी कला जगन्याने अपने बापसे सीखी है। उसका बाप गाँवका मशहूर शिकारी था। पेटके बल सरकता हुआ तोडेकी बन्दूकसे वह हिरनको मार देता था। उसने बहुत-से हिरन मारे। उसके पास इतने हिरनके सीग थे कि वे कई कमरोकी खूँटियोंके लिए काफी हो जाते। अन्तमे बूढा होकर वह मरणासन्न हो गया। और हिरनकी तरह चिल्लाने लगा। सैकडो हिरन मारनेवाला तात्याबा रामोशी हिरनकी तरह चिल्ला-चिल्लाकर मरा!

जगन्याकी मालिशसे आयबूके हाथकी खिसकी हुई हड्डी फिर अपनी जगहपर जम गयी। अन्दरकी चोट होनेके कारण अकडा हुआ अंग भी ढीला पड गया और दस-पन्द्रह दिनके बाद वह उठकर चलने-फिरने लगा। मुलानीका लडका मरते-मरते बच गया। लेकिन कुछ दिनोके बाद ही जगन्याने एक झमेला उपस्थित कर दिया जिसे निबटाते-निबटाते गाँववाले परेशान हो गये।

बनगरवाडीसे पाँच-छह कोसकी दूरीपर वागी नामका एक गाँव था जो शरारत और बदमाशीके लिए हमारी समूची तहसीलमे बदनाम था। वहाँ खून और मार-पोटका बाजार हमेशा गरम रहा करता था। उस गाँवमे पराये आदमीको अपनी जान मुट्ठीमे लेकर ही रहना पडता था। जब किसी स्कूल-मास्टर या पटवारीकी उस गाँवमे बदली होती तो वह काँप उठते थे। जब तहसीलदार लगान वसूलीके लिए उस गाँवमे जाते, वे भी गाँववालोसे बडी नरमीसे पेश आया करते। वे इतनी नम्रतासे लगान माँगते जैसे भीख माँग रहे हो। काम-काजके बहाने जगन्या कभी-कभी वागी जाया करता था।

एक दिन दोपहरको आठ-दस जवान लडके बनगरवाडीमे आये। वे हाथोमे कुल्हाडियाँ और भाले आदि लिये थे। सिरपर साफे और बदनमे मलमलके कुरते पहने हुए थे। ये नौजवान गाँवमे घुसे और सीधे रामो-शियोके मुहल्लेमे पहुँचे। जल्दी-जल्दी उन्होने सारे रामोशियोके घरोकी तलाशी ली, औरतोको खूब डाँटा, धमकियाँ दी। एक-दो रामोशियोको कुल्हाडीकी बेटसे मारा भी। रामोशियोके मुहल्लेमे कोलाहल मच गया।

बच्चे डरकर चीखने-चिल्लाने लगे। कुत्ते भौकने लगे। रामोशियोकी डरी हुई औरते बच्चोको उठाकर गडरियोके आश्रयमे आयी। गडरिये जगलो और खेतोमे गये हुए थे। मर्दोकी संख्या गाँवमे अधिक न थी। ऐसी अवस्थामे ये उपद्रवी लोग जब झोपडोकी तलाशी लेने लगे, एकदम कोहराम मच गया।

मै शालामे था। आनन्दा भी वही था। यह मालूम होते ही कि रामोशियोके मुहल्लेमे कुछ लोग घुस पडे है, वह जल्दीसे उठकर वहाँ पहुँचा। पढाना छोडकर मै भी गया। इस बीच हर एक झोपड़ीकी तलाशी लेकर वे लोग सड़कपर आकर खडे थे। आनन्दा आगे बढा और उसने पूछा, "यह क्या गडबड़ है?"

वह एकदम पहचान गया कि ये लोग वागीके है। आनन्दाके इस तरह पूछते ही उनमे-का एक लडका उसपर टूट पडा और बोला, "तू भी रामोशी है न?"

और आनन्दाके 'हाँ' कहते ही उस लडकेने आनन्दाकी पीठपर अपनी लाठीके दो प्रहार किये और गाली देकर कहा, "जगन्या रामोशी कहाँ है?"

लाठीका प्रहार सहकर आनन्दा बोला, "क्यो, उसने क्या किया है?"

और, आनन्दापर उस लडकेकी एक लाठी फिर बरसी।

अब मुझसे न रहा गया। आगे बढकर मैने उस लडकेका हाथ पकड लिया और पूछा, "तुम कौन लोग हो? एकाएक गाँवमे घुसकर इस तरह मार-पीट करते हो? क्या तुम्हारा यह खयाल है कि यहाँ तुम मनमानी कर सकते हो और कोई कुछ न करेगा?"

यद्यपि मै शरीरसे छरहरा ही था। लेकिन मेरी ज़बानसे विलक्षण पैने बोल आप-ही-आप निकल पडे और क्षण-भरके लिए उस लडकेको अपना हाथ छुडानेका भी होश न रहा।

फिर उन्हीमे-से एक नाटा, हट्टा-कट्टा और उम्रमे बडा आदमी आगे

बढा। लडकेको एक तरफ खीचकर उसने मेरे सीनेसे अपना सीना भिड़ाते हुए कहा, "तू कौन है रे जो इतने जोशमे बोल रहा है ?"

"मै सरकारी नौकर हूँ। यहाँकी शालाका मास्टर हूँ। तुम किस आदमीको चाहते हो, ठीकसे पूछो। एकदम मारपीट करनेके लिए यहाँ कोई अन्धेरखाता नही है ?"

इस बीच टूटे हाथमे लकड़ी लिये आयबू आ गया था। शालाके चार-छह जोशीले लडके भी अखाडेकी लाठियाँ लिये मौकेपर आकर हाज़िर हो गये थे।

मेरे सीनेसे-सीना भिडाकर खडा हुआ वह शख्स इधर-उधर देखकर थोडा ढीला पडा। नथुने फुलाकर बोला, "हम जगन्या रामोशीकी तलाश-मे है।"

मैंने कहा, "दो-चार दिनोसे वह इस गाँवमे नही है।"

"हम इसे कैसे सच माने ?"

"मैं कह रहा हूँ इसलिए।"

"तुझमे तो बडी मस्ती है रे मास्टर !"

इसी समय गाँवकी कोई बुढिया आगे बढी और उस साफाधारीकी चिबुकको हाथ लगाकर बोली, "अरे मेरे बेटा, गरीब रामोशियोपर क्यो कुल्हाडी उठाता है ? तू कुलवान् मराठा है। रामोशी तो तेरे पैरोकी धूल बराबर हैं। ठीकसे बैठ जा। धूपमें चलकर आया है, थोडा पानी पी ले, सुस्ता ले। फिर अगर तेरा कोई काम हो तो इस मास्टरसे पूछ।"

और फिर कोलाहल मचाती हुई रामोशियोकी औरतें इकट्ठी हुई, गडरियोकी औरतें भी आ गयी और दोनोने मिलकर वागीके उन जवानो-के पुरखोका बखान करना शुरू किया।

मैंने कहा, "तुम सब व्यायामशालामे चलो। वहाँ हमे बताओ कि तुम क्या चाहते हो ? यहाँ क्यो आये हो ? यूँ ही मारपीट करना भले आदमियो-का काम नही है।"

जाने क्या सोचकर वे हमारे साथ चलनेके लिए राजी हो गये। लड़कोकी टोली हमारे पीछे-पीछे आने लगी। औरते भी आने लगी। तब मुझे सबको डाँटना पडा। डाँटनेके बाद फिर जरूर गाँवका कोई भी हमारे पीछे-पीछे नही आया। मै, आनन्दा, रामा और वागीके लोग, सब व्यायामशालामे पहुँचे।

मैने कहा, "हाँ भाई, अब कहो क्या बात है?"

उनमे-से एक बोला, "हम लोग वागी गाँवके है। तुम्हारे गाँवका जगन्या हमारी जातकी एक विधवाको भगा लाया है। उसे ही देखने हम आये है।"

ये लोग एकाएक इस तरह झगडा करनेपर उतावले क्यो हो गये, इसका कारण अब मेरी समझमे आ गया। उनकी यह खीझ बिलकुल स्वाभाविक थी। जगन्याने ऐसा कोई काम किया होगा, इसकी धुँधली-सी भी कल्पना हमे न थी। रामा और आनन्दा भी इस खबरको सुनकर चकित हो गये।

जगन्याको एक भद्दी गाली देते हुए आनन्दा बोला, "घरमे तो भूनी भाँग नही है और सालेको रंडीबाजीका शौक चर्राया है। तुम लोग खुशीसे उसे मार डालो, पटेल! गाँवका एक आदमी भी तुम्हे नही रोकेगा।"

आनन्दाके इस तरह पैतरा बदल देनेसे वे लोग सीधे हो गये। ठीकसे बातें करने लगे। औरत विधवा थी, उसका चाहे कोई वारिस न हो, फिर भी यह सारे गाँवकी प्रतिष्ठाका प्रश्न है। उनका कहना था कि हमारे मुँहमे यह कालिख पुत गयी है कि एक रामोशी हमारे गाँवकी औरत भगाकर ले गया। और उनका यह कहना ठीक भी था। आनन्दाने कहा, "वह अगर यहाँ होता, तो लात मारकर उसे तुम्हारे सामने हाजिर कर देता। हम अपने हाथसे उसका सिर फोड देते।"

वे लोग बोले, "जाता कहाँ है? साला जहाँ भी होगा, हम वही उसे पकडेंगे और मारेंगे।"

"हाँ, हाँ, तुमसे बचकर कहाँ जा सकता है वह गरीब ! तुम लोगोके सामने उसकी क्या हिम्मत ?"

मुझे यह नही सूझ रहा था कि मै क्या कहूँ ? ये उजड्ड लोग जगन्या-के पीछे इस तरह पड गये थे जैसे कोई पागल कुत्तेके पीछे पड जाता है। यदि वह उनकी झपेटमे आ जायेगा तो ये लोग उसकी जान लिये बगैर न रहेगे।"

अन्तमे आनन्दाने उन सबसे कहा, "सरकार, जिस तरह यह तुम्हारी इज्जतका सवाल है, उसी तरह वह रामोशियोके लिए भी बडे कलककी बात है। इसलिए अब तुम लोग लौट जाओ। मै खाण्डोबाकी सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि उस औरतको और उस रामोशी छोकरेको आठ दिनके भीतर तुम्हारे सामने हाज़िर कर दूँगा। फिर तो तुमको सन्तोष होगा ?"

वागीके लोग विचार करने लगे।

आनन्दा बोला, "क्यो मास्टर, तुम्हारी क्या राय है ?"

"ठीक है। यदि जगन्याने अपराध किया है तो उसे पकड़कर इन लोगोके हवाले कर देनेमे कोई हर्ज नही।"

आयबूने गाँवमे घूमकर डलिया-भर मूँगफली और मुट्ठी-भर गुड इकट्ठा किया और दोनो चीज़े लाकर वागीके लोगोके सामने रख दी। थोडी देर-के बाद बटलोई-भर चाय बनाकर लायी गयी। और जब मेहमान मूँगफली खा चुके तो उन्हे पीतलके बरतनोमे चाय पिलायी। आग्रह कर-करके पिलायी।

आनन्दाकी बात मानकर और मुझे ज़िम्मेदार बनाकर वागीके लोग चल दिये। हम लोग उन्हे गाँवके बाहर तक पहुँचाने गये।

वे लोग दृष्टिसे ओझल हुए और हम लोग वापस लौटे। रास्तेमे मैने आनन्दासे पूछा, "जगन्या न मिला, तो क्या होगा रे ?"

आनन्दाने खखारकर थूका और कहा, "अगर वह मरघटमे गया होगा तो वहाँसे भी पकडकर ले आऊँगा मास्टर ? देखो, उसका पता लगाकर

उसे लौटा हूँ या नही ?"

बहुत तडके उठकर आनन्दा रामोशी जगन्याकी टोहमे चल पडा। उसके साथ एक-दो जवान लडके और थे। ये सब लोग कुल्हाडियो और लाठियोसे लैस थे और इस ठाठसे जा रहे थे जैसे हिरनके शिकारको जा रहे हो। गाँवके रामोशियोके वसीले कहाँ-कहाँ थे, यह आनन्दा अच्छी तरह जानता था। जगन्याको यह गाँव छोडे दो दिन हो गये थे। इस अवधिमे यह सम्भव न था कि इतना फासला पैदल तय कर वह मोटरसे स्टेशन तक जा सके और बम्बई जानेवाली गाडी पकड ले। क्योकि उसे यह विश्वास होना ही चाहिए कि चूँकि वह भागा है इसलिए उसका पीछा ज़रूर होगा और लोग सबसे पहले मोटरके रास्ते और स्टेशनपर ही उसकी खोज करेगे। इसलिए सहज ही वह कही दूर अपने किसी परिचितके यहाँ गया होगा। वैसे उसके पहचाननेवाले तो गाँव-गाँवमे थे। लेकिन खास बात यह थी कि दस-बारह कोस दूरवाले निमरज गाँवमे जगन्याकी बहन ब्याही थी। इसलिए आनन्दा उसी गाँवकी तरफ चल पडा और दोपहरको ठीक भोजनके वक्त जजमानके द्वारपर हाज़िर हो गया।

मेहमानोके आते ही जगन्याके बहनके घर गडबडी मच गयी। बेचारी जल्दी-जल्दी पड़ोससे चून उधार माँगकर लायी और गरम-गरम रोटियाँ और साग बनाकर मेहमानोको पेट-भर खिलाया। डकार लेकर ये लोग उठे और आनन्दाने पान खाते-खाते जगन्याके बहनोईसे पूछा, "जगन्नाथ आया था क्या ?"

जजमान थोडा चौका और उसने जवाब दिया, "नही, यहाँ तो नही आया।"

आनन्दाको अन्दाज़ था ही। उसकी तीक्ष्ण दृष्टिसे यह न छूटा कि उसके प्रश्नसे जजमान चौका था। उसे विश्वास हो चुका कि जगन्या ज़रूर यहाँ हो गया है। और उसने अपने बहनोईसे औरत भगा लानेकी बात भी कह दी है।

आनन्दा बोला, "तुमसे झूठ क्यो बोलूँ ? जगन्याने बडी बेवकूफी की है। वागीके एक अच्छे घरकी औरत वह भगा ले गया है। उस गाँवके सौ आदमी भाले और कुल्हाडियाँ लिये गाँवपर टूट पडे थे। मैने हाथ-पैर जोडे और कहा कि मै जगन्या और उस औरतको लाकर तुम्हारे हवाले कर देता हूँ। तुम लोग सारे गाँवको तग न करो। वे लौट गये। वरना गाँवमे दो-चार लाशे बिछनेका मौका आ गया था।"

शायद जजमानको इन सब बारीकियोका पता न था। वह थोडा सोचने लगा। भीतर जगन्याकी बहन बेचैन हो गयी। लेकिन यह स्वीकार न कर कि जगन्या आया था, जजमानने कहा, "जगन्याने सचमुच बडी गलती कर दी। बहुत ऊँचेपर हाथ मारा। औरत भगानेमे हर्ज न था। अगर भगानी ही थी, तो कमसे-कम अपनी जातकी भगाता। खैर! पर मै कहता हूँ, तुम उसे पकडकर क्या करोगे ? औरतकी इज्जत तो चली ही गयी है। वह अब लौटकर तो आनेको नही। उसे कोई भी गाँवम न रहने देगा। अच्छा, वे लोग जगन्नाथका क्या करेगे ? मार-पीट करेंगे—चाहे जान भी ले लेगे। लेकिन यह सब करनेसे जो हो चुका है वह मिट जायेगा क्या ?"

आनन्दाने कहा, "नही, मिटेगा तो नही। यह सच है।"

"तो फिर तुम क्यो यूँ ही अपना खून सुखा रहे हो ? रहने दो उन लोगोको साथ-साथ और उडाने दो मज़े दोनोको। मियाँ-बीबी राज़ी तो क्या करेगा काजी !"

एक तरहसे जजमानका कहना ठीक था। लेकिन वह यह बात बिलकुल भूल गया था कि जगन्या तो उस औरतके साथ रंगरेलियाँ करेगा, लेकिन वागीवाले उसके झोपडेको जलाकर खाक कर देगे और उसके घरवालोको तग कर-करके जीना दुश्वार कर देगे। बनगरवाडीका समूचा रामोशी-मुहल्ला बरबाद हो जायेगा। सारे गाँवपर आफत आयेगी, परेशानियाँ होगी। उस छोटे-से गाँवमे आखिर आदमी ही कितने है ?"

आनन्दाने यह बात ठीकसे समझाकर रामोशीसे कही, लेकिन वह अपने सालेका पता बतानेके लिए राजी नही होता था। बहुत खोद-खोदकर पूछनेपर भी उससे जगन्याका कोई पता न चला। तब आनन्दा उठा और चलते-चलते बोला, "ठीक है, तो अब हम देखते है कि क्या करना चाहिए? राम-राम!"

जजमान भी राम-राम करके उठा। लेकिन इसी समय जगन्याकी बहन भीतरसे बाहर आयी और रुआँसी होकर बोली, "आनन्दा, जगू आया था।"

उसका पति लाल-लाल आँखें निकालकर उसकी ओर देखने लगा फिर भी उसकी पत्नीने अपना मुँह बन्द न किया।

स्टेशन गया है वह। ऐसा जान पडता है कि उसका इरादा उस औरत-को सागली ले जानेका है। लेकिन तुम उसकी जानको धोखेमे न लाना। तुम्हे मेरी कसम है।"

आनन्दा बोला, "चलो छुट्टी हुई। अरी, हम भी कहाँ उसके प्राण लेना चाहते है। क्या हमे उसकी जानकी फिक्र नही है। हम भला उसे मरने देगे? कब गया है यहाँसे?"

"सवेरे गया है। अभी गाडीमे नही चढा होगा।"

स्टेशनसे मिरजकी गाडी दोपहरको तीन बजे छूटनेवाली थी। जल्दी-जल्दी उन लोगोसे बिदा होकर और उसकी बहनको बार-बार धीरज देकर आनन्दा अपने साथियोके साथ वहाँसे चल दिया। उसने अपनी धोती ऊपर खोस ली, जूते हाथमे लिये और स्टेशनकी राह पकडी।

चिलचिलाती धूप और हाड बेधनेवाली लूमे वे मज़बूत रामोशी दौडने लगे और दूर सडकके किनारे एक बरगदकी छाँहमे उन्हे एक औरत और एक नौजवान बैठे हुए दिखायी दिये।

जगन्या काफी तगडा था। मोटरकी तरह दौडता था। लेकिन उसके साथ जो गोरी औरत थी वह मोटी थी। एक तो पहले ही औरतकी जात

और ऊपरसे मोटी। पीछे कितना ही डर हो फिर भी जल्दी-जल्दी रास्ता तय करना उन दोनोंसे सम्भव न हो सका। जगह-जगह रुकते, सुस्ताते दोनो अभीतक स्टेशनकी राहपर ही थे।

आनन्दा ठिठककर खडा हो गया। माथेको हाथ लगाकर उसने ध्यान-से देखा और अपने साथियोसे कहा, "यार, मैने भाँप लिया। वह जगन्या ही है। वह लाल साफा उसीका है। पर अब क्या किया जाये ? वह भाग जायेगा।"

लडके बोले, "भागने दो। खरगोशकी तरह फलाँगकर हम पकड लेंगे उसे।"

"पकड लोगे ?"

"हाँ। और अगर वह भाग ही गया तो वह औरत तो है ?"

"औरतको लेकर क्या चाटना है हमे ? हमे तो जगन्याको पकडना है।"

"वह भी आखिर भागकर कहाँ जायेगा ! चलो, नीचे देखते-देखते यूँ ही आगे बढो।"

फिर लडके चारो तरफ तितर-बितर हो गये। चारो ओरसे उन्होने उस जोड़ेको घेर लिया और चोरी-चोरी वे उस जंगलमे-से चलते हुए जगन्या-की तरफ बढने लगे।

जगन्या बार-बार सूरजकी तरफ देख रहा था और उस औरतसे कह रहा था, "अरी जल्दी कर। नही तो गाडी छूट जायेगी।"

थकानसे पस्त वह औरत फटे होठोंपर-से अपनी सूखी जीभ फेरती हुई कह रही थी, "थोडा ठहरो न ? वरना मै मर जाऊँगी।"

इस तरह चल रहा था तभी घबडाकर जगन्या एकाएक उठकर खडा हो गया। उसने आस-पास नज़र दौडायी। पीछे कुछ ही दूरीपर उसे आनन्दा खडा हुआ दिखायी दिया। उसे देखते ही उसने चटसे उस औरतका हाथ अपने हाथमे पकडा और उसे खीचते हुए बोला, "अरी भाग जल्दी। लोग हमे पकड़ने आ रहे है।"

हथेलीमे जान लेकर वे दोनो एक-दूसरेका हाथ पकडे हुए दौड पडे। आनन्दाने पीछेसे चिल्लाकर कहा, "जगन्या ठहर। भाग नही।"

लेकिन जगन्या जैसे होश खो चुका था। बेतहाशा भाग रहा था। वह औरत भी बेतहाशा भागी जा रही थी। उन्होने सीधा रास्ता छोड दिया। वे घने जंगलसे भागने लगे। पीछे भी न देख रहे थे। उस औरतका आँचल हवामे फरफरा रहा था। जगन्याके साफेका छोर हवामे लहरा रहा था। ककड, पत्थर, मिट्टी किसीकी भी परवाह न करके वे दोनो बेतहाशा भागे ही जा रहे थे। और आनन्दा भी उनका पीछा कर रहा था।

भागते-भागते दम उखड जानेके कारण वह औरत गिर पडी। पीछे मुडकर जगन्याँ उसे उठाने लगा और उसने देखा कि पीछा करनेवाले लडके बिलकुल नजदीक पहुँच गये है। और फिर गिरी हुई हिरनीको छोडकर जिस तरह काला मृग जान लेकर भाग जाता है, उसी तरह जगन्या औरतको वही छोडकर अकेला ही दौड़ने लगा।

औरतके पास आते ही लड़के वही रुक गये। लेकिन आनन्दा जगन्याका पीछा करने लगा। बहुत देर तक उनकी यह दौड चलती रही। लेकिन जवान जगन्या आनन्दाके हाथ नही लग रहा था। अन्तमे यह देखकर कि जगन्या पहुँचके भीतर आ गया है, आनन्दाने हाथमे रखी कुल्हाडी फेककर उसे मारी। भागता हुआ हिरन डाँड मारकर जिस तरह गिरा दिया जाये, उसी तरह आनन्दाकी कुल्हाडीने जगन्याको धराशायी कर दिया। दौड-दौडकर थका-हारा वह जवान अजीब तरहसे चीखकर नीचे गिर पडा।

आनन्दाने दोनोको एक गाडीमे रखा और उन्हे वागी ले आया। खून अधिक निकल जानेके कारण जगन्याका चेहरा सफेद पड गया था। वह औरत भी पीली पीली-सी दिख रही थी।

आनन्दाने कहा, "यह है तुम्हारे गाँवकी औरत और यह रहा हमारे गाँवका लडका। मैने अपने हाथसे इसे मारा है। उसके बचे-खुचे प्राण चाहो तो अब तुम ले सकते हो।"

जगन्या होशमे न था। उसके कपडे खूनसे तरबतर हो गये थे। औरत-को डण्डोसे पीट-पीटकर लोग घरमे ले गये और आनन्दासे बोले, "जा, ले जा उस लडकेको और अपने गाँवमे जला दे उसे।"

जगन्याको लेकर आनन्दा बनगरवाडी आया। पेडोकी पत्तियोका रस लगा-लगाकर ही उस अनाडीने जगन्याका घाव अच्छा कर लिया।

वागीके लोगोने उस विधवा औरतकी सुन्दर नाक काट डाली और उसे अपने गाँवसे भगा दिया। नाकपर पट्टी बाँधकर रोती हुई वह जगन्याके घर आयी। लेकिन रामोशियोके मुहल्लेमे उसे रखनेके लिए कोई राजी न हुआ। और एक दिन वह वहाँसे चल दी अपनी पीडाओको अपनेमे ही समोये हुए। उसके बाद फिर वह कभी न दिखी।

सत्रह

जून आया। मृग चल दिया। इस नक्षत्रने कभी ठीकसे पानी नही बरसाया। इस वर्ष भी इस नक्षत्रमे गाँवमे बारिश न हुई। हर साल कमसे-कम जमीन गीली करने लायक पानी गिर जाता था। लेकिन इस साल वह भी न बरसा। नक्षत्र बिलकुल सूखा ही निकल गया। लोग आर्द्राकी बाट जोहने लगे।

अब सब तरफ वीरान दिखायी देता था। सूखा खखाड! जगलोमे घूमकर भेडे भूखे-पेट घर लौटती थी। गडरियोने आस-पासके जगलोके बबूल झडा-झडाकर भेडोको पहले ही खिला दिये थे। फसलके समय सुखाकर रखे गये पत्ते और भूसा आदि भेडोके सामने डालकर, गडरिये उनका पेट भर रहे थे। राह देख रहे थे कि कब बारिश होती है और कब हरियाली आती है।

इसी समय बूढे पटेलको सुबह-सुबह एक बुरा सपना दिखा। कमरमे

नीमकी टहनियाँ बाँधे, बाल खुले छोडे हुए, माथेपर कुकुमका लेप लगाये हुए एक औरत आयी और पटेलसे बोली, "पटेल, तुम्हे ले जाने आयी हूँ। तैयार हो जाओ।"

बूढेने डरकर पूछा, "कहाँ ले जाओगी ?"

औरत बोली, "भगवान्के घर। तैयार हो जाओ। कल चलना है।"

और पटेल चौककर उठा। पसीनेसे तरबतर, अँधेरेमे ही बहुत देर तक वह अपने बिस्तरपर बैठा रहा।

बडे तडके, जब मै जागकर उठ ही रहा था, पटेल मेरे पास आया। मेरे बिस्तरके एक कोनेपर वह आकर बैठ गया और पैर छूकर उसने मुझे प्रणाम किया।

मै हैरान था, कुछ भी न समझ सका।

पटेल बोला, "यह आखिरी राम-राम है मास्टर ! मै जा रहा हूँ !"

जबसे मै गाँवमे आया था, मुझे याद नही आता कि मैने पटेलको गाँव छोडकर अन्यत्र कही जाते देखा हो।

मैने पूछा, "कहाँ जा रहे हो ? कबतक लौटोगे ?"

बूढा बोला, "अब जा रहा हूँ, वापस नही आऊँगा।"

"इसका मतलब ?"

"कल सुबह तक मै मर जाऊँगा !"

यह मजाक नही था। बूढा सचमुच बडी गम्भीरतासे कह रहा था। मैंने हँसकर मजाक किया। तब उसने अपने सपनेकी बात कह सुनायी।

मैने कहा, "क्या तुम पागल हो गये हो पटेल ? सपने भी क्या कभी सच हुआ करते है ?"

पटेल बोला, "होते है मास्टर ! मेरे हुए है।"

"छि. ! तुमने व्यर्थ ही बच्चोकी तरह यह सब अपने दिमागमे भर लिया है। तुम-जैसे सयाने ही अगर ऐसा करने लगे तो फिर कैसे होगा ?"

बूढा बार-बार अपने उत्तराधिकारीके प्रबन्धके बारेमे बातें कर रहा था। लेकिन मैं उसकी एक भी बातपर विश्वास न कर सका। अन्तमे उसने कहा, "मै आज अपना सब कुछ अजीको दे देनेवाला हूँ। उसे शेकूबाके हवाले किये देता हूँ। वह उसकी देखभाल करेगा, उसे सँभा-लेगा और किसी अच्छे वरसे उसका विवाह कर देगा। तुम भी उसकी तरफ खयाल रखे रहना।" इतना कहकर वह उठा और चल दिया।

दिन-भर घूमकर पटेलने यह बात गाँवमे सबसे कह दी, और सबसे बिदा ली। इस पागलपनपर भला कौन विश्वास करता? बहुतोने उसकी हँसी उडायी। बूढेकी बात किसीने भी अपने मनमे गम्भीरतासे न ली। शेकू दुनिया-भरका बुद्धू था। लेकिन वह भी बोला, "नाना, यह क्या हो गया है तुम्हे? अभी पाँच साल तक तुम्हे कोई डर नही। जाओ घर।"

कोई कुछ भी कहा करता, मजाक करता, हँसी उडाता, फिर भी इसकी कुछ भी परवाह किये बिना पटेल अपने सभी अपनोसे मिलता हुआ उस दिन सारे गाँवमे घूम रहा था। अन्तमे शाम हुई। भेडे जगलसे लौट-कर घर आयी और किसीने मुझसे आकर कहा, "चलो, पटेलको कै और दस्त हो रहे है।"

दौडता हुआ मै पटेलके घर पहुँचा। बूढेकी हालत काफी खराब हो चुकी थी। आँखे भीतर धँस गयी थी। मुँह सूख गया था। उससे ठीकसे बोला भी नही जाता था। मेरे जाते ही वह बहुत ही मद्धिम स्वरमे बोला, "झूठ नही है, बेटा! मेरा बुलावा आ गया है।"

मैने डाँटकर कहा, "नही, तुम्हारा कोई बुलावा नही आया है। कल सुबह तक तुम बिलकुल अच्छे हो जाओगे।"

घरेलू इलाज हो रहे थे। लेकिन आधी रात हो गयी, फिर भी पटेल-को कोई आराम न हुआ। सारे इलाज बेकार हुए। तब सबका धीरज छूट गया। अंजी और शेकूबा रोने लगे। बूढेके रिश्तेदारोकी आँखें डब-

डबा आयी। यह सब देखकर और रोना सुनकर पटेल बोला, "अरे, रोते क्यो हो? मेरा क्या होनेको रह गया है? इतने बडे महाराज पन्त सरकार—उन्होने भी मुझसे कहा, 'क्यो पटेल, कैसे हो?' मेरी पीठपर हाथ रखा। मेरी अब कोई साध पूरी होनेको नही रही।"

उसकी ये बाते सुनकर मै भी रो पडा।

सूरज निकलनेसे पहले ही पटेलने आँखें सदा-सदाके लिए मूँद ली। वह चला गया वहाँ—जहाँसे फिर कोई कभी लौटकर नही आता!

एक बूढा गाँवसे सदाके लिए चल दिया और गाँव सूना दिखने लगा। मुझे यूँ ही लगने लगा कि मेरा एक बडा मददगार जाता रहा, इस गाँवमे मेरा अब कोई नही रहा। शाला और व्यायामशालाके बारेमे मै उदासीन-सा हो गया। जब कभी अपने घर जाता, तो आठ-आठ दिन तक बनगरवाडी लौटनेकी इच्छा न होती।

अठारह

कभी न आनेवाली शेकूकी, वह हाथ-भर ऊँची औरत एक बार मेरे घर आयी। दोपहरका वक्त था। खाना खाकर मै बैठा हुआ पढ रहा था। आकर वह दरवाजेके पास सिमटकर खडी हो गयी। मैं सँभलकर बैठ गया। वह बोली, "क्या हो रहा है, मास्टर?"

मैने कहा, "कुछ नही। अभी ही खाना खाकर बैठा पढ रहा हूँ। बैठो न!"

मेरी इस बातसे उसका सकोच शायद कुछ कम हुआ होगा। वह अपने आँचलमे करीब सेर-भर मूँगफली रखकर लायी थी। उसने वे मेरे सामने उँडेल दी और बोली, "मूँगफली खाओ, मास्टर! तुम्हे देने लायक मेरे पास और क्या है?"

"लेकिन मास्टरको कुछ देना ही चाहिए, यह कोई ज़रूरी बात तो नही है ! बैठो न ?" मैने कहा ।

फिर भी शेकूकी औरत नही बैठी । मै ताड गया कि वह कुछ कहना चाहती है । बूढे पटेलने मरनेके बाद अजीको शेकूके हवाले कर दिया था। उसके घर रहकर अजोने उसपर डोरे डाले थे । तीस सालका शेकू अजी-के लिए पागल हो उठा था । यह भनक मेरे कानोमे पहले ही पड चुकी थी । लेकिन मुझे उसपर विश्वास न होता था । लगता था किसीने यूँ ही बेसिर-पैरकी उडा दी है । मेरे मनमे इस समय एक विचार यह भी आया कि यह औरत कही यही बात तो मुझसे कहने नही आयी है । लेकिन ऐसी बाते कोई दूसरेसे क्यो कहेगा ?

शेकूकी औरत न बैठती थी और न बोलती ही थी । इसके कारण मै कुछ अन्यथा अनुभव कर रहा था । उससे मै स्वय ही कुछ पूछूँ, यह भी मुझे उचित नही लग रहा था। किन्तु अन्तमे यूँ ही मैने कहा, "इस साल तुम्हारी फसल कैसी हुई है ?"

तब जरूर शेकूकी औरत देहलीके नजदीक आकर उकडूँ बैठ गयी और हाथकी मुट्ठी गालपर रखकर बोली, "अपने घरवालेका क्या करूँ मास्टर ?"

मैने कहा, "क्यो, क्या हो गया है ?"

सच तो यह है कि मुझे पहले ही सब कुछ मालूम हो गया था, लेकिन यह उससे स्पष्ट करना नही चाहता था । मैने सोचा उसे कमसे कम इतना ही सन्तोष रहे कि यह बात लोगोमे अभी नही फैली है ।

नीचे नजर गडाये हुए वह बोली, "यदि कोई सम्मानकी बात हो तो लोगोमे कही जाती है, और यदि कोई अपनी ही बदनामीकी बात हो तो उसे अपने मनमे ही रखना अच्छा होता है। लेकिन क्या करूँ? उन्होने तो बिलकुल धरम ही छोड दिया है। ऐसी करनी क्या उन्हे शोभा देती है ?"

मैने कहा, "क्यो, क्या कुछ झगडा हो गया है तुम दोनोका ?"

"झगडा क्यो नही होगा ? दूसरा ब्याह करनेको कह रहे है।"

मै बनावटी आश्चर्य दिखाता हुआ बोला, "कौन, शेकू ? यह एकाएक उसे क्या सूझी ?"

"एकाएक क्यो ? पटेल मर गया। अच्छा था बेचारा। पर मरते-मरते मेरी गिरस्तीमे आग लगा गया।"

यह कहते-कहते शेकूकी औरतका गला भर गया। आँखे सजल हो गयी। उन्हे आँचलसे पोछकर उसने गला साफ किया और बिलकुल दबी ज़बानमे वह कहने लगी, "दिन-रात उस छोकरीके पीछे पडे रहते है। वह छोकरी भी ऐसे नखरे और अदा दिखाती है जैसे जवान लडकोको दिखाये जाते है। यह देखकर मै भला कैसे चुप बैठूँ ? उसकी बात छोड़ दो वह तो अभी लड़की है। अभी उसमे अक्ल नही है। और फिर अक्ल न होनेको क्या हो गया ? अब पूरी जवान जो हो गयी है। हाँ, शर्म उसमे बिलकुल नही है। लेकिन ये तो समझदार है। ये उसपर क्यो इतना रीझ गये ? लोगोकी नही, तो मनकी तो लाज होनी चाहिए। तुम-जैसे लोग क्या कहेगे ? उस बूढेने इनसे लड़कीको सँभालनेके लिए कहा था। कही अच्छा-सा वर देखकर उसका ब्याह कर देनेके लिए कहा था। सो यह भलापन लेना तो छोड, खुद ही उसके लिए पागल हुए बैठे है। काम-काजकी है नहीं, और उसे धोती चाहिए, चोली चाहिए। तुम्ही बताओ मास्टर, क्या यह अच्छी बात है ?"

मैने फिर बनावटी आश्चर्य दिखाया। बनावटी क्रोध प्रकट किया। "जब तुम्ही कह रही हो तो सच ही होगा। वैसे शेकू फूँक-फूँककर पैर रखनेवाला आदमी है। उससे ऐसी बात कभी न होनी चाहिए थी। लेकिन जब तुम्ही कह रही हो तो झूठ कैसे मानूँ ?"

"मै भला क्यो झूठ बोलूँगी, मास्टर ? फिर इसमे बदनामी क्या सिर्फ उन्हीकी होती है। उनके साथ क्या मेरी भी नही होती ? गले तक न आ

जाये तबतक क्या ये बाते कोई किसीसे कहता है ?"

"छि. ! यह तो शेकूने बडा गधापन कर डाला। उसकी इतने दिनकी सज्जनतापर पानी फिर गया।"

यह देखकर कि मेरी इस बातसे शेकूकी बदनामी हो रही है, उस औरतने जल्दी-जल्दी स्पष्टीकरण किया, "नही, वैसे उन्हे उस लडकीको कुछ बिगाडना नही है ? वे उससे विवाह करना चाहते है।"

"लेकिन यह कोई विवाह करनेका तरीका है ? और आज ही उसे दूसरा विवाह करनेकी ऐसी कौन-सी जरूरत पड गयी ?"

"मुझे सन्तान नही होती न ? सन्तानके लिए कर रहे है।"

इसपर ज़रूर मै निरुत्तर हो गया। उसकी झलक मेरे चेहरेपर पड गयी। और जो मै कहना चाहता था वह शेकूकी चतुर औरतने ही कह दिया, "हमे कोई सन्तान नही, यह सच है। लेकिन हमारे पास कौन ऐसी बडी जायदाद धरी है जो सन्तान न होनेके कारण व्यर्थ चली जायेगी ? और फिर अभी कौन उम्र बीत गयी है। अगर भगवान्की कृपा हुई तो सन्तान भी हो जायेगी। क्यो मास्टर, है न ?"

मैने कहा, "तो फिर उसे किसी दूसरी लड़कीसे शादी कर लेनी चाहिए"

"क्यो कर लेनी चाहिए ? दोके पेट भरनेकी तो मुश्किल पड़ रही है। हमारी कैसी चल रही है सो तुम तो देख ही रहे हो। और जो कोई नयी आयेगी उसकी भी कोख खुली ही रहेगी, यह कौन कह सकता है ? यदि भगवान्के मनमे हो तो सूखे पेड़मे भी फल लग सकते है।"

मै चुपचाप सुने जा रहा था। कभी-कभी बोल भी देता था। माथेपर कुकुमका एक बडा बुँदका लगायो हुई यह रूखी औरत बोल रही थो! खेतमे पतिके साथ कन्धेसे कन्धा भिड़ाकर काम करनेवाली, बैलके साथ जुतकर खेतमे हल चलानेवाली यह औरत पतिके इस बरतावके कारण बडी उलझनमे पड गयी थी। अजीके बाल पकडकर उसे घरसे निकाल देना क्या उसके लिए सम्भव न था ? लेकिन ऐसा कोई काम न कर यह औरत

एक मास्टरके सामने बैठी हुई अपना दुखड़ा कह रही थी।

उसकी आँखोमे आँसू आ रहे थे। नथुने थरथरा रहे थे। होठ काँप रहे थे। मेरे मनमे जो विचार आये सम्भव है वही उसके मनमे भी आये होगे। इसमे अजीका दोष नही। वह उम्रमे आ गयी है। भले-बुरेका विचार उसके मनमे नही आ सकता। शेकूका उसकी ओर आकर्षित हो जाना स्वाभाविक था। यह सारा मामला इतना नाजुक था कि यहाँ कलाई-की ताकत व्यर्थ थी। और यह औरत इस बातको पूरी तरह समझ गयी होगी। वरना इस नाजुक विषयपर वह किसी परायेके पास आकर इस तरहकी बाते हरगिज़ न करती।

मै बार-बार कहे जा रहा था, "शेकूका यह बरताव ठीक नही है। उसे समझदारीसे काम लेना चाहिए।"

अन्तमे शेकूकी औरत बोली, "मास्टर, तुम्हारे पास आयी हूँ इसलिए कि गाँवमे तुम्ही पढे-लिखे और समझदार हो। हमारे राजा तक तुम्हारी पहुँच है। तुम उन्हे ज़रा डाँट दो। गाँवमे वे अगर किसीकी सुनेंगे, तो तुम्हारी ही।"

"लेकिन बहन, यह घरेलू बात है। मैने उससे कुछ कहा और उलटा उसने ही मुझसे पूछा कि तुम्हे क्या पडी है हमारे बीचमे पड़नेकी, तुम पूछनेवाले कौन होते हो, तो मेरा क्या रह जायेगा ?"

इसपर शेकूकी औरत हाथ नचाती हुई बोली, "उँह उनकी क्या हिम्मत है ऐसा कुछ पूछनेकी? हाथमे जहाँ हथकडी पड़ी कि एकदम· · इतना समझनेकी अक्ल है उनमे !"

हम इस तरह बातें कर रहे थे तभी शालाकी घण्टी बजी। आयबू, सता आदि लड़के आ गये और शेकूकी घरवाली उठी। जाते-जाते वह बोली, "ठीक है जाती हूँ।"

और वह चली गयी। मूँगफलियोका ढेर अभीतक यूँ ही पड़ा था। उसकी ओर देखकर आयबूने पूछा, "ये फलियाँ क्या नानी लायी है

मास्टर ?"

"हाँ, क्यो ?"

"नही, कोई खास बात नही। यूँ ही पूछा। कभी नही लायी, फिर आज ही कैसे लायी ?"

आयबूने सिर्फ इतना ही कहा। लेकिन वह क्या कहना चाहता था, मै समझ गया। उसने फलियाँ भरकर रख दी। दरवाज़ा बन्द किया। और जब मै शाला जाने लगा तो मैने यह भी सोचा कि आयबू इस विषयमे कुछ न जानता होगा। उसने सहज ही यह पूछ लिया होगा और मेरे मनने उसके अर्थ लगा लिये होगे।

इसके बाद रास्तेमे आते-जाते मेरी शेकूसे दो-चार बार मुलाकात भी हुई। लेकिन नित्यकी भाँति वह मेरी तरफ देखकर न हँसा और न बातें ही की। दूरसे ही मुझे देखता, तो गरदन झुकाये मुझसे कन्नी काटकर जल्दी-जल्दी चल देता। उसके इस अजीब बरतावके कारण, निश्चय करके भी अजीके बारेमे उससे कुछ पूछनेकी मुझे हिम्मत न पडी। अंजी और शेकूके विषयमे गाँवमे होनेवाली कानाफूसी अधिक बढ गयी थी। लोग कहा करते, "रोज़ दोनो साथ-साथ भेडे चराने जाते है। रास्तेमे चलते समय भी अजी शेकूसे बिलकुल सटकर चलती है। आज उन दोनोको दूर एक नालेके किनारे निर्गुण्डीके कुजमे देखा। कल मावली माताके मन्दिरमे जाकर उन दोनोने कसमे खायी। अजीने देवीकी सौगन्ध खाकर शपथ ली कि वह शेकूको कभी धोखा न देगी। परसो शेकूने भेडे बेचकर अजीके लिए तोडे बनवानेको दिये है।" इस प्रकारकी अनेक बातें सुनायी देती। शेकूकी यह घटनाएँ गाँवके जवानोके लिए मज़ाकका विषय बन गयी थी। सयानो और समझदारोके लिए वह एक तिरस्कारकी बात हो गयी थी।

फिर एक दिन शेकू और उसकी घरवालीमे खूब झगडा हुआ। क्या कारण था, इसका पता न चला। क्योकि वे दोनो आधी रातको अपने ही घरमे लडे थे। और दूसरे दिन सुबहसे शेकूकी औरत गाँवमे ही अलग रहने

लगी। घुला गडरियाके नजदीकवाला कोठा खाली था। उसीमे अपना चक्की-चूल्हा रखकर वह रहने लगी। अपनी खेतीकी ओर वह कोई ध्यान नही देती थी। दूसरेके खेतोमे मजदूरी करके वह अपना पेट भरने लगी। अब वह कभी शेकूका नाम तक न लेती थी।

अजी और शेकू एक साथ रहने लगे। शेकू अजीसे विवाह करना चाहता था, अतएव वह उस प्रबन्धमे लग गया। उसने कुछ भेडे बेचकर नकद रकम खडी की, अनाज इकट्ठा किया।

शेकूका खेत गाँवसे कुछ दूर ही था। उसके खेतके उस पारवाला खेत येडसी नामक गाँवके एक दूसरे खेतसे सटा हुआ था। दोनो खेत एक सयुक्त मेडसे अलग होते थे। येडसी गाँवके उस खेतमे खादके लिए भेडे बैठने लगी। उस खेतके मालिकने किसी दूसरे गाँवसे भेडे बुलायी थी। उनके साथ दो-तीन जवान गडरिये थे। वे रात-भर गीत गाते और बाँस लिये खेतमे बैठे रहा करते। उनके सुरीले और तालपर गाये जानेवाले गीत अजी अपने खेतमे बैठी सुना करती।

एक बार चिलचिलाती दोपहरको उनमे का एक गडरिया दोनो खेतोकी सम्मिलित मेडपर लगे बबूलके पेडपर चढ गया और उसकी टहनियाँ काट-काटकर नीचे गिराने लगा। उसकी भेडे उस पेडके तले आकर इकट्ठा हो गयी और काँटे बचाकर बबूलकी पत्तियाँ खाने लगी, कुछ हरी और सफेद-सी बबूलकी फलियाँ चुनने लगी।

तब जल्दी-जल्दी अजी आगे बढी और नीचे खडी होकर बबूलपर चढे उस जवान गडरियेको देखकर बोली, "कौन है रे जो बबूल काट रहा है ?"

ऊपर बैठा हुआ गडरिया नीचे देखकर बोला, "क्यो री, तेरे मनमे क्यो दुःख हो रहा है ?"

एकदम उसके 'क्यो री' कहते ही अजी सिहर उठी। तभी बबूलके पीले फूल उसपर टप-टप बरस पडे और वह गडरिया पेडसे नीचे कूद पडा। साँवला और सुन्दर नाकवाला वह युवक अजीके सामने अभि-

मानसे खडा हो गया। उसकी आँखोकी ओर ताकनेकी अजीको हिम्मत न पडी। उसका हृदय धडकने लगा। आस-पास सन्नाटा था। बबूलकी छायामे भेडे पत्तियाँ खा रही थी और मन-ही-मन मुसकराता हुआ वह तगडा युवक निर्भीकतासे अजीके सामने खडा था। फिर वह बोला, "दूसरे गाँवके आदमियोसे इस तरह डपटकर नही बोला जाता। यह क्या तेरा खेत है ?"

नीचे निगाह किये हुए ही अजीने ठसकसे कहा, "यदि मेरा न होता तो क्या मै कुछ कहती ?"

गडरिया बोला, "बबूलपर बहार देखी तो उसे तोडनेके लिए तबीयत मचल उठी !" और उसने ढिठाईसे आगे बढकर एक दम अजीका हाथ ही पकड लिया। अजी न चिल्लायी और न चीखी। उसने अपनेको छुडानेकी थोडी कोशिश की। लेकिन गडरियेकी मजबूत पकडसे उसका हाथ न छूटा।

फिर उसकी आँखोमे आँखे डालती हुई अजी गिडगिड़ाकर बोली, "मेरी चूड़ी फूट गयी। छोड़ दे हाथ।"

"नही छोड़ता। क्या करेगी ?"

"अच्छा, बडी शान दिखा रहा है ? छोड दे हाथ।"

फिर भी गडरिया मुसकराता ही रहा।

चार-पाँच दिन भेड़ोको उस खेतमे बिठाकर और उसके बदलेमे खेतके मालिकसे ज्वार लेकर वह जवान गडरिया भेडोको हाँकता हुआ अपने गाँव चला गया। उस समय अजीको भी वह अपने साथ ले गया। वह भी चली गयी। शेकूसे उसने न कुछ कहा और न कुछ पूछा। कसम तोडकर अजीने शेकूको छोड़कर दूसरा पति कर लिया।

इसके दस-पन्द्रह दिन बाद थोडी-सी गाजरें लेकर शेकूकी औरत मेरे घर आयी। उसकी कली खिली दिख रही थी। गाजरोको मेरे आगे ज़मीनपर उँडेलती हुई वह बोली, "मास्टर, मेरा बावला लौटकर आ गया अपने घर !"

उन्नीस

फिर मावली माताका मेला लगा। बनगरवाडीमे हर साल यह मेला हुआ करता था। गाँवसे एक मीलकी दूरीपर एक टेकडी थी। उसपर एक मामूली-सी कुटिया बनी हुई थी जैसी कि बहुधा जंगलोमे बना दिया करते है। और उस कुटियामे मावली देवी बैठी हुई थी। उस कुटियाके आस-पास चट्टानें है। फुट-दो-फुट ऊँचाईकी तरोतोकी झाडियाँ है। कही-कही करीलके सूखे हुए कुंज है। इसके सिवा वहाँ और कुछ नही है। गडरियोकी मिन्नते पूरी करनेवाली यह देवी थी। इतने दिनोसे वह कुटियामे रह रही थी। उसके लिए गाँववालोने एक छोटा-सा मन्दिर क्यो नही बनवा दिया? मन्दिर बनवा देनेका प्रयत्न हुआ था। पर देवीने पुजारीके सपनेमे आकर कहा, "मेरे लिए मन्दिर न बनाओ। मै जहाँ हूँ, वही मज़ेमे हूँ।"

अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनकर सारा गाँव उस निर्जन स्थानमे इकट्ठा हुआ। आस-पासके गाँवोसे भी कुछ भक्त लोग आये। करीब सौ-डेढ सौ लोग इकट्ठा हुए। पुजारीने पूजा की। लोगोको गुलाल लगाया।

गाँवसे टक्कर लेनेवाला बाला बनगर भी मेलेमे आया, अपने स्त्री और बच्चोको साथ लेकर पैदल ही। उसे देखते ही गाँवके लोगोमे कानाफूसी होने लगी। लोग चिल्लाने लगे, उसे रोको, उसे देवीके पास न जाने दो। लेकिन किसीकी भी परवाह न कर बाला देवीके नज़दीक पहुँच गया। उसने देवीके चरण छुए और प्रसादका गुलाल लगानेके लिए उसने पुजारीके सामने अपना मस्तक बढाया। तब पुजारी बोला, "तू गाँवको परवाह नही करता। जा, मै तुझे गुलाल नही लगाता।"

इतना बलिष्ठ बाला लेकिन पुजारीके मुँहसे यह सुनते ही एकदम ठण्डा पड़कर चुप रहा और लोगोकी ओर मुँह फेरकर खड़ा हो गया। पिछले अनेक महीनोमें उसने बडे कष्ट उठाये थे। गाँवका एक भी आदमी उससे बात न करता था। गाँववालोने बाला बनगरको किसी कोढीको

तरह गाँवसे दूर रखा था। आज उसकी पराकाष्ठा हो गयी। देवीका प्रसाद भी उसे न मिला। जिसने लोगोंके विरोधकी तनिक भी परवाह न की, वह बाला इस उपेक्षासे पस्त हो गया। उसने अपनी धोतीका पल्ला जल्दी-जल्दी खीचा और उसे गाँववालोंके सामने फैला दिया। फिर ज़ोरसे चिल्लाकर वह बोला, "अपने गाँवके सामने मैं दामन फैलाता हूँ। मेरी गलती माफ कर दो। मुझे अपनेमें शामिल कर लो। तुम मेरा पेड़ ले लो, घर ले लो, मेरे प्राण भी ले लो। पर मुझे इस तरह अपनेसे दूर न रखो।" और उसका तेज़ स्वर काँपने लगा। आँखोंसे आँसुओंकी धाराएँ बहने लगी। क्षण-भरके लिए लोगोंका इतना बडा जमाव बिलकुल शान्त रहा। और फिर रामाका वह बूढा काकूबा गाँववालोंसे बोला, "अरे, बच्चा यदि जाँघपर पेशाब कर दे तो क्या हमे अपनी जाँघ काट डालना चाहिए? लगाओ उसे गुलाल।"

लोगोंमे कानाफूसी होने लगी। सब लोगोंने कहा, "लगा दो गुलाल।" फिर पुजारी उठा और सारे गाँवके सामने अपना दामन फैलाकर खडे बालाके मस्तकमे गुलाल मलकर बोला, "मावली माताकी जय हो!"

फिर लोगोंने मावली माताकी जयका नारा बुलन्द किया, मुट्ठी भर-भरके गुलाल फेंका। सकरकन्द और गाजर आदि फल लुटाये। उस प्रसाद-को खोजनेके लिए झुण्डके-झुण्ड नीचे झुके, धक्कमधक्का हुई, कोलाहल मचा। डफवालेने डफ बजाया, सिंगीवालेने सिंगी फूँकी और हर सालकी तरह धुला बनगरकी देहमे देवी आयी। 'हाँ-हूँ' करके वह घूमने लगा। अजीब-सी अँगडाइयाँ लेने लगा। डफवाले जैसे-जैसे जल्दी-जल्दी डफ बजाते धुला भी अधिक फुर्तीसे नाचता। उसने अपने बदनका कम्बल दूर फेंक दिया। सिरका साफा भी उतारकर अलग कर दिया। नगे बदन धुला खडा हो गया और घूमने लगा। पुजारीने उसके मस्तकपर गुलाल लगाया। इतना अधिक गुलाल उसके लग गया था कि वह नाक तक आ गया और उस स्वरूपमें वह धुला गडरिया नाचने लगा।

"देवी आ गयी, देवी आ गयी" कहकर गडरियोने उसे घेर लिया।

फिर शेकूने पूछा, "माँ, इस साल अभी तक पानी नही बरसा। हमसे क्या कोई भूल हो गयी है!"

देवी घूमती हुई बोली, "पाप बहुत बढ गये। बेईमानीका बाजार गरम हो गया। इसलिए वर्षा चली गयी।"

"लेकिन अगर वर्षा न हुई तो भेडे क्या खायेगी और हम कैसे जियेगे?"

आँखें बन्द किये हुए ही देवी बोली "मेरा मेला अच्छी तरहसे भराओ, मुझे ठीकसे भोग और नारियल चढाओ ·· सब मगल होगा।"

"क्या पानी बरसेगा?"

"हाँ बरसेगा।"

"पर माँ, कब बरसेगा? मृगा तो निकल गया है। सारी दुनियामे पानी बरसा और हमारे गाँवपर एक काला बादल भी नही उठा!"

"अरे, यह सब तुम्हे सीख देनेके लिए हुआ है। पर अब पानी बरसेगा आर्द्रामे बरसेगा।"

शेकूने अपने मुँहपर दो चाँटे मार लिये। "माँ! हमारी गलतियाँ माफ कर दो। हम तुम्हारा मेला ठीकसे भरायेगे। भोग और नारियल भी ठीकसे चढायेगे। सब कुछ हमे मजूर है।"

इतना कहकर उसने घुलाके चरणोपर अपना माथा टिका दया। और फिर शरीरके भीतरकी देवी अन्तर्धान हो गयी। घुला चुप पडा रहा।

फिर लोगोने मेलेकी रस्मे अदा की। हर सालकी तरह देवीके आगे बकरे काटे गये। आयबूने छुरी चलायी। शेकूने देवीको खून चढाया। देवीके आगे प्रसाद रखा और चीर-फाड हुई। आस-पास लोग आकर इकट्ठे हो गये। लडको-बच्चोने भीड लगा दी। तब आयबूने डाँटकर सबसे कहा, 'अब सब लोग घर जाओ। 'पताका' लगाकर सब खानेको आओ।"

'पताका' लगाकर खानेको आनेका मतलब यह था कि अपने-अपने घरसे रोटियाँ लेकर आओ। सिर्फ सालन यहाँ मिलेगा। बनगरवाडी भेडे

देगी। लेकिन ज्वार कहाँसे आयेगी ?

धीरे-धीरे लोग चले गये। कुछ चुने हुए लोग बच रहे। उन्होंने जमीन खोदकर चूल्हे बनाये। उन्हे जलाया। उनपर बडे-बडे हण्डे रखे। दो-तीन बकरोंका माँस उन हण्डोमे पकने लगा। उसकी महकसे सारा वातावरण भर गया।

चाँदनी निकली। मशाले जली। अपनी अपनी थालियाँ और रोटियाँ लेकर गडरिये आये। पगत बैठी। टेका लगाकर रखी थालियोमे गरम और चरपरा सालन परोसा गया। माताकी जय-ध्वनि वातावरणमे गूँज उठी। लोग रोटी और सालनपर टूट पडे। उस चरपरे सालनसे उनके मुँह जले और नाकमे पानी आ गया।

बीस

मावली माताने गाँवको अभय वरदान दे दिया था। लेकिन नक्षत्रके बाद नक्षत्र निकलते चले गये और बनगरवाडीमे एक बूँद भी न गिरा। तपती ज़मीने ठण्डी नही हुईं। पेड-पौधे सूखकर लकड़ी हो गये। भूखी भेडोने जगलका एक-एक तिनका चर डाला। गरम धूल सब-कही फैल गयी। बगूले चलने लगे। कुएँका पानी सूख गया। गाँवके झरनेका पानी कम हो गया। गाँवकी आवश्यकताभर पानी उसमे न बचा। कीचड-भरा गँदला पानी करोटोसे खुरच-खुरचकर निकालनेपर भी एक घडा नही भरता था। सुबह और दुपहर पानीके लिए झरनेपर लोगोकी भीड़ जमने लगी। शामको चिड़ियोको पीनेके लिए भी उसमे पानी न बचा करता। रात भर रिस-रिसकर सुबह उसमे थोडा पानी आ जाता था। स्त्रियाँ बडे तडके उठकर पानी भरनेके लिए झरनेपर जाने लगी। कौवोके बोलनेसे पहले ही मनुष्य पानीके लिए लडने लगते थे।

जानवर दुबले हो गये। भूखे रहनेके कारण उनके पेट सिमटे हुए

दिखने लगे। उनके बदनपर रीछ-जैसे बाल बढ गये और वे मैले दिखने लगे। ऊन काट डालनेके कारण पहले ही मुँडी हुई भेडे बिलकुल ही दुबली हो गयी। उनकी चरबी बिलकुल सूख गयी। लोग छतोसे पुरानी सडी-गली घास खीचकर जानवरोके सामने डालने लगे। पानीके लिए भेडोको काफी दूर ले जाना पडता था। गाँवमे चिडियाँ, कौवे और हरियल आदि पक्षियोका कही नामोनिशान भी नही दिखायी पडता था। भूखसे व्याकुल जगलके चूहे गाँवमे आ गये और उन्होने बडा ऊधम मचाना शुरू कर दिया। उन्होने गडरियोके कम्बल, कुतर डाले, आटेकी गन्ध आनेके कारण सूपोमे छेद कर दिये और टोकनियाँ काट डाली।

लोगोके चेहरोकी रौनक खो-सी गयी। उनकी आँखोसे भूख झाँकने लगी। घरोमे रखा अनाज भी समाप्त हो गया। तब अण्टोमे रुपया-दो रुपया खोसकर लोग बाजार जाने लगे और बडी मुश्किलसे महँगे दामोपर प्राप्त करके अनाज लाने लगे। जिनके हाथ खाली थे उनका दो-दो दिन उपवास होने लगा। रामोशियोके बहुत बुरे दिन आये। दो-दो दिन उनके घर चूल्हा नही जलता था। व्यायामशालामे आनेवाले लडके अन्न प्राप्त करनेके लिए आस-पासके गाँवोमे भटकने लगे। शालामे आनेवाले लडके अन्नकी तलाशमे मीलो चक्कर काटने लगे। व्यायामशाला उजड गयी। शाला वीरान हो गयी। अन्न प्राप्त करनेके लिए सभी कडा परिश्रम करने लगे। समूचा जिला ही अकालके चक्करमे फँस गया। 'माण-देश' की तकदीरमे लिखा अकाल पडा।

लोग हैरान हो गये। रामा बनगरका चेहरा काला पड गया। शालामे रोज लगनेवाला उसका चक्कर अब कम हो गया। दो-दो चार-चार दिन वह न आता। जब आता भी तो अकालकी बातोके सिवा दूसरी कोईबात न करता।

"इसकी एक कथा है, मास्टर! एक बार राम और लछमन घूमते-घूमते हमारे इस माणदेशमे आये। जब रामघाट पहुँचे, तो दुपहर हो गयी। इसलिए छाँह देखकर दोनो भाई भोजन करने बैठे। उन्होने भोजन

शुरू किया ही था तभी पानीका एक बडे जोरका छीटा आ गया । उनके भोजनमे पानी पडने लगा । इसपर रामको बडा क्रोध आया और उन्होने एक बाण मारकर, पानीको बालेघाटकी तरफ खदेड दिया । उस वक्तसे गायब हुआ हमारी पट्टीका पानी आज तक नही आया । तुम्ही देख लो, रामघाटमे पानी गिरता है और अपने गाँवपरसे काले बादल सिर्फ निकलते है । निकलते है—जाते है हमारे गाँवपरसे लेकिन बरसते है बालेघाटमे ।"

यह बात सच थी । बीचकी पट्टी वर्षाकी बूँदोसे अछूती ही रह जाया करती थी ।

खानेके लाले पडनेके कारण भेडें दुबली हो गयी और कमज़ोर हुए उनके शरीरोको नाना प्रकारके रोग लग गये । माताकी बीमारी आयी और भेडोके मुँहपर माताके बडे-बडे दाने उभर पडे । ज्वर आ जानेसे उनका अपनी जगहसे उठना असम्भव हो गया । करुण आँखोसे इधर-उधर देखती वे यूँ ही बैठी रहने लगी । 'आडा' हो जानेसे कुछ भेडोके दिमाग भी बिगड गये । पागल हुई ये भेडे अपने आस-पास ही घूमने लगी और इस तरह घूमते-घूमते जमीनपर गिरने लगी, मरने लगी । किन्हीके पैर लँगडे हो गये । वे अपने पैरोको घसीटती हुई चलने लगी । लोग कहते कि भेड़ोपर कोई अशुभ पक्षी बैठ गया है जिसके पख लगनेसे वे घायल हो गयी है और कमर टूट जानेसे उनसे चलते नही बन रहा है । कुछ भेड़ोको नाक बढनेकी बीमारी हो गयी । उनकी नाक बहने लगी । उनकी नाकपर कौवे चोचे मारने लगे । तब गडरियोने गुलेलसे कौवे मारे और मृत कौवोको ऊँचाईपर टाँग दिया । किसी भेडको लार टपकनेका रोग हो गया । उनके पैर सड़ने लगे । वे किसी भी चीज़को मुँह न लगाती ।

इन सब रोगोके कारण अधिक भेडे न मरी, लेकिन जब उनके बाडेमे सक्रामक रोग आया तो उससे वे धडाधड मरने लगी ।

सबसे पहले यह रोग बिरा गडरियेके बाडेमे आया । एकाएक बैठे-बैठे ही भेड़ोको पतले दस्त होने लगे । सारे बाड़ेमे कीचड़ मच गया । भेडे इस

कीचडमें सन गयी। उनपर मक्खियाँ भिनभिनाने लगी और वे धडाधड मरने लगी। रोज सुबह दस-पाँच मरी हुई भेडे मिलती। बिराका बेटा सता उन लाशोको घसीटकर गाँवके बाहर ले जाकर फेंकने लगा। चमडेका भाव एकदम उतर गया। दूसरे गाँवके लोग आकर एक भेडके चमडेको सिर्फ चार-छह आनेमे खरीदकर ले जाया करते। पहले-पहल तो कुछ नीच जातिके लोग आकर मरी हुई भेड़ोको उठाकर ले जाया करते थे। लेकिन बादमे उन्हे भी हिचक आ गयी। चमडा निकली हुई भेडकी लाशे जगलमे ज्योकी-त्यो पडी रहने लगी। न जाने कहाँसे गिद्ध आकर इक्ट्ठा होने लगे। गाँवके कुत्ते पहले-पहल तो उन पक्षियोपर दौडे। लेकिन थोडी देर बाद गिद्ध और कुत्ते दोनो एक ही जगह बैठकर मास खाने लगे। गाँवके नज़दीक एक बरगदका पेड था। उसपर गिद्धोने अपना डेरा डाल दिया। भारी भरकम देहवाले ये पक्षी दिन-भर मरी हुई भेडोका मास खाते। साँझ होते ही उस बरगदकी टहनियोपर बैठ जाते और अपनी बीटसे उन्हे बदरग करते थे।

सात-आठ दिनके भीतर बिरा गडरियेका दो सौ भेडोका दल पूरी तौरसे नष्ट हो गया। बिराने अपने भाग्यको कोसा। देवीकी मनौती मनायी। वह बेचैन हो उठा। अपनी प्यारी भेडोको मरते देखकर सता भी रोया, चीखा। लेकिन जो होनी थी वह होकर ही रही। बिरा गडरियाकी हिम्मत पस्त हो गयी। उसकी सारी भेडे मर गयी।

लोगोके उपवास होने लगे। जहाँतक सम्भव था, उन्होने भूसा आदि खरीदकर अपने जानवरोको खिलाया। खुद अधपेट रहकर अपने जानवरोके प्राणोकी रक्षा की। लेकिन कुछ दिनोके बाद इस तरह भी गुज़र होना कठिन हो गया। भूखसे व्याकुल और अग समेटकर खूँटोके पास बैठे जानवरोकी करुण आँखें उनसे देखी नही जाती थी।

रामोशियोने चोरीसे शराब बनानेका धन्धा, जो पहलेसे ही चल रहा था, फिरसे शुरू किया। पर शराबके लिए ग्राहक ही नही मिलते थे। वागोकी औरत भगा लानेवाला वह जवान जगन्या रामोशी भूखके कारण

शराब पीने लगा और उसके अगकी सारी चरबी सूख गयी। अन्तमे अकेला ही तीस-पैतीस मील पैदल चलकर, वह महुद नामक गाँव गया। उस जैसे बहुत-से भूखे लोग कामकी तलाशमे वहाँ गये थे। गाँवके किसानोने उन्हे अपने ख़ेतोकी निदाई करनेका काम दिया था, यह सोचकर कि ये दूसरे गाँवके लोग जाने कब काम छोडकर भाग जाये। गाँववालोने तीन दिनके बाद काम समाप्त होते ही मजदूरी देनेका वादा किया था और लोग निदाई करने लगे। पेटको धोतीसे बाँधकर जगन्या रामोशीने तीन दिन निदाई की। भूखसे छटपटाता वह रामोशी किसी तरह तीन दिन तक खुरपी चलाता रहा और तीसरे दिन हरियालीसे भरी हुई छोटी नहरमे वह एका-एक गिर पडा और फिर कभी उठा ही नही!

भूखके कारण बूढे हुए बैलको खीचते-खीचते गाँवके बाहर ले जाता हुआ शेकू मुझे मिला।

मैने पूछा, "शेकूबा, किधर?"

शेकू खडा हो गया और बोला, "अब ये दिन नही कटते, मास्टर! बाज़ार जाकर बैल बेचे देता हूँ। जहाँ जायेगा, वहाँ कम-से-कम पेट-भर चारा तो खायेगा!"

वह चल दिया और शामको थका-माँदा लौटकर आया तो बैल उसके साथ ही था। बाट जोहनेवाली उसकी औरतने पूछा, "क्यो, नहीं बिका?"

तब खिन्नतासे गरदन हिलाकर शेकू बोला, "कोई ग्राहक ही नही मिला। एक कसाई सात रुपयेमे माँग रहा था। उसकी छुरीसे मरनेके बजाय यह अपनी ही ड्योढीपर मरे तो क्या बुरा है?"

लोग भेडे बेचकर उनके बदलेमे अनाज लानेके लिए दूर-दूरके बाज़ारो-के चक्कर लगाने लगे। चार-चार भेडें देकर उनके बदलेमे दो-चार सेर ज्वार लाने लगे। उस ज्वारकी रोटियाँ उनके गले नही उतरती थी। जो पहले-पहले गये थे उनकी भेड़े बिक जाती थी। लेकिन जो बादमे गये उन्हे हाथ हिलाते ही लौटना पडा। किसी भी बाज़ारमे भेडोके लिए ग्राहक ही

न मिलते थे । खरीदनेवाला उन्हे खरीदकर आखिर खिलाता भी क्या ?

एक दिन आनन्दा आया। वह सूखकर काँटा-सरीखा हो गया था। वह बोला, "जा रहा हूँ जीनेके लिए, मास्टर ?"

मास्टर क्या कहता ? "कहाँ जा रहा है ?"

"जाता हूँ जहाँ पैर ले जाये। जहाँ फसले होगी, वहाँ मजदूरी करूँगा-जियूँगा। अगर बचा तो वापस आऊँगा !"

थोडी देर आनन्दा चुप रहा और फिर धीरे-से बोला, "मास्टर, बालट्याको मैने और आयबूने मिलकर मारा था। तुम्हे वह बहुत तग करने लगा था, इसीलिए पीट दिया था उसे।" इस बातको स्वीकार करके आनन्दा चल दिया।

रामोशियोके मुहल्लेके सब लोग अपनी-अपनी झोपड़ियोके दरवाजे बन्द कर गाँवके बाहर चल दिये। वे करीब पन्द्रह-बीस लोग पीठपर सामान लादे बार-बार पीछे देखते हुए, जीवित रहनेके लिए गाँवके बाहर निकल पडे। उनकी बकरियाँ उनके पीछे-पीछे चल रही थी। बच्चे कन्धोपर बैठे हुए थे। औरते बूढे आदि सब उनके साथ थे। किसी बहेलियाके अटम्बरकी तरह ये रामोशी पैर घसीटते धूलसे भरी सडक तय करते हुए, अन्नकी तलाशमे गाँव छोडकर चल दिये। गाँवका रामोशी मुहल्ला खाली हो गया।

फिर धीरे-धीरे भेड़ोके झुण्ड आगे लेकर गाँवके गडरिये भी चल दिये। उनके शिकारी कुत्ते भी उनके साथ थे। जिनके प्राणोपर गड़रियोका जीवन निर्भर था, वे भेडे भूखसे मरने लगी, तब दिलोको मज़बूत करके जवान गड़रियोने गाँव छोड़ दिया। उनके साथ घरके सब लोग भी चले गये। अकालग्रस्त प्रदेशको पार करके दूसरे प्रदेशमे जाना, भले ही वह स्थान कितनी ही दूर क्यो न हो, कही भी क्यो न हो, यही उनका लक्ष्य था। गड़रिये वहाँ पहुँचनेवाले थे। जितना सम्भव था उतना सामान पीठपर लादे गडरिये गाँवसे बाहर निकल पडे। शोर मचाती भेड़ोको हाँकते हुए,

अपने थके हुए बच्चोको उठाकर सीनेसे लगाये हुए उनका सफर शुरू हुआ ।

रामा बनगर जानेसे पहले मुझसे गले मिला और बोला, "घुलिया-मोर्चापुरकी तरफ जा रहा हूँ । वहाँ मेरे कुछ रिश्तेदार है । बूढा चलनेके लिए तैयार नही है । उसे सँभालना !"

बूढा काकुबा गडरिया नही गया । वह गाँवमे ही रहा । लडकेने उसे खूब समझाया-मनाया, लेकिन न गया । वह बोला, "मै किसलिए जाऊँ ? मेरा अब क्या होनेको बचा है ? अब मेरी वह उम्र नही कि ज़िन्दा रहनेके लिए कडा परिश्रम करूँ । तुम जाओ । मेरी चिता तो यही जलेगी !"

फिर रामाने उसके लिए घरमे अनाजका सग्रह किया । बूढेको पकाकर खिलानेके लिए अपनी घरवालीको घर छोड दिया और जब भेडें लेकर वह जाने लगा तो बूढा बोला, "क्या सभी भेडे लिये जा रहा है ? फिर मै अकेला यहाँ क्या करूँगा ? दो भेडे रख जा मेरे पास । अपनी रोटीमे-से कुछ टुकड़े उन्हे भी खिलाकर उनकी परवरिश करूँगा । यदि गुजर न होगी, तो हम सभी मर जायेगे !"

बूढेके पास दो भेडे छोडकर, रामा और उसका जवान लडका दोनो चल दिये । गाँवके घरोमे कही कोई एकाध रह गया और कही सारा घर चला गया । जल्दी-जल्दी सब चल दिये । जाते समय किसीने दुःख प्रकट नही किया, कोई रोया नही ।

जो किसान थे उनके पास कुछ अनाज था । उसके भरोसे वे एक महीने तक और हिम्मत बाँधकर बैठे रहे और फिर वे भी चल दिये । बाला बनगर गया । बैलको साथ लिये शेकू और उसकी औरत गयी । घुला गड़रिया गया । गाँवके किसान भी चले गये । उनके घर बन्द हो गये । दरवाज़ोपर ताले पड़ गये । बाला बनगरकी पीठपर बैठकर बालट्या भी गया । जाते-जाते शालाके नजदीक आते ही वह ज़ोरसे बोला, "मास्टर, मै जा रहा हूँ । लेकिन ज़िन्दा रहकर लौटूँगा और तुझे देख लूँगा । यह मै अच्छी तरह जानता हूँ कि तूने ही मेरे हाथ-पैर तोडे है ।"

सुबह-शाम हजारोकी तादादमे गाँवसे बाहर जानेवाली और पुनः गाँवमे वापस आनेवाली भेडे और जवान गडरिये चल दिये। गाँव सूना हो गया। वापस आनेवाली बाल-बच्चोवाली भेडोकी आवाजें अब सुनायी नही पडती थी और गाँव गूँगा हो गया था। झोपडियोसे धुआँ नही निकलता था, शालाके सामनेवाले मैदानमे सभा नही होती थी। लेंडियो और पेशाब-की उग्र गन्ध नही आती थी और गाँव निर्जीव हो गया। जो हिलता-बोलता था वह स्तब्ध और चुप हो गया। एक बार पानी नही बरसा, एक वर्ष बारिश न दिखी और गाँव सूना हो गया। वह रामा बनगर, वह शेकू, वह आनन्दा, बालट्या और बाला, सब चले गये। भले-बुरे सभी चल दिये। शाला जहाँकी तहाँ रही। व्यायामशाला वही रही। ये घर, ये पेड अपनी जगह खडे रहे और लोग चले गये।

साँय-साँय आँधी चलती रही। उस आँधीसे उडकर आनेवाली धूल घरोके दरवाजोपर, दीवालोपर दस्तके देती रही, जम गयी। गडरियोके स्वच्छ लिपे-पुते आँगन धूलसे भर गये। छप्परपर छायी हुई घास हवासे बिखर गयी, छूट गयी और सब-कही फैल गयी। मकानोके बडे-बडे छेदोमे घुसकर हवा अजीब-सी आवाज करने लगी। छप्परपर रख दिये गये औजारोके आँगनमे गिरनेकी आवाज सुनायी पडने लगी। घरके बन्द किवाडोपर हवा धक्के देने लगी। किवाड खडखडाने लगे। व्यायामशाला भी धूलसे भर गयी। हौदेकी लाल मिट्टीपर धूलकी तह जम गयी। मकडियोने जगह-जगहपर अपने जाले बना लिये। अखाडेके ढोलका चमडा चूहोने कुतर डाला। कई दिनोसे न लीपनेके कारण शालाका फर्श जगह-जगहपर खुद गया और पपडियाँ पड गयी। अलमारी, मेज और सन्दूकपर भी धूलकी तहे जमी। हनुमान्‌जीके मन्दिरमे धूल भरी। हनुमान्‌जीका सिन्दूरी-तन धूलकी बौछारोसे मटमैला दिखने लगा।

गाँवमे कोई नजर नही आता था। बहुत दिनोतक रोज शामको आकर नीमकी चोटीपर बैठनेवाले बगुलोने अब आना छोड़ दिया। शाला-

मे रोज़ शोर मचानेवाली चिडियाँ अब कही भी दिखायी नही देती थी। बिल्लियाँ इधर-उधर घूमने लगी। रातको एक दूसरेपर गुरगुराकर वे आपसमे लडने लगी और बन्द घरोके भीतर चूहोका शिकार करने लगी।

रातको काकुबा गडरियाकी भेडे अकेली होनेके कारण बें-बें करके चिल्लाने लगी और ढीठ हुआ भेडिया सूँघता हुआ गाँवमे घूमने लगा। व्यायामशालाकी धूलपर, मन्दिरके भीतरकी धूलपर, गडरियोके आँगनकी धूलपर उसके पैरकी छाप दिखायी पडती।

सुबह सिर्फ उन्ही दो भेडोको ही लेकर, बूढा काकुबा जगलमे जाता। भूखी भेडें खेतमे इधर-उधर दौडती। नाक ऊपर करके गर्म हवा सूँघती। जगलमे उनसे खाने लायक अब कुछ नही बचा था। झुण्डसे अलग हो जानेके कारण वे बहुत हो हल्के स्वरमे चिल्लाती थी। फिर काकुबा उनसे बाते करता। जुते हुए खेतोमे दूबकी जडे खुदकर ऊपर आ गयी थी। उन जडोको बीनकर, काकुबा अपने साथ घर लाता और भेडोको खिलाता। इस तरह जडे बीनता हुआ वह दिन-भर मारा-मारा फिरता। भेडे चिल्लाती हुई उसके पीछे-पीछे घूमा करती। शाम होते ही उन दो भेडोको हाँकता हुआ बूढा गाँवमे आता।

रामाकी घरवाली भी जो बूढेकी देखभालके लिए गाँवमे छोड दी गयी थी, तडके उठ जाती। सिरपर एक खाली टोकनी ले लेती। कमरमे एक खुरपी खोसकर बाहर निकल जाती। दूसरे गाँवके खेतोकी धूल फाँकती। सात-सात, आठ-आठ मीलकी पाँवपिटाई करके वह वापस आती। तब उसकी टोकनीमे दो-चार गाजरे नज़र आती। जलानेके लिए पतली-पतली लकडियोका एक गट्ठा रहता। भेड़ोको खानेके लिए थोड़ा भूसा रहता। माँग-मूँगकर इकट्ठी की हुई इस कमाईको लेकर, वह शामको वापस गाँवमे आती और फिर घड़ी-भरके लिए उसकी झोपड़ीमे चूल्हा जलता। लाल ज्वाला नजर आती और छतके ऊपर काला धुआँ उठता हुआ दिखायी देता। कभी-कभी उसकी बातें भी सुनायी पडती।

मैं बीच-बीचमे अपने गाँव चल दिया करता था। बनगरवाडीमे जो हो रहा था उसकी खबरें सरकारको दे रहा था। मै सप्ताहमे एक-दो दिन ही बनगरवाडीमे रहता था। दिन-भर मै और आयबू गाँवमे रहा करते थे। घुटने खडे करके उसके आस-पास हाथोको लपेटे आयबू कही भी जाकर बैठा रहता। यदि कभी उसके दिलमे आ जाता तो झाड़ू लेकर शाला और व्यायामशाला साफ कर देता। मै दिन-भर प्राय सोता रहता। कभी-कभी लिखता या पढता बैठा रहता। कभी-कभी आयबू मुझसे बिना पूछे ही जाने कहाँ गायब हो जाता। धूल-भरे पैर लिये थका-माँदा शामको लौटकर आता। फिर गरदन झुकाये बैठा रहता। यदि मै पूछता कि कहाँ गया था तो सिर्फ इतना कहकर ही कि यूँ ही ज़रा टहलने गया था, वह चुप हो जाता।

दिन तो किसी तरह कट जाता। लेकिन रात खानेको दौडती। रातमे कभी-कभी काकुबा आ जाता और दीवालसे पीठ टिकाये बैठा रहता। कमरेमे बत्तीकी मद्धिम रोशनी फैली रहती। मै अपने विचारोमे खोया हुआ, आयबू अपनी चिन्तामे डूबा हुआ और काकुबा यूँ ही इधर-उधर देखता हुआ बैठा रहता। तीनो तीन तरफ अलग-अलग।

मै पूछता, "काकुबा, रामाकी कोई खबर आयी क्या ?"

"नही जी, मास्टर !"

"जो लोग चले गये है, वे अब कब लौटेंगे ?"

"पानी बरसेगा तब।"

यदि कभी कोई बाते होती भी तो इसी रूपकी हुआ करती थी। नही तो बूढा घण्टो चुपचाप बैठा रहता और उठकर चला जाता।

घरसे मै जो रोटियाँ लाया करता, उनमे-की दो-तीन दिनकी बासी रोटियाँ जब मै आयबूको देने लगता, तो कभी तो वह उन्हे ले लेता और कभी लेनेसे इनकार कर देता। अगर मै बहुत आग्रह करता तो बाहर चल देता। मै अकेला ही बैठा हुआ उन रोटियोको खाता और पानी पीकर सो जाता।

इस तरह कुछ दिन बीत गये और एक दिन मुझे सरकारी हुक्म मिला। लिखा था—बनगरवाडीकी शाला बन्द करो और तहसीलके सदर मुकामकी प्राथमिक शालामें फौरन हाजिर हो।

आयबूने मेरा सामान इकट्ठा करके ठीकसे बाँध दिया। जिस कमरेमें रहता था उसे मैंने खाली कर दिया। शालाको ताला लगा दिया। फिर खड़े-खड़े काकुबाके घर गया।

"बाबा, मैं जाता हूँ। सरकारने मुझे वापस बुलाया है।"

काकुबाने टकटकी लगाकर मेरी ओर देखा। गरदन हिलायी—दो-तीन बार हिलायी और वह बोला, "ठीक है।"

बूढ़ा अधिक न बोला। उसकी बहू कुछ भी न बोली। नये आदमीको देखकर भेड़ें दो-तीन बार चिल्लायीं और काकुबासे बिदा लेकर मैं बाहर निकला।

आदमी या जानवर कहीं कोई न दिख रहा था और गाँवकी ओर पीठ फेरकर हम गाडीके रास्तेसे वापस जा रहे थे। मेरा सामानसे भरा हुआ बोरा आयबूने अपने सिरपर रख लिया था और वह मेरे पीछे-पीछे आ रहा था। कुछ सामान मैं भी अपने हाथमें लिये हुए था।

बीच हीमें आयबू रुका और सिरपर रखे बोरेको ठीक-ठाक करके मेरी ओर बिना देखे ही बोला, "यह सामान तुम्हारे घर पहुँचाकर फिर मैं वापस चला आऊँगा।"

कहाँ जायेगा, क्या करेगा, यह मैंने कुछ भी न पूछा। यह विचार भी मेरे मनमें न आया कि इस लड़केको अब कहाँ सहारा मिलेगा। मेरी परछाईं आगे-आगे सरक रही थी। धूल उड़ रही थी और सामने दूर तक फैले हुए केवल सपाट मैदान! परिन्दा भी पर मारता हुआ नहीं दिखायी दे रहा था। उदासीमें डूबी हुई वीरान बनगरवाड़ी पीछे छूट गयी थी और मैं वापस जा रहा था।

कहानियाँ

साइकिल

महीनेकी तनख्वाहके एक सौ पचास रुपये लेकर भार्गव मास्टर स्कूलके आहातेसे बाहर निकले तो उन्होने सोचा कि इस महीने राजके लिए साइकिल खरीद ले। लेकिन साइकिलके लिए तो कम-से-कम दो सौ रुपये गिनने पडेंगे। पुरानी साइकिल लेनेपर भी सौ-सवा सौसे कम क्या लगेगा, एक मुश्त इतनी रकम खर्च करना, डेढ सौ रुपये पानेवाले और पाँच व्यक्तियोके परिवारका खर्च चलानेवाले मास्टरके लिए आसान काम नही था। लेकिन करे भी तो क्या ? अपने इकलौते लडकेकी इतने दिनोकी एक चाह भी वह आज तक पूरी न कर सके। और यह सिर्फ उसकी चाह ही नही, एक बडी आवश्यकता भी है। सिर्फ शौकके लिए इतना खर्च करनेके लिए व्यवहार-कुशल भार्गव मास्टर कदापि तैयार न होते। लेकिन अँगरेजी छठी कक्षामे पढनेवाले राजके लिए साइकिल एक नितान्त आवश्यकताकी वस्तु थी। बम्बई-पूना रोडसे डकन-जिमखाना, भावे स्कूल तक लगभग तीन मील उसे रोज पैदल आना-जाना पडता था। यह सच है कि बहुत दिनो तक भार्गव मास्टर भी उतनी दूर पैदल ही चलकर पढाने जाते-आते थे। लेकिन जब उनकी उम्र बढ गयी और रक्त-चापके विकार-की आशका होने लगी, तब वह मजबूर होकर बसके लिए पैसे खर्च करने लगे। इतनी दूर पैदल जाने-आनेकी राजने भी कभी कोई शिकायत नही की थी। लेकिन समयपर घरसे निकलना और ठीक समयपर इतनी दूर पैदल चलकर स्कूल पहुँचना बेचारे राजके लिए अकसर कठिन हो जाता था। खाना बनानेमे माँको कही देर हो गयी तो राज परेशान हो जाता। रसोईसे बाहरके कमरेमे लगी घडी तक वह चक्कर काटने लगता। उसकी माँ जल्दी-जल्दी खाना परसती और कभी-कभी तो सिर्फ चावल और

अचारसे ही सन्तोष करके राजको स्कूल चला जाना पडता था। तब भी उसके मुँहसे शिकायतका एक शब्द नही निकलता था। अपनी उम्रकी अपेक्षा वह कही अधिक समझदार लडका था। एक-दो बार बात-बातमे उसने चर्चा की थी कि उसके लिए एक साइकिल ले दी जाय। इसपर उसकी माँने कहा था, "बेटा, तुम्हारे पिता कोई रईस जमीदार तो है नही। ट्यूशन करके चार भले आदमियोकी सहायतासे उन्होने अपनी पढायी पूरी की। फिर यह नौकरी मिली। कुछ रुपया-पैसा हाथमे आने लगा। लेकिन अब भी, आज तक अपने कपडोमे इस्त्री करनेके लिए उन्होने दो आने कभी खर्च किये हो, मुझे याद नही। अब तुम नासमझ नही रहे। अपने घरकी हालतपर कुछ तो तुम्हे सोच-विचार करना चाहिए। पैदल चलनेसे तुम्हारे पैर तो नही घिस जायेगे।"

और इसके बाद राजने दुबारा कभी भूलकर भी साइकिलका जिक्र तक नही किया। लेकिन मास्टर साहबको ही रह-रहकर लगता था कि किसी-न-किसी तरह दूसरे खर्चोमे बचत कर, लडकेको साइकिल ले देनी चाहिए। बम्बई-पूना रोडपर एक बडे बँगलेके आउट हाउसमे रहनेवाले भार्गव मास्टर शाम-सवेरे नौकरीपर खडकी जानेवाले और वहाँसे वापस आनेवाले कर्मचारियोकी झुण्ड-की-झुण्ड साइकिले देखते थे। उनके कलेजेमे इस खयालसे एक टीस-सी उठती कि अपने इकलौते लडकेके लिए, वह एक साइकिल भी नही खरीद सकते! रोज इस रास्तेसे हजारो साइकिलवाले गुजरते है। अलग-अलग मॉडेलकी, अलग-अलग मेककी, नयी, पुरानी, कितनी ही साइकिले रोज इस रास्ते हजारोकी सख्यामे दौडती है, उनके घरके सामनेसे होकर गुजरती है। दूध देनेवाला ग्वाला रोज साइकिलपर बैठकर आता है। फटे-पुराने कपडे पहने रद्दी कागज, शीशियाँ आदि खरीदनेवाले भी साइकिलपर ही बैठकर आते है। इस बँगलेके पाखाने साफ करनेवाले उस नाटे-से मेहतरके पास भी एक नयी, चमकीली रेसिग साइकिल है।' लेकिन रोज तीन मील दूर स्कूल जानेवाले उनके लडकेके पास एक सेकेण्ड हैण्ड

भी साइकिल नही ! भार्गव मास्टरका कलेजा कटने लगता, मन चचल हो उठता और वह यूँ ही बात बनाते हुए लडकेसे कहते, "क्या पढ रहे हो, राज भैया ? सस्कृत ? गुड ! इस वर्ष सस्कृतमे अस्सी परसेण्ट मार्क लाओ, तो इनाममे तुम्हे एक नयी साइकिल ज़रूर ले देगे ।"

राज सस्कृतमे सच ही अस्सी प्रतिशत मार्क ले आया। लेकिन पिताके सामने भूलकर भी साइकिलकी चर्चा उसने न की। मास्टर साहब भी उस बातको ऐसे गोल कर गये जैसे कभी कोई बात ही न हुई हो। यह बात नही थी कि उन्हे अपनी बात याद नही थी। याद जरूर थी, पर वह भी क्या करते, और किस मुँहसे कहते ? मजबूर होकर वह चुप ही रहते। लेकिन यह चुप रहना भी उनके लिए कभी-कभी असह्य हो जाता। महीने-भर बाद वह फिर कहते, "राज भैया ! हमे अपना वादा याद है। लेकिन हमे एक सालकी और मोहलत चाहिए। मय सूदके हम तुम्हारा कर्ज़ अदा कर देगे।"

राज जब अँगरेजीकी तीसरी कक्षामे पढता था, तबसे मास्टर साहब यह वादा करते चले आ रहे थे। लेकिन अब तक तीन सालमे भी लडकेका कर्ज वह अदा कर न पाये थे।

घर आते हुए मास्टर साहबके पैर साइकिलकी एक दूकानके सामने ठिठक गये। दोनो ओरसे तेज़ीसे आने-जानेवाली साइकिलोसे अपनेको बचाते हुए, उनकी घण्टियोकी टुनटुनाहटका शोर सुनते हुए वह साइकिलकी दूकान-के सामने आ पहुँचे और अपनी चाल कुछ धीमी कर उन्होने अन्दर नज़र दौडाकर देखा।

चमचमाती साइकिलोकी एक कतार सामने ही दिखायी दे रही थी। उनकी फ्रेमे पीले कागजोमे लिपटी हुई थी। भीतर नये टायर दीवालोपर लटकते दिखायी दे रहे थे। पीछेकी ओर लकडीकी आलमारियोमे घण्टियाँ, पैडल, चेन आदि दिखायी दे रहे थे। साइकिलो और साइकिलोके पुरज़ोसे दूकान खचाखच भरी हुई थी। मेजके पास बडी-बडी मूँछोवाला दूकानदार

बैठा था और उसकी बगलमे, तख्तीपर चिपके हुए पोस्टरपर स्वेटर पहने एक लडका तेजीसे साइकिल चला रहा था। उसके चेहरेपर मुसकराहट दमक रही थी और अपना दाहिना हाथ वह शानसे ऊपरकी ओर उठाये हुए था।

भार्गव मास्टर दूकानकी सीढियाँ चढकर भीतर गये और चमकनेवाली उन नयी साइकिलोकी ओर एक नज़र देखकर मालिकसे उन्होने पूछा, "क्या दाम है इनके ?"

मालिक तुरन्त अपने स्थानसे उठ खडा हुआ और कपडेसे साइकिलको साफ करते हुए बोला, "किस मेककी गाडी आपको चाहिए साहब ?"

कोटके भीतरवाली जिस जेबमे मनीबैग था, उस स्थानपर हाथ रखकर मास्टर साहबने कहा, "साधारणत ज़रा अच्छी गाडीके कितने रुपये लगेगे ?"

"यह 'रॉबिन हुड' लीजिए, साहब ! इसका दाम है दो सौ दस ! पम्प, बेल, चेन-कवर, सब मिलाकर कुल सवा दो सौमे आपको मिल जायेगी।"

सिर हिलाकर मास्टर साहबने कहा "ओह !"

"तो आप यह हिन्द लीजिए। सबसे सस्ती, मगर हिन्दुस्तानी है, साहब। रॉबिन हुड तो असली चीज है, हिन्दसे कही सुपीरिअर। आप-जैसोको तो अच्छी ही चीज लेनी चाहिए। कौन रोज़-रोज़ खरीदनी है।"

फिर मैले कपडे पहने एक लडकेसे उसने कहा, "लडके, यह गाडी निकालकर दिखाओ तो साहबको।"

मास्टर साहबके चेहरेपर खिसियानेपनका भाव नज़र आने लगा। कुछ घबराहटके अन्दाज़मे उन्होने कहा, "नही, नही, अभी रहने दो। मुझे आज तो गाडी खरीदनी नही है। यहाँसे जा रहा था, सोचा, दाम ही पूछ लूँ।"

"कोई बात नही। आज मत लीजिए। लेकिन देख तो लीजिए।"

"निकाल बे, गाडी ! साहबको दिखा।"

मास्टर साहबका चेहरा किसी अपराधीकी भाँति दिखायी देने लगा, "नही, साहब, इस वक्त रहने दीजिए। वैसे ही मुझे गाडी दिखायी दे रही है। बहुत बढिया है। फिर कभी मै आऊँगा अपने लडकेको साथ लेकर! थैक्स!"

और वह तेज़ीसे दूकानकी सीढियाँ उतरने लगे, तो दूकानदार उनके निकट आया और बोला, "सेकण्ड हैण्ड गाडी भी है, साहब, हमारे यहाँ! बिलकुल कम दाममे आपको मिल जायेगी। आप फिर कभी जरूर आइए लडकेको लेकर! लेकिन इस वक्त वह गाड़ी एक नजर देख तो लीजिए। देखनेके दाम नही लगते, साहब!" और वह जोरसे हँस पडा।

और तब भार्गव मास्टरको मजबूर होकर रुकना ही पडा।

बादमे लडकेने एक नाटी-सी साइकिल लाकर उन्हे दिखायी।

"ज्यादा दिनकी इस्तेमाल की हुई नही है, साहब! बिलकुल नयी गाड़ी है। बेल है, चेन-कवर है, और कोई भी पुरजा बदलनेकी ज़रूरत नही है।" यह कहते हुए लडकेने ज़ोरसे साइकिलकी घण्टी बजायी और पिछला चक्का ऊपर उठाकर पायडिल मारा, चक्का जोरसे नाचने लगा और उसकी तीलियाँ चमक उठी।

मास्टरने कहा, "वाकई, गाडी तो बहुत बढिया है!"

मालिक कुछ आगे बढा और कपडेसे सीटको पोछकर उसने कहा, "ले जाइए, साहब, सस्ते दामो दे दूँगा। सिर्फ साठ रुपये।"

"साठ!"

यह रकम मास्टरके लिए वैसे कोई ज्यादा न थी। कुछ आगे बढकर, हैण्डिलको छूकर उन्होने कहा, "मेरे खयालसे भी ज्यादा दिन इस्तेमाल नही की गयी है।"

"बिलकुल नही, साहब! एकदम नयी गाडी है। दस-पन्द्रह साल आप बेखटके इसपर चढिए। आप तमाम पूना छान मारिए, कसम खाकर कहता हूँ, इतने कम दाममे ऐसी चीज़ आपको कही नही मिलेगी!"

मास्टरने सोचा, साठ रुपये दे दे और साइकिल ले चले। दिलने तो फैसला कर लिया, लेकिन जबानसे शब्द निकल नही रहा था। वह यो ही उस नाटी-सी साइकिलकी ओर देखते रहे। साइकिलकी गोल घण्टीमे उनकी सूरत बडी ही भद्दी दिखायी दी। मास्टर साहबने जैसे बिचककर मनमे ही कहा, साठ रुपयेमे तो बिलकुल सस्ती है।

मालिक भाँप गया। उसे विश्वास हो गया कि दो-चार चिकनी-चुपडी बातोके बाद यह ग्राहक खाली हाथो नही लौटेगा।

"साहब! कल सवेरे ही तो यह गाडी मेरी दूकानमे आयी है। और ज्यादे-से-ज्यादा कल सवेरे तक कोई ग्राहक इसे जरूर खरीद लेगा, क्योंकि इतनी बढिया चीज साठ रुपयेमे क्या, बिलकुल मुफ्त ही मिल रही है। आप ही सोचिए ··"

आहिस्तेसे मास्टरने कहा, "खैर भाई, दे ही दो।"

मालिकने रसीद बनायी। मास्टरने रुपये गिनकर दे दिये। रुपये रखते हुए मालिकने सलाम किया। लडकेने गाडी दूकानके बाहर निकाली। मास्टरने सडकपर आकर अपनी धोती ठीकसे खोसी और टाँग उठाकर बस झटसे साइकिलपर सवार हो गये।

जोर-जोरसे घण्टी बजाते हुए भार्गव मास्टर महाराज रोडसे साइकिल दौडाये चले जा रहे थे। अपनी उम्र, पेशा, रक्तचाप आदि तमाम बाते जैसे वह भूल गये हो। वह दुबारा जैसे लडके बन गये थे। सहसा उनमे नयी ताकत, नयी उमंग-सी आ गयी थी। आगे-पीछेसे तेजीके साथ दौडनेवाली सैकडो साइकिलोके बीच उनकी भी साइकिल दौड रही थी। अनगिनत घण्टियोकी टुनटुनाहटमे उनकी साइकिलकी घण्टी भी अपना स्वर मिलाये जा रही थी। सभाजी पार्क, मॉडर्न हाई-स्कूल, आब्जरवेटरीके सामनेवाला मोड, एग्रिकल्चर कॉलिजका नुक्कड, रेलवे फाटक और बम्बई-पूना रोड

साइकिल घुमाकर मास्टरने बँगलेके आहातेमे प्रवेश किया। अपने आउट हाउसके निकट पहुँचते ही साइकिलसे नीचे उतरकर उन्होने जोरसे घण्टी

बजायी। राज दौडकर बाहर आया और पिताजीके हाथमे साइकिल देखकर वह हैरान रह गया।

जोर-जोरसे साँस छोडते हुए और धोतीके छोरसे माथेका पसीना पोछते हुए मास्टरने कहा, "यह लो! तुम्हारे लिए साइकिल!"

"क्या इसे आपने खरीद लिया?"

मास्टरने मुसकराते चेहरेसे सिर्फ 'हाँ' मे सिर हिलाया और सिरसे टोपी उतारकर, उसे हाथमे लिये ही वह भीतर गये। और बिना कोट उतारे ही आरामकुरसीपर लेट गये और टोपीसे हवा करने लगे।

उनकी श्रीमतीजी रसोई-घरसे बाहरके कमरेमे आयी, तो बँगलेके फाटकपर-से साइकिलपर बैठा राज और सीट पकडकर उसके पीछे दौडती सुधा और मनु उन्हे दिखायी दिये। हैरान-सी होकर वह मास्टर साहबकी ओर देखने लगी।

धोतीके छोरसे मास्टर साहब अपना मुँह पोछ रहे थे। उनके चेहरेपर एक दीप्ति-सी झलक रही थी। लेकिन जोरोसे साँस चलनेके कारण कुछ देर तो उनसे कुछ कहते ही नही बना। अन्तमे कुरसीपर लेटे-लेटे ही उन्होने कहा "राजके लिए साइकिल ले ही आया। सालोसे लडका आस लगाये बैठा था।"

प्रसन्न चित्त मास्टर साहबने पाँचवी कक्षामे प्रवेश किया। लडकोका शोर-गुल सहसा बन्द हुआ। मेजके नजदीक कुरसीपर बैठकर भार्गव मास्टर हाजिरी लेने लगे। जल्दी-जल्दी एक-एक लडकेका नाम वह ले रहे थे। कृष्ण वर्मा नामपर पहुँचे, तो मास्टर साहब एक क्षणके लिए रुक गये। कभी भी गैरहाजिर न रहनेवाला यह सबसे तेज लडका आज लगातार चार रोज़से स्कूल नही आ रहा है, इस बातका सहसा उन्हे स्मरण हो आया। उन्होने सामने देखा, तो कृष्ण वर्माकी बगलमे बैठनेवाला, फूले-फूले गालो-वाला मनोहर गुप्त गम्भीर मुद्रासे उनकी ही ओर देख रहा था। एक ही बेचपर ये दोनो लडके हमेशा बैठते है। शायद कृष्णकी गैरहाज़िरीकी वजह

इसे मालूम हो, मास्टर साहबने कहा "मनोहर !"

माथेपर आयी लटोको पीछे हटाते हुए, बड़ी-बड़ी आँखोवाला मनोहर उठकर खड़ा हो गया "यस् सर।"

"क्या तुम्हारा दोस्त कही बाहर गया है ?"

मनोहरने कुछ नही कहा। बस नीचे सिर झुकाये चुप-चाप खडा रहा। भार्गव मास्टरने सोचा, गिलहरी-जैसे चपल और चचल इस लड़केने, उनकी बात शायद ठीकसे सुनी भी नहो। उसका दिमाग तो कही और ही उलझा होगा। अपनी आवाजको कुछ तेज करके उन्होने दुबारा इसी प्रश्न-को दुहराया "क्या कृष्ण वर्मा कही बाहर गया है ? लगातार चार रोजसे वह स्कूलमें हाजिर नही है।"

मनोहरने एक नजर उठाकर देखा और कहा "नही, सर। वह बाहर नही गया है।"

यह भाँपते मास्टर साहबको देर न लगी कि उसके मुँहसे अटक-अटक-कर निकले इस वाक्यका अर्थ कुछ और ही है। उनके प्रश्नका उत्तर इस लडकेने अपने हमेशाके स्वरमे नही दिया है। उसकी आवाजमे कुछ उदासी है, यह भी उन्होने अनुभव किया। तब अपनी कुरसीसे उठकर वह मनोहरके बेचके निकट गये। मनोहरका चेहरा फीका पड गया था।

"कृष्ण कही बाहर नही गया' तब वह चार रोजसे स्कूल क्यो नही आ रहा है ?"

कुछ व्यथित स्वरमे मनोहरने कहा, "सर, वह मर गया।"

एक क्षणके लिए मास्टर साहबका हृदय जैसे बन्द हो गया। दुबला-पतला, लम्बा-सा, हमेशा साफ-सुथरे और सलीकेसे कपडे पहननेवाला, कोमल, कक्षाका सबसे तेज वह लडका कृष्ण क्या मर गया ? चार दिन पहले वह यही, इसी बेचपर तो बैठा था। नयी कोपल, नयी पौधकी तरह होनहार वह लडका ! क्या वह सच ही मर गया ? कितना कुशाग्र बुद्धि, कैसा अभिमानी स्वभावका था वह लडका ! आह !!

भर्राये स्वरसे मास्टर साहबने पूछा, "उसे हो क्या गया था ? बीमार तो नही था ?"

"नही, सर, मुझे भी आज ही पता चला। वह दुर्घटनामे मर गया।"

"अँ ? दुर्घटना ?"

"हाँ, सर। स्कूलसे अपने घर, लडकी जाते समय सामने रिक्शा देखकर उसने अचानक साइकिलके दोनो ब्रेक एक साथ ही दबा दिये और धड़ामसे गिर पडा। उसके सिरमे घातक चोट आयी थी। उसे अस्पताल ले गये, लेकिन कोई लाभ नही हुआ, सर।"

"साइकिलसे गिर पड़ा ?"

"हाँ, सर। वह बहुत तेज़ साइकिल चलाता था, बहुत तेज़, सर। वह तो दुर्घटना वगैरहसे डरता ही नही था, सर।"

सहसा मास्टर साहबकी आँखोके सामने अपनी खरीदी हुई साइकिलके हैण्डिलपर लिखा नाम दिखायी देने लगा, कृष्ण वर्मा, सदाशिव पेठ, पूना। और उसी क्षण, उनका मन पहाड-जैसे किसी बोझके नीचे दब गया। छुटकारा पानेके लिए बन्दी जानवरकी तरह बोझके नीचे उनके प्राण छटपटाने लगे।

लडके एक दूसरेके कानमे फुसफुसाने लगे, पूरी कक्षामे एक हलचल-सी मच गयी। आतक और भयके कारण कक्षाके बालकोके चेहरे इस तरह कुम्हला गये, जैसे सहसा लूकी लपटोके कारण हरियाली मुरझा गयी हो। जैसे-तैसे घण्टा खत्म कर मास्टर साहब अध्यापकोके कमरेमे आ गये और सहसा दरीपर बैठ गये। उन्होने आवाज देकर चपरासीको बुलाया और कहा, "सुनो, पीनेके लिए ज़रा पानी ले आओ और राजकी कक्षामे जाकर कहो कि मै उसे बुला रहा हूँ।"

पानी देकर चपरासी चला गया। गीले होठोपर जबान फेरते हुए मास्टर बार-बार याद करने लगे। साइकिलके चमकते हैण्डिलपर जो नाम उन्होने दूकानमे पढा था, क्या वह कृष्ण वर्माका ही था, या उन्हे केवल

इसका आभास हो रहा है ? वह इस तरह दु खी और आतंकित क्यो हो गये है ? कृष्ण वर्माकी मृत्युका समाचार सुनकर ही उनकी यह हालत हुई हैं, या किसी आनेवाले अमगलकी आशका भी इसमे सम्मिलित है ? इस मिट्टीके तनका क्या ठिकाना ? आज है कल नही ! जिसने जन्म लिया है, वह किसी-न-किसी दिन अवश्य चल बसेगा। लेकिन इस मासूम लडकेकी यह मौत बडी दर्दनाक है।

तभी खाकी हाफपैण्ट और सफेद शर्ट पहने राज वहाँ आ पहुँचा। मुसकराकर उसने पूछा, "मुझे आपने बुलाया है, पिताजी ?"

अपनी घबराहट और चेहरेपरकी परेशानीको छिपानेकी चेष्टा करते हुए मास्टरने कहा, "कहो, कैसी है तुम्हारी साइकिल ?"

"बहुत बढिया है ? हवाई जहाजकी रफ्तारसे दौडती है।

"अच्छा ! लेकिन तुम ठीकसे चला लेते हो न ?"

"हाँ, मुझे बहुत अच्छी प्रैक्टिस है।"

"वह तो मै जानता हूँ, लेकिन इतनी भीड़मे हैण्डिलपर तुम काबू रख लेते हो न ?"

"हाँ, हाँ, मै फर्राटेसे आज साइकिल निकाल लाया हूँ।"

"तब तो ठीक है। "और हाँ, साइकिलके हैण्डिलपर शायद किसीका नाम लिखा है। क्या तुम्हे वह नाम याद है ?"

"उसपर कृष्ण वर्माका नाम खुदा है। पहले मालिकका ही वह नाम है। लेकिन उसे मै रेतीसे घिसकर मिटा दूँगा।"

"अच्छा, तो तुम भागो अपने क्लासमे।"

पिताके दिलमे उठे बवण्डरको राज क्या जाने ? मास्टरके दिलपर-का बोझ तनिक भी कम न हुआ।

शाम हुई। स्कूलकी छुट्टी हुई। हलके कदमोसे मास्टर साइकिलकी दूकानपर पहुँचे। बडी-बडी मूँछोवाला मालिक दूकानमे नही था। मैले कपडे पहने वह लडका पचर देख रहा था। मास्टर साहबको आते देख

उसने कहा, "आइए।"

"कहो, भाई, मालिक कहाँ है ?"

"घर गये है। आते ही होंगे। बैठिए।"

मास्टरने सोचा कि वह साइकिल इस दूकानमे किसने बेची, उस साइकिलके पहले मालिकका नाम क्या है, इस लडकेसे पूछ ले। लेकिन उन्होने सोचा कि यह सब यह बेचारा लडका क्या जाने। बेचपर वह बैठ गये। पाँच मिनिट हो गये। सात मिनिट बीत गये। मालिक नही आया।

"पाँच मिनिटमे ज्यादा हो चुके, भाई।"

"आते ही होंगे। कहिए, आपको क्या चाहिए।"

"कल मै जो साइकिल ले गया, वह किसकी थी, इतना ही उनसे पूछना था।"

"यह तो मै नही जानता, साहब। एक मिनिट बैठिए। वह आते ही होंगे।"

दस-पन्द्रह मिनिट परेशान हुए मास्टर दूकानमें बैठे रहे। आखिर मालिकने आकर कहा, "कहिए, साहब, साइकिल पसन्द आयी आपके लडकेको ?"

"जी हाँ। लेकिन आपको जरा कष्ट देना चाहता हूँ। उस साइकिलके पहले मालिकका नाम आप बता सकते है ?"

क्षण-भरके लिए मालिक किसी सोचमे पड गया। फिर जल्दी-जल्दीमे उसने कहा, "मैने उससे रसीद ले ली है, साहब। सूरतसे भला आदमी ही जान पडता था वह। चोरीका माल बेचनेवालोको भाँप लेते हमे देर नही लगती।"

"नही, नही, मेरा यह मतलब नही। मैने कब कहा कि वह गाडी चोरीकी है। लेकिन अगर आपको एतराज न हो तो मै वह रसीद देखना चाहता हूँ।"

"नही, साहब, मुझे एतराज क्यो होने लगा! आप शौकसे रसीद

देख सकते है।"

मालिकने रसीद दिखायी। 'आनन्द वर्मा, सदाशिव पेठ, पूना–२'।

मालिकने कहा, "जिसने यह साइकिल हमारे यहाँ बेची, वह बहुत भला आदमी लगता था, साहब। पहले तो मेरे भी दिलमे कुछ खटका पैदा हुआ कि इतनी बढिया और नयी गाडी इतने कम दाममे कौन बेचेगा? लेकिन उसने कहा कि यह गाड़ी उसके लड़केको फली नही। जो कुछ भी कीमत मैं देना चाहूँ उतनेमे वह बेच देगा। मैने साइकिलकी असली रसीद देखी, फिर गाडी ख़रीदी। मेरे ख़यालसे तो इसमे झझटकी कोई बात नही है, साहब।"

जानेके लिए उठते हुए मास्टर साहबने कहा, "झझट तो कुछ नही है। मैं यो ही पूछना चाहता था। अच्छा, साहब, नमस्ते।' और वह घरकी ओर चल पडे।

लडकेको साइकिल देनेकी ख़ुशीपर पानी फिर गया और एक बेचैनी-सी मास्टर साहबके मनपर छा गयी। वह चचल हो उठे। अब उनके दिल-परका बोझ कही अधिक बढ गया था। अनगिनत आशकाओने उनके मस्तिष्कमे एक आँधी-सी उठा दी। ये अबोध लडके कितनी लापरवाहीसे भीड-भाड़वाली पूनाकी इन सड़कोपर साइकिल चलाते है! उन्हे क्या मालूम कि कही उन्हे कुछ हो गया, तो उनके माँ-बाप....उनका मन बार-बार उनसे कहने लगा कि राजको साइकिल दिलाकर उन्होने बहुत बडी गलती की है। वैसी भीडमे मोटर आदि सवारियोसे बचकर क्या राज कुशलतापूर्वक घर पहुँच गया होगा? असम्भव। उसे नयी साइकिल मिली है और आज पहला ही दिन है। किताबे बस्ता आदि कैरियरमे दबाकर वह पूनाकी सडकोपर चक्कर काट रहा होगा। शाम हो चुकी है। सडकोपर नर-नारियो, सवारियोका ताँता लगा हुआ है। भयानक भीडमे अपनेको बचानेकी कोशिश करता हुआ राज साइकिल दौडा रहा होगा। अब क्या है, उसे साइकिल मिल गयी है! वह इस तरह अन्धाधुन्ध गाडी दौडा

रहा होगा, मानो उसे पर लग गये हो। वह ज़रूर अभी घर न पहुँचा होगा। उसे नयी-नयी साइकिल मिली है। साइकिलपर बैठकर जी भरकर घूमने और दोस्तोको दिखाते फिरनेकी चाह वह आज ज़रूर पूरी करेगा और कौन जाने कृष्णकी तरह किसी दुर्घटना । जीवनमे कई बार इस तरहके अजीब संयोग दिखायी देते है। जिस आशंकाके कारण वह आतंकित है, कही वह सच न हो जाये! राजकी साइकिलसे कोई मोटर न टकरा जाये, कही…

मास्टरका दिल बुरी तरह छटपटाने लगा। अमंगलकी आशकाने कई बदरंग चित्र उनकी आँखोके सामने कर दिये। उनकी समझमे नही आ रहा था कि इकलौते, जवान बेटेकी मृत्यु हो जानेपर पिताके प्राण किस तरह छटपटाते होगे, उसके दिलपर क्या बीतती होगी! उन्होने सोचा राजके न रहनेपर मुश्किलसे एक हफ्ता वह जीवित रह सकेंगे, बस एक हफ्ता!

बँगलेके हातेसे होकर वह अपने मकानके निकट पहुँचे, तो उन्हे ऐसा आभास हुआ कि इस बँगलेमे अभी-अभी ज़रूर कोई अप्रिय घटना घटी है। हमेशा खुला रहनेवाला दरवाजा आज भीतरसे बन्द था। शरारत, खेल-कूदमे तमाम मोहल्ला सिरपर उठा लेनेवाली सुधा और मनु आज बँगलेके हातेमे दिखायी नही दे रही थी। दरवाज़ेके निकट ही कुछ क्षण मास्टर ठिठके रह गये। उन्होने महसूस किया कि उनके पैर जैसे काँप रहे है, वह अब गिर पडेगे। मुश्किलसे अपनेको सँभालते हुए, दरवाज़ेसे कान लगाकर वह भीतरकी आहट लेने लगे।

सूरज डूब चुका था। चारो ओरसे आकर अँधेरा धरतीपर घिर रहा था। वायु निश्चल थी और कहीसे कौवोका काँव-काँव सुनायी दे रहा था। भीतरसे कोई भी आवाज़ नही आ रही थी। तब आहिस्तेसे दरवाज़ा ठेलकर वह भीतर गये।

बिस्तरसे सटी सुधा और मनु बैठी थी। पुस्तकमे छिपाये अपने मुँह एक बार उन्होने कुछ ऊपर उठाया और पिताको देखते ही दुबारा पुस्तकोपर

गिरा दिया। मास्टरने देखा कि उनका मुँह रुआँसा है। राजकी माँ दीवार-से पीठ लगाये बैठी थी। पतिको देखते ही वह उठकर भीतर चली गयी।

मास्टरने टोपी उतारी और आरामकुरसीपर लेट गये। अपने दिलकी धडकन उन्हे साफ सुनायी दे रही थी। आखिर वहाँकी भीषण शान्ति उन्हे असह्य हो उठी, तो उन्होने कहा, "अरे, भाई, अँधेरा हो चुका। बत्ती तो जलाओ।"

चुपचाप सुधा उठी और उसने बटन दबाया।

लडकियाँ दुबारा चुपचाप बैठ गयी। राजकी माँ रसोई-घरमे जाकर किसी काममे लग गयी।

दुबारा मास्टरने ही पूछा, "राज अब तक नही आया ?"

मनुने आहिस्तेसे कहा, "नही।"

"नही आया ? शाम हो चुकी। अब तक वह घर नही लौटा ? और तुम लोग सब इस तरह चुपचाप उदास बैठी हो ? हो क्या गया है तुम लोगो को ?"

मास्टरकी समझमे नही आ रहा था कि अब उन्हे कौन-सा भयानक समाचार सुनना पडेगा। समाचारकी भयानकताकी आशका प्रतिपल बढती ही जा रही थी। उनका दिल बुरी तरह धडक रहा था। मन बैठा-सा जा रहा था।

बड़ी देरतक कोई जवाब न पा बडी मुश्किलसे काँपते स्वरमे उन्होने ही फिर पूछा, "तुम सब इस तरह चुपचाप क्यो हो ? तुम्हारी जबानको क्या हो गया है ? अरे भाई, कुछ बताओ भी तो, आखिर बात क्या है ?"

सुधा और मनुने एक नज़र एक-दूसरेके मुँहकी ओर देखा और बादमे वे दोनो दरवाज़ेकी ओर देखने लगी। दरवाजेकी ओटमे खडी होकर राजकी माँने आहिस्तेसे सहमे स्वरमे कहा, "राजने नयी साइकिल न जाने कहाँ खो दी।"

मास्टरके सीने-परका पहाड़-सा वह भयानक बोझ-जैसे सहसा किसीने

एक ओर उठाकर फेंक दिया। एक अजीब-सा हलकापन और प्रसन्नताका उन्होने अनुभव किया। स्वप्नमे अपने-आपको मृत देखकर, घबराहटके मारे आँख खुलनेपर अपनेको जीवित पा मनुष्यको जो खुशी होती है, वैसी ही खुशीका इस क्षण वह अनुभव कर रहे थे। बेहद परेशानी, चिन्ता और घबराहटके कारण उनका मुरझाया हुआ चेहरा सहसा खिल उठा। टूटी कुरसीपर वह लेटे हुए थे, अब उठकर खडे हो गये और प्रसन्न स्वरमे बोले, "साइकिल खो गयी ?.....खैर, कोई बात नही ! क्या इतनी-सी बात-पर तुम-सब इस तरह मुँह लटकाये बैठे हो ?

राजकी माँने हैरान होकर पतिकी ओर देखा। पिताजी जरा भी नाराज नही हुए, इसपर दोनो लडकियाँ विस्मित हुई।

कई जगह तलाश करनेके बाद, पुलिसथानेमे रिपोर्ट देकर मुरझाया चेहरा लिये राज लौटा, तो सहमते हुए उसने घरमे कदम रखा और चुप-चाप एक कोनेमे जाकर हत्यारेकी तरह खडा हो गया। ऊपर नजर उठा-कर पिताजीकी ओर देखनेकी उसमे हिम्मत नही थी।

उसे देखते ही प्रसन्न स्वरमे मास्टरने कहा, "तुम्हारी साइकिल खो गयी, राज ?' खैर, कोई बात नही। उसके लिए तुम इस तरह दुःखी मत होओ। मै तुम्हे दूसरी गाडी ले दूँगा। "

पिताजीके इन शब्दोको सुनकर राज सहसा सिसक पडा। उसके नन्हे दिलके लिए यह कोई साधारण अपराध और नुकसान न था।

मास्टर उसके निकट आ, उसे अपने कलेजेसे लगाकर और उसकी पीठ सहलाते हुए स्नेह-सिक्त स्वरमे बोले, "अरे, रोनेकी कौन-सी बात है, पगले ! साठ रुपल्लीकी ही तो बात है अगली तनख्वाह मिलते ही हम तुम्हे फिर गाडी ले देगे।"

लेकिन राज सब जानता था। वह बडी देर तक सिसकता रहा।

इन्तिहा

मै सर्विस-बससे नीचे उतरा और गाँवमे गया। चमारपुरा खोजनेमे देर न लगी। लेकिन ठीक रामाका घर मिल जाये इसलिए किसीसे पूछनेकी जरूरत थी। लडकोसे पूछनेमे कोई फायदा न था। इसलिए गाँवके खण्डहरोको पार करता हुआ मै किसी ऐसे आदमीको देखने लगा जिससे रामाके घरका पता पूछूँ।

घास-फूससे छाये हुए एक खण्डहरके सामने, आस-पास फैले बहुत से जूतोके बीच, एक बूढा बैठा हुआ दिखायी दिया। नीचे देखता हुआ वह, एक फटे जूतेमे टाँके लगा रहा था। मै उसके नज़दीक जाकर खडा हो गया। लेकिन वह अपने काममे इतना खोया हुआ था कि उसे मेरे आनेका पता तक न चला।

"बाबा, रामा चमार कहाँ रहता है ?"

काम बन्दकर उसने ऊपर देखा। बाये हाथकी दो अँगुलियाँ होठोपर रख मुँह एक ओर फेरकर उसने पीक थूकी और आँखें ढाँककर ठुड्डीको झटका देकर वह बोला, "किसका घर कहा तुमने ?"

"रामा चमारका !"

"हाँ, पर कौन-सा रामा ? खण्डूका रामा या घोडी बुढियाका रामा ?"

हाँ, समूचे चमारपुरेमे अनेक रामा होनेकी सम्भावना थी। लेकिन मुझे तो रामाका 'रामा' ही नाम मालूम था। उससे कैसे पता चले ?

"बाबा, यह तो मै नही जानता कि वह किसका रामा है। लेकिन वह सरकारी सडकपर काम किया करता है !"

"हाँ, तो फिर ऐसा कहो न ? तुम कहाँसे—क्या शहरसे आये हो ?"

"हाँ !"

"सडकका काम देखनेवाले अफसर हो क्या ?"

"हाँ !"

"हाँ ! तो देखो। इस रास्तेसे सीधे चले जाओ। वह सहजनका पेड दिख रहा है। उसीके सामने है उसका घर।"

और सिर नीचा कर वह फिर अपना काम करने लगा। मैंने वह राह पकडी।

जब सहजनका पेड आया, तो मै उसके सामने खडा हो गया ! झोपडी-के बाहर पत्थरपर बैठी हुई एक काले रगकी औरत आटेसे सनी थाली धो रही थी और उसके कन्धोपर हाथ रखे पाँच-छह सालका एक लडका, जिसकी नाकमे नेटा भरा हुआ था, लाल रोटीके टुकडेको तोड-तोडकर खा रहा था। मुझे आते देखते ही उसने मुँहका कौर एकदम गिटक लिया और माँका आँचल खीचकर बोला, "ओ माँ, देख तो कौन आया है ?"

माँने मुडकर देखा। फटी धोतीका घूँघट उसने एकदम मुँहपर खीच लिया और स्पष्ट और कडी आवाज़मे पूछा, "क्या है जी ?"

"रामा कुली यही रहता है न ?"

"हाँ, यही रहता है। अभी मोटर देखने गया है। कोई अफसर आनेवाला है।"

"अरे वाह, मै उसके घर आ गया और वह मोटर देखने गया है।"

औरतने आँखे विस्फारित की। यह महसूस कर कि अफसर घरमे आया है वह असमंजसमे पड गयी। लड़केकी नगी पीठपर एक हलका-सा धप जमाकर, वह धीमी आवाज़मे उससे बोली, "जा रे ! जहाँ मोटर खडी होती है। मामासे कहना अफसर आ गये है।"

लडका शरमा गया और माँके पीछे दुबकता हुआ बोला, "जा मै नही जाता।"

लेकिन इसी समय साफेका सिरा खोसता हुआ बड़ी जल्दी-जल्दी रामा ही आ पहुँचा। माथेको हाथ लगाकर बोला, "महाराज !"

"राम-राम । तुम्ही हो रामा ?"

"हाँ जी, मै ही हूँ । मिस्तरीने कल ही बताया था कि आप आ रहे है । इसलिए आपको देखने मोटरपर गया था ।"

"तो फिर चल रहा है न ? दिन काफी बढ गया है ।"

"जी हाँ, चलिए न ? रोटी बाँध दे री । थोडा बैठिए न ?"

रामाकी झोपडी बहुत ही ठिगनी थी । मै झुककर भीतर गया और बाहरसे छप्परके एक खम्भेसे टिककर बैठ गया । रामा जल्दी-जल्दी न जाने फिर कहाँ चल दिया ।

भीतरके अँधेरेमे वह औरत कुछ करने लगी । लड़का बार-बार बाहर सिर निकालकर मेरी ओर देख रहा था ।

नीचेकी जमीन खुरदरी थी । कही गढे पड गये थे तो कही मुरमके बडे-बडे ककड निकल आये थे । बाहर नजदीक ही पानीका घडा गडा हुआ था । उसपर लकडीका एक ढक्कन था । थोडी दूरपर पेडोकी सूखी टहनियाँ और गन्नेके सूखे छूछनोका ढेर लगा था । जगलसे बीनकर इकट्ठा किये हुए गोबरके उपले भी थे ।

एक कोनेमे बकरी बँधी थी । उसकी एक-एक हड्डी दिख रही थी । उसके आगे बबूलकी एक टहनी पडी थी । जिसमे मुँह मारनेकी वह कोशिश कर रही थी और नाकसे आवाज कर रही थी । ।

रामा जिस तरह जल्दी-जल्दी गया था उसी तरह जल्दी-जल्दी लौट भी आया । अपनी बहनसे बोला, "अरी राधा जल्दी कर । कबसे बैठे है साहबजी । हम गरीबोके घर कौन आता है ?"

मेरी तरफ देखकर वह बोला, "बस, हो गया साहब ! अब रोटी लेकर चलता ही हूँ ।"

राधाने बडी तत्परतासे रोटियोकी गठरी अपने भाईके हाथमे दी । बोली, "मै कबसे रोटी बना चुकी हूँ । तुम्हारी तैयारीमें ही देर लग जाती है । लौटते समय छेरीके लिए पत्तियाँ लेते आना ।"

"हाँ, हाँ ! ले आऊँगा !"

भान्जेके पेटपर रामाने प्यारसे एक हलकी चपत जमायी। धूलसे भरे उसके मुँहको चूमा।

"हाँ, साहब ! चलिए अब चले। मेकटवाड़ी तक पैदल ही चले चलेंगे !"

दोनो गाँवके बाहर निकलकर सडकपर आये। मेरे हाथमे सामानका झोला था। रामाको यह ठीक न दिखा।

"उसमे कोई ऐसी चीज़ तो नही है जो मेरे छूने लायक़ न हो ?"

"क्यो ?"

"झोला मुझे दे दीजिए। मै लिये चलता हूँ। आखिर मेरे हाथ खाली ही तो है।"

"रोटियाँ है और रगके डिब्बे है !"

"हाँ, तो रोटियोकी गठरी अलग निकाल लीजिए और बाकी सामान मुझे दे दीजिए।

"रोटियोको निकालनेकी क्या जरूरत है ? मेरे लिए सब ठीक है। ले पकड़।"

रामाको यह बात बडी अपूर्व मालूम हुई। उसके चेहरेपर कुछ लज्जा-के भाव भी अंकित हो गये।

"मै रोटियोको कैसे छू लूँ साहब ?"

"मुझे कोई हर्ज़ नही है। मैं छुआछूत नही मानता।"

रामा थोड़ी देर खामोश रहा। फिर बोला, "तो दीजिए झोला, मै लिये चलता हूँ।"

दिखनेमे रामा मामूली आदमियोकी तरह न था। रूप देनेमें भगवान्‌ने उसपर कृपा न की थी। शरीरसे हट्टा-कट्टा था। रंग था पक्का काला। नाक बायी तरफ टेढ़ी हो गयी थी और एक आँख खराब थी। उसके

चेहरेकी चमक-दमककी ओर देखकर कोई भी यह सोचता कि दिलसे अच्छा यह मनुष्य रूपसे गया गुज़रा है। और उसे खाने-पीनेको भी ठीकसे नही मिल रहा है। उसने किसी रंगका एक गन्दा वस्त्र महज आदतसे लाचार होकर अपने सिरपर लपेट लिया था। कई जगह फटा हुआ एक कुरता वह पहने हुए था और उसकी धोती तो उसके लिए बिलकुल ही अधूरी थी। पिडलियोपर अँगुलीके बराबर मोटी नसे उभरी हुई दिख रही थी। एडियोमे बडी-बड़ी दरारें पड गयी थी। उसकी उम्र भी कोई अधिक नही मालूम होती थी। मेरे मनमे प्रश्न उठ रहे थे—क्या इसका ब्याह हो गया होगा ? यदि हो गया होता, तो उसकी झोपडीमे उसकी घरवाली दिखायी देती, दो-चार बच्चे नज़र आते। राधा तो उसकी बहन जान पडती है। राधाके माथेपर सौभाग्यका कुकुम भी नही दिख रहा था।

रामा नीचे निगाह किये हुए चल रहा था। कुछ समय बीता। और उसने कहा, "देखिए साहब, मीलका पत्थर आ गया।"

फर्लांग और मीलके पत्थरोपर नम्बर लिखने थे। नाम लिखने थे। रग और कूची लेकर मै पत्थरके सामने बैठा। रामा भी ज़मीनपर पडे ककड-पत्थरोको हटाकर नज़दीक ही बैठ गया। कामके साथ-साथ बाते भी शुरू हुई।

"हाँ, क्यो रामा, कैसा चल रहा है तुम्हारा ?"

"जी, ठीक ही कहना चाहिए।"

"बडी ठण्डी साँस लेकर कह रहे हो ? क्या कुछ दुःख है ?"

"सच पूछा जाये तो दु ख करनेसे क्या होता है ? जो भगवान् दे उसीपर रहना चाहिए।"

"सच कहते हो। लेकिन दु ख कभी छूटता नही। सच है न ?"

दो-चार शब्दोसे ही मै रामाके हृदय तक पहुँच गया। मेरी अफसरोसे डरनेवाले रामाका भी सकोच जाता रहा। वह मुझसे अपने सुख-दु ख कहने लगा।

"रामा, अपना पैतृक रोजगार छोडकर, तुमने सरकारी नौकरी क्यो कर ली ?"

"वह रोजगार आजकल चलता कहाँ है ? चमडा भी बहुत मँहगा हो गया है और नकद पैसे कौन देता है ? गाँवमे जो सालाना बँधा है, अगर उसपर ही रहूँ तो भूखो मरना पडेगा। उसी गाँवमे इतने चमार है कि हर-एकके हिस्सेमे मुश्किलसे दो-तीन घर पडते है। सिर्फ इतनेसे गुजर कैसे होगी ? पेट कैसे भर सकता है ?"

"हाँ, यह तो सच है।"

"तब सोचा कि सरकारी नौकरी कर लूँ। सडककी देख-रेखका काम अच्छा है।"

"यहाँ तनख्वाह क्या मिलती है तुम्हे ?"

इस प्रश्नपर रामा हँस पडा।

"क्यो गरीबसे मज़ाक कर रहे है, मालिक ? क्या आपको मेरी तनख्वाहका पता नही ? आप उसी दफ्तरमे अफसर है न ?"

"रामा, पागल हो तुम। अरे, मै काहेका अफसर ? मै भी तुम्हारे-जैसा ही हूँ। मील और फर्लागके पत्थरोपर नम्बर और नाम लिखनेका ठेका लिया है मैने। पेट भरनेके लिए कोई रोजगार तो चाहिए ?"

"कुछ भी हो, लेकिन हमारे लिए आप अफसर ही है। अगर आप नही जानते है, तो बताता हूँ। हर महीनेमे बारह रुपये मिलते है मुझे।"

"इतनेमे तुम्हारी ठीकसे गुज़र हो जाती है ?"

रामाने एक ओर मुँह फेरकर थोडी-सी सुरती अपनी दाढके नीचे दबायी और हाथ झटकाकर फिर कहने लगा, "गुजर क्या चलेगी इतनेमे ? जैसे-तैसे पेट भर रहा हूँ। ढोरकी ज़िन्दगी जी रहा हूँ। न पहनेको ठीकसे कपडे ले सकता हूँ और न कभी अच्छा खानेको मिलता है। हम गरीबोका यही हाल है। फिर भी यह तो अच्छा है कि मेरी औरत नही है। अकेला ही हूँ।"

"क्यो, क्या तुमने ब्याह नही किया ?"

मेरे इस प्रश्नने रामाके जख्मको हरा कर दिया। शायद वह बहने भी लगा। सिरसे साफा उतारकर उसने नीचे रखा और हाथमे एक ककड लेकर जमीनपर रेखाएँ खीचता हुआ बोला, "ब्याह तो किया था, दादा। लेकिन वह कुछ ठीक नही रहा।"

उसके स्वरसे मै उसके हृदयकी व्यथा महसूस कर रहा था। उसके चेहरेपर भी उदासी छा गयी थी। मुझे लगा, व्यर्थ ही मैने यह प्रश्न पूछा ? बात सँभालनेकी गरज़से मैने कहा, "वह तो बातामे बात निकल आयी इसलिए पूछ लिया रामा। वरना तुम कहोगे कि इन्हे क्या पड़ी है मेरी निजी बातोसे ?"

रामाने गरदन हिलायी और खेद व्यक्त करता हुआ वह बोला, "नही, नही ! आप ऐसी कोई बात न सोचे ? मै खामोश इसलिए रहा कि अपना दुखडा क्या रोऊँ ? बडी विचित्र कहानी है मेरी, दादा !"

"क्यो भला ? कहो क्या बात है ?"

"मेरा ब्याह हुए पाँच साल हो गये। लेकिन ब्याहके बाद पूरे छह महीने भी औरत मेरे पास न रही। जाने कहाँ भाग गयी और आज तक लापता है !"

"इसका मतलब ?"

"मेरा करम ही खोटा है। और क्या कहूँ ? वह सागलीके तरफकी थी। इतनी खूबसूरत थी कि दस औरतोमे भी अलग दीख पड़ती थी। मेरी झोपड़ीमे वह कैसे रहती ? मै ठहरा ऐसा बेढब और कुरूप आदमी। गृहस्थी भी ग़रीबीकी थी। रोजाना यह हाल था कि तेल है तो नमक नही और मिरच है तो दाल नही। न घरमे पहननेको अच्छे कपडे और न खानेको अच्छी चीज़े। यह सब उसे नही भाता था। वह सीधी तरहसे बात भी नही करती थी। जब देखो तब रूठी रहती थी। दादा, क्या मै इन बातोको नही समझता था ? लेकिन करता क्या ? ढोरकी तरह मर-मरकर

भी मजदूरी करता, तो आखिर कितना कमा लेता ?"

रामा कलेजा पकडकर कह रहा था। उसके हृदयके किवाड खुल चुके थे। मै भी द्रवीभूत होकर सुन रहा था।

"यदि उसे समझाने जाता तो कहती, 'चलो बम्बई चले। वहाँ मिल-मे मजदूरी करके खूब कमायी करो और मेरे शौक पूरे करो'। लेकिन अपना गाँव छोड़कर कही बाहर जानेकी मेरी इच्छा ही नही होती थी।"

एक पत्थरपर नाम और नम्बर लिखनेका काम पूरा हो चुका था। मै उठा। रगके डिब्बे आदि सामान लेकर रामा भी उठा और फिर चलते-चलते उसने अपना हाल कहा, "आप ही बताइए सच है न, कि अपना गाँव, अपना घर और अपने रिश्तेदारोको छोड़कर हम बाहर क्यो जाये ? इस तरह करते-करते एक दिन मेरी गैरहाजिरीमे वह घरसे भाग गयी। उसके बाद आज तक उसका कोई पता नही है।"

"तुमने क्या उसकी कोई खोज-खबर नही की ? गाँवके चार सयानोसे मनवाकर उसे वापस नही ले आये ?"

"मैने कुछ नही किया। जब वह मेरे पास रहना ही नही चाहती थी तो मै क्यो ज़बरदस्ती करता ? मैने सोचा चली गयी है तो चली जाने दो। कही भी रहे सुखसे रहे। इसीमे मुझे सन्तोष है।"

इस पुरानी स्मृतिसे रामा काफी दुःखी हो गया। मै भी फिर अधिक न बोला। सूरज काफी ऊपर चढ गया था। भूख और प्यास दोनो सताने लगी थी। बातचीतमे रास्ता तो कट गया था पर पैरोमे थकावट भर गयी थी।

"रामा देखो सामने बावली दिख रही है। चलो छायामे बैठकर खा ले। थोड़ी देर सुस्ताये और फिर काममे लगे।"

"हाँ जी आपको भूख लग आयी होगी, चलिए।"

नज़दीकके खेतमे एक बावली थी। हम लोग वहाँ गये। रामाने, ढोरो-

को पानीके लिए जो हौदी थी उसमे अपने हाथ-पैर धोये। मै बावलीके भीतर उतरकर अपना मुँह धो आया। खेतमे पानी देनेकी नालीके किनारे-वाले एक बरगदके सायेमे हम-दोनोने अपने-अपने पाथेय खोले।

रामाकी बहनने उसके लिए हथेली बराबर लाल-रगकी दो मोटी-मोटी रोटियाँ बनाकर दे दी थी। रोटियोके साथ लाल-लाल-सी थोडी चटनी भी रख दी थी।

मेरी माँने घीसे खूब चुपडकर चार-छह पतली-पतली चपातियाँ दे दी थी। उनके साथ साग था, नीबूका अचार था और लहसुनकी चटनी भी थी। जब मैने डिब्बा खोला तो उनकी सोधी महक वातावरणमे छा गयी।

मै अपने पाथेयसे थोडा-सा निकालकर रामाको देने लगा, तो वह 'नही नही' कहने लगा।

मैने कहा, "रामा, अन्नको लेनेसे इनकार नही करना चाहिए। ले लो।"

"यह बात नही है दादा। आप सिर्फ अपने अकेलेके लिए लाये है, चलकर थक जानेसे आप भूखे हो गये होगे। मेरे पास मेरी रोटियाँ है ही। तो फिर मुझे क्या जरूरत है?"

मैने जबरन उसे थोडा-सा परोस ही दिया।

हम दोनो खाने लगे।

रामाने बातकी-बातमे दोनो रोटियाँ चटनीके साथ खा डाली और मेरे-द्वारा दी गयी चपातियोको कपडेमे लपेटकर रख लिया। मैने कहा, "रामा, यह क्या किया? तुमने खाया नही? यह किसलिए रख लिया है?"

"थोडा खा तो लिया है दादा। यह थोडा बच्चेके लिए रख लिया है। हम लोगोको ऐसा कब नसीब होता है? बच्चा खा लेगा। अब तो मेरी सारी आशा राधाके लडकेपर ही है दादा। जब वह जवान होगा तब कही अच्छे दिन आयेगे। तबतक यही हालत रहेगी हमारी। वह कुछ पढ-लिख भी ले, इसलिए उसे शालामे भरती करनेका भी विचार है। जब बहनका घरवाला मरा तो वह मेरे गले पडकर रोने लगी और बोली

कि अब मेरा क्या होगा। तब मैंने कहा, "बाई, मेरे पास ही रहो। आखिर मेरा भी और कौन है अब—?"

रामाने नालीसे चुल्लू भरकर पानी पिया। डकार लेकर वह सुरती खाने बैठा। मै अभीतक खा ही रहा था। हथेलीपर रखी सुरतीको,अँगुलियोसे मलता हुआ रामा बोला, "दादा, मनमे एक बात आयी है इसलिए पूछता हूँ। आपकी उम्र क्या होगी ?"

"मै बीस सालका हो गया हूँ, रामा!"

"मै भी बीस और ऊपर आठ सालका हो गया हूँ। लेकिन आप तो बन गये अफसर और हम मज़दूर ही रहे। ज़िन्दगी-भर मज़दूर रहकर ही हम मर जायेगे। भगवान् कैसे चण्डाल हो तुम? ऐसा क्यो करते हो ?"

रामाको देनेके लिए भगवान्के पास कोई जवाब न था। मेरे पास भी न था। मै केवल सुन रहा था।

"आप कहेगे कि रामा तू पढा-लिखा नही है। कभी स्कूल नही गया। लेकिन दादा! यदि स्कूलमे पढने जाये तो पेट कैसे भरे? चार-पाँच सालके होते ही हमे ढोर चराना पडता है तब कही खानेको मिलता है। फिर हम स्कूल कैसे जाये ?"

मै खाना खा चुका। थोडी देर आराम करके फिर काम शुरू कर देना था। शाम तक जितना हो जाये, उतना करना था। सुबह शहरसे निकली हुई सर्विस शामको जब लौटेगी तो उसे हाथ दिखाकर रोकूँगा और अपने घर शहर वापस चल दूँगा। यही मेरा कार्यक्रम था।

"थोडी देर लेट जाइए दादा! धूप उतरते ही फिर आगे बढेगे।" कहकर रामा कुरता और साफा अपने सिरहाने रख नालीके किनारेकी हरियालीपर सो गया, खर्राटे भी भरने लगा।

पेड़के तनेसे पीठ टेककर मै बैठा रहा। सोचने लगा कि रामाका सवाल हल कर सकता हूँ क्या ?

धरती माता

अपने खेतके पास, बरगदके नीचे बूढे आप्पा बैठे हुए थे। घुटनोके गिर्द उन्होने बॉहे बाँध रखी थी। उनकी गरदन झुकी थी और आँखे बन्द।

आस-पास कही कोई आदमी न था। मवेशी भी न थे। जुते हुए खेत कडी धूप खा-खाकर बिलकुल काले पडे हुए वर्षाकी प्रतीक्षा कर रहे थे? ऐसे समय खेतोमे कौन आता। अभी वहाँ काम ही क्या था। पानी बरसेगा, पीकर जमीन फूलेगी और नरम होगी, तब बुवाई शुरू होगी। तबतक खेतोमे क्या काम। चरनेके लिए मवेशी भी यहाँ क्यो आते। गडरियोकी भेडे बारीकसे-बारीक घास भी चट कर गयी थी। फिर खेतोकी ओर कोई मवेशी क्यो मुँह करता। ऊपरसे ऐसी जलती हुई दुपहरिया थी। पखेरू भी धूप और गरमीसे घबड़ाकर झाडियोमे चुपचाप छिपे हुए बैठे थे।

ऐसे समय बूढे आप्पा बरगदकी छायामे गरदन लटकाये बैठे हुए थे। कमरमे गाढेकी मोटी धोती थी, बदनपर सलूका और सिरपर सफेद पगिया। उम्र सत्तरके पार।

यह बूढे आप्पा खेतमे इस समय क्यो आये थे? इस तरहकी चिल-चिलाती धूपमे अगर वह यहॉ न आते, तो उनका कौन-सा काम बिगड जाता? थके हुए शरीरको घरके भीतर विश्राम देनेके बदले वह पागलकी तरह अपने अंग समेटकर इस तरह मिट्टीमे क्यो बैठे थे? क्या उनके कोई जवान लडका नही, जो उनसे कहता कि क्या जरूरत है ऐसे वक्त खेत जानेकी, बैठो आराम करो। बुढापेमे इतनी तकलीफ खामखाहके लिए क्यो उठाते हो? क्या उनकी कोई सुघर बहू नही, जो ससुरजीके लिए दीवालसे सटाकर काली कमलीपर धोती बिछाकर, सिर झुकाकर यह कहती कि दादाजी, बाहर तो बड़ी तेज धूप पड़ रही है ...आप ..

क्या इस बुढ़ापेमे इनके बहू-बेटोको इनकी कोई चिन्ता नही ? क्या वे इन्हे वक्तपर खाना नही देते ? पान-सुरतीके लिए इन्हे पैसे नही देते ? तीरथ जानेकी इनकी इच्छाकी उपेक्षा करते है ? पुराने टूटे हुए औजारोकी तरह क्या अपने बूढे बापको लडकोने कूडेके ढेरमे डाल दिया है ?

ऊपर बरगदपर कही छिपी बैठी एक चिड़िया मीठी बोली बोलकर चुप हो गयी, तो चुप बैठे आप्पाने गरदन ऊपर उठायी। माथेपर गहरी रेखाओका जाल फैला हुआ था। ठोढीपर दाढीकी सफेद खूँटियाँ बढी हुई थी। धँसी हुई आँखे खुली और बन्द हुई और उनसे पानी निकलकर किनारोपर आ गया। यह बात तो थी नही कि पक्षियोका कलरव उन्होने आज पहली बार सुना हो। परन्तु आज यह नन्ही-सी बात ही उन्हे लग गयी। मेरे खेतके इस विशाल वटवृक्षपर किन्नरोकी तरह गानेवाली एक चिडिया है, यह बात ही उनकी आँखे भिगो गयी।

उतरती अवस्थामे मनुष्यका मन कोमल हो जाता है। बात-बातपर दुःखित हो जाना, भर आना उसका स्वभाव हो जाता है। आप्पाका भी तो अब चौथापन आ गया था। उनका शरीर और मन अब बहुत थक चुका था। वह चाहते थे कि अब अपने घरमे बैठूँ, दोनो जून ताजा भोजन करूँ और अपने जीवनके अन्तिम दिन शान्तिसे बिता दूँ। अब उनसे अपने खेतकी, अपनी धरती माताकी सेवा नही हो सकती थी। इसलिए नही कि वह इस सेवासे ऊब गये थे, बल्कि इसलिए कि अब वह लाचार हो गये थे, मजबूर हो गये थे। सिर्फ मजबूरीकी वजहसे ही वह अपनी इस माँको अपनेसे हमेशाके लिए जुदा कर रहे थे। यही कारण था कि उनका बूढा मन अशान्त हो रहा था, उनका कलेजा टूक-टूक हो रहा था।

आँखोका पानी बाँहसे पोछकर आप्पाने सामने देखा। उनके खेत सीधे जाकर गाँवके नालेको छू रहे थे। देखकर उनका मन कसक उठा। अपनी जमीनके चप्पे-चप्पेसे वह परिचित थे। उन्हे मालूम था कि उनके खेतोमे किस जगह गले तक गहरी काली मिट्टी है, किस जगह चार हाथ खोदने-

पर ही ककड़ निकल आता है, किस जगह बोनेसे बाजरेके भुट्टे दो-दो बीते लम्बे बढते है और किस जगह चनेकी डाँठ बढकर घुटने तक पहुँचती है। अपनी इस उर्वरा भूमिसे वह वैसे ही परिचित थे, जैसे अपनी माँसे और वह उतनी ही उन्हे प्रिय भी थी। इस भूमिने उनके लिए सोना उगला था, उनकी परवरिश की थी और उन्होने भी उसकी सेवा करनेमे हमेशा खून-पसीना एक किया था। दोनोने एक-दूसरेको कभी नही भुलाया था। आज तक दोनो एक-दूसरेसे कभी जुदा न हुए थे। पर अब आप्पा जरूर अपनी इस प्यारी धरती मातासे जुदा हो रहे थे। सिर्फ विवशता, बुढापेकी लाचारीके कारण ही वह अपनी इस माँको दूसरेके हवाले कर रहे थे।

देखते-देखते आप्पाकी आँखे फिर सजल हो गयी। उस पार खेतोके छोरपर नीला और सफेद आसमान फैला हुआ था। वहीसे जैसे यमके दूत उन्हे ले जानेके लिए आनेवाले हो।

"आओ, भाई, अब जल्दी आ जाओ। मै तैयार हो गया हूँ।" आप्पा मन-ही-मन पुटपुटाये और फिर उन्हे लगा कि अच्छा ही हुआ, जो मैने इस भूमिको दूसरेके हवाले करनेका प्रबन्ध कर दिया। यह भूमि अब सुदामा-दाजी खरीद रहा था। आप्पाने खुद उससे कहा था कि वह यह भूमि खरीद ले। उसके पास रुपया था। उसका बडा परिवार था। पाँच लडके थे। इतना बडा परिवार चलानेके लिए उसके पास पर्याप्त जमीन न थी। अब इस भूमिका स्वामित्व आप्पाके हाथसे निकलकर सुदामादाजीके हाथ जानेवाला था।—ठीक है, भाई। उसके पास रुपया है। इसलिए वह इसे खरीद लेगा। पर क्या वह इसकी ठीक तरहसे फिक्र भी रखेगा? उसे यह ज्ञान कहाँ है कि कितनी सेवा करनेपर यह माँ सोना उगलती है, हमे पालती-पोसती है और बढाती है, सिर्फ अकेले हमें ही नही, हमारे मवेशियो-को भी। हाँ, इसी धरती माताने आज तक हमारी परवरिश की है। और आज मै उसीको दूसरेके हवाले कर रहा हूँ! खैर, मेरी बात छोडो। पर इसके बाद मेरे सोना और राजा बैलोको कौन सम्भालेगा? वे भी तो अब

मेरी ही तरह बूढे हो गये है, थक चले हैं। अब उन्हे बैठे-बैठे ही खिलाने-का वक्त आ गया है। परन्तु यह कौन करेगा ? और मेरी धौरी गाय और उसके बछडेका क्या होगा ? उनकी देख-रेख कौन करेगा ? दाजी कहता तो है कि भूमिके साथ वह इन जानवरोको भी खरीद लेगा। पर उसे क्या ममता होगी इनसे ? वह मारेगा मेरे गूँगे जानवरोको। कामके लिए वह उनकी जान ले लेगा ...''

दोपहरकी सनसनाती हुई लूमे खेतोके पेड बिलकुल चुप थे, मानो अपने बूढे स्वामीके साथ उन्हे भी दुःख हो रहा था, मानो जिस प्रकार आप्पा उनसे जुदा होना नही चाहते थे, उसी प्रकार वे भी नही चाहते थे कि उनका स्वामी उन्हे छोडकर चला जाये।

लेकिन अब आप्पाको जाना ही होगा। उनकी उम्र अब ढल गयी थी। यह भूमि अब वह किसके लिए रख छोडे ? अब किसके लिए वह परिश्रम करे ? सच पूछा जाये, तो यह सवाल बहुत पहले ही उनके दिमाग-मे उठा था। आप्पाके दो जवान बेटे थे, जिनपर उनकी सारी आशाएँ केन्द्रित थी। आप्पाकी पत्नी थी, जो बडी कुशलतासे गृहस्थीकी गाड़ी चलाती थी। पर एक साल गाँवमे छूतकी बीमारी आयी और आनन-फानन-मे ही उस बीमारीके कारण आप्पाका घर बैठ गया। उनके दोनो जवान लड़के और सुघर पत्नी इस दुनियामे आप्पाको अकेला छोड ऐसे पथके पथिक हो गये, जहाँसे लौटकर फिर कोई नही आता। तभी आप्पाको अपने जीवनकी विफलताका ज्ञान हुआ था। उन्हें तभी ज्ञात हो गया था कि अब ऐसा कोई भी न रहा, जिसके लिए कुछ किया जाये। फिर भी वह मेहनत करते आ रहे थे, अपनी धरती माँकी सेवासे कभी न चूके। जोताई, बुवाई, कटाई और मिसाई बडे उत्साहसे करते आ रहे थे। यह न करते, तो उनकी परवरिश कैसे होती ? अपनी ज़िन्दगी बनाये रखनेके लिए हवा, अन्न और पानीकी ज़रूरत तो थी ही। उनका यह परिश्रम देखकर लोग कहा करते, "बूढ़ा बडा लालची है। इतनी मेहनत करनेकी

अब उसे क्या जरूरत है ? कौन बेटा-बेटी बैठे है उसके पीछे ? यह तो सामने ही है कि उसके बाद सब खतम हो जायेगा। फिर भी बूढा लालच नही छोडता।"

परन्तु आप्पाको क्या लालच थी, वह किसकी ममतामे फँसे थे, इसका उन लोगोको क्या पता ?

आप्पाके रिश्तेदार इधर उनकी बडी फिक्र, बडी खुशामद करने लगे थे। अपना स्वार्थ साधनेके लिए वे उन्हे मदद पहुँचानेको हमेशा बेचैन रहते थे। उनके पडोसमे ही उनका एक कलुवा नामका रिश्तेदार रहता था। वह जवान था। वह आप्पाकी बेहद खुशामद करता था। तीज-त्यौहारके दिन अपने घरसे आप्पाके लिए पकवान भेजता था। आप्पा भोजन करने किसीके घर नही जाते थे। आप्पाके कपडे मैले हो जाते, तो कलुवा कहता, "आप्पा, लाओ, वह कुरता मुझे दे दो। तुम्हारी बहू धो-सुखाकर दे जायेगी।"

परन्तु आप्पा अच्छी तरह जानते थे कि यह कलूटा उनसे इस तरहका घनिष्ठ सम्बन्ध क्यो जोड़ रहा है, यह धूर्त इतनी सज्जनता और भाई-चारगीसे क्यो पेश आ रहा है। बुड्ढा उसे गोद ले ले, अपनी सारी जायदाद उसके नाम लिख दे, यही उसका मतलब था। यही जानकर आप्पा उसका कोई एहसान न लेते थे। वह उससे कह देते, "भैया, जबतक मेरे हाथ-पाँव चल रहे है, मेरी धरती माता मुझे मेरे पेट लायक काफी दे देती है। तुमपर फिर मै क्यो बोझ डालूँ ?"

इस तरह कहकर वह उसकी बातको उड़ा देते थे। इसपर वह कलूटा गुस्सेसे तिलमिलाकर मन-ही-मन कहता, "बुड्ढा एक पैर कब्रमे घुसेडे बैठा है, फिर भी इसकी हविस नही जाती। ऐसे लालचीको मौत भी सुख-की नही मिलती। घुल-घुलकर मरेगा साला !"

उनके हम-उम्र साथी कभी-कभी फुसफुसाहटकी आवाजमे उन्हे उपदेश देते, "आप्पा, तू थक चुका है। क्यो इतनी मेहनत करता है ? किसीको

गोद ले ले या जमीन लगानपर उठा दे या किसीको बटाईपर दे दे और शान्तिसे बैठकर खा।"

परन्तु आप्पाको यह सलाह पसन्द न थी। क्या गोद लिया हुआ लडका मेरी भूमि और मेरे मवेशियोकी इतनी फिक्र रखेगा, लगान या बटाईपर जमीन लेनेवाला मेरी भूमिमे भला क्यो पर्याप्त खाद और पानी डालेगा? नही, यह मुझसे न होगा। जबतक मेरे पैरोमे ताकत है, कमसे-कम तबतक तो मै अपनी इस माँकी उपेक्षा न होने दूँगा, उसे अपनेसे हरगिज जुदा न करूँगा। मेरे बाद जो होना हो, हो।

लोग कहते, "आप्पाके बाद उसकी ज़मीनके लिए उसके रिश्तेदारोमे झगडे खडे होगे। देख लेना, खून तक होगा।"

"होता रहे, खून होगा तो! मेरे बाद क्या होगा, इसकी चिन्ता मै क्यो करूँ? नही, यह मै नही करूँगा। कोई कितना भी कहे, मै अपनी भूमि किसी दूसरेके हवाले हरगिज़ न करूँगा!"

यह जिद आज तक तो चली। पर आगे कैसे चलेगी? अब आप्पाके हाथ-पैरमे ताकत न थी। उनसे अब पहलेकी तरह मेहनत नही हो सकती थी। इसीलिए आप्पा अब अपनी भूमि दूसरेको देनेवाले थे। उन्होने बहुत सोच-समझकर यह निर्णय किया था।

सुदामादाजी कल सुबह आनेवाला है। अपनी गाडीमे बैठाकर वह आप्पा-को तहसीली ले जायेगा। वही रजिस्ट्रारके सामने बैनामेपर हस्ताक्षर होगे।

आप्पा अपनी ज़मीन बेचनेवाले थे और उसके बदले कागज़के टुकडे लेनेवाले थे। यह सब कल ही हो जायेगा। माँकी तरह आज तक अन्न देती चली आ रही कामधेनु आप्पासे अब सदाके लिए विलग हो जायेगी! घुटनोमे गरदन डाले आप्पा बहुत देर तक यही सब सोचते बैठे रहे।

धीरे-धीरे धूपकी प्रखरता कम हो गयी। हवा चलने लगी। बरगद-पर बैठे पक्षी मीठी बोलियाँ बोलने लगे। खेतोके पेडोकी शाखाओमे छिप-कर बैठे हुए पखेरू चूँ-चूँ करते हुए बाहर निकल पडे और भोजनकी तलाश-

मे गरदन हिलाते हुए उडने लगे। आसमानमे कौवे ऊँची उडान भरने लगे। छायाएँ लम्बी होती जा रही थी।

धीरेसे आप्पा उठे। लाठी टेक-टेककर वह चलने लगे। मेड-मेडसे जाऊँ और एक बार अपनी ममता-मयी माँको भर-आँख देख लूँ। वह धीरे-धीरे चलने लगे।

तपी हुई भूमिकी सुगन्ध उन्होने सूँघी। मेडपर खडे नीमके पेडकी फैली हुई शाखाओको पकडकर सहलाया। झाडियोमे जंगली चिडियोने घासके नीड़ गूँथ दिये थे, हवाके साथ झूलनेवाले उन झूमरोमे-से एक चिड़िया-ने गरदन टेढीकर, झाँककर देखा। उसका शरीर तरोताके फूलकी तरह पीला और मटमैला था। आप्पाको देखते ही, वह चूँ-चूँ करती हुई फुर्रसे उड़ गयी। और जाने कहाँसे पक्षियोका एक झुण्ड कोलाहल करता हुआ आकर बबूलके पेडपर बैठ गया।

इन नीम और बबूलके पेड़ोको आप्पाने कितनी मेहनतसे पालकर बडा किया था। जानवरोसे उन्हे नुकसान न पहुँचे, वे उनकी शाखाओको तोड न डाले, इसलिए उन्होने हर पेडके गिर्द काँटोका घेरा बनाया था। बार-बार उनकी जडोके थालोकी मिट्टी वह गोडते रहते थे और घेराईकी मरम्मत करते रहते थे। नालेसे गगरी-गगरी भरकर पानी डालते थे। वही पेड अब कितने बडे हो गये थे। उनके पुष्ट शरीरवाले जवान लडके सदाशिवने एक बार उनसे कहा था, "इन पेडोकी क्यो इतनी सेवा करते हो, आप्पा? बारिशके पानीसे ये आप-ही-आप बढ जायेंगे और अगर न भी बढें, तो हमारा ऐसा कौन-सा बडा नुकसान हो जायेगा? कोई फलदार पेड होते, तो भी एक बात थी, फल तो मिलते।"

"अरे पगले, कभी कुल्हाडीकी बेंट टूट जाये, गाड़ीकी जुआँडी टूट जाये तो तू किसके दरवाजे जायेगा? फलदार पेड़ोकी अपेक्षा यही पेड हमारे अधिक कामके है। यह नीमका पेड कल जब बढ जायेगा, तो इससे इतनी लकड़ी निकलेगी कि तू आरामसे सतमजिला मकान खड़ा कर लेगा।

तेरे पिताने जो मकान बनाया है, वह कितने दिन टिकेगा ? और टिका भी, तो कल तेरे बाल-बच्चे होंगे, तब ? सभीके लिए मकान तो चाहिए न। उस समय तू ही कहेगा कि हमारे पिताने कोई पेड न लगाया, जो हमारे काम आता।"

ये पेड़ तो बडे हो गये, पर सदाशिव चला गया, कहाँके बाल-बच्चे और कैसा वश-विस्तार ? खैर, भगवान्की इच्छा।

सूरज पर्वतके पीछे डूब गया। आप्पा चल रहे थे। पश्चिम दिशा लाल हो गयी। तितलियाँ मुड-मुडकर नाचने लगी। फिर भी आप्पासे अपनी भूमि नही छोडी जाती थी। अब फिर कौन उन्हे यहाँ पैर रखने देगा! इस भूमिके पेड-पौधे, मिट्टी, ककड-पत्थर, सब कुछ अब सुदामादाजीका हो जायेगा, हमेशा-हमेशाके लिए आप्पासे इनका सम्बन्ध टूट जायेगा।

"कभी यहाँ फसल अच्छी आयी और हाथसे मिसकर गादा खानेकी तबीयत हुई, खा सकूँगा क्या ? चनेके बूट या होला खानेकी कभी इच्छा हुई, तो कहाँसे मिलेगा ? खैर, यह छोडो। कुछ नही तो कभी साँझको यहाँ आकर सिर्फ थोडा विश्राम करने ही बैठूँ, तो क्या यह कहा जा सकता है कि मुझे सुदामादाजी या कोई टोकेगा नही ?"

आप्पा सोच रहे थे। वहाँसे हिलनेकी उनकी इच्छा न हो रही थी। ऐसा लगता था, जैसे धरती माताने उनके पैर पकड़ रखे हो। आप्पाके मनमे आया, अब गाँवमे न जाऊँ, यही एक झोपडी बनाकर रहूँ, जो हो सके करूँ और एक दिन इसी माँकी गोदमे पडे-पडे यह एकाकी जीवन समाप्त कर दूँ, इसी मिट्टीमे मिल जाऊँ,''' हे भगवान्! हे करुणानिधान! वह दिन अब जल्द दिखा दो, जल्द दिखा दो!

दिशाएँ काली हो गयी। अँधेरा तेजीसे फैलने लगा। मील-भरका फासला तय कर गाँव कब आ गया, इसका आप्पाको पता तक न चला। गाँवकी हदमे पहुँचते ही उन्हें हरिबाबा मिल गये। ठहरकर उन्होने कहा, "कौन, आप्पा है क्या ?"

"हाँ।"

"अँधेरेमे सूझा नही। खेतसे लौट रहे हो ?"

"हाँ।"

"अब शायद मन्दिर जा रहे होगे, चलो, मै भी आ ही रहा हूँ।"

हरिबाबा आप्पाके हम-उम्र थे। भगवान्‌की उनपर सब कृपा थी। उनका वश फला-फूला था। बेटा-बेटी, नाती-पोते आदिसे घर भरा हुआ था। उनके घरमे आनन्द-ही-आनन्द था। उनकी सब इच्छाएँ पूरी हो चुकी थी। अब तृप्त होकर वह भगवान्‌के निमन्त्रणकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

दोनोके विवाह करीब-करीब एक ही समय हुए थे। दो-चार महीनोका ही फर्क रहा होगा। आप्पाको पहले लडका हुआ था। हरिबाबाको पहले लडकी हुई थी। हरिबाबा दुःखी हुए थे, तो आप्पाने कहा था, "बुरा न मानो, हरी। लडकी हुई, तो क्या बिगड गया ? अबे, पहली बेटी, घी-रोटी।"

"नही रे आप्पा, यह तो शुरूमे ही रोजगारमे घाटा होने-जैसी बात हो गयी। लडकीका क्या उपयोग ? तेरा बेटा जिस समय तुझे पालकीमे लेकर घूमने लायक होगा, मेरी बेटी मुझसे मुँह मोडकर किसी परायेके घर चलती बनेगी·····."

परन्तु हुआ सब उलटा ही।···खैर, भगवान्‌की मरजी।

मन्दिरमे आकर आप्पाने भगवान्‌के दर्शन किये। उन्हीकी उम्रके और भी कुछ लोग अपनी-अपनी पगडीका तकिया-सा लगाकर खम्भोसे टिके बैठे थे। इधर-उधरकी बाते हो रही थी। उन्होने आप्पासे पूछा कुछ, और आप्पाने जवाब दिया कुछ। हमेशाकी तरह आज भगवान्‌के पास वह कुछ देर बैठे नही, तुरन्त ही अपने घर आ गये।

उनके घर आते ही द्वारपर बँधे मवेशी हडबडाकर खडे हो गये और प्रेमसे रँभाने लगे।

"आ गया, आ गया, रे मेरे बच्चो !"

पास जाकर आप्पाने अपने गूँगे साथियोको सहलाया, प्यार किया। उन्हे खानेके लिए भरपूर घास उनके सामने रख दी और उन्हे फिर सहलाया। सोना और राजाकी तरह होशियार बैल बिरले ही मिलेगे। ढलानपर भी लदी हुई गाडी लेकर ये सावधानीसे चलते है। गाडीपर दस आदमी भी बैठे हो, तो उन्हे ऐसा लगे, जैसे पालकीमे बैठे चले जा रहे हो। और यह गाय ! छह सालका बच्चा भी इसे दुह ले। कभी सीग न हिलायेगी। यह बछडा अभी छोटा है जरूर, पर सच मानो, बडा गुणी निकलेगा। आप्पाके घरकी घास व्यर्थ नही जायेगी। सभी जानवरोको आप्पाने बार-बार सहलाया। यह जानकर कि मालिकका हाथ आज कुछ जुदा-सा लग रहा है, वे जानवर भी आप्पाका हाथ अपनी खुरदरी जीभोसे बार-बार चाटने लगे। उन्हे सूँघने लगे। इन बैलोने आप्पाके लिए अपार परिश्रम किया था। इस गायने घूँचा भर-भरकर दूध दिया था। और आप्पा आज उन्हे दूसरोके हाथ बेच देनेवाले थे ! जिस नादमे आज तक उन्होने अनाज और भूसा खाया, उस नादसे नाता तोड़कर उन्हे दूसरी जगह भेज रहे थे ! और वह भी उनकी ढलती उम्रमे !

किवाड खोलकर आप्पा घरमे घुसे। अँधेरा-ही-अँधेरा ! उनके जीमे आया कि इसी तरह अग समेटकर धरतीपर पड जाऊँ, रोशनीकी क्या जरूरत, बिछावनकी क्या आवश्यकता ?

परन्तु नही। रोजकी आदत कैसे छूटे ? सलाई जलाकर आप्पाने दिया जलाया। मद्धिम रोशनी फैली और उस उदास उजेलेमे नोना खायी दीवालें, ऊबड़-खाबड़ फर्श और बेबुहारी कोठरी, सब कुछ दिखायी दिया। यह सब स्वाभाविक ही था। आज कई वर्षोसे किसी स्त्रीका हाथ यहाँ नही फिरा था। आप्पाकी पत्नी इस घरको लीप-पोतकर आईनेकी तरह सदा साफ रखती थी। ये कालिख खाये हुए बरतन उस समय अपनी गृहस्वामिनीके चेहरेकी ही तरह चमकदार रहते थे। अब कौन उनकी ओर

ध्यान देता ? मेहनत और शौकसे जमायी हुई और पुरखोसे मिली यह सारी गृहस्थी गृहस्वामिनीके अभावमे अनाथ हो गयी थी।

रसोई-घरमे जाकर आप्पाने गगरीसे ढालकर लोटे-भर पानी पिया। खम्भेके नजदीक कम्बल बिछाया। दरवाजेको भीतरसे कुण्डी लगायी। और बिछावनपर पड़ रहे।

"बस, कलसे कोई झंझट नही रहेगी। सुबह उठकर खेत जानेकी ज़रूरत नही पडेगी। मेरी भूमिका और मेरा नाता टूट जायेगा। जीवनमे अनेक कठिनाइयाँ आयी, कई विकट प्रसग आये, फिर भी मैने अपनी धरती माताको कभी साहूकारके यहाँ गिरवी न रखा। उसपर कभी कर्जे-का बोझ न चढने दिया। बेचना तो दूरकी बात। पुरखोके समयसे अन्न देती आ रही इस भूमिकी मैने भरसक सेवा की, बडे जतनसे रखी और आज हाथ-पैर थक जानेके कारण उसे मै बेच रहा हूँ। अब मुझमे काम करनेकी ताकत नही रही। उसे बेचकर जो रुपये मिलेगे, अपने पास रखूँगा और जबतक आकाशसे बुलावा नही आ जाता, उसीसे अपनी जीविका चलाऊँगा। जीवनके अन्तिम दिन किसी तीरथमे जाकर बिताऊँगा। मेरी प्यारी धरती माता! तुझे बेचकर मै अपना बूढा पेट चलाना चाहता हूँ, इसके लिए मुझे क्षमा करना! कुछ भी हो, मै कितने भी कारण पेश क्यो न करूँ, फिर भी मै अपने मनमे खुद यह महसूस करता हूँ कि मै कृतघ्न हो गया हूँ। ढलती उम्रमे तुझे दूसरेके हवाले कर देनेका पाप मै अपने हाथसे कर रहा हूँ। माँ! मै कृतघ्न हूँ! तेरे साथ धोखा कर रहा हूँ!"

सवेरा हुआ। कमरमे रुपयोकी बसनी बाँध सुदामादाजी और उसका सुन्दर नौजवान लडका गाडी दौडाते हुए आप्पाके घरके सामने आ रुके। बूढे कुरमी सुदामादाजीका चेहरा आज आनन्दसे खिल उठा था। आज उसने अपने प्यारे बैलोको रग-बिरगी झूलोसे सजाया था और खुद अपने सिरपर एक कीमती जरीदार पगडी बाँध रखी थी। अपने पूर्वजोसे प्राप्त

हुई भूमिकी उसने रक्षा ही न की थी, आज वह उसमे नयी ज़मीन खरीद-कर जोड रहा था। अपने बाल-बच्चे खुश रहे, इसका इन्तजाम कर रहा था वह।

दरवाजेपर आते ही उसने पगही खीची और गाडीसे नीचे कूदकर ज़ोरसे पुकारा, चलिए, "आप्पाजी!"

आप्पाका द्वार अभीतक बन्द था। रातके सोये आप्पा अभीतक जागे ही न थे।

पडोसका कलुआ अपने आँगनमे खडा दातौन कर रहा था। यह कुरमी उसके मुँहका कौर छीने ले जा रहा है, यह देखकर उसे बडा गुस्सा आया। घरके भीतर जाकर वह मन-ही-मन बडबडाया, "सालेने जमीन बेची भी तो आन गाँवके कुरमीके हाथ, जैसे कि हम सब रिश्तेदार मर गये थे! इस बूढे खूसटको शान्तिकी मौत न मिलेगी! जानवरकी तरह चिल्ला-चिल्लाकर ही इसके प्राण निकलेगे! अरे बुड्ढे, मरनेपर तेरे मुँहको हमी आग देंगे, यह सुदामादाजो न आयेगा!"

द्वारको बन्द देखकर सुदामादाजी आगे बढा और दस्तक देकर बोला, "अरे, अभीतक सोये है क्या? पन्तजी, उठिए। मै गाडी लेकर आ गया हूँ।"

परन्तु भीतर जरा भी हलचल न हुई। मुँहमे भरो पानकी लुगदी हाथपर लेकर सुदामादाजीने फेकी और साफ मुँहसे वह पुकारने लगा। फिर भी दरवाजा न खुला तो बैलोकी पगही पकडकर खडा हो गया और उसने अपने लड़केसे कहा, "अरे, इस बूढेको क्या हो गया है!"

वह तजुरबेकार कुरमी शकाकुल हुआ, तो उसका जवान लडका कडी आवाजमे बोला, "देखूँ क्या? कहिए तो किवाड तोड दूँ?"

"नही, नही! यह कैसे होगा, बेटा? ज़बरदस्ती किसीका दरवाजा तोड़नेका हमे क्या हक है? उसके किसी रिश्तेदारको बुलाना चाहिए।"

और व्यग्रतासे दौडकर उसका लडका कलुआके दरवाज़ेपर गया और

चिल्लाया, "अरे भैया ! जरा बाहर तो आओ। देखो तो, तुम्हारे आप्पा-को क्या हो गया है ! बडी देरसे हम लोग पुकार रहे है। दरवाजा भीतरसे बन्द है। भीतरसे कोई आवाज ही नही आ रही है। आओ, जरा देखो तो !"

कलुआ लपककर बाहर आया। उसे शक हुआ कि आप्पा शायद खतम हो गया। इस विचारसे वह मन-ही-मन हर्षविभोर हो उठा। बुड्ढे-की लावारिस जमीन अब उसे ही मिलेगी, यह सोचकर उसके मनमे गुद-गुदी होने लगी। परन्तु उसने इस प्रसन्नताको दबा दिया और चेहरेपर चिन्ता, आशका और दुखका भाव दिखाता हुआ वह बाहर आया और बढकर दरवाजा तोडनेकी कोशिश करने लगा।

तभी अचानक भीतरसे कुण्डी खटसे बजी और दरवाजा पूरा खुल गया। बूढे आप्पा दरवाजेपर अकडे हुए खडे थे। आनेवालोको देखकर वह गरजे, "मै अपनी जमीन नही बेचूँगा, सुदामादाजी ! तुम लौट जाओ।"

इस अप्रत्याशित निर्णयसे सुदामादाजी बौखला गया। बोला, "आँऽ? इसका क्या मतलब ? आपने ही तो कहा था कि आज बैनामा करने चलेगे ?"

"हाँ, कहा था। मैने ही कहा था।" क्रोधसे काँपते हुए आप्पा फिर गरजे, "पर अब जो कह रहा हूँ वह भी तो मै ही कह रहा हूँ !"

"पर मैने तो पूरी तैयारी कर ली है। साहूकारसे ब्याजपर रकम लाया हूँ और आप अपनी बातसे मुकर रहे है ! आदमीकी बात एक होती है !"

"तुम बडे हरिचन्द हो, मै जानता हूँ मुझे तुम्हारे उपदेशकी जरूरत नही है। जमीन मेरी है और मै उसे नही बेचता। तुम्हारा क्या जाता है?"

इसपर सुदामाका लडका तैशमे आकर बोला, "अरे बुढऊ ! अब किसके लिए रख रहे हो जमीन ? कौन लडके-बाले है तुम्हारे पीछे खाने-वाले ? अब तो रामनाम लेनेका वक्त आया। लोककी चिन्ता छोड अब परलोककी चिन्ता करो। लोभ-लालच छोडो।"

"अरे, हाँ-हाँ जा ! परलोककी चिन्तामे क्या मै इतना कृतघ्न हो जाऊँ ? जब तू मरने लगेगा तो क्या अपनी माँको दूसरेके हाथ बेच जायेगा ? मै कसाई नही हूँ। मै अपनी ज़मीन नही बेचूँगा, मवेशी नही बेचूँगा ! जमीन पडी रहे या मेरे जानवर भूखे रहे, तुझे इससे क्या वास्ता ? तू जा ! यहाँसे चलता बन !" और आप्पाने खड़ाकसे दरवाज़ा बन्द कर लिया।

आकाशमे बादल उमड पडे। जलसे भरी तेज़ हवा बहने लगी और रास्तेकी धूल और कूड़ा-कचरा चारो ओर फैलाने लगी। पेडोकी फुनगियाँ ज़ोरसे हिलने लगी। यह सब पहला पानी आनेकी सूचना थी।

बड़ी-बडी बूँदे धरतीपर तिरछी होकर कूद पडी। धूलपर उनकी पट-पटकी आवाज़ हुई। काली-काली, बडी-बडी बूँदे ! मिट्टीकी सोधी-सोधी सुगन्ध वातावरणमे भर गयी। किसानोका रोम-रोम पुलक उठा।

अग सिकोडे अपनी माँके पास खडा आप्पाका बछडा कान खडेकर इधर-उधर देखने लगा, और आप्पाके दिखायी देते ही धनुषकी तरह टेढे हुए पैरोसे दौडकर पानीमे भीगता हुआ ओसारेमे चढकर आप्पाके पास जा खड़ा हुआ।

कम्बल लपेटे बैठे हुए आप्पा वरुणदेवकी इस कृपाको सजल नेत्रोसे देख रहे थे। उन्होने बछडेको प्यारसे अपनी ओर खीचकर कहा, "पानी आ गया, बेटा ! अब आलसीकी तरह बैठे रहनेसे काम न चलेगा। चलो, जल्दी काममे लगे !



मोटर सर्विस

गाँवके दूसरे किनारेसे लगा हुआ इजा कुम्हारका घर था। घरके पीछे गाँवका नाला था। सामनेवाली पगडण्डी ढलानसे उतरती हुई नालेके पानी तक पहुँचती थी। घर बिलकुल साधारण था, यही बाँसकी दीवारे और ऊपर फूसकी छत। सामने उठने-बैठनेकी जगह। पीछे सहन, जिसमे छोटी-सी कुइयाँ और नीम तथा इमलीके पेड। घरके सामने गधे बाँधनेकी जगह और सडकके किनारे नीमका एक छोटा-सा पेड। इस पेड़के नीचे एक चबूतरा था, जो लीप-पोतकर सदा साफ रखा जाता था। इस चबूतरेके नजदीक इजाप्पा बरतन बनाया करता था। दिन-भर काममे व्यस्त। पुष्ट शरीर, ऊँचाईमे थोड़ा नाटा और होठोपर घनी मूँछे। उसे देखते ही लगता था कि यह मनुष्य खून और मासका नही बना है, इसके शरीरमे आधारके लिए हड्डियोके बदले लोहेकी छडे डाल दी गयी है, ठीक उसी तरह, जिस तरह कि सीमेण्टका भवन बनाते समय डाल दी जाती है, और ऊपर भी जैसे पक्का सीमेण्ट यो ही पोत दिया गया था और यह इमारत किसी अनाडी कारीगरने खडी कर दी थी, क्योकि उसमे सुन्दरता और सुडौलपन नामकी कोई चीज़ कही थी ही नही। सब तरफसे कुघड। इस प्रकारका यह इजाप्पा सिरमे कुछ भी लपेटकर नगे बदन कभी घडे ठोकता हुआ, कभी मिट्टी सानता हुआ और कभी चाक घुमाता हुआ हमेशा अपने घरके सामने दिखायी देता था।

इजाप्पाके साथ उसके घरमे केवल दो प्राणी और थे। एक था उसका बेटा भोजा और दूसरी थी उसकी बहू। भोजा अपने बापपर किसी तरह भी न पडा था। अपने बापके हिसाबसे वह ऐसा लगता था, जैसे अच्छे, मज़बूत और मोटे ज्वारके पौधेमे एक छोटा-सा बारीक भुट्टा लगे या खूब

बढे और फैले हुए पेडमें छोटा-सा रोग-ग्रस्त फल लगे। उसकी काया बिलकुल ही दुबली-पतली थी। भरी जवानीमे भी यह लड़का अबढके कारण लकडीकी तरह सूखा हुआ था। उसका चेहरा बिलकुल निस्तेज था। और तो और, मरदानगी और पौरुषके चिह्न, दाढी और मूँछे भी उसे अभीतक न फूटी थी। बेढगा, लम्बा-सा चेहरा, चपटी और गालोपर फैली हुई नाक, बडा-सा मुँह, ऐसा चमत्कारपूर्ण रूप था उसका! बापकी तरह वह भी गाँवमे सदा नगे बदन घूमा करता। पर यह उसे शोभा न देता था। लम्बी गर्दन, उभरी हुई कनपटियोकी हड्डियाँ, बेमासकी पसलियोका ढाँचा और सिहुलेके दाग। उसे देखते, तो लोग ताज्जुब करते। कहते, "यह क्या इजाप्पाका लडका हो सकता है?"

भोजाकी औरत दोहरी देह और लम्बी बेलकी औरत थी। ऐसी कि भोजाको बगलमे दबाये घूमती रहे। गेहुँआ रग, भरा हुआ शरीर, नाक और आँखे सुन्दर और सुडौल। किन्तु सीकिया जवान पति पानेके कारण उसकी गोद अबतक सूनी थी। गोद नही भरी थी तो न सही, अभी कोई उम्र तो नही बीत गयी थी उसकी। किसी-किसीके बारह-बारह बरस बाद भी बच्चे होते है। और यह औरत सच्चरित्र और शीलवती थी। गाँवमे वह अधिक घूमती न थी। व्यर्थ ही मुँह उठाकर किसीमे बातें न करती थी। आप भली और अपनी गृहस्थी भली। घरका काम-काज करके वह ससुरके कामोमे भी हाथ बटाती थी। घोडेकी लीद इकट्ठा करना, उसे मलना, खरहरा देना, आवाँके लिए इन्धन जमा करना, इस तरहके छोटे-मोटे काम वह करती रहती, पर जो भी करती खूब मन लगाकर करती थी। भोजा गधोपर बाहरसे मिट्टी ले आता था। माल लेकर बाजार जाता था। अपनी दृष्टिसे वह भी पिताके काममे सहयोग दिया करता था। किन्तु उसका मन उन कामोमे न लगता था। उनमे उसे कोई दिलचस्पी न रहती थी। मुँहमे सुरती भरकर चार यार-दोस्तोमे बैठना, इधर-उधरकी फालतू गप्पे लड़ाना, गाँवके निठल्लो और लफगोके साथ बैठकर लोगोको यह भास

कराना कि हम भी उनमे-से एक है, जो न करना चाहिए, ऐसा ही काम यह निकम्मा छोकरा किया करता था।

परन्तु इजाप्पा उसके इस बेढगेपनकी ओर ध्यान न देता था। लडका बराबरीका हो गया था। उससे वह क्या कहे ? उसे क्यो दबाये ? वह बिलकुल कोई काम ही न करता हो, सो बात भी न थी। छोटे-मोटे काम करता ही रहता था। ठीक है। बापके जीते-जी मौज कर ले। बापके बाद गृहस्थीका भार जब सिरपर पडेगा, तो आप ही सीधी राहपर आ जायेगा। जायेगा कहाँ ? गाँवमे कुम्हार तो एक ही है न। और काम बहुत रहता है। दम मारनेको भी फुरसत नही मिलती। जिनके अन्नपर जीना है, उन किसानोको घडे, नादे, तीज-त्यौहारके समय मिट्टीके बरतन देना, दीवालीपर दीयोकी माँग पूरी करना, पोलाके दिन मिट्टीके बैल बनाना, यह सारा काम एक ही आदमीको करना पडता है, यह कोई हँसी-खेल तो है नही। जबतक मुझसे हो रहा है, मै कर ही रहा हूँ। आगे यह सब उसे ही तो करना पडेगा। कबतक बचता रहेगा ?

कुछ भी क्यो न हो, गाँवके छोरपर स्वच्छ घरवाले इस कुम्हारका परिवार अच्छा था। उसकी गृहस्थी ठीक तरह चल रही थी। यह नही, वह नही, यह चिन्ता उस घरमे न थी। और होती भी क्यो ? सारे गाँवकी तरह उनकी आवश्यकताएँ भी कम थी। गाँवमे जो अनाज पैदा होता था, वह उन्हे मिलता ही था। तिलहनसे तेल निकलवा लेता। मिरचे थी ही। नालेके किनारेकी मिट्टी ऐसी थी कि उसे लाकर घर-खर्चके लिए काफी नमक बनाया जा सकता था। गाँवमे किरानेकी कोई दूकान न थी। फिर पैसेकी जरूरत ही क्या थी ? जो कुछ पैसा लगता, कपडोके लिए लगता। गाँवका जुलाहा मोटे वस्त्र बुनकर तैयार कर देता था और पैसेके बदले यदि उसे अनाज दे दिया जाता, तो भी काम चल सकता था। इतनी सादगीका जीवन होनेपर चिन्ताएँ ही क्यो ? बीसवी सदीकी प्रगतिसे बिलकुल अनभिज्ञ, एक किनारे बसा हुआ और अपनी दृष्टिसे समृद्ध वह छोटा-सा

गाँव खुशहाल था, और उस गाँवका एक अवयव, इजाप्पा कुम्हार भी गाँवकी दृष्टिसे सन्तुष्ट और सुखी था।

इसका मतलब यह नही कि उस गाँवमे असन्तोष था ही नही, मार-पीट कभी होती ही न थी, कोई किसीसे ईर्ष्या न करता, गरीबीका वहाँ राज न था, या सारा गाँव निष्पाप, सुखी और सन्तोषी था।

फलाँकी ज़मीनमे आठ मन ज्वार हुई और मेरी ज़मीनमे केवल छह मन ही हुई, इस प्रकारका असन्तोष वहाँ था। कठिन परिश्रम कर भूखसे व्याकुल मरद घर लौटता और उसे यदि तुरत गरम-गरम रोटियाँ खानेको न परोसी जाती, तो अपनी घरवालीको वह मार बैठता, इस तरहकी मार-पीट वहाँ थी। अमुक स्त्रीके एकके-बाद-एक बच्चे हुए जाते है और मेरे पेटसे अभीतक कुछ नही हुआ, इस तरहकी ईर्ष्या भी थी वहाँ। गाँवमे पाप था, सत्यका अभाव था, चोरियाँ भी होती थी। पर यह सब इतना बढा हुआ न था कि उसे भयकर कहा जा सके। जहाँ खेत है, वहाँ घास होती ही है, परन्तु वह मूल फसलसे अधिक न थी। अभीतक वहाँ भलापन था, बडोका आदर था, उनकी सलाह ली जाती थी, यदि किसीपर आपत्ति आती, तो पडोसी-धर्मके नाते दूसरे लोग खुशी और उत्साहसे उसकी मदद करते थे, फुरसतके समय भगवान्का भजन होता था, जिसपर उपकार किया जाता था, वह उसे भूलता न था, सदा अपनी कृतज्ञता प्रकाशित करता था और परायी स्त्रीको कुदृष्टिसे देखना पाप माना जाता था। लोग इन सब बातोको अच्छी तरह समझते थे और उनका पालन भी करते थे।

और इसीलिए दूकान, शाला, सरकारी कचहरियाँ, साफ-सुथरे रास्ते, ईंटोके मकान, लैम्प आदि न होते हुए भी वह छोटा-सा गाँव सुखी था। वहाँके कुटुम्ब अच्छे थे। इजा कुम्हारका सब ठीक-ठीक चल रहा था।

दूर बसे तहसीलके सदर मुकामसे एक कच्ची सडक गाँव तक आती थी। एक बार अचानक कहीसे एक हुक्म निकला कि यह सड़क दुरुस्त की जाये। और काम शुरू हो गया। दोनो ओरकी मिट्टी निकालकर सीधी

रेखामे चौड़ी सडकपर बिछायी जाने लगी। गढे और खन्दके भरी जाने लगी। यह मरम्मत इजाप्पाके घर तक पहुँची, तो लोग कहने लगे कि इससे भी आगे दूर रेलके स्टेशनवाले शहर तक सड़क दुरुस्त होगी। यह ऐसा एकाएक कैसे हो गया ? कभी भी दुरुस्त न होनेवाली सडकपर यह काम इतनी सरगरमीसे क्यो शुरू हो गया ?

यह खबर इजाप्पाके कानमे थोडी देरसे पहुँची। अपने कामको छोड, दूसरी किसी भी बातमे दिलचस्पी न रखनेवाला वह बूढा कुम्हार सतर्क हो गया। सिरपर छोटी-छोटी टोपियाँ पहने हुए सरकारी कर्मचारी रस्सी और जजीर लिये इस रास्तेमे क्यो घूमने लगे है ? आज सैकडो वर्षोसे घिसती-पिटती चली आयी इस सड़कको दुरुस्त करनेकी बात एकाएक किसे सूझ गयी ? यह मामला आखिर है क्या ?

साँझके समय तमाकू पीते हुए इस विषयमे उसने अपने बेटेसे पूछा। वह जानता था कि अपने कामोकी अपेक्षा अन्य बातोकी ओर अधिक ध्यान देनेवाला, निकम्मे लोगोके सग बैठकर नाना प्रकारकी गप्पे हाँकनेवाला उसका यह जवान बेटा इस सम्बन्धमे उसे पूरी जानकारी देगा। और इसीलिए दीवालसे टिककर धुएँके बादल उडाता हुआ वह बोला, "क्यो, बेटा सुनता हूँ अपने गाँवसे जानेवाली सडक दुरुस्त हो रही है ?"

मुँहमे सुरती-भरे बैठा हुआ लड़का बैठे-बैठे ही द्वारके पास खिसका और पीक थूककर मुँह खाली करनेके बाद बोला, "हाँ, दादा, हो तो रही है सडककी मरम्मत।"

"कौन करा रहा है ? किसके हुक्मसे ?"

"और कौन करेगा ? सरकारी हुक्म आया होगा।"

"अभीतक तो यह बात किसीको न सूझी थी। फिर अब क्यो ?"

"यह तो मै भी नही जानता। पर, दादा, दूसरे गाँवोमे खबर है कि मोटर चलेगी।"

मोटर चलेगी, या ठीक क्या होनेवाला है, इजाप्पाको यह नही मालूम

था। वह रेल या मोटरमे कभी बैठा ही न था। परन्तु मेले या बाजारोमे घूमते समय उसने तेलसे चलनेवाली इन गाडियोको देखा था। एक गाँवसे दूसरे गाँव जानेके लिए घोडे-गाड़ी और पैरकी तरह यह वाहन भी काममे आता है। दाम देनेपर मोटरवाला मोटरमे बिठाकर जहाँ हम जाना चाहे, ले जाता है, इतना ही ज्ञान उसे था।

बुझी हुई चिलमकी जली राखको जमीनपर उलटते हुए वह बोला, "तो तेरा मतलब यही है न कि शहरसे वह लोगोको लायेगी और हमारे गाँवमे छोड देगी ? यही न ?"

"नही, नही, ऐसी बात नही है। तहसीलके सदर मुकामसे जिन लोगोको रेलसे बम्बई-इजापूर जाना होगा, उन्हे लेकर वह सीधी मानखेड चली जायेगी।"

"और फिर ?"

"फिर वहाँसे रेलसे उतरे हुए मुसाफिरोको लेकर लौटेगी और उन्हे तहसीलके सदर मुकामपर छोडेगी।"

बूढे कुम्हारको थोड़ा-बहुत बोध हो गया। जो कभी नही दुरुस्त हुई, वह सडक इसलिए दुरुस्त हो रही है कि उसपर मोटर-सर्विस शुरू होगी।

सरकारने मोटर-सर्विसका व्यवसाय अपने हाथमे ले लिया। अच्छी पक्की सडकोपर सरकारी मोटरे दौड़ने लगी, तब प्राइवेट मोटर-मालिकोका ध्यान छोटी-मोटी सडकोकी ओर आकृष्ट हुआ। वसीले भिडाकर, पैसा खर्च कर उन्होने इन सडकोको इतना सुधार लिया कि उनपर मोटरे चल सकें। लोगोको सुविधा होगी, इसी बहाने इस राक्षसीको गाँवमे घुसा दिया। ये सब बाते यद्यपि समझमे न आयी थी, फिर भी उस अनुभवी कुम्हार-को जो बात समझनी थी, उसे वह अच्छी तरह समझ गया। बोला, "गरीबोसे पैसे ऐठनेका रोज़गार है यह। और तो मुझे कुछ नही दिखता।"

भोजाको यह बात नही जँची। मोटरकी उपयोगिता उसे थोडी-बहुत

समझा दी गयी थी। उसने अपने पिताको समझाया, "लोगोके पैसे खर्च होगे, इसमे शक नही। पर सुभीता तो हो जायेगा। लोग एक गाँवसे दूसरे गाँव इस तरह आरामसे चले जायेगे, जैसे पालकीमे बैठे चले जा रहे हो। ऊपरसे सामान भी रखकर ले जाओ।"

इसपर इजाप्पा हँसा। अपने पुत्रकी बुद्धिपर उसे हँसी आ गयी। बोला, "अरे गधे! आज तक एक गाँवसे दूसरे गाँव जानेके लिए क्या मोटरे ही थी? चार-चार मन ज्वार हम तेरे चाचाजीके यहाँ पहुँचाते रहे, तो क्या उसे मोटरमे ले जाते थे? व्यर्थके चोचले है ये, और कुछ नही है। बेटा, मै कहता हूँ, इसे ध्यानमे रख ले! मोटरका मालिक अपनी मोटर इस गाँवमे लाता है, सो इसलिए नही कि वह गाँवके आदमियोको एक गाँवसे दूसरे गाँव पहुँचाये "

"तो फिर किसलिए?"

"उसे रुपयोसे भरकर अपने घर ले जानेके लिए।"

हाँ, इजाप्पाकी यही पक्की धारणा थी। चैत-कार्तिकमे गाँवमे कहीसे बन्दरवाले आते है, खेल दिखाते है और मना अनाज ऐठकर दूसरे गाँव चले जाते है। लगोट कसकर नट आते है, चार उलटी-सीधी कुलाँचे लगाते है और अनाजसे झोली भरकर चले जाते है। दूर-दूरसे तमाशेवाले आते है, खेल-तमाशे दिखाते है और अनाज तथा पुराने वस्त्र ठगकर ले जाते हैं। जिस तरह ये कलाबाज़ अपने हाथका हुनर और सफाई दिखाकर लोगोका शरीरका पसीना बहाकर पैदा किया हुआ अनाज लूटकर ले जाते है उसी तरह यह मोटरवाला भी कोई नया खेल खेलकर लोगोको नंगा कर देगा। नाँदिया बैलवाला अपना बैल नचाता है और यह अपनी मोटर दौडायेगा। सब मिलाकर सारा धन्धा लफगेबाजीका, खुद अपना पेट भरनेका है, और कुछ नही है।

बूढेकी यह बात भोजाको न जँची। वह बोला, "तुम्हारी अक्लपर तो पत्थर पड गया है, दादा। तुम तो कुछ भी नही समझते। मोटर

आयेगी हमारी भलाईके लिए, हमारी सुविधाके लिए, हमे आराम पहुँचाने-के लिए।"

ये बातें हो रही थी। इसी समय बहू रोटी तैयार कर आ गयी। बाप-बेटेकी बातचीतमे बाधा देकर वह बोली, "चलो, उठो। रोटी खा लो। फिर बाते करना। रोटी ठण्डी हो जायेगी।"

और फिर बातचीत बन्द कर दोनो उठ गये।

गाँवमे मोटर आनेसे किसीको सुभीता मालूम हुआ, किसीको असुविधा मालूम हुई। इजाप्पाको मोटरवाला बन्दर नचानेवाले मदारीकी तरह लगा। परन्तु मोटर आनी थी, सो रुकी नही। आयी ही। सडककी मरम्मतका काम पूरा हो गया और फो-फो करती हुई वह गाँवमे आकर इजाप्पाके घरके सामने लगे नीमके पेडके नीचे खडी हो गयी।

सुबहका समय था। खेत जानेवाले लोग उसकी आवाज़ सुनकर वहाँ इकट्ठे हो गये। मदारीका खेल देखनेके लिए लोगोकी जिस तरह भीड हो जाती है, उसी तरहकी भीड इजाप्पाके घरके सामने लग गयी। किसीने डरते-डरते उसे हाथसे छूकर देखा। किसीने खडे-खडे ही भीतर झाँककर देखा। यह बैलगाडीसे तेज़ दौडेगी क्या? कमर-भर पानीके भीतर चल सकती है क्या? गाडीकी तरह इसके पहियोमे हाल क्यो नही है? इस तरहकी बाते होने लगी। तब कुम्हारका बेटा भोजा आगे बढा और उसने लोगोको धमकाया, "ए! दूर हो जाओ! अबे ओ! हाथ क्यो लगा रहा है? बिगड़ जायेगी, तो सारे घर-बारको बेचकर भी इसे ठीक न कर सकोगे, बेटा! इजनका काम है, कोई दिल्लगी नही है।"

उसके घरके सामने मोटर खडी हुई है, इसलिए उसपर उसका विशेप अधिकार है, इस भावनासे वह सीकिया पहलवान गाँववालोपर रोब दिखाने लगा। कुछ लोगोको उसकी ये बाते अपमानजनक मालूम हुई। अतएव उनमे-से किसी एकने कहा, "अबे ओ कुम्हारके बच्चे! तू क्यो फिजूल चिल्ला-चिल्लाकर अपना गला फाड़ रहा है। जा अपना काम देख!"

इसी समय मोटरसे नीचे उतरकर बीडीके कश खीचता हुआ ड्राइवर क्रोधसे बलबलाकर बोला, "ठीक तो कह रहा है वह ! अपना-अपना काम छोडकर तुम लोगोने यहाँ क्यो भीड लगा रखी है ? यहाँ कोई तमाशा हो रहा है क्या ? चलो, हटो यहाँ से !"

क्लीनरीके काममे कुशल, गन्दे कपडे पहने एक चौदह सालका लडका मोटरकी छतपर ताल दे रहा था। वह तावमे आकर नीचे उतरा और कुत्तोकी तरह लोगोकी तरह झपटकर बोला, "दूर होओ ! एक तरफ हटो ! क्या चक्केके नीचे दबकर मरना है ?"

आठ-दस मुसाफिर भीतर बैठे थे। कपडोसे वे भले आदमी लगते थे। जब उन्होने देखा कि बाहर इस तरहकी बातें हो रही है, तो उन्होने सभ्यतापूर्वक ड्राइवरसे कहा, "ड्राइवर साहब, यहाँ कोई सवारी-ववारी तो है नही, फिर रुकनेसे फायदा ? चलिए न जल्दी। हमे तीन बजेकी गाडी पकड़ना है।"

फिर क्लीनरने हैण्डिल मारा। ड्राइवरने स्टोयरिङ् व्हील घुमाया और चारो ओर धूलके बादल उडाती हुई मोटर चली गयी। कुछ उत्साही लडके उसके पीछे-पीछे नालेके उस पार तक दौडते हुए गये।

इजाप्पा यह सब देखता हुआ खडा था। जब मोटर दृष्टिसे ओझल हो गयी, तो भोजा लौटा। देखा कि बूढा हाथ पीछे बाँधे जाती हुई मोटरकी तरफ क्रोधसे देख रहा था। उसकी ठुड्डी गलेसे भिड गयी थी। आँखोके नीचेका भाग हिल रहा था। भर्रायी हुई आवाज़मे उसने बेटेको सावधान किया, "बेटा, उस मोटरवालेने उस चुडैलको हमारे घरके सामने क्यो खड़ा किया था ? उससे कह देना कि यहाँ कभी खड़ा न करे।"

भोजा एकदम चिल्ला उठा, "अरे, तो इसमे क्या हो गया ? क्या मोटर अपने साथ तुम्हारी जगह उठाकर ले जायेगी ? तुम्हारा क्या नुकसान होता है ? बेकार क्यो चिल्ला रहे हो ?"

"भोजा, तू मुझे अक़्ल न सिखा। चुपचाप जैसा मै कहता हूँ, वैसा

उससे कह देना।"

"अरे! तुम्हारा क्या नुकसान हो रहा है उसमे ? कल कोई गाँव-वाला अपनी गाडीके बैल यहाँ बाँध देगा, तो क्या तुम मना कर दोगे उसे ?"

"गाँववालोके बैलोको मै अपने घरके भीतर भी बाँधूँगा। उन्हीका दिया अनाज तो खाता हूँ। और न भी खाता, तो भी बाँधता। क्यो ? इसलिए कि जानवर भले बात न कर सकते हो, उनमे प्राण होते है। तेरी इस बेजान मोटरको खडे होनेके लिए आखिर क्यो छाँह चाहिए ?"

जब बाप 'मै-मै-तू-तू' पर आ गया और कुछ सुनता ही न था, तब भोजाने अपना अन्तिम अस्त्र निकाला। बोला, "क्या मेरा इतना भी हक नही है इस घरपर ? तो फिर मै इस घरमे ही क्यो रहूँ ? क्यो न बैरागी बनकर कही चला जाऊँ ?"

जब बूढेने अपने इकलौते पुत्रकी यह घामडपनकी बाते सुनी, तो उसे बहुत दुःख हुआ। यह सारा परिश्रम वह किसके लिए कर रहा है ? दिन-रात गिरस्तीमे किसके लिए खप रहा है ? अपने बेटेके लिए ही न! यह सब-कुछ वह भोजाके लिए ही तो छोड जानेवाला है। और भोजा इस तरहकी बाते करे ?

उसका नही, तो फिर किसका हक है ? यह जो कुछ है, सब उसीका तो है। मेरा क्या धरा है यहाँ ? मै तो अब चन्द रोजका मेहमान हूँ। यह सारा राज उसीको तो भोगना है। फिर क्या मै उसे कभी कह सकता हूँ कि इस घरमे उसका कोई हक नही है ? छि., ऐसा मै कभी न कहूँगा। "भोजा, मेरे बेटे! अरे, यह सब तेरा ही तो है। तेरे ही लिए तो मैने यह सब कमाया है। यह घर, यह जमीन, ये जानवर, इस घरकी हर छोटी-बडी चीज सब कुछ तेरा ही है। सच पूछा जाये, तो अब इस घरकी किसी चीजपर मेरा कोई हक ही नही रहा। पर मैने तुझे डाँटा, तो तेरे भलेके लिए ही, तेरे कल्याणके लिए ही। मेरा अपना यही खयाल है और मुझे यही लग रहा है कि हमारे गाँवमे जो यह नया खेल आया है, सो हमे

लूटनेके लिए ही आया है। यह मोटर गाँवमे बीमारियाँ लायेगी। बुरे मनुष्योके गन्दे बीज लायेगी, इसे तो हमे दूरसे ही प्रणाम करना चाहिए। अपने घरके सामने इसे खडे होनेके लिए स्थान देना घरमे चोर घुसानेकी तरह ही है। बेटा, तुम इस झझटमे न पडो, तो अच्छा। इस बूढेकी मान लो। न मानो तो तुम्हारी मरजी। तुम घरके मालिक हो। भला-बुरा सोच-समझ सकनेकी तुम्हारी उम्र है। तुम अपने मालिक खुद हो। जो कुछ कहना है, मै एक बार कहूँगा, फिर दोबारा कभी न कहूँगा। तुम जानते ही हो कि मै वैसे भी कम ही बात करता हूँ। इतनेपर भी यदि तुम अपनी ज़िद न छोडोगे, तो फिर तुम हो और तुम्हारी किस्मत है।"

इसके बाद वह स्वाभिमानी बूढा लडकेसे अधिक न बोला। उसने मोटरके बारेमे अपने लडकेसे फिर कभी कोई बात न की।

मोटरका आना-जाना नियमित रूपसे शुरू हो गया। वह रोज इधरकी सवारियाँ उधर और उधरकी इधर छोडने लगी और आते-जाते कुम्हारके घरके सामने नीमके पेड़के नीचे खडी रहने लगी।

शुरू-शुरूमे गाँवके मुसाफिर उसे न मिले। परन्तु जैसे-जैसे दिन बीतने लगे, बैलगाडी और घोडा-गाडी आदि सवारियोकी तरह ही मोटर भी गाँववालोके लिए परिचित हो गयी। फिर कोई बाज़ार जानेके बहाने मोटरका मजा चखने लगा। काम-काजके लिए शहर पैदल जानेके बजाय चार आने फेंककर मोटरसे जाना उन्हे अच्छा लगने लगा। इस तरह होते-होते औरतें भी सकोच छोडकर मोटरमे बैठने लगी। दूधके घडे, मक्खनके बरतन और सब्जी लेकर शहरमे बेचनेकी उन्हे चाट लग गयी। आवागमन सुलभ हो जानेके कारण गाँवकी हर एक चीज, अनाज, प्याज़, बैंगन, नीबू, अमरूद आदि गाँवमे नही ठहर पाते थे। लोगोको रुपये कमानेकी धुन सवार हो गयी। अपने बच्चोके मुँहका छुडाकर औरते शहरके होटलोको दूध बेचने लगी। इससे गाँवके बच्चे दुबले और कमज़ोर हो गये। उनका शरीर पहले-जैसी तेज़ीसे न बढता था। घरमे चटनी-रोटी

खाकर बगीचेवाले अपना सारा माल शहरोंके बाजारोंमे भेजने लगे। इससे गाँवमे चार हरी मिर्च पाना भी दुश्वार हो गया। थोडी-सी ज्वार शहर ले गये कि रुपये मिलने लगे। इसलिए बडे-बडे काश्तकार भी सूम हो गये। किसीकी जरूरतपर दो-चार सेर भी अनाज देना अब भार-स्वरूप होने लगा। मुरव्वत बनाये रखनेके लिए वे झूठ बोलने लगे। घरमे अनाजकी कोठी भरी हो फिर भी गरदन हिलाकर इनकार करते। यह ध्यानमे आते ही गरज-बावला चिढ पडता और कहता, "ठीक है भैया, अगर नही है तो न सही। कभी हमारा भी मौका आयेगा।"

गाँवकी सेवा करके पेट भरनेवाले नाई, धोबी, बढई, लुहार आदि लोगोको उनके जायज हक देनेसे भी काश्तकारोने अपने हाथ खीच लिये। इसलिए ये लोग रुष्ट रहने लगे, काममे ढिलाई करने लगे। यह देख, और अपनी ऊँचाईका खयाल कर काश्तकार इन लोगोको धमकाने-डराने लगे। इसके फलस्वरूप गाँवमे गलतफहमियाँ, झगडे और अस्वस्थता फैलने लगी। चाँदीके टुकडे इकट्ठा करनेकी एक बाजारू प्रवृत्तिने सब ओर जोर पकड लिया। और फिर क्षुद्रता, स्वार्थ आदि धीरे-धीरे आने लगे, ठीक उसी तरह, जिस तरह एक रोगसे अनेक रोग उत्पन्न होते रहते है। मै बडा, वह छोटा, वह बडा, मै छोटा, वह मेरी क्या बराबरी कर सकता है, हाँ, वह चाहे तो मेरी बराबरी कर सकता है, इस प्रकारकी बातें जो नही होनी चाहिए थी, अब आप-ही-आप बढने लगी।

वह चुडैल बाहरसे किस्म-किस्मके लोग लाकर गाँवमे छोडने लगी। यह कौन ? साडियाँ बेचनेवाला। पीठपर भारी गट्ठर लादे घर-घर फेरी लगाने लगा। कपडोके नये-नये नमूने दिखाकर उसने ग्रामीण बालाओकी नजरें बाँध दी और एक-दो मन गल्ला समेटकर शामको मोटर पकड़ी। यह कौन ? मद्रासी मोती बेचनेवाला। नकली मोती उसने बेचे, पति-पत्नीमे लडाई करा दी और अपनी जेब गरम कर कानकी बाली हिलाता हुआ शामकी मोटरसे दूसरे गाँवको रवाना हो गया। और एक फल बेचने-

वाला आ गया, एक ज्योतिषी आया, नाटकवाले आये, रासलीला और नौटकीवाले भी आये। अजी साहब, जिन्हे न आना चाहिए था, वे भी आये। जो कभी न आये थे, उनके लिए यह कठिन मार्ग मोटरने सुगम कर दिया और दूधके पात्रमे नमककी डली गिर पडे, इस तरह गाँवकी हालत हो गयी। सारा गाँव बिगड गया और इस तरह कि इस कानकी खबर उस कानको न हुई। बडे बूढे लोग कभी बिगडकर कह उठते, "सारा गाँव बिगड गया। पहलेकी कोई बात ही नही रह गयी है।"

परन्तु यह क्यो हुआ, किस कारणसे हुआ, यह उन्होंने नही सोचा। इसका कोई विचार उन्हे न था। उनकी रायमे तो कलजुग आ गया था। लोग आप ही बिगड गये थे, उसी तरह, जिस तरह कि पेडपर फल आप-ही-आप सड जाता है। पर बूढा इजाप्पा अपने मन-ही-मन समझ चुका था कि यह सारी उस चुडैल मोटरकी ही करतूत है, इस सारी विषकी गाँठ वही है। परन्तु इसे मानेगा कौन? मोटर आनेसे गाँव बिगड गया, यह बात कौन सुनेगा? कोई न सुने, परन्तु एक दिन वे सब महसूस करेगे कि जो इजाप्पा कुम्हार कहता था, वही सच है।

जब मोटर खूब चलने लगी और शहराती आने-जाने लगे, तब सखाराम ड्राइवरने भोजा कुम्हारको एक सुन्दर बात सुझायी। सिरपर तिरछी काली टोपी लगानेवाला, सफेद धोतीपर काले बूट पहननेवाला, गलेके आस-पास हमेशा बुदकीदार गुलूबन्द लपेटे रहनेवाला वह घाघ ड्राइवर भोजरामसे बोला, "मालिक, आपके गाँवमे हम लोगोको बडी तकलीफ होती है।"

मालिक कहकर सम्बोधित करनेके कारण खुशीसे फूलकर कुप्पा हुआ भोजा बोला, "तकलीफ? क्या तकलीफ है, बताओ। हम उसे दूर करेगे।"

"वही तो कहता हूँ। अजी, मोटरमे जिस तरह पेट्रोल भरना पडता है न, उसी तरह हम लोगोको बार-बार अपने पेटमें चाय भरनी पडती है।"

"फिर इसमे क्या बडी बात है? जरूरत हो, तो हमारे घरमे आ

जाया करो और माँग लिया करो। तुम इसे भी अपना ही घर समझो।"

"नही, नही यह बात कैसे होगी? भाई, हम है रोजके आने-जानेवाले। हर बार तुम्हे तकलीफ देना ठीक नही।"

"इसमे तकलीफ काहेकी है, जी? तुम बेतकल्लुफीके साथ माँग लिया करो।"

"इसमे तो यह अच्छा होगा कि तुम एक होटल खोल दो। इससे तुम्हे आमदनीका एक जरिया हो जायेगा और साथ-साथ मुसाफिरोको भी आराम मिलेगा।"

ड्राइवरने एक चिनगारी छोड दी और भोजा सुलग उठा। होटल खोलनेके लिए पूँजीकी जरूरत थी। उसने इधर-उधरसे भिडाकर बडी कठिनाईसे कुछ रुपये जमा किये। फिर चार सेर चीनी, चायका पैकेट और चार-पाँच कप प्लेटें आदि सामान जुटाकर उसने अपना होटल शुरू कर दिया।

अपना काम धन्धा छोडकर वह गप्पी छोकरा चूल्हा फूँकने, पानी उबालने और लोगोके जूठे बरतन साफ करने लगा। इतने दिनो जो लोग कुम्हारके घरके सामने नीमके तले खडे रहा करते थे, वे अब उसके घरके भीतर आकर बैठने लगे। इजाप्पाका स्वच्छ घर रात-दिन जलनेवाले चूल्हेके धुएँसे काला पड चला। चायकी काली पत्ती और राख फर-फर चलनेवाली हवाके साथ उडकर घर-भरमे फैलने लगी। बिखरी हुई चायके दाग़ोपर मक्खियाँ भिनभिनाने लगी। चाय पीनेके बाद ग्राहक घडो-भर बैठते, बीडियोके कश खीचते और पान खाकर थूकते। थूककी इन पिचकारियो और जली हुई बीडियोके टुकडोके कारण इजाप्पाके घरकी सुन्दरता और रौनक चली गयी। इजाप्पाकी बहू जितना दो हाथोसे हो सकता था, करके इस गन्दगीको साफ करती थी, लेकिन इस परिस्थितिमे घरको पहले-जैसा बनाये रखना उसकी ताकतके बाहर था। घरमे हमेशा पराये लोगोका आना-जाना बना रहनेके कारण उसे घरके भीतर ही घुस-

कर बैठे रहना पडता था। बाहर निकलनेमे संकोच होता।

इजाप्पा यह सब खुली आँखोसे देख रहा था। मन-ही-मन कुडमुडा रहा था, जल रहा था। उसका घर इस प्रकार बाजार बन जाये, उसका बेटा आबाई धन्धा छोडकर यह ओछा रोजगार करे, यह उस बूढेको बिल्कुल पसन्द न था। वह इसमे अपनी मान-हानि समझता था। पर वह कुछ कहता न था। अब फिर कभी न बोलूँगा, यह उसने निश्चय कर लिया था। शब्दका जहाँ मूल्य हो, वही उसका उपयोग करना चाहिए। अपनी इज्जत अपने ही हाथमे रखनी चाहिए। इस तरहके विचारोवाला वह बूढा कुम्हार मुँहमे कील ठोककर मौन बैठा हुआ था। और बापकी तुलनामे एक कौडीकी भी अक्ल न रखनेवाला भोजा बडे उत्साहसे होटल चला रहा था। इस नये रोजगारमे उसे अच्छा फायदा हो रहा है, मोटर उसके घरके सामने खडी होती है, ड्राइवर होटलमे आकर बैठता है, इन सब कारणोसे गाँवमे उसका सामाजिक स्थान ऊँचा उठ गया है, इस तरह-की धारणा भोजाकी हो गयी थी।

ड्राइवर, क्लीनर और मुसाफिरोके साथ गाँवके कुछ निठल्ले लोग भी भोजा कुम्हारके होटलमे चाय पीनेके लिए इकट्ठा होने लगे। ये लोग वहाँ घण्टो फालतू बाते करते रहते थे।

भोजाने अपने होटलमे चायके साथ ही खारे सेव, भजिया आदि चटपटे खाद्य-पदार्थ भी बिक्रीके लिए रखे। बोडी और माचिस भी वह बेचने लगा। उनकी बिक्री धडल्लेसे होने लगी। सुबहसे शामतक उसका होटल कभी ग्राहकोसे खाली न रहता था। फिर तो बेचारी गृहलक्ष्मीको, इजाप्पाकी बहूको, लोगोकी नजरे बचाकर घरमे भी घूमना-फिरना मुश्किल हो गया। घरमें इस तरह हमेशा बाजार लगा रहनेके कारण उसका संकोच कम हो गया। कभी पति बाहर जाता और उसकी गैरहाज़िरीमे ग्राहक आते, तो उन्हे चाय तैयार कर वह देने लगी। इस तरह होते-होते ग्राहकके साथ बाते करना भी उसे ज़रूरी हो गया। अन्य धन्धोकी तरह

इस धन्धेमे भी पत्नीको पतिकी सहायता करनी चाहिए, इस बातको महसूस कर वह देवी भी धीरे-धीरे हर काम करने लगी। इस तरह कुम्हारकी बहूका पराये पुरुषोसे परदा करना हट गया। बिलकुल अनजाने वह धीरे-धीरे बदलने लगी। इस धन्धेके लिए आवश्यक बेमुरव्वती, निर्भयता, आजादी और फिर थोडा छिछोरापन, ये सब बाते उसमे भी आने लगी। और जैसे-जैसे ये बाते आने लगी, वैसे-वैसे होटलकी लोकप्रियता बढने लगी। अब यह घर सिर्फ चाय पीनेका होटल न रह गया। वह कुम्हारका घर अब निकम्मे और फालतू लोगोके बैठनेका एक अड्डा बन गया। फिर भी बूढे इजाप्पाने अपने बेटेसे कुछ भी न कहा। सन्तापके कारण पैदा हुआ उसका मौन दिन-दिन अधिक दृढ बनता गया।

होटल शुरू हो गया। परन्तु सेवा-वृत्तिसे अपनी जीविका चलानेवाले परिवारमे जन्म ग्रहण करनेवाले भोजाको बनियेके धन्धेका ज्ञान कहाँसे हो सकता था? लोग आते, चाय पीते, नाश्ता करते, बीडोके कश खीचते और फिर कहते, "भोजरामजी, यार, आज पैसे नही लाये। बाज़ारके दिन दे देंगे।" और 'आज नकद कल उधार'के तत्त्वसे पूर्णरूपेण अनभिज्ञ भोजा नाँदिया बैलकी तरह गरदन हिला देता। किसीपर दस आने, किसी पर रुपया, किसीपर पाँच रुपये, इस तरह उधार रहने लगा। उधार बढता गया। अब माल लानेके लिए पूँजी कहाँसे आये यह कठिनाई भोजाके सामने उपस्थित होने लगी। और फिर वह भी चीनी, चाय, दूध आदि आवश्यक चीजें उधार लाने लगा। परन्तु यह कितने दिनो तक चल सकता था? लोग अपना उधार वसूल करनेके लिए भोजाकी धोती पकडने लगे, और उनसे सताया हुआ भोजा गाँवके उन लोगोको धमकाने लगा, जो उसके कर्ज़दार थे। घर-घर जाकर वह तकरार करने लगा, भले-बुरे शब्द कहने लगा। इससे गाँवके लोग चिढने लगे, पैसा देना तो दरकिनार, उलटे कुम्हारको ही खरी-खोटी सुनाने लगे। किसीके न लेनेमे और न देने मे रहनेवाला कुम्हारका घर गाँवमे अप्रिय होने लगा। अप्रिय ही नही,

गाँववाले कुम्हारके घरके प्रति वैर-भाव रखने लगे। और फिर भी इजाप्पा कुम्हार खामोश रहा, अपने गधेकी तरह ही, जो मिल जाता था, खा लेता और चुपचाप अपना काम करता रहता। जो होना था, उसने वह होने दिया। उसे होते देख उसे दुःख हुआ। बहुत कडा निश्चय करना पडा। बहुत बरदाश्त करना पडा। उस जानकार बूढेने अपने बेटेको समयपर ही क्यो न रोका? उसकी आँखोने गह सब देखते हुए पलकें कैसे बन्द कर ली? ढलानपर चलनेवाली और तेज़ीसे गर्तकी ओर बढ रही यह गाडी उसने अपने मज़बूत हाथोसे क्यो नही रोक ली!

इतना सब होते हुए भी इजाप्पा चुप रहा। उसने बहूसे भी कुछ न कहा, न पुत्रको ही डाँटा। गाँवके लोगोसे प्रार्थना नही की। अपने बाद घरका मालिक बननेवाले अपने बेटेको उसने मनमाना करने दिया।

और दिन बीतते गये। मोटर अपना काम करती रही। गाँव बिगडता रहा। इजाप्पाका घर सुखकी ओरसे दुःखकी ओर बडे वेगसे बढता गया। कुम्हारकी बहू ढीठ हो गयी। ग्राहकोको चायकी प्याली देते समय किसीके हाथसे उसका हाथ छू भी जाता, तो चिन्ता न होती। कोई ग्राहक यदि उससे छिछोरपनकी बातें करता, तो वह भी उसी तरहका जवाब देती। साधारणतः जो शब्द औरतोके मुँहसे न निकलने चाहिए और यदि निकलें भी तो लज्जित-भावसे एकान्तमे सिर्फ अपने पतिके ही सामने, ऐसे शब्दोको भी वह औरत चार आदमियोके बीच बेधडक अपने मुँहसे निकालने लगी। सिरपर तिरछी टोपी लगानेवाला, जुल्फोवाला, कलाईपर बडी घडी बाँधनेवाला और गलेमे सोनेकी जजीर पहननेवाला सखाराम ड्राइवर इजा कुम्हारकी बहूसे बातें करते-करते अब आँख भी मारने लगा। फिर भी यह उसे बरदाश्त हो जाता था। कभी सखाराम ड्राइवर उसे चोलीके लिए सुन्दर कपडा या एकाध फैशनेबिल साडी उपहारमे देना चाहता, तो उन्हे स्वीकार करनेमें उसे कोई सकोच न मालूम होता। उसे यह अच्छा ही लगने लगा। और सखाराम उसकी पत्नीको

'भाभी' कहता है, बिलकुल अपने घरके ही एक व्यक्ति-जैसा व्यवहार करता है, उसके कोई भाई नही है, यह अभाव अपने व्यवहारसे दूर करता है, ऐसा कह-कहकर इजा कुम्हारका बेवकूफ लडका अपने पिताका खून पीता रहता और खुद कीचडमे फँसता जाता।

इजा! अरे भले आदमी! अब भी उसे रोक ले! गुस्सेमे आकर तूने जो मौन धारण किया है, कम-से-कम उसे अब तो तोड! अपने ही कर्मोंसे यह छोकरा नाशकी ओर जा रहा है! इसे अब भी सँभाल!

शाम हो गयी थी। दिये जल गये थे। खेतोसे लोग घर लौट आये थे। नज़दीकके गाँवमे इजा कुम्हारका लडका उधार वसूल करने गया हुआ था। वह अभी तक नही लौटा था। ईंधन एकत्रित करने गये हुए बूढे इजाप्पाने अभी तक गाँवकी सरहदमें प्रवेश न किया था। और सुबह गाँव-से गयी मोटरके लौटनेका वक्त हो गया था।

कुम्हारके घरमे लालटेन जल रही थी। कुम्हारकी बहू घरमे अकेली थी। वह भीतर-बाहर आ-जा रही थी। चूल्हेपर उसने चायका पानी उबलनेके लिए रख दिया था, क्योकि अब मोटर आनेवाली थी। ससुर बाहर था। पति अभी तक न लौटा था। कुम्हारकी बहूको ही होटल सँभालना था। उसका रूप निखरा हुआ था, रूपवतियोमे भी जो खिलकर दिखे, ऐसी वह सुन्दरी भीतरके अँधेरे कमरेसे बाहर लालटेन टँगे बरामदे-मे आती थी और बरामदेसे उतरकर सडकपर नीम तले जाती थी और पूर्व दिशाकी ओर ताकती हुई थोडी देर वही खडी रहती थी। फिर भीतर जाकर चूल्हेके पास बैठती थी। चूल्हेकी लकडियाँ बाहर खीचकर आँच कम करती थी, और थोडी देरमे फिर तेज कर देती थी। पानी उबल रहा था और अभी तक मोटर नही आ रही थी। आग व्यर्थ जा रही थी। पानी उबल-उबलकर अब भाप बनकर उडना चाहता था। चीनी और चायके बर्तन भरे हुए थे। कप और प्लेट सजाकर तैयार रखे थे। और मोटर अभी तक नही आ रही थी। अस्थिर-सी कुम्हारकी बहू रह-रहकर

भीतर-बाहर हो रही थी।

और फिर ऐसा लगने लगा कि घर्र-घर्र-सी एक धीमी आवाज़ आ रही है। कान लगाकर ध्यानसे सुननेपर विश्वास होने लगा कि वह मोटरकी ही आवाज है। यह आवाज़ हो ही रही थी कि दूर सिरेपर प्रकाश दिखने लगा। काले आकाशकी पार्श्व-भूमिमे सफेद, स्वच्छ प्रकाश स्पष्ट पहचाना जाने लगा। घर-घराहट अधिक स्पष्ट हो गयी। प्रकाशके सिरेपर जगमगानेवाले दो लैम्प दिखने लगे। अभी तक सिर्फ घर्र-घर्रकी आवाज आ रही थी, परन्तु अब बीच-बीचमे हॉर्न भी चिल्लाने लगा। आ गया, उजेला नज़दीक आ गया। पेड-पौधोपर प्रकाश नाचने लगा। उलटी दिशामे जानेवाली मवेशियोकी आँखे हीरेकी तरह चमकी और उनके अङ्ग भी चमककर तुरन्त अदृश्य हो गये। घुमाव लेकर मोटर नालेमे उतरी। आवाज़ बढी। प्रकाशकी चमक कुम्हारके घरपर पडी। लालटेनकी आँखे चौधिया गयी। आ गयी। मोटर कुम्हारके घरके सामने लगे नीमके तले आकर खडी हो गयी, इस तरह खडी हो गयी जैसे उसकी आखिरी मजिल आ गयी हो। सब मुसाफिर सीधे तहसीलके सदर मुकाम तक जानेवाले थे। इसलिए कोई सवारी न उतरी। जल्दी-जल्दी सिर्फ सखाराम ड्राइवर उतरा। पैरोके फैन्सी बूट बजाता हुआ वह कुम्हारके होटलमे आया।

"क्यो, मालिक? लाओ, लाओ चाय ले आओ जल्दी। रुकनेका बिलकुल वक्त नही है। "आँ? कोई नही है क्या?"

और अँधेरे कमरेके द्वारसे कुम्हारकी बहू मीठे स्वमे बोली, "है क्यो नही? आइए न!"

"कहाँ गये है भोजरामजी? और, दादा भी नही दिख रहे है?"

"दोनो बाहर गये है। आइए न!"

धीमी, चोरकी तरह आवाज़मे कुम्हारकी बहूने कहा और सखाराम ड्राइवर बिल्लीकी तरह अँधेरे कमरेमे घुस गया। दीवारसे लगकर खडी

हुई उस औरतको उसने एकदम बाहोमे जकड लिया और उसका मुँह ऊँचा उठाकर उसने जी-भर चूमा फिर मुँह हटाकर होठोपर जीभ फेरी और फिर ……

और दूसरे ही क्षण इजा कुम्हारके मजबूत हाथोने सखारामकी गरदन पकड ली। उन लोहेके हाथोकी ऐसी ज़बरदस्त पकड थी कि सखाराम ची भी न कर सका। फिर खीचता हुआ वह उसे बिलकुल बाहर ले आया और एक शब्द भी न बोलकर मिट्टी खोदनेके फावडेसे ड्राइवरको पीटना शुरू कर दिया। उस मारकी पीडामे सखाराम बैलकी तरह चिल्लाने लगा। मोटरमे बैठे हुए मुसाफिर डरसे अपने स्थानपर बैठे-बैठे ही सिहरने लगे। गरदनपर छुरीका प्रहार होते समय बकरा जिस तरह चिल्लाता है, उसी तरहकी एक चिल्लाहट सारे गाँवमे सुनायी पडी। नज़दीक-पासवाले लोगोके कलेजे टूक-टूक हो गये। परन्तु इजाने अपना हाथ न रोका। वह उसे मारता ही रहा। सखारामकी हड्डियाँ टूट गयी। अब वह न चिल्लाता था, न हिलता था, मरा-सा पडा हुआ था। फिर भी क्रोधसे पागल हुआ इजाप्पा उसे अपने दोनो पैरोसे इस तरह रौद रहा था, जैसे मिट्टी रौद रहा हो। फावडेसे जिस तरह मिट्टी तोडते है, उसी तरह वह सखारामको तोड रहा था।

लोग समझ नही पा रहे थे कि यह भयकर मामला आखिर क्या है। सब-कहीं अँधेरा होनेके कारण कुछ भी ठीक तरह दिखायी नही दे रहा था। फिर भी मोटरमे बैठे हुए मुसाफिर भयसे चिल्ला पडे। और फिर सखारामको वही छोडकर, इजा मोटरकी तरफ झपटा। हाथका फावडा ऊपर उठाकर वह उसपर टूट पडा। और अपने गाँवका, अपने घरबारका, अपने बहू-बेटेका सर्वनाश कर देनेवाली उस डायनपर वह ताबडतोड फावडे बरसाने लगा। खन्नसे सामनेका शीशा टूट पडा। उसके टुकडे इधर-उधर बिखर गये। लैम्प फूट गये। …मुसाफिर भयसे चीखते नीचे उतरे और सिरपर पैर रखकर भागे। इजाके हाथका फावडा टूटकर टुकडे-टुकडे

हो गया,' तो उसने बडे-बडे पत्थर उठाये और उन्हे वह मोटरपर ज़ोर-ज़ोर-से फेककर मारने लगा। अन्तमे पसीनेसे लथपथ, गुस्सेसे थर-थर काँपता, जोर-ज़ोरसे हाँफता वह बलिष्ठ बूढा अपने घरमे आया और जमीनपर चुपचाप पड रहा।

अब गाँवकी रंगत बिलकुल बदल गयी है। मोटर सर्विस नियमित रूपसे जारी है। भोजा कुम्हारका होटल बन्द हो गया है। वह जीविका-के लिए गाँव छोडकर शहर जानेकी तैयारी कर रहा है। और नीमके तले बैठकर बरतन बनानेवाला, रात-दिन अपने काममे व्यस्त रहनेवाला इजाप्पा कुम्हार सखाराम ड्राइवरकी हत्या करनेके कारण फांसीपर लटका दिया गया।

इजाप्पा ! पगले ! प्रचण्ड वेगसे आनेवाले यन्त्रको रोकनेके लिए तूने क्यो व्यर्थ ही अपने प्राणोकी बाजी लगायी ?



धार

अधबुना नीला स्वेटर एक तरफ रखी तिपाईपर पडा था। पैरोके पास 'टाइम्स' रखा था। सामनेकी मेज़पर घडी टिक्‌टिका रही थी और अलसायी हुई शालिनी आराम-कुरसीपर बैठी थी। उसे बिलकुल अच्छा नही लग रहा था। बुनने और पढनेमे मन नही लगता था। नीद नही आ रही थी और स्वस्थ बैठा भी नही जाता था।

फूलदानके बासी फूलोकी तरह वह दिख रही थी। आराम-कुरसीके नये कपडेका रग लाल था और उसपर गहरे नीले रगकी धारियाँ थी। गोरी शालिनी सफेद वायलकी साडी और ब्लाउज़ पहने हुई थी। स्वच्छ पैरोको एकपर-एक रखे और हाथ सीनेपर रखकर खुले हुए दरवाजेसे वह सामने देख रही थी। अप्रैलकी गरम हवाके झोके भीतर आ रहे थे। शालिनीका चेहरा सूख गया था, लाल लाल हो गया था और उसकी सरल नासिकापर पसीनेकी बारीक बूँदें जम गयी थी। दोपहरके ढाई-तीन बजे थे। सामनेका खुला बागीचा और उस पारकी नगी टेकडी धूपमे चिलचिला रही थी। दरवाजेके सामनेसे जो रास्ता जा रहा था, उसपर बहुत देरसे सन्नाटा था। आस-पास किसी भी प्रकारकी आवाज़ न होती थी। पडोसी भी चुप थे। हाल ही मे श्री भिडे पूना बदलकर आये थे और बहुत कोशिशोके बाद यह घर उन्हे मिला था। डेक्कन जिमखानाके बिलकुल एक तरफ़का यह ब्लॉक भी शालिनीको बडा लगता था, क्योकि घरमे कोई तीसरा न था। पडोसियोसे परिचय न हुआ था और श्री भिडे सुबह साढे-नौ बजे साइकिलपर जाते तो शामको छह बजेके बाद ही लौटते थे। ऐसी हालतमे नवयौवना शालिनी घरमे क्या करे? कितना बुने, कहाँतक पढे और कबतक सोये?

विवाह हुए दो वर्ष हो चुके थे। वैसे श्री भिडे स्वभावसे बहुत अच्छे थे, परन्तु शालिनी जैसा चाहती थी, वैसे न थे। वह बडी बोलनेवाली और खिलाडी स्वभावकी थी। हँसना-खेलना, इधर-उधर जाना वह चाहती थी और भिडे जन्मसे ही शान्त स्वभावके सभ्य और बुजुर्गोंकी तरह बरताव करनेवाले थे। वे बहुत कम बोलते और थोडा ही हँसा करते। यह स्वभाव था उनका। शालिनीका चपल स्वभाव उन्हे खटका करता। शालिनीका जब देखो तब झकाझक कपडे पहनकर घूमने जाना, नाटक-सिनेमा देखना, नरगिस-राजकपूरके विषयमे बाते करना, होटलमे खाना खाना आदि बाते उन्हे पसन्द न थी और शालिनीको यही बाते बहुत अच्छी लगती थी। वह चाहती थी कि आफिससे आते ही उसका पति उसकी पसन्दका सूट पहने और उल्लाससे उसे अपने साथ घुमाने ले जाया करे। रास्तेसे चलते हुए एक-दूसरेके शरीर एक-दूसरेको स्पर्श करे। कही एकान्तमे हरियालीपर बैठकर दोनो मीठी-मीठी बातें करे। कॉफी हाउसमे जाकर कुछ नमकीन खाये। कभी-कभी 'जीवन' अथवा 'लकी' मे जाकर भोजन करे। और बेचारे भिडे दिन-भरके थके-माँदे घर लौटते तो उनकी यह इच्छा होती कि जूतो और मोज़ोके भीतर गरम हो गये पैरोको खोल टाई उतारे। पाजामा और ढीला कुरता पहनकर आराम-कुरसीपर शान्तिके साथ पडे रहे। बाते करनेकी उनकी इच्छा न रहती, यहाँतक कि अपनी तरुण पत्नीसे भी अधिक बातें करनेकी उनकी इच्छा न होती थी। इधर घर आते ही शालिनीकी बक-बक शुरू होती, "चाय बनाऊँ या कॉफी ?"

भिडेको लगता रोज़-रोज़ यह पूछनेकी क्या ज़रूरत है, जब कि मालूम है कि मै चाय लिया करता हूँ। चुपचाप चाय बना देनी चाहिए। मुँहसे सिर्फ 'हूँ' कहकर वे चुपचाप बैठे रहते। फिर रसोईसे नाचती हुई आकर शालिनी पूछती, "यदि कॉफी बनाऊँ तो क्या हर्ज़ है ? मै चाय पीते-पीते उकता गयी हूँ। कोई हर्ज है क्या ?"

चेहरेको शान्त रखनेका प्रयत्न करते हुए भिडे कहते, "कॉफी ही बना

लो। क्या हर्ज़ है ?"

फिर वह चट उन्हे चूम लेती और शरारत-भरी हँसी हँसती हुई भीतर चली जाती, कोई फिल्मी गीत गुनगुनाती हुई स्टोवमे हवा भरती।

चाय-कॉफी खत्म हुई कि तुरन्त वह घूमनेके लिए तैयार हो जाती।

तब फिर, "क्यो जी, आज साडी कौन-सी पहनूँ ? नीली चलेगी क्या ?"

"पहन लो न !"

"और ब्लाउज़ ?"

"पहन लो कोई भी।"

"मै जो पहनती हूँ वह आपको पसन्द नही आता। फिर रास्ते-भर कुडकुडाते रहते हो।"

"मै कुछ नही कहता। कोई भी पहन लो।"

"अच्छा, अब आप कपडे पहनिए मै तैयार हूँ।"

बेचारे भिडे, उन्हे तो जगहसे हिलना भी अच्छा न लगता था। फिर भी वह उठते। शान्तिपूर्वक कपडे पहनते। यह सब करनेमे उनमे कोई उल्लास न रहता, बिलकुल न रहता। शालिनीकी दृष्टिसे यह बात छिपी न रहती।

तुरत वह कह देती, "आपकी इच्छा घूमने चलनेकी नही है क्या ? हाँ, मै ज़ोर-ज़बरदस्ती नही करना चाहती।"

"पर कौन कहता है ऐसा ?"

"कहनेकी क्या जरूरत है ? चेहरेसे ही दिख रहा है।"

"क्या ?"

"मुहर्रमी सूरत बनाकर चलनेकी जरूरत नही। आप न चले, मै अकेली जाकर बाज़ारसे सब्जी खरीद लाती हूँ।"

इतना हो जाता। फिर भी शान्त स्वभाववाले भिडे नाराज न होते थे। धीमी आवाज़में पत्नीको समझा-बुझाकर वे घूमनेके लिए निकल पडते। जिन बातोको उन्हे खुद करनेकी इच्छा न होती, पर जो बाते शालिनीको

पसन्द रहती वे बाते वह किया करते। उनकी इच्छाके विरुद्ध भी यदि कुछ हो जाता, फिर भी क्रोध न कर दूसरे व्यक्तिके उस प्रकारके व्यवहारका सीधा अर्थ लगानेका प्रयत्न करनेकी आदत उन्होने अपने-आपमे डाल ली थी। शालिनी जरा चचल है, अधिक बातूनी है। पतिके सिवाय बाते करनेके लिए घरमे दूसरा कोई नही है। दिन-भर उसे अकेला ही रहना पडता है। इसलिए जब मै घर आता हूँ तो उसका हर्षविभोर हो जाना स्वाभाविक ही है। इसमे उसकी कोई गलती नही है। एक-दो बच्चोकी माँ बननेपर यह आप-ही-आप कम हो जायेगा। यह सब सोचकर वह बहुत नाराज न होते थे। फिर भी उनके चेहरेपर अप्रसन्नताके भाव झलक उठते थे। कुछ दिनोसे तो ऑफिससे लौटते तो कपडे न उतारकर ही बैठे रहते और शालिनी तैयार हुई कि घूमनेके लिए चल पडते। कभी-कभी आते ही पूछते, "जूते उतारूँ या घूमने चलना है?"

और उनका इस तरह पूछना शालिनीके हृदयमे चुभ जाता था। वह बहुत नाराज़ होती। उसे लगता कि श्री भिडेको उसके साथ घूमना अच्छा नही लगता। उसका सम्पूर्ण वैवाहिक जीवन एक दु खभरी कहानी है। अपने पतिके साथ उसकी नही पटती है। उन्हे उसके प्रति प्रेम नही है। वह बडी अभागिनी है कि उसे शौकीन, मज़ा उडानेवाला, रगीन, होशियार, खिलाडी और उत्साही पति नही मिला। और अब जन्म-भर यह बेडी नही तोडी जा सकेगी। इस तरहके विचार उसके मनमे उठते और उसे स्वय अपने ही ऊपर करुणा आ जाती। फिर उदास मनसे वह आराम-कुरसीपर बैठी रहती और ऐसे समय उसकी बडी-बडी आँखोमे आँसू आ जाते।

बहुत-कुछ सोचकर अब शालिनीने रोज़ घूमने जानेका आग्रह छोड दिया था। पिछले चार दिनोसे उसने श्री भिडेको, जैसी वह चाहते थे, उसी तरहकी स्वस्थता दे दी थी। और वह भी नाराज़ न होकर, चेहरेपर नाराज़ीके थोडे भी भाव न दिखाकर। उन्हे अच्छा लगता है इसीलिए वह

ऐसा सभ्यतापूर्ण बरताव करती थी। वह जानती थी कि इस तरहके बरताव-से श्री भिडेको सन्तोष प्राप्त होता है।

उस दिन दोपहरको शालिनी इसी तरह बैठी हुई थी। अप्रैलकी धूप-मे सारा वातावरण थका-सा हो गया था। चारो ओर शान्ति फैली हुई थी और उसे भग करनेवाली एक आवाज़ एकाएक उठी, "धाऽऽर – चाकू-कैचीको धार धरा लो – धाऽऽऽर –"

यह आवाज शान्तिको चीरती गयी। यूँ ही बैठी शालिनीका शरीर सिहर उठा। चिल्लानेवालेकी आवाज़ अच्छी कमायी हुई थी – साफ, ज़ोर-की और पतली। भरी दुपहरीमे यह पागल व्यक्ति क्यो घूम रहा होगा। इस समय कोई घरके बाहर भी न निकलेगा। इमे काम देगा कौन ? कौन उठेगा और इसे चाकू-छुरी देगा ?

फिर बिलकुल पाससे आवाज आयी, "धाऽर – चाकू-छुरीको धार धरा लो—धाऽऽऽर।"

शालिनीकी आँखें रास्तेकी ओर अटक गयी और उस तरफसे उसके आनेकी बाट देखने लगी।

और वह आया। पीठपर धार लगानेकी मशीन – शरीरमे सिर्फ एक बनियान और नीले-नीले रगका हाफ पैण्ट। पैरोमे पुराने सामानकी दुकान-से खरीदा हुआ मिलिटरीका मोटा जूता। पीठपर लदे बोझके नीचे दबकर लम्बे-लम्बे डग भरकर चलते-चलते उसने शालिनीके खुले हुए घरकी ओर देखा और ठहरकर सामने आकर पूछा, "कुछ है क्या बाई साहब—चाकू-छुरी, कैची—?"

शालिनीने गरदन हिलाकर 'ना' कह दिया। फिर भी वह वही खडा रहा। थोड़ा आगे बढकर फेन्सिड्के खम्भेको एक हाथसे पकडकर खडा रहा।

शालिनीको लगा, मैने सिर्फ गरदनसे इशारा किया, इससे शायद वह मेरी बात न समझा हो। इसलिए वह आवाज़ ऊँची उठाकर बोली, "नही, कुछ नही।"

इस बीच वह खुले फाटकसे भीतर आ गया। द्वारके सामने आया। व्यवस्थित ढगसे उसने पीठपर लदी मशीन उतारकर नीचे रख दी। और सिरका मुंडासा खोलकर उससे मुँह पोछते हुए बोला, "हा हा कैसा धूपका तमाचा पड़ रहा है !"

बाहर धूप थी ही। कम्पाउण्डके भीतर आया तो धूपमे थोडी भी छाया न थी।

तब फिर उसने बडे अदबसे पूछा, "कुछ है क्या बाई साहब, हँसिया-छुरी ?"

"नही रे भाई।"

"देखिए कितनी सुन्दर बना देता हूँ। आपने आज तक दूसरोके काम देखे होंगे और अब मेरा भी काम देखिए।"

अन्य फेरीवालोकी तरह चिमड़ापन उसमे था, परन्तु वह मनुष्यको चिढा देनेवाला न था। उसके बोलनेका अदब, उसके चेहरेपरकी सभ्यता, इसके कारण शालिनीपर एक प्रकारका नैतिक दबाव पडा। यह बेचारा भरी दोपहरीमे इतना बोझा लेकर घूम रहा है। इसे दरवाजेसे खाली हाथ कैसे लौटाऊँ ? दुखसे भीगे स्वरमे उसने कहा, "नही है कुछ।"

"ठीक है, रहने दीजिए। लेकिन अब जब दोबारा आऊँगा तो आपके यहाँका काम जरूर मिलना चाहिए बाई साहब, हाँ, कामकी तारीफ होगी ऐसा ही घर है यह।"

वह नवजवान था, ऊँचा और गठीला। कडी मेहनत करते रहनेसे उसके हाथ और पिण्डलियोके स्नायु सुडौल बन गये थे और उसका लम्बा अधगोरा चेहरा धूप और हवाकी मारसे झुलसा हुआ था, रूखा-सा।

अपने पतले होठोपर उसने जीभ घुमायी। मुँडासा फिर सिरपर बाँधा और इधर-उधर देखते हुए बोला, "पानीका नल है क्या बाई बँगलेमे ?"

"हौज है। पर उसका पानी अच्छा नही है। प्यास लगी है क्या ?"

"जी हाँ, हौज़ किधर है ? पानी खराब है तो रहे, किधर है ?"

शालिनीको जाने क्या लगा। बोली, "ठहरो थोडा।"

इतना कहकर वह भीतर आयी और सुगन्धित ठण्डा पानी एक लोटेमे भरकर ले आयी। उसने अपना बरतन सामने बढाया। उस ठण्डे पानीको गट-गट पीते हुए उसके गलेकी घाँटी हिल रही थी। उसकी ओर देखते-देखते शालिनीको लगा कि इसे कुछ काम देना चाहिए। और वह भीतर गयी। आलू प्याज़ काटनेकी छुरी लेकर बाहर आयी। "लो, इसकी धार बना ही दो।"

जैसे कोई काँचकी चीज़ हाथमे ली जाये, उसी तरह उसने वह छुरी सावधानीसे अपने हाथमे ली। उसे उलट-पलट करते हुए कहा, "बडी सुन्दर छुरी है, बाई साहब ! राजर्स है। देखिए न पढकर। मै पढा-लिखा नही हूँ, फिर भी माल हाथमे लेते ही पहचान लेता हूँ। दस-बारह रुपयेसे कममे यह माल न मिलेगा।"

उसकी बात सच थी। कीमत और मेकर उसने ठीक बताये थे। शालिनीको ताज्जुब हुआ जो उसके चेहरेपर उमड़ उठा। चौखटपर हाथ रखे वह खडी रही।

"पर धार बनानेका क्या लोगे ?"

उसके चेहरेकी ओर न देखते हुए उसने अदबसे कहा, "काम देखकर जो ठीक समझें, दे दीजिएगा, बाई। मै अपना काम साफ करता हूँ और दाम वाज़बी लेता हूँ।"

"वाज़बी यानी कितना ?"

"यह क्या आपको बतानेकी ज़रूरत है ? क्या आपने कभी धार नही रखायी होगी ?"

और वह खुद ही खुशीसे हँसा। चाक गिर्र-गिर्र घूमने लगा। गरदन टेढीकर घूमती शानपर वह छुरीकी धार टिकाने लगा। चर्चर्-खर्खर् आवाज होने लगी और चिनगारियाँ उडने लगी। छुरीकी धार चमकने लगी।

शालिनी टकटकी लगाकर देख रही थी। उसके खुले हाथ जैसे-जैसे चल रहे थे उसके दण्डके स्नायु भी वैसे ही फूल रहे थे, मुड रहे थे। पत्थरपर फौलादकी होनेवाली आवाजके कारण कभी-कभी शालिनीकी देहको फुरफुरी-सी आ जाती। कभी-कभी वह आँखे बन्द कर लेती। धार-वाला छुरीको एक बार इस तरफसे और एक बार उस तरफसे पत्थरपर टिका रहा था। धार चमकती जा रही थी।

बीच हीमे उसने एक बार धारपर अपनी अँगुली फिराकर देखा। शालिनीके हृदयमे धक-सा हो गया। परन्तु उसकी अँगुलियोसे खूनकी धार नही बही।

घूमती हुई शानपर फिर छुरीको रखता हुआ वह बोला, "इतनी ही घिसना चाहिए जितनी कि धारके लिए ज़रूरत है। सानकी घिसाईका पता न चलना चाहिए। हाँ, बाई साहब, इसीमे तो सच्ची कारीगरी है और धार टूटनी न चाहिए। आप जैसे बडे-बडे लोगोके घर यदि काम करना है तो हाथमे सफाई अव्वल दरजेकी चाहिए, बाई साहब। सिर्फ पैसा लूटनेके लिए ही रोजगार करना ठीक नही।"

वह कह रहा था। फिर भी उसकी गरदन नीचे झुकी हुई थी। आँखें छुरीपर थी। अन्तमे तपती धूपमे छुरीकी धार आँखोको चकाचौध करने लगी।

शालिनीने पूछा, "क्यो जी, तुम्हारा नाम क्या है?"

"हुसैन, बाई साहब।"

"कहाँके हो तुम? यहीके हो क्या?"

"जी नही, हैदराबादमे एक गाँव है, वहाँका हूँ।"

"फिर इतनी दूर कैसे चले आये?"

"पेटके लिए आना पडता है, बाई। यह तो अच्छा है कि अभी मेरे पीछे बीबी-बचचोका कोई झंझट नही है। अकेला हूँ ..."

इस बीचमे धार हो गयी थी। छुरीको कपडेसे पोछकर उसने सीढी-

पर रख दिया। बोला, "लीजिए बाई, अब आप भले ही कागज़से भी पतली चकती इससे खुशीसे काटिए। एकदम तेज़ हो गयी है।"

शालिनी आनन्दसे नाचती हुई भीतर गयी। छह आने लाकर उसने हुसैनको दे दिये और कहा, "ठीक है?"

वह सिर्फ हँसा, एक मधुर और सुन्दर हँसी। फिर शालिनीने दो आने और उसके हाथपर रख दिये।

सलाम करके वह खडा हुआ। पुन उसने वह भारी-भरकम मशीन अपनी पीठपर उठायी और उसी भरी दोपहरीमें लम्बे-लम्बे कदम बढाता हुआ वह नौजवान और सुन्दर धारवाला व्यक्ति चला गया।

दूरसे आवाज़ सुनायी दी "धाऽऽऽर—चाकू, कैंची, छुरीकी धार धरा लो, धाऽऽऽर—"

शामको श्री भिडे थके-माँदे घर आये और बूटके लेस खोलते हुए कुरसीपर बैठे। तभी तेज़ीसे खुला दरवाज़ा बन्द कर शालिनीने उन्हे कसकर अपनी बाँहोमे भर लिया और चुम्बनोकी वर्षा करती हुई बोली, "कबसे आपकी राह देख रही हूँ आज?"



व्यक्ति निबन्ध

चिड़ियाँ

करीब-करोब दस वर्ष पहले मैंने अपना गाँव छोडा और अनेक मनुष्यो, वस्तुओ और पशु-पक्षियोसे मेरा सम्बन्ध टूट गया। प्रत्यक्ष रूपमे मै उनके सहवाससे वचित हो गया। फिर भी उनकी यादे बनी रही। जैसे-जैसे समय बोत रहा है, वैसे-वैसे ये यादें भी धुँधली होती जा रही है। और कुछ वर्षोंके बाद उनमें-से कुछ यादे शायद रहेगी ही नही, कौन कह सकता है ?

मैने गाँव छोडा और घरकी चिडियोसे मेरा नाता भी टूट गया। यह बात नही कि शहरमें चिडियाँ नही है। मनुष्य जहाँ-जहाँ भी रहता है वहाँ-वहाँ चिडियाँ होती ही है, लेकिन शहरकी चिडियो और कौवोकी तरफ ध्यान कहाँ जाता है ? हमेशा चहकनेवाली, बेढब रूपवाली चिडियो-की अपेक्षा ध्यान आकर्षित करनेवाली कितनी ही अन्य बाते शहरोमे होती है। चिडियोकी ओर देखता कौन है ? और देखनेके लिए उतना अवकाश भी किसे होता है ?

माडगूल गाँवमे हमारा पुराना घर है। उसमे चिडियाँ बहुत थी, इतनी कि ऐसा लगता जैसे सारा घर चिडियोका ही है और हम उसमे मेहमान-की तरह रहते है। मेरे छोटे भाइयोको दूध-भात खिलाते समय माँको 'आ री चिडिया, आ रे कौवा' पुकारकर, काल्पनिक चिडियोको कभी नही बुलाना पडता था। सुबहसे शाम तक अनेक चिडियाँ घरमे घूमती रहती। फागुनके महोनेमे खलिहान बनते। ज्वारके बोरोसे घर भर जाता। इस मौसममे हमारा सौझिया दानोसे भरे हुए भुट्टोंका एक बडा-सा गुच्छा लाकर बरामदेमे द्वारके दर्शनीय भागके सामने लटका दिया करता। पानी रखनेके लिए मिट्टीका एक थाल भी इन भुट्टोके समीप टाँग दिया जाता। मौसममे

जो अनाज हमारे घरमें आता, उसे हम साल-भर तक चुकाते, परन्तु ये उपद्रवी चिडियाँ ज्वारके दानोसे भरे हुए उस गुच्छेको एक महीनेके भीतर ही समाप्त कर देती। 'यह चीज़ तो अपने घरकी है, इसे ज़रा हिसाबसे खाये जिससे कि गाढे वक्तपर यह काम आ सके, तबतक बाहर घूमकर ही पेंट भरने चाहिए' ऐसा कोई विचार उनके दिमागमे ही न आता। महीने-भरके भीतर ही भुट्टोके उस गुच्छेको वे झकझोर डालती। एक-एक दाना चुग लेती और सावनमे खलिहानसे भुट्टोकी मिसाई होनेके बाद जब अनाज घरमे लाते, तबतक इन भुट्टोमे एक भी दाना न बच रहता और चिडियो-द्वारा खोखले कर दिये गये भुट्टोके खाली छूँछने हवासे हिलते रहते।

पुराने घरके भीतरी आँगनमे बाजीनानाके द्वारा लगाया गया मीठे नीमका एक पेड था। उसपर इन चिडियोका बसेरा रहता। सवेरे मेरे पिताजी जागकर बिस्तरपर बैठ जाते। एक ऊनी कम्बल ओढकर प्रभाती गाते। इस समय मुर्ग और कौवे जागकर बोलने लगते। मैना चहका करती। कठफोरवे हुँकार भरा करते। परन्तु चिडियाँ अभीतक गहरी नीदमे सोयी रहती। हम बच्चोकी तरह चिडियोको भी जल्दी उठनेमे तकलीफ हुआ करती। पिताजीकी प्रभाती समाप्त हो जाती। माँ सेर-डेढ सेर पीस लेती। आँगनमे गोबर मिले पानीका छिडकाव हो जाता। दिन निकल आता और फिर चिडियाँ धीरे-धीरे जागती। जागनेके बाद भी हम लोग बिस्तरपर यूँ ही पडे रहते। उसी तरह चिडियाँ भी अंग फुलाकर टहनियोपर बैठी रहती। आलस छोडकर जल्दी उठ पडे, और पेट-पानीकी चिन्तामे लग जाये, यह उनसे न होता था। दिन जब थोडा चढ जाता और पूरबकी ओरवाले नये बरामदेकी दीवालपर कुनकुनी धूप पडने लगती, तब चिडियाँ पेड छोडकर नीचे आती। हर वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको घरमे पताका फहरानेके लिए एक लम्बी लाठी हमारे घर थी। यह लाठी विशेष रूपसे इसी कामके लिए सुरक्षित रखी जाती थी। जब उस

त्यौहारको उसका काम हो जाता तो हम उसे बरामदेमे आडी टाँग' दिया करते और फिर धोये हुए कपड़ोको सूखनेके लिए फैलानेमे वह लाठी काममे आती। नीमसे नीचे उतरी हुई चिडियाँ उस लाठीपर जाकर बैठ जाती। गलेके आस-पास काले रगका सुन्दर-सा टीका धारण किये और मटियाले रगका कोट पहने हुए नर-पक्षी सवेरे-सवेरे ही बडे रगपर आते। नज़दीक बैठी हुई चिडियोको धक्के मारते। चिडियाँ बेचारी सकुचाकर एक तरफ हट जाती। धीमी आवाज़मे बोलकर नापसन्दगी दरशाती। परन्तु नर-पक्षी ऊधम मचाते, अधिक धक्के मारते और 'कानडो' भाषामें जोर-ज़ोरसे कुछ बोलते। चिडियोको सब कुछ सहना पडता। वे उस लाठीपर इधरसे उधर सरकती, झीखती, आपसमें चहक-चहककर बोलती हुई पंख और चोचे साफ करती। जब चिडियोका यह खेल चलता रहता उस समय लाठीकी छाया बरामदेकी दीवालपर पडती रहती। मिट्टीसे लिपी हुई दीवालपर डोलती परछाइयाँ चित्रपट-सी लगती। लम्बी लाठी और उसपर बैठी हुई दस-पाँच चिडियाँ, उनका फुदकना, धक्के मारना और चोचमें चोच डालना, यह सब देखते हुए बडा मज़ा आता। जीमे आता कि उन चिडियोको जाकर पकड लें।

अपने सफेद पेट धूपकी तरफ करके चिडियाँ लाठीपर बैठती। जब धूप ले चुकती, तो उन्हें भूख लगती। इसी समयके लगभग हमें भी भूख लगती। बासी रोट, प्याज और ताज़ा छाँछ लेकर हम सब भाई-बहने बरामदेकी धूपमे नाश्ता करने बैठते, तो कुछ चिडियाँ भी दो पैरोपर कूदती हुई थालीके सामने आ जाती। गरदने टेढी करके थालीकी ओर और हमारे मुँहकी ओर देखने लगती। फिर क्या हम उन्हे रोटीका चूरा न देते? पुराने बरामदेमे अनाजके बोरे सजे रखे रहते है। बीस-पचीस चिडियाँ उनपर बैठकर भीड लगा देती है। चोच मार-मारकर बोरेमें सूराख़ कर देती और अनाज खा जाती। खाते समय आपसमे उनकी बाते भी चलती ही रहती। कुछ चिड़ियाँ मँजघरेमें घुस जाती। जिस बरतनमे माँ चावल धोती

वह बरतन यदि खुला दिख जाता तो चिडियाँ अपना सन्तुलन सँभालती हुई उस बरतनके किनारेपर बैठ जाती और चावलके दानें चुरा-चुराकर खाती। टोकरी या सूपमे ताज़ी सब्ज़ी दिख जाती, तो उसके कोमल-कोमल कोपल खुटक जाती। कही भी सन्तुलन सँभालकर बैठ जाना, लगातार बकवास करते रहना, जो भी दीख जाये उसे चुग जाना उनका यह काम बेखटक चलता रहता। सहनमे, बरामदेमे, मँजघरेमे, रसोईमे, अहातेमे, सब--कही उनका उपद्रव होता रहता, जैसे लुटेरोका कोई गिरोह टूट पडा हो।

भोजनके बाद तीसरा पहर आ जाता। फिर भी उनकी धीगा-धीगी बन्द न होती। फिर उनके पेट भर जाते। कुएँपर रखी डोलचीपर बैठकर वे पानी पी लेती। और फिर बरामदेमें लौट आती। अनाज खा लिया, पानी भी पी लिया। अब तो उन्हे थोडा विश्राम करना चाहिए? पर नहीं! फिर वही फुर्र-फुर्र इधरसे उधर उडना, यह खेल शुरू हो जाता। जिस जगह एक बैठती उसी जगह दूसरी भी बैठना चाहती और अगर दोनो एक जगह आ जाती तो उन दोनोका आपसमे जमता न था। पखोकी फडफडाहट और चोचोकी चहक निरन्तर जारी रहती। छुआ-छूत, मार-पीट और आपसी झगडे ज़ोर पकडते। भोजनके बाद कम्बल या दरी बिछाकर घरके जेठे-सयाने थोडी देरके लिए सो जाते। हमे भी डाँट-डूँटकर और धमकी दिखाकर सुला देते। सब ओर शान्ति छा जाती। लेकिन चिडियोका ऊधम बन्द न होता। उनके शोर-गुलसे बहुधा गुस्सा न होनेवाले मेरे पिताजी भी तग आ जाते। धोतीका एक छोर हवामें उडाते हुए चिडियोको डाँटते, "शुक्-शुक्! यह क्या शोर मचा रखा है? हमें आरामसे जरा सोने भी तो दो।"

पर इतनी-सी डाँटसे चिडियाँ क्या माननेवाली थी? तालियाँ बजाये, लकडियाँ ठोकें, तब कही खूँटियो, ताखो और दराज़ोको छोडकर वे बाहर भागती, वह भी घडी-भरके लिए ही। डाँटो, गालियाँ दो, उनपर कोई असर नही, उन्हे कोई शर्म नही। फिर एकके बाद एक उडती हुई, शोर-

गुल मचाती हुई बीस-पचीस चिडियाँ भीतर घुस जाती। फिर पहलेसे भी दूने जोरसे उपद्रव मचाना शुरू कर देती।

शामके साढे चार बजते ही दानेकी तलाश पुन. शुरू हो जाती। कुछ नर और कुछ मादा बाहर निकल पडते। गाँवके घरो, लोगोके आँगनो और गाँवके नज़दीकवाले खेतोको छानकर शामको करीब साढे छह बजे मवेशियोके घर लौटनेसे पहले ये अपने घर लौट आती। नीमपर भीड लग जाती। ऐसी आवाज़ होती रहती जैसे 'चम्पाषष्ठी'का 'खण्डोबा'का मेला लगा हो। 'मै यहाँ बैठूँगी, तू वहाँ बैठ, यह मेरी जगह है' इस तरह तू-तू मैं-मैं कोई आध घण्टे तक होती रहती और फिर सब तरफ शान्ति छा जाती। शोर-गुल और झगडोसे ऊबकर कुछ चिडियाँ घरके भीतर आ जाती। खूँटियोपर या छतकी दराज़ोमे आँखे बन्द कर बैठी रहती। इसी समय हम भी सोनेकी तैयारीमे लग जाते। बिस्तरपर पडे-पडे हममे-से किसीकी नज़र खूँटीपर बदन फुलाये बैठे हुए नर-पक्षीकी ओर जाती। दिन-भर जिसका मुँह थकता न था, अब वह बिलकुल देवकी तरह खूँटीपर बैठा रहता। जी करता कि उसके बदनपर चद्दर डालकर उसे पकड ले। बिस्तर छोडकर हम उस प्रयत्नमे भी लग जाते। बहुत बार हमे इसमें सफलता न मिली। कभी नर-पक्षी चकमा दे देता तो कभी माँ चिल्ला पडती। अरे ओ चाण्डालो, गूँगे पक्षियोको क्यो सताते हो रे ? रातको बेचारे अन्धे हो जाते है वे। भागो, छोड दो उसे।"

माँ हमपर तो चिल्ला पडती, पर हमारी मिनी बिल्लीसे कुछ न बोलती। हमारी बिल्ली दिन-भर चिड़ियोकी ताकमें बैठी रहती। दोनो समयका दूध-भात खाकर भी उसकी चिडियोकी चाह कम न होती। लेकिन चिडियाँ भी उसे खूब पहचानती थी। वे भी ऐसा बहाना करती जैसे बरामदेमे, आँगनमे नाचते-नाचते वे खानेमे खो गयी हैं और कोनेमें छिपी बैठी बिल्लीकी तरफ उनका कोई ध्यान ही नही है। लेकिन सच पूछा जाये तो उनका पूरा ध्यान रहता। हमेशा वे सजग रहती। इसलिए बिल्ली

उनका शिकार न कर पाती। दिनमें तो चिडियाँ बिल्लीका कुछ न चलने देती। हाँ, रातके अँधेरेमे जरूर कभी-कभी मिनोको मौका मिल जाता। जमीनपरसे कूदकर ताखेमे बैठी चिडियापर, और ताखेसे कूदकर खूँटीपर बैठी चिडियापर उसकी यह कठिन कोशिश सफल हो जाती। और दूसरे दिन उस स्थानपर मेरी माँको चिडियोके नुचे हुए पख दिखायी पडते। कभी रातको एकदम, कोई कल्पना न होते हुए भी नीमपर सोयी हुई चिडियाँ फुर्रसे उडती और दूसरे दिन मिनी बिल्लीकी वासना दूधपरसे उड जाती !

हमारी चद्दर और मिनीकी उछालसे बचनेके लिए कुछ चिडियोने कुएँके भीतर अपने घोसले बना रखे थे। लेकिन पानीका भी क्या भरोसा ? हर दो-तीन महीनोमे पानी महकने लगता और कुआँ खाली करना पडता। कभी-कभी कुएँकी पुरानी दीवालोकी सन्दमे साँप घुस जाता और चिडियो-पर सकट आ जाता। दो-चार कम हो जाती।

हमारे नहानेके बाद अहातेकी नालीमे जो गन्दा पानी बहता, उसे देखकर चिडियोपर भी नहानेकी सनक सवार होती। नालीमे जब पानीका बहाव कुछ कम पड जाता, तो जिस तरह मनुष्य नीचे झुककर चुल्लूसे पानी उछालकर अपनी पीठपर डालते है, उसी तरह ये चिडियाँ भी नालीके किनारे बैठ जाती और पखसे पानी उछालकर अपने बदनपर डालती। वे कोई रोज-रोज नही नहाती थी, लेकिन जब भी नहाती, बडे आनन्दसे नहाती। वर्षाका पानी शरीरपर लेकर छोटे बच्चे जिस तरह 'छुआछूत' खेलते है, हँसते है और चिल्लाते हैं, उसी तरह नालीके बहते हुए पानीमे नहाते समय ये चिडियाँ भी खूब खेला करती। लडकोकी तरह चिडियाँ भी धूलमे खेलना पसन्द करती है। घर लीपनेके लिए सफेद मिट्टीका ढेर ज्यो ही सहनमे पड जाता कि चिडियाँ मजेसे उसपर खेला करती। सारे बदनपर मिट्टी लपेट लेती। सिरमे मुट्ठी-मुट्ठी-भर मिट्टी भर लेती। नालीके पानीमें नहानेसे उन्हे जितना सुख मिलता, मिट्टीमे खेलनेसे भी उतना ही।

नीड बनाने और अण्डे देनेके बारेमें चिडियोका क्या कोई निश्चित समय होता है, यह मै नही जानता। शायद पूरे साल-भर तक यह काम होता रहता होगा। जहाँतक मुझे याद है अप्रैल और मईके महीनोमे चिडियाँ अपने नीड बनानेमे तेजीसे जुट जाती है। बहुत-से अन्य पक्षी अपने नीड पेडोपर बनाते है। परन्तु चिडियोका मनुष्योसे अधिक घरोबा होता है। मनुष्यो-द्वारा बनाये घरोमे ही जगह देखकर वे भी अपने घर वही बनाती है। मनुष्यो-द्वारा उचित स्थान देखकर बनाये घरोमे भी चिडियो-को अपने नीड बनानेके लिए कोई अच्छा स्थान जल्दी नही मिलता। शहतीरोमें मौकेकी जगह ताकनेमें ही उनका बहुत-सा समय खर्च हो जाता है। कुछ जोडे नीड बनानेके लिए ऐसी अजीब जगह पसन्द करते है कि कुछ न पूछिए। उन बेचारोके ध्यानमें ही यह नही आता कि वहाँ उनका नीड न बन सकेगा। गाँव-भर भटककर, ये चिडियाँ सुनलियोके टुकडे, मुर्गियोके पख, सूखी घास और कपास आदि बहुत-सी फालतू चीज़े चोचोमें पकडकर लाती और पागलकी तरह उस अनुचित स्थानपर एकत्रित करती जाती है, पर इमारत उठती नही है। घर बनानेका बहुत-सा सामान व्यर्थ चला जाता है। जब चिडियोके नीड बनानेका काम शुरू होता, तब बरामदा साफ करते समय घर बनानेका ऐसा बहुत-सा सामान मेरी माँकी बुहारीपर चढकर बाहर घूरेपर चला जाता। बहुत-से दूसरे पक्षी घर बनानेकी कलामे पारगत होते है। इस विद्यामे बया पक्षियोका हाथ तो कोई भी नही पकड सकता। वे अपना घर इतना सुन्दर और शानदार बनाते है कि अच्छे-अच्छे कारीगर भी दाँतो तले अँगुली दबाकर रह जाते है। ये चिडियाँ भी आखिर बयाकी ही जातिकी हैं, परन्तु नीड कैसे बनता है, इसका उन्हे तनिक भी ज्ञान नही। एक शिशु कथा है, "एक थी चिडिया और एक था कौवा।" उसमें कहा गया है कि चिडियाने मोमका घर बनाया और वर्षामे निर्वासित हुए एक कौवेको उसमे आश्रय दिया। पर यह बात सच नही मालूम होती। घर बनानेकी विद्या चिडियाँ जानती

ही नही । उन्हे यह विद्या बयासे सीखनी चाहिए ।

अप्रैल और मईमे घर बनानेका काम धडल्लेसे होता रहता । ताशके बँगलेकी तरह ये घर बार-बार ढह जाते । नर और मादा दोनो जी तोडकर परिश्रम करते और फिर किसी दिन चिडिया अपने नन्हे घरके भीतर तीन नन्हे-नन्हे अण्डे देती । लम्बे-चौड़े घरमे अण्डे ठीकसे रहते, परन्तु अडचन-की जगहमें बने हुए घरोमे रखे अण्डे अपने-आप-ही माँ-बापके धक्केसे नीचे गिर पडते और फूट जाते । वही हाल होता जैसे कोई अनाडी माँ नीदमें अपने बच्चेको अपने ही शरीरके नीचे दबोच दे ।

और जल्दी ही शहतीरमे-से चूँ-चूँ आवाज़ सुनायी देने लगती । बच्चोके खाने योग्य अन्न खोजनेमे नर और मादा दोनो दिन-भर व्यस्त रहते । छोटी-छोटी मुलायम चीज़े चोचोमें पकडकर लाते, घरके बाहर बैठकर सिर्फ सिर ही उसके भीतर डालते, बच्चे अपनी भाषामें "मुझे दो, मुझे दो" कह-कर शोर मचाते, कोई एक ही बच्चा सबका-सब अन्न खा जाता और दूसरे बच्चे चोच पसारकर रोते रहते । चिडिया फिर बाहर जाती और फिर कुछ ले आती और यह क्रम चलता रहता । चिडियाके बच्चे धीरे-धीरे बढने लगते ।

कभी-कभी एकाध चिलबिला बच्चा भी अण्डेकी तरह टपसे नीचे जा गिरता और प्राण त्याग देता । कोई कडा बच्चा ऊपरसे नीचे गिरकर भी जिन्दा रह जाता । बिना पख फूटा वह लाल-सुर्ख मासका गोला चोच खोलकर हमारी ओर देखता । नर और मादा चिडिया बार-बार हमारे सिरपर मँडराते रहते । उस बच्चेको पानी पिलाकर फिरसे नीडमे रहने-का प्रयत्न हम किया करते और उस प्रयत्नमे वह बेचारा अपनी जानसे हाथ धो बैठता । कुछ बच्चे बडे होकर नीडमे-से नीचे उतर आते । उनके माँ-बाप उन्हे उडाना सिखाते । बच्चे डरा करते और नीचे गिरते । बहुत कोशिशोके बाद उन्हे उड़ना आ जाता । जब उडना आ जाता और पंखोमे काफ़ी ताकत पैदा हो जाती, तो वे बच्चे अपने माँ-बापको भूल जाते

और हवामे उड जाते । अपनी-अपनी गृहस्थी अलग सजाते । अपने-अपने पेट भरते और फिर उन्हे अपने माँ-बापकी याद भी न आती ।

जबतक मै पुराने घरमे था और मेरे पखोमे ताकत नही आयी थी, तबतक ये सब बाते मै देखा करता था । आगे चलकर वह पुराना घर भी गया, वह नीम भी न रहा और चिडियोसे जो मेरा सम्बन्ध था, वह भी टूट गया ।

पिछले अप्रैलमे मै अपने पूनाके घरमे बीमार पडा । पैरका ऑपरेशन हुआ था, इसलिए मुझे कई दिनो तक चारपाईपर पडा रहना पडा । पैर-के कारण मै सब तरफसे लँगडा हो गया था । इसलिए मै चल नही सकता था । मुझे नीद नही आती थी । दिन-भर दर्द सहता हुआ बिस्तरपर पडा रहता ।

इस साल गरमी बडी तेज़ थी । सोनेके कमरेसे मै अपना बिस्तर उठा-कर लिखनेके कमरेमें ले आया था । दरवाजेपर लगी 'मनोरजनी'की फूलो-लदी लाल शाखा देखता और खिले हुए मोगरोकी खुशबू लेता हुआ मै चारपाईपर पडा हुआ था कि एक दिन मेरे घरमे चिडियोके पाँच-छह जोडे घुस पडे और सारा घर खोजने लगे। उनके शोर-गुलसे सारा घर भर गया ।

मुझे बडी खुशी हुई । कितने ही दिनोके बाद ये लोग फिर मेरे पास आये थे । परन्तु यह घर हमारे पुराने घरकी तरह चिडियोके लिए सुभीतेका न था । यहाँ शहतीर, दराज़े तथा पत्थर और मिट्टीकी दीवारे न थी । चिडियाँ कौन-सा स्थान पसन्द करे और अपने नीड कहाँ बनावें ? दीवारोपर लगी तसवीरोके पीछे रहना वे पसन्द कर लेती मगर मेरे घरमे बहुत बडी तसवीरे न थी और दीवारोकी ऊँचाई भी बहुत मामूली थी । बिजलीकी बत्तियाँ यदि दीवारसे सटकर लगी होती तो उनकी बैठकोके पीछे वे अपने घर बना लेती, लेकिन यहाँ सारी बत्तियाँ लटक रही थी । बिस्तरपर

पडे-पडे मैने चिडियोके नीडके लिए सुभीतेका स्थान खोजकर देखा। परन्तु मुझे कोई उपयुक्त स्थान नजर न आया। किरायेदारोके लिए ही नही, बल्कि चिडियोके रहनेकी दृष्टिसे भी मेरा घर बडा असुविधाजनक है। मुझे लगने लगा कि बहुत दिनो बाद आयी ये चिडियाँ अब मनमे निराशा दबाये लौट जायेंगी।

दो-तीन दिन चिडियोने समूचे घरकी कसकर जाँच की। यह विश्वास हो जानेपर कि घर बनाने लायक यहाँ कोई प्लाट नही है, वे चल दी। खिडकीमे-से उनका बार-बार उडकर भीतर आना बन्द हो गया। उनकी चहक भी सुनाई नही पडती थी। मेरा ढाई कमरेका घर फिर सूना-सूना-सा लगने लगा।

चार दिन बीते। मेरे सिरहाने बायी ओर दीवारमे अलमारी थी। यह अलमारी पुस्तकोसे भरी थी। अलमारीपर अर्ध-गोलाकार एक आला था। उसमे मैने अपनी चित्रकलाका लकडीका तख्ता रख दिया था। चिडियोके एक जोडेने कलाके आश्रयमे रहना तय किया और जल्दी-जल्दी उस तख्ते-के पीछे घर बनाना शुरू कर दिया। मै बिस्तरपर पडा-पडा एक करवट हो यह गृह-रचना देख रहा था। भरी दुपहरीमें वे पति-पत्नी जी-तोड परि-श्रम कर रहे थे। दोनो अपनी-अपनी चोचोमें तिनके और धागे दबाकर लाते। फिर उस तख्तेके नीचे घुसते। जब करीब बारह बजता तो मेरे सिरहानेवाली खिडकीमे बैठकर वे दोनो थोडी देर विश्राम करते। हलकी आवाजमें एक दूसरेसे अपने अगले इरादे दुहराते। बीच ही मे नर उड जाता। एकाध तिनका ले आता। धूप इतनी तेज थी कि कभी-कभी वे दोनो पक्षी अपनी नन्ही चोचे खोलकर हाँफते हुए चुप बैठे रहते। मगर उनका काम बन्द न हुआ। घर अधूरा न रहा।

तख्तेके पीछेका घर कब बन चुका था इसका मुझे पता न चला। हाँ, अब चिडियोके मुखमे तिनके नही दिखते थे। जब नर अकेला ही खिडकीमे बैठने लगा तब मै समझ गया कि घर पूरा बन गया है और

मैं जिस तरह अपनी बेबीके जन्मके समय प्रसूतिगृहके बरामदेमे दीनतासे खडा था, उसी तरह यह नर अपने घरके बाहर खडा है।

और कुछ दिन बीते। और एक दिन सुबह उठते-उठते बडी कोमल आवाज़मे 'चूँ-चूँ' शब्द मेरे कानोमे पडे। अण्डोसे बच्चे निकल आये थे। मादा कुशलसे थी। फिर नर अकेला ही बाहर काम करने लगा। बच्चोको और बच्चोकी माँको खानके लिए कुछ ले आने लगा। फिर मादा भी धीरे-धीरे बाहर जाने लगी। मगर बच्चोके पिताकी तरह वह बहुत देर तक बाहर न रहा करती। बार-बार घरके दरवाजेमे बैठकर वह बच्चोको पुकारती "बच्चो, सो गये क्या रे ? क्या तुम्हे भूख लगी है ?"

माँकी पुकार सुनते ही बच्चे भीतरसे 'माँ, माँ,' कहकर चिल्लाते। उनकी आवाज कानोमे पडते ही माँका डरा हुआ मन शान्त हो जाता। फिर भीतर घुसकर बच्चोके प्रेममे उलझी न रहकर वह छोटे-छोटे कीडे चुगकर लानेके लिए बाहर चल देती। बच्चोकी आवाज बन्द पड जाती।

मै प्रतीक्षा कर रहा था कि अब जल्दी ही बच्चे बाहर निकलेगे, मेरे छोटे-से घरमे घूमने लगेगे। बच्चोके माँ-बाप उन्हे उड़ना सिखायेगे। बच्चे घबराकर रो पडेगे। फिर माँ कहेगी, "मेरे राजा, रोओ नही। तुम अच्छे मुन्ना हो न ? हाँ देखो, पहले पख इस तरह उठाओ। उठा लिये ? शाबाश ! अब उन्हे इस तरह हिलाओ।"

"मुझे डर लगता है माँ !"

माँके बराबर सहनशीलना और प्यार न रखनेवाला बाप ज़रा नाराज हो जायेगा और बच्चोको डाँटेगा, "काहेका डर लगता है रे ? बेवकूफ कहीके। दूसरोके बच्चोको देखो, कैसे जल्दी-जल्दी उडने लगते है। और एक तुम हो कि डर लगता है कहते हो। कुछ नही, चलो उडो !"

फिर माँ कहेगी, "उसे डाँटो मत जी। डाँटनेसे वह और अधिक घबरा जायेगा। फिर बच्चेसे कहेगी, "हाँ मेरा राजा बेटा, उठा तो पख

और अब थोडा हिला उसे ।"

"मै नही करता । मुझे डर लगता है । जाओ ।"

इसपर पिता फिर और भी अधिक नाराज़ हो जायेगा । वह कहेगा, "यहाँ लाड-प्यारकी जरूरत नही । गिर पडेगा तो कोई पैर नही टूट जायेंगा । लग जायेगा थोडा-सा । व्यर्थ बहाना क्यो बना रहा है ?"

फिर बच्चा उडेगा और उडनेका प्रयास करता हुआ नीचे गिर पडेगा। उसका बदन दीवारसे टकरायेगा । फिर माँ-बाप दोनो उसे अपनी छातीसे लगाकर समझायेगे, "गिरनेसे ही तो हम पक्के होते है । जबतक गिरेगे नही तबतक सीखेगे क्या ?"

इस तरह गिरते-पडते ही ये बच्चे उडना सीखेगे और मै जिस तरह पूना आया हूँ, उसी तरह ये भी कही चले जायेगे । अपने माँ-बापको चार सतरोका खत भेजनेकी भी याद कभी न आयेगी इन्हे ।

मै इस तरह भविष्य रँग रहा था, पर हुआ कुछ और ही । बच्चोके बडे होकर घरसे बाहर निकलनेसे पहले ही वह कोमल चूँ-चूँ आवाज़ अचानक एक दिन बन्द हो गयी । पति-पत्नी दोनो दाना नही चुग रहे थे । खाली चोचसे घोसलेके बाहर बैठकर चिडिया चिल्लाने लगी और नर खिडकीमे यूँ ही बैठने लगा । मै कुछ समझ न पाया । मैने अपनी पत्नीसे कहा, "विमल, देखो तो, चिडियाके बच्चे चिल्लाते क्यो नही ?"

घरके कामोसे जब फुरसत पाती तो विमल आकर मेरे पास बैठती थी और चिडियोका कुशल समाचार मुझसे सुनती थी । वे बच्चे, वह नर और वह मादा चिडिया, इस परिवारसे उसका भी अच्छा परिचय हो गया था । बेबीने जब बच्चोको देखनेका हठ पकडा था, तब उसने उसे अपने कन्धेपर बैठाकर चिडियाका घर दिखाया था । बच्चे दिखे नही । लेकिन जिस तरह मेरी रिस्ट वॉचकी टिक-टिक कान लगाकर बेबी सुनती, उसी तरह चिडियाके बच्चोकी चूँ-चूँ भी उसने कान लगाकर सुनी थी ।

जब मैने कहा कि चिडियाके बच्चे चिल्लाते क्यो नही तो उसे सुनते

ही विमल बोली, "अजी धूप कितनी तेज़ है। बेचारे चुपचाप सोये होंगे।"

"नही जी, आज सुबहसे मैने उनकी आवाज नही सुनी है। जरा देखो तो।"

विमल एक स्टूलपर चढ गयी। झुक-झुककर देखा। फिर भी चिड़ियों-का घर दिखायी नही देता था। मै चारपाईपर पड़ा-पड़ा पूछ रहा था, "क्यो, दिखते है क्या? बोलो? बच्चे है वहाँ?"

दूरसे देखनेपर दिखते न थे। इसलिए विमलने हलके हाथसे तख्ता उठाया और एकदम चौककर वह चिल्ला पडी, "ओ माँ!"

"क्यो? क्यो? क्या हुआ? क्या बच्चे नही है?"

"अजी यहाँ तो ढेर-सी चीटियाँ लगी है। ये लाल चीटियाँ ही खा गयी बेचारे बच्चोको। राम! राम!"

मै चुप हो गया।

हमे अफसोस होता है। परन्तु पछियोके ससारमे न खेद है न दु ख। दुर्घटनाओसे वे हिम्मत नही हारते। जिदसे ज़िन्दगी जीते है। सुबह उठते ही किसी सुननेवालेके न होनेपर भी अकेले ही प्रभाती गाते रहते है। उनके हिस्सेमे जैसा जीवन आ जाता है उसे वह उसी रूपमे स्वीकार कर लेते है, जो लेते है और आकाशमें चक्कर काटते हुए गाते रहते है।

मेरी आर्थिक परिस्थिति

धन्धा लेखकका होनेके कारण सालमे कुछ समयके लिए मुझे बेकार रहना पडता है और दिमाग तेज़ होनेके लिए यह बडा फायदेमन्द होता है।

ऐसी बेकारीके समय मेरे कई घण्टे आरामकुरसीमे पडे-पडे विचार करनेमे गुजर जाते है। मेरी पत्नीकी यह शिकायत हमेशा रहती है कि यूँ चुपचाप बैठे रहनेके कारण ही मै बेकार रहता हूँ। लेकिन सच पूछा जाये तो बेकार होनेके कारण ही मै चुप बैठा रहता हूँ। वह यह नही जानती कि जब लेखक चुप बैठा होता है तभी वह सच्चे अर्थोमे काम करता रहता है।

इसी समय मुझे यह बात जँच जाती है कि रेडियोके मराठी कार्यक्रम रद्दी होते है और ऐसा लगने लगता है कि रेडियो कोई विशेष आवश्यक वस्तु नही है। पलँगपर हाथ-पाँव ऐठकर सोनेके बजाय नीचे जमीनपर सोना ही अधिक आरामदेह होता है और लकडीके दो पलँगोके कारण घरका बहुत-सा स्थान भी घिर जाता है, यह बात लगातार ध्यानमे आती है। कभी-कभी ही काममे आनेवाला केमरा खरीदकर मैने चार-सौ रुपये व्यर्थ ही फँसा रखे है और आजकलके अजीब ज़मानेमे सोनेके अधिक ज़ेवर होना भी भयप्रद ही है, यह मै पत्नीसे बार-बार कहता रहता हूँ। अलबत्ता उसके इतने चतुर होनेके कारण मेरी बातका अन्दरूनी हेतु उसकी समझमे तुरत ही आ जाता है और वह मुझे ही डाँट देती है, "हाँ समझ गयी! केमरा और रेडियो-जैसी चीज़े कौन बार-बार खरीदी जाती है? और केमरा तो अण्णाने उपहारमे दिया है न? ज़ेवरोका तो नाम ही मत लेना। घरकी 'लक्ष्मी' को मै कदापि बाहर नही जाने दूँगी। एक बार जहाँ घर-की चीजे बेचनेकी यह खराब लत लगी कि फिर वह छूटे नही छूटती!" वास्तवमे यह बात जँचने लायक होती है लेकिन इसके जँच जानेपर भी मै

आजिजीसे कहता हूँ,

"अजी, पर जेवर हम इसीलिए तो बनवाते है न कि मौकेपर काम आये ?"

लेकिन ऐसे वक्त वह बडी निर्दयी हो जाती है। अजीब-सा चेहरा बनाकर चुभते हुए शब्दोमे कहती है, "ऐसा कौन-सा बडा प्रसग आ पडा है जो आपपर ? रेडियो और जेवर बेचकर चार महीने आरामसे खाते रहोगे यही न ? इतनी मासिक पत्रिकाएँ कहानियाँ माँग रही है, उन्हे कहानियाँ लिखकर भेजो, रेडियोके लिए नाटक लिखो। कोई उपन्यास लिख डालो। यह तो कुछ करोगे नही, और सोचोगे यह कि घरकी कौन-कौन-सी चीजे बेची जाये! कितने खराब लक्षण है ये!" फिर मै ज़ोर-ज़ोरसे चिल्लाने लगता हूँ, उसके मर्मपर चोट करता हूँ,

"हाँ हाँ, कहानियाँ लिखना क्या रोटियाँ बेलना है ? ले लिया आटा और बैठ गयी बेलने। अरे, कुछ सूझना भी तो चाहिए न ? तुम्हे तो बस, सिर्फ पैसे दिखते है। पर मुझे तो अपना नाम सँभालना पडता है। पैसेके लिए चाहे जो घसीटकर क्या मै स्वय अपनी प्रतारणा कर लूं ? आँ ?"

एक तो मेरा शरीर ही भारी-भरकम है और ऊपरसे बार-बार मेरे यह कहनेके कारण कि देखो, मेरा गुस्सा बडा खराब है, वह फिर चुप हो जाती है। और यह विश्वास होनेसे कि यह कोई भी चीज़ बेचने न देगी, मै फिर और कुछ खोजता रहता हूँ। फिर भी, प्रकाशकोसे भेटमे मिली पुस्तके आधी कीमतमे किसी लाइब्रेरीको बेच डालूँ, 'सत्यकथा', 'अभिरुचि', मासिक पत्रिकाओके गट्ठे और दीवाली विशेषाकोके अक किसी रद्दीवालेको सवा रुपये सेरके हिसाबसे दे दूँ, घरमे यह कहकर कि मेरा 'पार्कर इक्यावन' कही गुम गया है, उसे किसीके पास गिरवी रख दूँ, ये सीधे-सादे उपाय मुझे लगातार सूझते रहते है। अन्तमे घरमे बैठना बिलकुल असम्भव हो जाता है। कपडे पहनकर मै निरुद्देश्य बाहर निकल पडता हूँ।

सचमुच शहरकी सडकोपर खाली जेब लिये घूमना बडी भयानक बात है। हर कही होटलोमे सजाकर रखे हुए सुन्दर पदार्थ दिखाई देते है, सोधी-सोधी खुशबू आती है। जी करता है जाकर साबूदानेकी खिचडी खाऊँ, पर जेबे तो बिलकुल खाली होती है। पानवालेकी दूकानपर आला हज़रतकी मेहरबानीसे छह पैसेमे दस 'चार मीनार' सिगरेटे मिलते हुए भी वे हमारे किसी कामकी नही होती। केवल दो पैसेमे एक मसालेकी गिलौरी खाकर मजा लूटा जा सकता है और अपने रामकी जेबमे तो ताँबेकी छदाम भी नही होती। हाय रे जमाना! ऐसे वक्त कन्धे झुकाये, गरदन लटकाये दयनीय चालसे मै रास्ता काटता रहता हूँ। मन-ही-मन यह मालूम हो जाता है कि मै एक कौडी कीमतका इन्सान हूँ। पत्नी और छोटी लडकीको याद आनेपर मै दु खी हो जाता हूँ। उनपर बडा भारी अन्याय किया है मैने, यह बात मनमे लगातार चुभती रहती है।

फिर कोई पहचानका, मेरे प्रति अपने हृदयमे आदर रखनेवाला मनुष्य अचानक मिल जाता है। चेहरेको खिलाकर बाते करने लगता है। यह महसूस करके कि मै महाराष्ट्रके एक तरुण और प्रसिद्ध कथाकार तथा फिल्म-कथालेखकसे बाते कर रहा हूँ, वह बेचारा बहुत खुश होता है। पढी हुई कहानियो और देखी हुई फिल्मोकी तारीफके पुल बाँधता रहता है। उसकी बातो और आँखोमे आदरका भाव उमडता रहता है। और मै ऊपर-ऊपर हँसते हुए, हुँकार देता हुआ उसके कपडे बडे ध्यानसे निहारता रहता हूँ। उसकी कोटकी जेबे देखता रहता हूँ। उसकी जेबमे रखे पेन और कलाईपर बँधी घडीकी क्या कीमत है? उसके कपडे भारी है क्या? ये सब बाते ध्यानमे रखकर उसकी आर्थिक दशाका अन्दाज़ लगानेमे मै खो जाता हूँ। वह बेचारा मेरे बाल-बच्चोके स्वास्थ्यकी पूछ-ताछ करता रहता है। लडकी इतनी जल्दी बोलने लगी, इसकी सराहना करता रहता है और उसी समय मै उससे कितने रुपये उधार मागूँ, इसका निर्णय करता रहता हूँ।

पैसे उधार माँगनेके बारेमे मेरा अपना एक अनुभव है। (मेरे लेखक बन्धुओको शायद यह उपयोगी हो।) जिस तरह भिखारीपर दया भिखारी-को ही आती है, उसी तरह लेखकको ही लेखकपर आती है। उसमे भी यदि वह नव-लेखक हो तो बहुत ही अच्छा। जेबमे रखे हुए दो रुपयोंमे-से दोनो तो वह हमे दे ही देता है। कमसे-कम एक तो ज़रूर ही दे देता है। इसके बाद अन्यत्र नौकरी करनेवाले, किन्तु जिन्हे साहित्य आदि बातोंमे रुचि है, ऐसे लोग भी इस कार्यमे बडे काम आते है। साधारण तौरपर दो-चार या पाँच रुपये ही उधार माँगना चाहिए जिससे महसा निराशा पल्ले नही बँधती। लेकिन यह बहुत दिनो तक नही चलता। जल्दी ही सब लोगोमे माँग लिया जाता है और बादका समय बडा कठिन होता है।

ऐसे समय, सडकसे घूमते हुए मेरे ध्यानमे यह बात आती है कि सडकपर लगे बिजलीके बल्ब ऐसे लगे है जो आसानीसे निकाले जा सकते है। साइ-किलमे ताला लगाकर फिर होटलमे बैठे गप्पे हाँके, इस विषयपर बहुत-से गलती कर जाते है, यह भी मुझे महसूस होने लगता है। जिसके पास कोई गैरेज नही है, वे लोग रातको अपने घरके सामने कार रखकर आरामसे सोते है, यह देखकर कमसे-कम कारके पुरजे निकालनेका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, यह लगन लग जाती है। आँखें तेज़ पैनी हो जाती है। हलचलमे बडी सफाई आ जाती है और ऐसा विश्वास होने लगता है कि अगर यही सब मनमे लाऊँ तो चाहे जितना रुपया कमा सकता हूँ। शहरोंकी इन सडकोपर तमाम नोट बिखरे पडे रहते है, पर उन्हे उठानेकी अक्ल हममे होनी चाहिए, यह बात जँचती है।

ऐसे समय यदि कोई मुझे चाय देने लगता है तो मै अवश्य होटलमे जाता हूँ। वह जब चायका ऑर्डर देता है तो उससे कहता हूँ, "यार, चाय तो तुम लेना। मै तो कुछ खाऊँगा। मुझे ज़ोरकी भूख लगी है।"

सहज ही मेरा खाना समाप्त होनेतक वह बैठा गप्पे लगाता रहता है और इसी समय खाना खत्म करके मै अर्थपूर्ण दृष्टिसे उस ठण्डी हो रही

चायकी ओर देखता हूँ। सहज ही बशी-भर चाय मुझे मिल जाती है। दो सिगरेट मँगानेपर भी, भोजनके बाद घरपर पीनेके लिए अपनी एक सिगरेट जेबके हवाले कर देता हूँ और उसकी आधी सिगरेट पीता हूँ। मेरे इस बरतावसे वह सोचने लगता है कि कलाकार लोग हमेशा दरिद्र ही होते है और यह अनुभव होनेसे वह कोमल हृदयका मनुष्य तिलमिला उठता है और उसके भोलेपनपर हँसता हुआ मै आधी सिगरेट पीकर चैन करता हूँ।

जब मुझे यह पता चलता है कि किरायेपर लाये हुए फर्नीचरका कई महीनेका किराया न चुकानेके कारण दूकानदार मेरे घर आकर यह धमकी दे गया है कि अगर घर आकर पूरा किराया नही चुकाओगे तो कल मै सारा फर्नीचर उठाकर ले जाऊँगा, तब उसकी दूकानपर जाकर मै गम्भी-रतापूर्वक कहता हूँ, "भले आदमी, सचमुच आप आकर उसे उठा ले जाये। मै उसे दूसरोको बेच दूं, इससे पहले उसे उठाकर ले जाइए!" और वह समझ नही पाता कि इस मनुष्यसे कैसे पेश आऊँ। उसका सारा गुस्सा हिरन हो जाता है और वह हँस पडता है!

किसी दरजीको सिनेमामे काम करनेकी बहुत इच्छा है, यह बात मेरी नजरोसे नही छूटती। और फिर उसको पूँजी बनाकर मै मजेमे बहुत-सी उधारी किया करता हूँ। मै बरसो वह ऋण नही चुकाता। वह भी माँगने-की हिम्मत नही करता। और मेरी इस बेशर्मीके आस-पास सामाजिक प्रतिष्ठाकी चौखट होनेके कारण वह विलक्षण रूपसे खिल उठती है।

मेरी बरकतके दिनोमे (सिनेमा प्रोड्यूसरकी मेहरबानीसे ऐसा भी वक्त भूले-भटके आ जाता है।) मैने बहुत-से गरम सूट सिलवा लिये है। अब दूसरे कपडे सिलवानेकी ताकत न होनेके कारण मुझे उन्हीको काममे लाना पडता है। काममे लाते रहनेसे सहज ही वे मैले हो जाते है और मैले कपडोको धोबीको देनेके सिवा चारा नही।

कुछ दिन पहले इसी तरहके कुछ कीमती कपडे मैने एक अच्छी लाण्डरीमे धोनेके लिए दिये और बीच ही मे उनकी जरूरत होनेके कारण

उन्हे लानेके लिए गया। रसीदपर जो तारीख दी थी वह आगेकी थी, इसलिए सब कपडे धुल तो गये थे, पर उनपर इस्त्री नही हुई थी। इस-लिए अपनी जरूरतके मुताबिक एक ही पतलून मै वहाँके लडकेसे माँगकर ले आया और बादमे पैसे न होनेके कारण बहुत दिनोतक मै लाण्डरीकी ओर फटका तक नही।

जब सम्भव हुआ तब बाकी कपडे लाने लाण्डरी गया तो मुझे यह मालूम हुआ कि स्मरणशक्ति अधिक तीव्र न होनेके कारण वह लडका इस बातको भूल गया कि अपनी एक पतलून मै पहले ही ले गया हूँ। बहुत देर तक वह अलमारियोमे खोजता रहा और बादमे अपराधी चेहरेसे बोला,

"साहब आपकी एक पतलून गुम गयी है। आगेकी खेपमे खोज रखूँगा।"

इसपर मै कुछ भी न बोला। धूर्ततासे घर लौट आया। इसके बाद और कुछ दिन बीत गये। थोडे-बहुत पैसे पासमे होनेके कारण इस बीच अनेक बार लाण्डरीमे गया था और लडकेने मुझसे गिडगिडाकर कहा था, "साहब, खोज रहा हूँ। अगर नही मिलेगी, तो नियमके अनुसार आधी कीमत दूँगा।"

मै यह जानता ही था कि पतलून मिलना सम्भव नही है, क्योकि वह गुमी ही न थी। और फिर जब एक बार ऐसी स्थिति आयी कि राशनके लिए भी पैसे नही थे, तब बडी सभ्यतासे मै धोबीके घर गया और उससे अपने पैसे माँगे। उस भले आदमीने मेरी माँग स्वीकार की और मेरे हाथपर दस-दस रुपयेके दो नोट रख दिये। दो नोट जनाब! ज़रा सोचिए, बीस रुपये!

अब मैने उस लडकेसे गुप्त समझौता कर लिया है कि उचित कमीशन लेकर वह मेरी पतलूने गुमाया करे और आधी रकम मुझे दे। क्योकि सामाजिक प्रतिष्ठाके कारण मै अपने कपड़े खुले-बाजार बेच नही सकता!

चूहा : एक व्यक्ति

'बडी रात गये मै घर लौटा। ताला खोलकर सारी बत्तियाँ जला दी, फिर भी सूना घर खानेको दौड रहा था। सच पूछा जाये तो पत्नीके मायके चले जानेपर पतिको आनन्द मनाना चाहिए। मगर मै घर लौट-कर आया तो स्लीपिंग सूट पहनकर खाटपर पड रहा। बत्तियाँ बुझा नीदको बुलाने लगा। तभी मुझे लगा जैसे एक औरत आकर दरवाजेपर खडी हो गयी है। उसके माथेपर हल्दी और सिन्दूरका टीका लगा है और बाल खुले-छितराये है। मै साँस रोक और कान खडेकर उसकी पदचाप सुननेकी बाट जोहने लगा। यह एहसास होते ही कि अब वह मेरे पास आयेगी और पीठ सहलायेगी, मै काँपने लगा और मेरे माथेपर पसीना चुहचुहा आया। सोचा, उठकर बत्तियाँ जला दूँ। मगर तभी मै अपनेपर लजा गया। आखिर यह सब मै क्यो सोच रहा हूँ? दो लडकोका बाप और एक सौ सत्तर पौण्ड वजनवाला आदमी इस तरह भय खाये।

जगलमे जब शेरका शिकार करने बैठता हूँ, तब भी मै नही डरता। घने अँधेरोके बीच जंगलोमें जब खरगोशका पीछा करता हूँ उस समय भी नही डरता, लेकिन घरमे न जाने क्यो भूतोसे बहुत डरता हूँ। मुझे चोरोका, साँपोका, घरके ढह जानेका, किसीका भी भय नही लगता मगर भूतका खयाल आते ही जैसे छक्के छूट जाते है। अपनी ही कल्पनासे रँगे इन भूतोके चेहरे ··ओफ्!

कहूँ तो लोग-बाग हँसेगे, मजाक बनायेगे, इसीलिए अभीतक यह सब मैंने किसीसे नही कहा – पत्नीसे भी नही। और यही कारण है कि पत्नी जब मायके जानेकी बात कहती है तो मै चिन्तित हो उठता हूँ।

···मै खाटपर पडा डर रहा था। रातके बारह बज चुके थे और

काली चूडियोकी आवाजें मेरे कानोमे पडने लगी थी। गहरी साँस और आँचलकी सरसराहट मुझे स्पष्ट सुनाई दे रही थी। बिस्तरपर औधा पडा मै अपने डरपोक स्वभाव और इस बचपनेपर हँसनेका लाचार प्रयत्न कर रहा था।

अहातेमे झीगुर बोल रहे थे। मेढकियाँ शोर मचा रही थी। लेकिन रात जैसे साँस रोककर आँचलकी सरसराहट और चूडियोकी खनखनाहट सुन रही थी। तभी मुझे लगा कि रसोईघरको बत्ती जल गयी है! प्रकाशकी एक लम्बी चौकोन रेखा मेरी मसहरीपर पड रही है।

मै भौचक-सा हो गया। मैने चाहा कि जोरसे चिल्लाऊँ लेकिन मुँहसे एक शब्द भी न निकला। हाथ-पाँव ठण्डे हो गये। मुँह सूख गया। मुँदी आँखें खुल नही पा रही थी। दरवाजे सब बन्द और मै जाग रहा हूँ। बिजलीकी बत्ती अपने-आप जल उठी! यह कैसे जली? यह सब कैसे हुआ?·· और कुछ क्षण यूँ ही बीत गये। मेरे कानोके पीछेसे पसीनेकी लकीरें बननी-बहनी शुरू हो गयी। बन्द आँखें मैने खोली तो रोशनीसे जगमगाती रसोईघरकी दीवार दिखाई दी। यह सोचनेकी चेतना मुझमे आ गयी थी कि बहुत बार ऐसी बातें अपने मनका भ्रम ही होती है। थोडा साहस करके यदि जाँचे-समझें तो उनकी असत्यताका पता चल जाता है। और फिर साहस बटोर मसहरीको धीरे-से हटाकर बाहर निकल पडा। रसोईघरके दरवाजेपर आकर जल्दी-जल्दी सारे कमरेमे निगाह दौडा रहा था कि तभी सामनेकी शेल्फ पर कुछ हिला। थालियोके पीछे चूहेका नथुना काँप रहा था। अचानक वह एकदम पूराका-पूरा बाहर निकल पडा और अपनी चमकोली आँखोसे मेरी ओर देखता हुआ मूँछें हिलाने लगा। उसके चेहरेसे लगा कि बत्ती जलानेकी हरकत भी उसीसे हुई है। क्योकि पीतलकी स्विच ढीली हो गयी थी और शटरसे नीचे उतरते समय चूहेके धक्केसे बत्ती जल गयी थी। मैने स्विचको ऊपर-नीचे करके देखा — एक अँधेरा और फिर प्रकाश! मुझे हँसी आयी और

मन-ही-मन हँसकर मैंने उस नये व्यक्तिको ओर देखा। मेरे हाथोंकी हलचल होते ही वह थालियोंके पीछे छिप गया था, और अब फिर झाँकने लगा। गरदन लम्बी करके उसने भी मुझे घूरकर देखा और फिर बरतनोंकी ओट हो, चला गया।

रोशनी बुझाकर मै भीतर आया और ढीले-बदन बिस्तरपर लेट गया। अब मेरा भय दूर हो गया था। मेरा पुरुषत्व इतना खोखला और दिखावटी है, इसपर मुझे बार-बार पछतावा हो रहा था। और यह सोचते-सोचते मै विचारोंमे खो गया : डरना मनुष्यका स्वभाव है, परन्तु उस डरपर हॉवी होकर बत्ती जलनेका सही कारण क्या मैंने ही नही खोजा ? इस कारणको खोजते समय मैने जिस साहसको दिखाया, वह भी मामूली थोडे न था। ऐसे ही अनगिनत अनुभवोंके आधारपर ही मनुष्यका विकास होता है। अनुभवोंका जितना अधिक सग्रह होगा उतना ही अधिक वह सहिष्णु और धैर्यवान् होगा।

बिस्तरपर पडा मैं इन्ही सब विचारोंमे खोया था और वही चूहा फिर रसोईघरमे खटर-पटर कर रहा था। यह सब सुनते मुझे यह नही लगता था कि मैं अकेला हूँ। पत्नी घरमे नही है, यह भी महसूस नही हो रहा था। और इसी वातावरणमे डूबा-डूबा मै गहरी नीदमे सो गया।

आँख खुली। खिडकीसे बाहर देखा तो रेलकी पाँते ताजी धूपकी रोशनीमे चमक रही थी। उस पार खेतोंमे सुआ-रगी ज्वारकी फसल ओस-भीगा तन सुखा रही थी। खिडकीसे सटी मेजपर पडे सफेद कपडोंको ठीकसे सरियाते समय मेरा ध्यान टेब्ल-क्लॉथपर अकित उस चूहेके पैरोंकी छाप-पर गया। पातोंके उस पारवाले खेतसे कोचड-भरे पैर लिये यह साथी उन्ही गन्दे पैरों मेरी मेज़पर उतर पडा था और अपनी छाप छोडता रसोईघर चला गया था। जाते-जाते स्विचमे धक्का लगा एक इन्द्रजाल-सा बुन गया था। रसोईघरमें जाकर देखा तो सभी चीज़े सही-सलामत थी। सब्जी, फल आदि सभी कुछ सुरक्षित थे। तो क्या वह मात्र मुझे डराने

और मेरा डर भगानेके लिए आया था ? मैं चाहता था कि वह फिर आये, रोज आये। क्योंकि वह आकर रसोईघरमे डिब्बे और बरतन बजायेगा और मुझे अच्छी-भली नीद आयेगी।

नित्यकी भाँति शामको घर लौटा पर घरमे मुझे डर न लगा। मै जानता था कि मेरा एक साथी है। कपडे बदल खाटपर लेट गया और पढने लगा। अपने सोनेके कमरेके अलावा और सभी कमरोकी बत्तियाँ नही जलायी थी। पढनेमे मेरा मन नही लग रहा था। कान किसी आहट-को सुननेकी प्रतीक्षामे थे। बार-बार खिडकी और शटरकी ओर मै देख रहा था। मै यह सोच-सोच कि शायद वह न आये, चिन्तित हो रहा था। कल उसे खानेको भी यहाँ कुछ न मिला था, इसलिए सम्भवत वह किसी दूसरे घरमे जाये जहाँ उसे कुछ खानेको मिले। और यदि सचमुच ऐसा कोई घर मिल गया तो वहा चूहा मेरे घर फिर कभी नही आयेगा। यह सोच हो रहा था कि तभी मुझे लगा कि यह बत्ती भी बुझा देनी चाहिए। बिलकुल अँधेरा किये बिना वह ढीठ चूहा भीतर नही आयेगा और तुरत बत्ती बुझाकर उस चूहेके आनेकी बाट जोहने लगा।

कुछ समय बीतते ही रसोईघरकी बत्ती एकाएक जल उठी। थालियो-के पीछेसे खटर-पटरकी आवाजे आने लगी स्वय भी वह चूहा विभिन्न प्रकारकी आवाज़े करता रसोईघरमे इधर-उधर घूमने लगा। यह सब मुझे अच्छा लग रहा था। ऐसा करने लगा जैसे मेरी पत्नी मायके गयी ही न हो। और वह रसोई बना रही हो।

··· 'और वह चूहा फिर प्रतिदिन रात्रिमे घर आने लगा। उसकी रुचि-अरुचिको भी मैने जाना। मूँगफली और अन्य खाद्य सामग्रियोके बजाय जब अनेक बार बदनमे लगानेवाली साबुनकी बट्टी उसने खायी तो मुझे चिन्ता हुई। उसके स्वास्थ्यकी भी चिन्ता मुझे हुई। कभी-कभी यूँ ही तरतीबसे रखी कटोरियोको वह लुढका देता। कभी किसी डिब्बेके

ढक्कनको खोल देता। ऐसेमे उसे डरानेके लिए मुझे लाठी पटककर डाँटना पडता था। और वह इधर-उधर दौड-कूदकर अन्तमे शेल्फके पीछे छिप जाता, मगर उसकी पूँछ दिखाई पडती रहती थी। और अन्तमे एक दिन चिमटेसे उसकी पूँछ मैने पकड ली। लेकिन इसका भी असर उसके ऊपर न पडा। वह रोज़ आता अपने उसी चिर-परिचित रास्तेसे!

चमकीले धूसर रगके इस प्राणीको सफाईका भी कुछ ध्यान न रहता था। वह चाहे जहाँ जब भी गन्दगी किया करता था। इसके लिए वह हमेशा नित नयी जगह खोजा करता। और उसकी इस अन्वेषी कल्पना-शक्तिको मन-ही-मन मै सराहा भी करता था।

मायकेका सुख लेकर मेरी पत्नी लौट आयी। इस बीच उस चूहे-ने घरमे अपना डेरा जमा लिया था। पत्नीने जब घरकी सफाईका काम शुरू किया तब उन्होने देखा कि घरमे सब कही परिवर्तन हो गया है। जिन डिब्बोमे मूँगफलीके दाने और गरी रखी थी, वे खाली हो गये है। अनाजके बोरोमे छेद हो गये है और एक कोनेमे चुहियाने बच्चे दिये है। मेरी अनु-पस्थितिमे ही उन सुन्दर बच्चोको मेरी पत्नीने झाडूसे निकाल बाहर फेंक दिया। दो-चार दिन घरमे अजीब-सी शान्ति छायी रही। पत्नी रह-रह-कर मुझे छेडने लगी!

"क्या रात आप घर हीमे सोते थे?"

"हाँ।"

"तो चूहोने इतनी बरबादी कैसे की?"

"पहले-पहल तो चूहा बडी शराफतसे पेश आया था।"

"मुझे तो लगता है कि आप रातमें घर आते ही न थे!"

"नही जी, घर न आता तो फिर कहाँ जाता?"

"फिर इतनी गाढी नीद कैसे लग जाती थी आपको? रात-भर चूहे ऊधम मचाते थे और आपने उसे सुना नही?"

"सब कुछ सुनता था। उसी आवाज़से तो मुझे नीद आती थी। यूँ

घरमें शान्ति होनेपर तो मुझे नींद ही नहीं आती। चूहोंकी खटर-पटरसे मुझे लगता था कि तुम घरपर हो, और मैं सुखकी नींद सो लेता था।"

"आपसे तो कुछ कहना भी आफत है।"

फिर चूहोंका नाश करनेके लिए चूहेदानी भी घरमें आयी। पत्नी इसके लिए पूरी सावधानी बरतने लगी। लेकिन वह सफल न हुई और चिढ़ गयी। फिर दो पिंजरे आये। और तब मुझे यह निश्चित हो गया कि चूहेकी मौत नज़दीक आ गयी है। इसे बचाना भी मेरे बसकी बात नहीं थी।....

एक दिन आधी रात गये खट-से पिंजरेके मुँह बन्द होनेकी आवाज़ हुई। पत्नी घबराकर उठी और प्रसन्न होकर बोली, "अजी चूहा फँस गया।" घरकी सारी बत्तियाँ तुरत जला दी गयीं और हम दोनों रसोई-घरमें जा पहुँचे। पिंजरेमें चूहेकी केवल पूँछ ही फँसी थी और वह बेचारा घबराहट और पीड़ामें चूँ-चूँ करके चीख रहा था। पत्नी बोलीं, "मारो, मारो। अभी ज़िन्दा है।" और हम दोनों उसे मारनेके लिए किसी उपयुक्त हथियारकी खोज करने लगे। लेकिन जल्दीमें कोई चीज़ मिल नहीं रही थी। पत्नी चूहेके पास नाचती चिल्लाती खड़ी थीं। मैं हथियारकी खोजमें ही था कि पत्नीने चिल्लाकर कहा, "अजी वह भाग गया।" मैंने आकर पूछा, "भाग गया?" और देखा कि दरवाज़ेपर चढ़कर शटरमें-से चूहेका जोड़ा बाहर निकल गया था।

पत्नी सीनेपर हाथ रखकर बोली, "भई गजब कर दिया चूहेने!" "क्या गजब कर दिया?" मैंने पूछा। पत्नीने कहा, "अजी वह चूहा जब अपनी पूँछ निकालनेकी कोशिश कर रहा था तभी एक दूसरा चूहा आया और तपाक्-से उसकी फँसी पूँछ काट दी और दोनों निकलकर चम्पत हो गये।" मैंने देखा तो सचमुच दो इञ्च लम्बी पूँछ अभीतक ज्योंकी-त्यों फँसी हुई पड़ी थी।

इसके बाद भोर तक हम दोनो इस 'चूहाकाण्ड' पर बाते कर रहे थे और हँस रहे थे। यह घटना एक नाटककी तरह हो गयी थी और इसे बडे मोहक ढगसे पत्नी बार-बार मुझे सुना रही थी। चूहेके विषयमे इतनी सराहनापूर्ण बाते किसी पति-पत्नीके बीच सम्भवतः कभी न हुई होगी।

'''मगर वह 'व्यक्ति' अब कभी नज़र नही आता।